हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह० की

तब्लीग़ी तक़रीरें

दावत व तब्लीग़

जिल्द 2

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी (एम. ए.)

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह. की

तब्लीग़ी तक़रीरें

हिन्दी अनुवाद

मौलाना मुहम्मद इमरान क़ासमी (एम. ए.)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज

नई देहली-110002

****

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	दावत व तब्लीग़ (2)
तक़रीरें	मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह.
मुरत्तिब	मौलाना शफ़ीक़ अहमद क़ासमी
	व मौलाना अज़्फ़र जमाल क़ासमी
हिन्दी अनुवाद	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	दिसम्बर 2004
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स
	मुज़फ़्फ़र नगर 0131-2442408

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा. लि.)

2158, एम. पी. स्ट्रीट, पटौदी हाऊस, दरिया गंज, नई देहली -110002

फ़ोन आफ़िस, 23289786, 23289159 आवास, 23280786

****

विषय सूची

****

****

****

****

तक़रीर (1)

यह तक़रीर 22 अक्तूबर 1995 को तब्लीग़ी इज्तिमा ईदगाह देहली में की गई।

मुल्क शाम में मस्जिद के उद्घाटन के मौक़े पर हमने इस तरह की बातें कहीं और फिर उनसे कहा कि देखो! हमारी जमाअ़तें तुम्हारे मुल्कों में आयेंगी तो जमाअ़तों के बारे में तुम पब्लिक से कह दो कि ये भले लोग हैं, इनका साथ दो।

और हमारी जमाअ़त की पहचान और निशानी ये होंगी कि यह जमाअ़त अपना ख़र्च करके आयेगी। पैसा नहीं माँगेगी। कन्धे पर बिस्तर उठाएगी। मस्जिदों के अन्दर ठहरेगी। ये लोग अपना खाना पका कर खाएँगे। और लोगों के घरों पर जाकर कोशिश करके उन्हें मस्जिदों में लाएँगे। उनको नमाज़ सिखाएँगे। दीन सिखाएँगे। उनकी जमाअ़त बनाकर बाहर निकालेंगे। और चार महीने की तश्कील करेंगे।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَ نَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَا نَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ o بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ o وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ء

(پ۹اعراف ع۴)

وقال اللّٰه تعالٰى:

فَلَمَّا نَسُوْا مَاذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ (پ۷انعام ع۱۱)

अल्लाह तबारक व तआला ने इनसान को तमाम मख़्लूक़ात से बेहतर बनाया। लेकिन दोस्तो! यह उस वक़्त होगा जबकि वह अपनी ज़िन्दगी अल्लाह और उसके रसूल के बताये हुए तरीक़े पर गुज़ारे।

जानवर से भी ज़्यादा बद्‌तरीन

और अगर यह मेहनत अल्लाह और उसके रसूल के बताये हुए तरीक़े पर न अन्जाम दे बल्कि दुनिया के अन्दर फैली हुई चीज़ों पर ही मुकम्मल भरोसा कर ले, तब यह इनसान 'अशरफ़ुल मख़्लूक़ात' (तमाम मख़्लूक़ात से बेहतर) नहीं रहता। बल्कि जानवर से भी बदतर (बुरा) बन जाता है।

'अशरफ़ुल मख़्लूक़ात' (तमाम मख़्लूक़ात से बेहतर) होने के मायने यह

हैं कि इसके अन्दर अल्लाह पाक ने सलाहियत और योग्यता रख दी है सारी मख़्लूक़ से बेहतर होने की, लेकिन शर्त यह है कि वह उसके ऊपर मेहनत करे।

जन्नत किसकी?

मेरे मोहतरम दोस्तो व बुज़ुर्गो! अल्लाह जल्ल शानुहू ने इनसान के बनने का भी रास्ता बताया और यह भी बता दिया कि इनसान कैसे बिगड़ता है। इनसान के बिगड़ने पर दुनिया में क्या मामला होगा और आख़िरत में क्या सज़ा है। बनने पर दुनिया में कैसी रहमतें नाज़िल होती हैं और आख़िरत में क्या जज़ा (बदला और इनाम) है।

लेकिन जो बात अल्लाह ने बताई है वह ग़ैब के अन्दर है। आख़िरत में ज़ाहिर होगी। जो बात इनसान को दिखाई देती है, वही इसकी आँखों के सामने होती है। लेकिन आख़िरत में जब मामला इसके ख़िलाफ़ होता है तब आदमी समझता है कि मैंने जो किया वह ग़लत था।

जितने भी अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम की बात मानने वाले थे, जब ईमान की तरफ़ आ गए, इबादत में लग गए, दीन का इल्म हासिल करने में जुट गए। एक दूसरे का इकराम करना, लोगों का हक़ अदा करना, रहम करना, मेहरबानी करना, नीयतों को टटोलते रहना कि मैं अल्लाह को राज़ी करने की बात कर रहा हूँ या नहीं। जब अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के मानने वालों के अन्दर यह बात थी तो बावजूद यह कि वे संख्या में कम थे, ताक़त में कमज़ोर थे, सरमाये के एतिबार से ग़रीब थे, लेकिन चूँकि अल्लाह की ताक़त दीनदारी की बिना पर उनके साथ हो गई थी। और अल्लाह के ख़ज़ानों से दीनदारी की बिना पर ताल्लुक़ हो गया था। इसलिए उसका बदला मरने के बाद यह होगा कि जहन्नम के फ़रिश्ते उनको जहन्नम में नहीं लेजा सकेंगे। क्योंकि अल्लाह की ख़ुशनूदी उन्हें हासिल है। और चूँकि आमाल पर अल्लाह की तरफ़ से दिये जाने वाले ख़ज़ाने से उनका ताल्लुक़ है, पस इसका असर यह है कि उनको जन्नत

मिलेगी। हर क़िस्म की नेमतें अल्लाह पाक इनायत फ़रमायेंगे और करोड़ों साल के बाद भी जन्नत वालों पर कोई वबाल नहीं आएगा। न ही जन्नत के अन्दर उकताहट होगी कि भाई! करोड़ों साल हो गए जन्नत के अन्दर रहते हुए अब बाहर चलें।

दुनिया में ख़राबी और बिगाड़ की असल जड़

जन्नती जन्नत कि खिड़की से बाहर जहन्नमियों की तरफ़ देखेंगे और जहन्नमी जन्नतियों को देखेंगे। एक दूसरे को पहचानेंगे। ये जहन्नमी वे लोग होंगे जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की बात को दुनिया के अन्दर नहीं माना था। उनकी ज़िन्दगी ग़लत गुज़री थी। उनके अन्दर सही यक़ीन नहीं था। वे अल्लाह के सामने सर नहीं झुकाते थे। इबादत नहीं करते थे। दीन पर चलने का उन्हें कोई शौक़ नहीं था। न उन्हें दीन सीखने की कोई फ़िक्र थी। क्योंकि वे लोग तो:

माल कैसे आए?

ओ़हदा कैसे बढ़े?

डिग्री कैसे मिले?

इन चीज़ों की धुन में रहते थे। अल्लाह की तरफ़ ध्यान ही नहीं था। उसकी तरफ़ ज़ेहन ही नहीं था। एक दूसरे के साथ बद-अख़्लाक़ी बरतते थे। लूट-खसूट के ज़रिए माल हासिल करते थे। उनको जितना अपने पास है उसमें कामयाबी नहीं दिखाई देती थी, बल्कि जितना दूसरे के पास है उसमें कामयाबी दिखाई देती थी। अपने पास दस लाख हैं उसमें कामयाबी नहीं दिखाई देती थी बल्कि दूसरे के नव्वे लाख में कामयाबी दिखाई देती थी। इसलिए वे दूसरों से लेने की फ़िक्र में लगे रहते और दूसरे उनसे लेने की फ़िक्र में लगे रहते। फिर छीना-झपटी होती और छीना-झपटी होकर आपस में लड़ाईयाँ और झगड़े होते और क़ौमें की क़ौमें इसके अन्दर तबाह व बरबाद होतीं। क्योंकि दुनिया छोटी है और चाहने वाले ज़्यादा। हर शख़्स चाहता है कि पूरी दुनिया मेरे हाथ में आ जाए। मगर इस तरह

दुनिया तो किसी के हाथ आ नहीं सकती। लेकिन आपस में लड़ाई और झगड़े ज़रूर होते रहते हैं।

आसमान वाला तुम पर रहम करेगा

और जब आदमी के दिल में आख़िरत की बड़ाई आ जाती है और अल्लाह के ख़ज़ानों में से आख़िरत के अन्दर क्या मिलेगा, इस पर यक़ीन आ जाता है, तो आदमी सोचता है कि मैं कितना दूसरों को दूँ। सदक़ा करूँ, ज़कात दूँ, अपने रिश्तेदारों के साथ सिला-रहमी करूँ, माँ-बाप को दूँ, औलाद को दूँ, पड़ोसियों की ख़िदमत करूँ यहाँ तक कि अगर ग़ैर-मुस्लिम परेशानहाल हो तो उसकी भी परेशानी दूर कर दूँ। तो अल्लाह पाक इस पर भी सवाब देंगे और बहुत बड़ी जन्नत इनायत फ़रमायेंगे।

अगर कोई ग़ैर-मुस्लिम भी ऐसा दिखाई दे कि जिसके ऊपर रहम और मेहरबानी करनी चाहिए तो यह उसके ऊपर भी रहम करेगा। क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया है:-

اِرْحَمُوْا مَنْ فِی الْاَرْضِ یَرْحَمْکُمْ مَّنْ فِی السَّمَآءِ

तर्जुमाः- ज़मीन वालों पर तुम रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।

तुम ज़मीन वालों पर अपनी हैसियत के मुताबिक़ रहम करोगे तो आसमान वाला भी अपनी शान के एतिबार से तुम पर रहम करेगा।

दुनिया में रहम करेगा।

क़ब्र में रहम करेगा।

हश्र में रहम करेगा।

यहाँ तक कि बे-अ़मल ईमान वाले को जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाख़िल करके उस पर रहम करेगा।

इख़्लास ज़रूरी है

मेरे मोहतरम दोस्तो! मुस्लिम हो या ग़ैर-मुस्लिम, जिस पर भी रहम

किया जाए उसकी वजह से आसमान वाला हम पर रहम करेगा। लेकिन ये सारी बातें निर्भर हैं इख़्लास पर। यानी सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिए यह सब करे।

अल्लाह की पकड़ कब आती है?

मैं यह अ़र्ज़ कर रहा था कि अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम ने अल्लाह की तरफ़ से आकर लोगों को सीधा रास्ता बताया और लोग सीधे रास्ते पर आए। सीधे रास्ते पर आने वालों को शुरू में मुजाहदे और तकलीफ़ें बरदाश्त करनी पड़ीं। मगर बाद में फिर अल्लाह की मदद भी आई। और जिन्होंने नबियों की बात को नहीं माना, अपने माल व ताक़त और संख्या की अधिकता के घमण्ड में रहे, उनपर अल्लाह की तरफ़ से पकड़ आई।

तकब्बुर और उसका अन्जाम

तीन चीज़ों का घमण्ड और तकब्बुर आदमी को होता है:-

एक यह कि मेरे पास सरमाया ज़्यादा है।

दूसरे यह कि मेरे पास ताक़त ज़्यादा है।

तीसरे यह कि मेरे हिमायती और साथी ज़्यादा हैं।

.... इन तीन चीज़ों के अन्दर लोग इतराते हैं। और बड़े ख़राब-ख़राब काम करते हैं।

ख़ियानत करना, धोखा देना, लोगों को तकलीफ़ें पहुँचाना, ज़ुल्म करना। इन बुराईयों में मुब्तला हो जाते हैं। जिसमें ख़ूब माल जाता है। पूरी ताक़त लगाते हैं। फिर जाकर हाँ में हाँ मिलाने वाले कुछ मिल जाते हैं। लेकिन इससे उनकी आख़िरत की ज़िन्दगी बिगड़ जाती है। उनकी क़ब्र की ज़िन्दगी बिगड़ जाती है। बिगड़ते-बिगड़ते आख़िर में एक ऐसा झटका लगता है कि उनकी दुनिया की ज़िन्दगी भी बिगड़ जाती है।

बन्दरों की तरह उछल-कूद

जब आदमी का ज़ेहन अल्लाह की तरफ़ से हटता है और दूसरी

****

तरफ़ चला जाता है। जब ऐसे लोगों पर अल्लाह की तरफ़ से मुसीबत आती है तो लंगूर की तरह उछल-कूद करते हैं। एक जगह जब मुसीबत आई तो उछलकर दूसरी तरफ़ चले गए। फिर वहाँ पर मुसीबत आई तो बन्दर की तरह उछलते हुए किसी और तरफ़ चले गए।

इसी तरह जो अल्लाह से जुड़े हुए नहीं होते, वे कभी इधर और कभी उधर होते रहते हैं। उन बेचारों को कभी चैन नहीं रहता। मैं उनको ग़रीब कहता हूँ, यतीम कहता हूँ, मिस्कीन कहता हूँ, चाहे वे अपने आपको कितना ही बड़ा कहते हों, लेकिन उनको चैन नहीं रहता।

अल्लाह के फ़ैसले से कोई बच नहीं सकता

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम एक झटके में तबाह हो गई। उनकी बुराईयों के जो सरदार थे यानी हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का बेटा और उनकी बीवी, हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपने बेटे से कहा कि ऐ बेटे! तू कश्ती के अन्दर सवार हो जा, तू अल्लाह की ताक़त को मान ले।

बेटे ने यूँ कहा कि मैं पहाड़ के ऊपर चला जाऊँगा। वह मुझे पानी से बचा लेगाः

سَاٰوِیۡۤ اِلٰی جَبَلٍ یَّعۡصِمُنِیۡ مِنَ الۡمَآءِ (پ۱۲ع۴)

तर्जुमाः- मैं जा चढूँगा पहाड़ पर, जो बचा लेगा मुझको पानी से।

नूह अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमायाः-

لَا عَاصِمَ الۡیَوۡمَ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ (پ۱۲ع۴)

तर्जुमाः- आज अल्लाह के फ़ैसले से कोई बच नहीं सकता, सिवाए उसके जिस पर अल्लाह रहम करे।

आख़िरकार अन्जाम वही हुआ जो क़ौम वालों का हुआः-

وَحَالَ بَیۡنَهُمَا الۡمَوۡجُ فَکَانَ مِنَ الۡمُغۡرَقِیۡنَ ۝ (پ۱۲ع۴)

तर्जुमाः- बहुत बड़ी मौज आई और वह डूब गया।

क़ौमे आ़द की सरकशी और ख़ुदा का अ़ज़ाब

अब क़ौमे आ़द आई। उसको हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम ने समझाया। उन्होंने कहा कि देखो! बहुत बुरा होगा अगर अल्लाह की बात को नहीं माना। अल्लाह की ताक़त को तस्लीम नहीं किया। अल्लाह की इबादत नहीं की।

देखो! अल्लाह बहुत बड़े लश्कर वाला है। पूजा सिर्फ़ अल्लाह की करनी है।

उन्होंने क्या समझा! कि नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम को तो अल्लाह ने पानी से हलाक किया और हमारा गुरू हमको यह बताकर गया है कि पहाड़ वाटर प्रूफ़ हैं। हमारी टाँगे लम्बी-लम्बी हैं। एक छलाँग लगाएँगे और ऊपर चले जाएँगे। पानी हमारा कुछ नहीं कर सकेगा। यह गुमान करके ये लोग पहाड़ के ऊपर चले गए। हालाँकि अल्लाह के यहाँ सज़ा देने के तरीक़े अनेक हैं। अब की बार अल्लाह ने ज़ोर की हवा चलाई। हवा तो पहाड़ों के ऊपर भी चली जाती है। जिससे सब के सब तबाह व बरबाद हो गए।

क़ौमे समूद की सरकशी और ख़ुदा का अ़ज़ाब

उसके बाद क़ौमे समूद आई। अल्लाह के रसूल ने उसको भी समझाया कि देखो! अल्लाह की ताक़त को मान लो। तुमसे पहले क़ौमे नूह और क़ौमे आ़द ने नहीं माना तो वे तबाह व बरबाद हो गए। अगर तुम नहीं मानोगे तो तुम भी तबाह व बरबाद हो जाओगे। मगर क़ौमे समूद के ज़ेहन में क्या था? कि अल्लाह के यहाँ तबाह व बरबाद करने के लिए क्या है? सिर्फ़ हवा और पानी! जबकि हमारे पास वाटर प्रूफ़ भी है और एयर प्रूफ़ भी है। पहाड़ों के अन्दर ही मकान बना लेंगे। पहाड़ों के अन्दर ही रहेंगे, न तो पानी वहाँ तक पहुँच सकेगा और न हवा पहुँचेगी।

लेकिन अल्लाह पाक ने उनको सज़ा दी। बावजूद यह कि ये लोग

पहाड़ के बेहतरीन मकानों के अन्दर थे। एक फ़रिश्ते ने ज़ोर की चीख़ मारी। जिससे उनके कानों के परदे फट गए और वही जगह उनके लिए क़ब्र बन गई।

नेमत व मुसीबत का ख़ुदाई क़ानून

सारे अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के क़िस्से में अल्लाह ने यह बात बताई कि जिन्होंने भी अल्लाह की ताक़त को तस्लीम किया। अल्लाह के ख़ज़ानों को माना। अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात पर यक़ीन किया। अल्लाह पाक ने उनकी मदद फ़रमाई। और जिन्होंने नहीं माना, बावजूद ताक़त, सरमाये और संख्या के अल्लाह ने उनकी पकड़ फ़रमायी।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी अपने ज़माने के बेईमान और भटके हुए लोगों को समझाया कि देखो! समझ जाओ! कहीं तुम्हारे ऊपर मुसीबत न आ जाए। मेरी बात मान लोगे तो आसमान से भी बरकत होगी। ज़मीन से भी बरकत होगी। आपस में अमन-चैन, सुकून और मुहब्बत पैदा होगी। मज़ेदार ज़िन्दगी दुनिया की भी बनेगी और मरने के बाद जन्नत मिलेगी। जिसमें हमेशा-हमेशा रहोगे। लेकिन उन लोगों ने इस बात की तरफ़ ध्यान ही नहीं दिया और कहाः-

رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ○ (پ۲۳)

यानीः- क़ियामत के दिन का कौन इन्तिज़ार करे, हमारे लिये क़ियामत में जो सज़ा और हिसाब है, उसको दुनिया में ले आओ।

लेकिन अल्लाह पाक बड़े मेहरबान हैं। कितना ही गुनाहगार आदमी हो, उसकी फ़ौरन पकड़ नहीं करते। बल्कि उसके लिए हिदायत का और ईमान का सामान और इन्तिज़ाम करते हैं। उनके पास नबियों को भेजते हैं। उनके ऊपर मुसीबतें लाते हैंः-

لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ

ताकि रोने-धोने लगें...... कि ऐ अल्लाह! हमारी मुसीबत को दूर कर

दे, हम तेरी बात को मानेंगे।

और कभी अल्लाह पाक उनके ऊपर नेमतें डालते हैं:-

لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ

ताकि वे शुक्रगुज़ारी करें...... कि ऐ अल्लाह! हम तो बहुत गुनाहगार हैं। हमने बहुत गुनाह का काम किया। फिर भी आपने इतनी नेमतों से नवाज़ा। ऐ अल्लाह! हम तेरा शुक्र अदा करते हैं। अब तेरी नाफ़रमानी नहीं करेंगे। तो अल्लाह तआ़ला ये सारे इन्तिज़ाम करते हैं इनसान को सीधे रास्ते पर लाने के लिए।

अज़ाब से पहले अल्लाह का क़ानून

बिल्कुल हठधर्मी पर जब आदमी आ जाता है तो फिर आख़िर में अल्लाह पाक वही करते हैं कि उनकी आख़िरत की ज़िन्दगी बिगड़ जाती है। दुनिया की ज़िन्दगी और क़ब्र की ज़िन्दगी बिगड़ जाती है और दुनिया बनते-बनते आख़िर तक पहुँच गई लेकिन अल्लाह का एक झटका आया तो बनी बनाई दुनिया बिगड़ गई। फ़िरऔन की भी बिगड़ी, क़ारून की भी बिगड़ी, हामान की भी बिगड़ी। ये सारी बातें कुरआन के अन्दर नाज़िल हुईं। और उस ज़माने के बेईमानों और ईमान वालों को पढ़-पढ़कर सुनाई गईं। ईमान वालों ने बात मान ली और कहा कि बेशक यही बात है, जो आपने कहा।

लेकिन जो बेईमान थे, उन्होंने नहीं मानी बल्कि कहा कि:

اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ٥ (پ٧)

तर्जुमा:- ये तो पुरानी कहानियाँ हैं।

मगर अब भी अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों की पकड़ नहीं की। लेकिन बहुत ही हठधर्मी पर लोग आ गए। जब बिगड़े हुए लोग ज़्यादा हठधर्मी पर आ जाते हैं तो अल्लाह तआ़ला अक्सर ऐसा करते हैं कि सुधरे हुए लोगों को एक तरफ़ कर देते हैं, और बिगड़े हुए लोगों को एक

तरफ़ कर देते हैं। सुधरे हुए लोगों पर ग़ैबी मदद लाते हैं और बिगड़े हुए लोगों पर ग़ैबी पकड़। हर नबी के ज़माने में अल्लाह पाक ने ऐसा किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में भी ऐसा किया। अन्सार ने माँग की कि आप मदीना आ जाएँ। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए और सहाबा भी मदीना मुनव्वरा पहुँच गए।

अबू जहल का ग़ुरूर चकनाचूर

बदर की लड़ाई में अबू जहल और उसके साथियों के ज़ेहन में यह था कि हमारे पास ताक़त है, पूँजी है। हमारी संख्या ज़्यादा है। उनको जाकर सिर्फ़ ख़त्म करना है। ख़त्म करके ख़ुशी की पार्टी करेंगे। उसमें अ़रब वालों कि दावत करेंगे। तो देखो! चौदह साल से ये लोग उछल रहे थे। मगर जब बदर की लड़ाई हुई तो बेईमान मक्का वालों को मालूम हो गया कि असल ताक़त किसके पास है।

अब अल्लाह ने उन लोगों को इजाज़त दे दी कि उन भटके हुए लोगों को पकड़ें।

क़ुरबानी का मिज़ाज किस तरह बनाया गया

मक्का के अन्दर अल्लाह पाक ने इजाज़त नहीं दी थी। मक्का मुकर्रमा के अन्दर भटके हुए लोग ईमान वालों को मारते थे। ज़ुल्म व सितम ढाते थे। जबकि ईमान वाले डरपोक नहीं थे। मारने वाले अगर बहादुर थे तो मार खाने वाले भी बहादुर थे। यह बात और है कि बहादुर को बहादुर नहीं मार सकता। वह फ़ौरन मुक़ाबले पर आ जाएगा।

लेकिन ये मार खाने वाले सहाबा जो बहादुर थे। उनके ज़ेहन में एक बात बैठी हुई थी कि अल्लाह बड़ा ताक़त वाला है। उसके हुक्म को हम पूरा करेंगे तो अल्लाह की ताक़त हमारी हिमायत में आयेगी। और अल्लाह का हुक्म तोड़ेंगे तो अल्लाह की ताक़त हमारे ख़िलाफ़ हो जाएगी। क्योंकि

अल्लाह पाक का हुक्म मक्का के अन्दर यह थाः-

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ۔

(پ۵، سورۃ النساء)

तर्जुमाः- क्या आपने नहीं देखा उन लोगों को जिनसे कह दिया गया कि रोक लो अपने हाथों को और नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात दो।

कि वे लोग तुम पर जुल्म करेंगे मगर तुम सब्र इख़्तियार करो। सामूहिक तौर पर हमला न करो। नमाज़ अदा करो। ज़कात निकालो। ताकि नमाज़ और ज़कात के ज़रिये अल्लाह के हुक्मों पर अपनी जान और माल लगाने का मिज़ाज पैदा हो जाए। इन बातों के ज़रिये बड़ी रूहानी तरक़्क़ी हासिल करोगे। और बहुत आगे बढ़ जाओगे। लेकिन अपने हाथों को रोको। चुनाँचे उन्होंने अपने हाथों को रोक लिया। ख़ूब मार खायी, बरदाश्त किया। इससे उनके अन्दर सब्र आया। तक़्वा आया। उनके अन्दर दुआ की ताक़त आई और रूहानी ताक़त बढ़ती चली गई।

मूसवी तालीम

'बदर' के मौक़े पर मक्का के काफ़िरों को बड़ा गुस्सा आया कि कमज़ोर और बेहैसियत लोग हमारे तिजारती क़ाफ़िले को गिरफ़्तार करने के लिए निकल पड़े हैं। उनकी इतनी हिम्मत हो गई?

अल्लाह पाक भटके हुए लोगों को कभी ज़रा गुस्सा भी दिलाते हैं ताकि वे गुस्से में आकर टकरा जाएँ। जैसे फ़िरऔन को गुस्सा आया बनी इस्राईल पर, कि ये हमारी मार खाने वाले, इनकी पिटाईयाँ करके, इनकी औरतों से हम अपने घर का काम लेते थे। और अब इनकी यह हिम्मत हो गई कि सब के सब जमा होकर मिस्र से निकल रहे हैं। इस पर फ़िरऔन को बड़ा गुस्सा आया। मगर बनी इस्राईल को इस बात पर इत्मीनान था कि अल्लाह के हुक्म को पूरा करने के लिए जब हम निकले हैं तो अल्लाह की ताक़त हमारे साथ होगी। और अल्लाह की ताक़त का

****

मुक़ाबला सारी दुनिया की ताक़तें मिलकर नहीं कर सकतीं।

فَاسْرِ بِعِبَادِیْ لَیْلاً اِنَّکُمْ مُتَّبَعُوْنَ ٥ (پ۲۵)

तर्जुमाः- मेरे बन्दों को लेकर ऐ मूसा रातों रात निकल जाओ। और फ़िरऔन तुम्हारा पीछा करेगा। यह याद रखना।

तो ज़ाहिरन उन बनी इस्राईल पर बड़ा मुजाहदा आया। तकलीफ़ उठाई। इतनी तकलीफ़ कि एक तरफ़ तो फ़िरऔन पीछा कर रहा है और दूसरी तरफ़ वतन छूट रहा है। जिसकी वजह से वतन के अन्दर कमाना-खाना सब गया। लेकिन उन लोगों ने कहा कि अल्लाह का हुक्म पूरा करेंगे तो अल्लाह की ताक़त हमारे साथ होगी। अल्लाह की नेमतों के ख़ज़ाने से हमारा ताल्लुक़ होगा। यही तालीम उन को हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने दी थी।

हालात से प्रभावित होना ऐब नहीं

मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! जब हालात बिगड़ते हैं तो अच्छे से अच्छे आदमी प्रभावित हुए बग़ैर नहीं रहते। अच्छे से अच्छे दीनदार मुतास्सिर (प्रभावित) हो जाते हैं। हालात से असर लेना ऐब नहीं। लेकिन इतना मुतास्सिर होना कि अल्लाह का हुक्म टूट जाए, यह ऐब है। अगर अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हुक्म छूट गया तो अल्लाह की ताक़त ख़िलाफ़ होगी। अगर अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हुक्म नहीं छूटा और हालात से मुतास्सिर (प्रभावित) हो गए तो इस मुतास्सिर होने में कोई हर्ज नहीं है।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम भी मुतास्सिर हो गए। अल्लाह पाक ने कहा कि जाओ फ़िरऔन के पास और उसे दावत दो। तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम भी घबरा गए।

اِنَّنَا نَخَافُ اَنْ یَّفْرُطَ عَلَیْنَآ اَوْ اَنْ یَّطْغٰی ٥ (پ۱۶)

तर्जुमाः- हम डरते हैं कि वह हम पर ज़्यादती करे या सरकशी करे।

तो अल्लाह तबारक व तआला ने फ़रमायाः-

لَا تَخَافَا اِنَّنِیْ مَعَکُمَاۤ اَسْمَعُ وَاَرٰی ٥ (پ۱٦)

तर्जुमाः- मत डरो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। सुनता हूँ और देखता हूँ। मेरे इल्म और कुदरत से कोई निकल नहीं सकता। घबराते क्यों हो? चुनाँचे अल्लाह पाक इस मौक़े पर उनको तसल्ली दे रहे थे।

बनी इस्राईल पर ख़ुदा की अचानक मदद

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! बनी इस्राईल वतन छोड़कर निकल गए। कारोबार छोड़कर निकल गए। फ़िरऔन को पता चला तो उसे गुस्सा बहुत आया। उसने कहा कि ऐलान कर दोः

اِنَّ هٰٓؤُلَاۤءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ٥ وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ٥ وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ٥ (پ۱۹)

यानी ये बनी इस्राईल बहुत थोड़े हैं। और उन्होंने हमको बहुत गुस्सा दिलाया है। और हम सब हथियार बन्द हैं।

चुनाँचे सब के सब बनी इस्राईल का पीछा करते हुए चले। यहीं बनी इस्राईल पर मुजाहदा आया कि आगे समन्दर और पीछे फ़िरऔन का लश्कर, और ये दरमियान में चारों तरफ़ से घिर गए। उन्होंने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहा कि चारों तरफ़ से हमारे लिए परेशानी ही परेशानी है। आगे जाएँ तो समन्दर डुबोए। पीछे जाएँ तो फ़िरऔन मारे। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने सोचा अगर अल्लाह के अ़लावा किसी और का असर इन पर पड़ा तो कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह की मदद रुक जाए। इसलिए भरपूर ज़ोर देकर कहाः

كَلَّاۤ اِنَّ مَعِیَ رَبِّیْ سَيَهْدِيْنِ ٥ (پ۱۹،ع۸)

तर्जुमाः हरगिज़ नहीं! मेरे साथ मेरा रब है, वह मुझको राह बताएगा।

अल्लाह पाक जब मदद फ़रमाते हैं तो मदद करने के दो सैकेंड पहले पता भी नहीं चलता कि ख़ुदाई मदद आने वाली है और जब मदद आती

है तो आदमी हैरान रह जाता है कि अल्लाह ने कैसे मदद की।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को मालूम नहीं था कि अल्लाह कैसे मदद करेंगे। लेकिन इतना मालूम था कि मदद ज़रूर फ़रमाएँगे। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने डंडा लिया और समन्दर पर मार दिया। फिर तो सब ने देखा कि समन्दर में रास्ते ही रास्ते निकल आए। जिनमें से हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनकी क़ौम गुज़र रही थी।

फ़िरऔ़न ने कहा कि देखो! समन्दर के अन्दर भी रास्ते बन गए। न मालूम क्या-क्या हो रहा है। अब जो भी बनी इस्राईल का आदमी मिले उसकी पिटाई शुरू कर दो।

سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَ هُمْ وَنَسْتَحْيِ نِسَآءَ هُمْ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُوْنَ ۝

(پ۹سورۃ الاعراف ع۵)

तर्जुमाः- फ़िरऔ़न ने कहा कि हम अभी उन लोगों के बेटों को क़त्ल करना शुरू कर दें और उनकी औ़रतों को ज़िन्दा रहने दें, और हमको उन पर हर तरह का ज़ोर है।

इन हालात में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने क़ौम वालों की ढारस बंधाई, फ़रमायाः-

اِسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا (پ۹)

तर्जुमाः- अल्लाह से मदद माँगो और सब्र करो।

अल्लाह की ताक़त सब्र करने वालों के साथ

इस वाक़िए में क़ियामत तक के लिए हमारी रहबरी हो रही है कि जब चारों तरफ़ से मुसीबत आ जाए तो उस वक़्त में अल्लाह से मदद माँगें और सब्र करें। सब्र करने वालों के साथ अल्लाह की ताक़त होती है। और अल्लाह से मदद माँगने वालों के साथ अल्लाह की मदद होती है।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बनी इस्राईल से कहाः-

اِسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا (پ۹)

तर्जुमाः- अल्लाह से मदद माँगो और सब्र करो।

إِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ (پ۹ سورۃ الاعراف ع۵)

तर्जुमाः- बेशक ज़मीन अल्लाह की है, वह जिसे चाहता है इसका वारिस बनाता है।

कभी यह ज़मीन भलों को देता है जैसे- दाऊद अ़लैहिस्सलाम, सुलैमान अ़लैहिस्सलाम। और कभी यह ज़मीन बुरों को देता है- जैसे फ़िरऔ़न, हामान, क़ारून। लेकिन अन्जाम परहेज़गारों का बेहतर होगा।

छोटे मुजरिम को सज़ा बड़े मुजरिम से

और ऐसा भी होता है कि बाज़ मर्तबा अल्लाह पाक छोटे मुजरिम को सज़ा देने के लिए बड़े मुजरिम को मुतैयन कर देते हैं। ये बनी इस्राईल छोटे मुजरिम थे। क्योंकि ये अल्लाह को मानते थे, नबियों को मानते थे, आख़िरत को मानते थे, लेकिन काम बेईमानों जैसे करते थे। दुनियादारों जैसे करते थे। ऊपर से लेबल दीन का था अन्दर दुनिया भरी हुई थी। तो उन पर अल्लाह पाक नाराज़ हुए और एक बड़ा मुजरिम उनके ऊपर मुसल्लत कर दिया। और वह फ़िरऔ़न था। जिसने ख़ुदाई का दावा किया था। उसने उनको ख़ूब सताया। ख़ूब मारा पीटा।

छोटे मुजरिम की छोटी सज़ा

छोटे मुजरिम की छोटी जेल में सज़ा होती है और बड़े मुजरिम की सज़ा बड़ी जेल में होती है। कलिमा पढ़ने वाला अगर ख़राब आमाल करता है तो यह छोटा मुजरिम है। अल्लाह तआ़ला इसे छोटे जेलख़ाने यानी दुनिया के अन्दर सज़ा देते हैं। और आज भी अल्लाह पाक यही कर रहे हैं। ईमान वाले जब उनके आमाल ख़राब हो जाते हैं, और काम बेईमानों जैसे करते हैं। सूद, झूठ, चोरी, ग़बन, ख़ियानत, नाप-तौल में कमी, डन्डी का मारना, मिलावट करना। इन सारी ख़राबियों में लिप्त होते हैं। और घरों के अन्दर भी न मालूम कितनी क़िस्म की ख़राबियाँ उनकी

औरतों और बच्चों में होती हैं।

हालाँकि अल्लाह को मानते हैं, नबी को मानते हैं, आख़िरत को मानते हैं। तो ये छोटे मुजरिम हुए। इनके ऊपर बड़े मुजरिमों को सज़ा देने के लिए मुतैयन कर देते हैं। बड़े मुजरिम वे हैं जो न अल्लाह को मानते हैं, न नबी को मानते हैं, न आख़िरत को मानते हैं।

बड़े मुजरिमों को एक ही वक़्त में

उन्नीस क़िस्म की सज़ाएँ

फिर बड़े मुजरिम को सज़ा कहाँ होगी?

बड़े मुजरिम की सज़ा बड़े जेलख़ाने में होगी। और वह बहुत ही डरने की जगह (यानी जहन्नम) है। जिसके अन्दर जहन्नमियों को उन्नीस क़िस्म कि सज़ाएँ अल्लाह पाक देंगे, और एक ही वक़्त में देंगे। हर सज़ा देने के लिए बेशुमार फ़रिश्ते होंगे।

وَمَايَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ (الآية)

अल्लाह के लश्कर को कोई नहीं जानता, मगर वही जानता है।

हर सज़ा देने के लिए फ़रिश्तों का सरदार और उसके मातहत न मालूम कितने फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे। इस तरह उन्नीस सरदार और उनके मातहत सज़ा देने वाले फ़रिश्ते होंगे।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ (الآية)

और उनको उन्नीस क़िस्म कि सज़ाएँ होंगी। इसलिए कि ये बड़े मुजरिम हैं।

जहन्नमियों का खाना और पानी

जिस अल्लाह ने आसमान व ज़मीन और चाँद व सूरज को अपने एक हुक्म से बनाया। एक हुक्म देकर इनको तोड़ भी देगा। उन्होंने उस अल्लाह की ताक़त को तस्लीम नहीं किया, जिसकी वजह से अल्लाह

उनको जहन्नम में डाल देगा। उसके अन्दर एक हज़ार साल तक खाना माँगते रहेंगे जिस पर उन्हें काँटेदार दरख़्त मिलेंगे। भूख की वजह से वे खाना शुरू करेंगे तो वे काँटे हलक़ के अन्दर चुभ जाएँगे। जिसकी वजह से वे चीख़ें मारेंगे और पानी-पानी चिल्लाएँगे। एक हज़ार साल तक पानी माँगेंगे तब खोलता हुआ बदबूदार पानी उन्हें दिया जाएगा।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात करोड़ों साल के बाद भी सच्ची

यह हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दी हुई ख़बर है, यह झूठी नहीं हो सकती। उनकी ज़बान से निकली हुई बात करोड़ों साल के बाद भी ग़लत नहीं हो सकती। इसलिए कि वह जो बात कहते हैं वह अल्लाह की तरफ़ से 'वह्य' (अल्लाह का भेजा हुआ पैग़ाम) होती है। अपनी तरफ़ से कोई बात नहीं कहते। तो जो बात होती है, अल्लाह की तरफ़ से होती है।

وَمَا يَنطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ٥ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ٥ (پ۲۷ سورۃ النجم ع۵)

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हिजरत और सुराक़ा इब्ने मालिक

जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ग़ारे-सूर से हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ निकले और छुपकर मदीना की तरफ़ जा रहे थे तो चारों तरफ़ मक्का के काफ़िरों ने आदमी दौड़ा दिये कि जो कोई उनको ज़िन्दा पकड़कर ला दे या मार डाले तो उसको इनाम मिलेगा। चारों तरफ़ आदमी फैल गए लेकिन अल्लाह की शान देखिए।

सुराक़ा इब्ने मालिक ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को जाते हुए देख लिया। (और यह वही शख़्स है कि बदर के दिन जिसकी शक्ल में शैतान आया था) लेकिन "जिसे ख़ुदा रक्खे उसे कौन चक्खे" उसका

घोड़ा ज़मीन के अन्दर धंस गया और वह घबरा गया। उसने इरादा किया कि अब मैं नहीं पकडूँगा। तब घोड़ा निकल सका और चलने लगा। फिर सोचा कि यह तो इत्तिफ़ाक़न ऐसा हो गया होगा, मैं ज़रूर पकडूँगा। मगर फिर घोड़ा धंसा। दो तीन बार ऐसा हुआ तो उसने तय कर लिया कि अब मैं हरगिज़ उनसे कोई छेड़छाड़ नहीं करूँगा।

फ़रमाँबरदारों और नाफ़रमानों के लिए नेमत व मुसीबत का फ़ल्सफ़ा

देखो! इस बात को ज़ेहन में अच्छी तरह बिठा लो कि अगर आदमी फ़रमाँबरदार है तो उस पर भी नेमतें और तकलीफ़ें आती हैं। और अगर नाफ़रमान है तो उस पर भी नेमतें और तकलीफ़ें आती हैं। फ़रमाँबरदारों पर अल्लाह की मदद आती है, लेकिन उमूमन बिल्कुल आख़िरी मर्हले में। और नाफ़रमानों को भी अल्लाह तआला नेमतें देता है और उमूमन शुरू में देता है। लेकिन यह बात ज़ेहन में बिठा लो कि नाफ़रमान पर जो नेमत आती है वह ऐसी है जैसे चूहे के पिन्जरे में घी की रोटी। यह ख़ुश करने के लिए नहीं रखी जाती बल्कि चूहे को गिरफ़्तार करने के लिए रखी जाती है। और फ़रमाँबरदारों को जो नेमत मिलती है वह ऐसी है जैसे तोते के पिन्जरे की नेमत। तोते के पिन्जरे में नेमत रखी जाती है दिल बहलाने के लिए। तो नाफ़रमानों की जो नेमत है वह चूहे के पिन्जरे वाली नेमत है, जो आख़िर में गिरफ़्तार होगा। और फ़रमाँबरदार पर जो नेमत आई है वह तोते के पिन्जरे वाली नेमत है जो ख़ुश होकर रखी जाती है।

नाफ़रमानों की तकलीफ़ की मिसाल ऐसी है जैसे किसी को गुस्से में छुरा मार दिया जाए और गुस्से के छुरे का अन्जाम मौत है। लेकिन फ़रमाँबरदारों पर जो मुसीबत आती है, वह ऐसी है जैसे आपरेशन का छुरा। आपरेशन में भी छुरा मारा जाता है लेकिन आपरेशन के छुरे का

अन्जाम तन्दुरुस्ती है। तो दोनों छुरों के अन्दर फ़र्क़ है। इस फ़र्क़ को समझ लो।

इस फ़र्क़ को क़ुरआन पाक में अल्लाह पाक ने अलग-अलग बयान फ़रमा दिया है। फ़रमाँबरदारों की नेमत का नाम अल्लाह पाक ने "फ़तहे बरकात" (बरकतों का खुलना) रखा है और नाफ़रमानों पर जो नेमतें डालते हैं उसका नाम "फ़तहे अबवाब" (दरवाज़ों का खुलना) रखा है। और इनके बारे में अलग-अलग आयतें इरशाद फ़रमाई हैं।

"फ़तहे बरकात" फ़रमाँबरदारों के लिए

फ़रमाँबरदारों के लिए नेमतों के बारे में फ़रमायाः-

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ. (پ۹ سورۃ الاعراف ع۱۲)

यानी अगर बस्तियों वाले ईमान वाले बन गए। तक़्वा वाले बन गए। तो हम उन पर आसमान और ज़मीन से बरकतें खोल देंगे।

आमदनी में बढ़ोतरी से धोखा

लेकिन अगर कोई आदमी यूँ कहे कि मौलवी साहिब आप चाहे जितनी तक़रीरें करें, हमारा हाल तो यह है कि हमारा सारा कारोबार हराम है। इसमें शरीअत की किसी पाबन्दी का लिहाज़ नहीं है। इसके अन्दर झूठ है। धोखा, ग़बन, ख़ियानत, रिश्वत, नाप-तौल में कमी, मिलावट सब कुछ है। लेकिन इसके बाद भी अल्लाह पाक ने हमें बड़ी बरकत दे रखी है। तो मैं कहूँगा कि उस बेचारे को धोखा लग रहा है। क्योंकि नाफ़रमानी के साथ जो आमदनी हो जाए वह ऐसी है जैसे क़ारून की आमदनी है। और अल्लाह की फ़रमाँबरदारी के साथ जो आमदनी हो, वह हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम, हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की आमदनी जैसी है। ख़ालिस आमदनी के ज़्यादा होने से यह न समझें कि अल्लाह की तरफ़ से बरकत आ गई। अरे पहलवान का बदन गठीला

और मोटा है। और एक आदमी है कि उसका बदन बीमारी की वजह से मोटा हो गया है। अगर ऐसा शख़्स यूँ कहे कि देखो पहलवान भी मोटा और मैं भी मोटा ...... अरे मेरे भाई! पहलवान के बदन का मोटा होना तन्दुरुस्ती है और इसका बदन वरम और बीमारी की वजह से है।

तो इसी तरह अगर नाफ़रमानी के साथ आमदनी ज़्यादा है तो समझ लीजिए कि वर्मीला बदन है, और अगर फ़रमाँबरदारी के साथ आमदनी ज़्यादा होती है तो समझ लो कि गठीला बदन है।

"फ़तहे-अबवाब" नाफ़रमानों के लिए

अगर बावजूद खुदा की नाफ़रमानी करते रहने के आमदनी हो गई तो अल्लाह पाक इसको दूसरी आयत में फ़रमाते हैं:-

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ.

(پ۷ سورۃ الانعام ع۱۱)

यानी जो नसीहत की गई, उसे भूल गए। (ज़िन्दगी नाफ़रमानी वाली बना ली) तो हम हर चीज़ के दरवाज़े उनके लिए खोल देते हैं।

मुल्क का दरवाज़ा, माल का दरवाज़ा, हर लाईन का दरवाज़ा। हालाँकि वह नाफ़रमान है। ख़राब काम करने वाला है। आगे फ़रमाते हैं:-

حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ٥

(پ۷ سورۃ الانعام ع۱۱)

यहाँ तक कि जब नेमतों के दरवाज़े खुले और वे खुश हुए तो हम उनकी अचानक पकड़ कर लेते हैं। और वह आदमी हैरान रह जाता है कि आख़िर यह क्या हो गया।

खुदा की पकड़ अचानक होती है

कभी तो अल्लाह की तरफ़ से पकड़ आती है अचानक, और कभी आहिस्तगी से आती है। जैसे चूहे घर के अन्दर ज़्यादा हो गए। चालीस-

पचास पिन्जरे घर के अन्दर फैला दिए गए। और हर पिन्जरे का दरवाज़ा खोल दिया गया। हर पिन्जरे में अलग-अलग क़िस्म की चीज़ें रख दी गईं। अब फ़र्ज़ करो कि कोई समझाने वाला समझाए कि नेमत तो है मगर इस नेमत के पीछे मुसीबत भी है। तो वह कहेगा बस चुप रह! ऊँटों के ज़माने की बातें करता है, रॉकिट के ज़माने में। नेमत तो दिखाई दे रही है मगर मुसीबत कहाँ है?

समझाने वाले ने कहा कि मुसीबत तो बहुत भारी है। मेरी बात तो मान लो। तब उसने कहा कि जब तू अन्दर घुसेगा और रोटी के टुकड़े खींचेगा तो कड़-कड़ की आवाज़ आएगी। अगर उस पर भी तुमने नहीं माना और ज़ोर से खींचा तो खट की आवाज़ आएगी। तब समझो कि वारन्ट कट गया। अब चारों तरफ़ से तेरे भागने का कोई रास्ता नहीं रहेगा और तू अन्दर ही अन्दर रहेगा। जब सुबह होगी तो लड़के आएँगे और ख़ुशी मनाएँगे। कहेंगे कम्बख़्त! तू हमारी किताबें खाता था। वे बड़े-बड़े सुएँ लाएँगे और तुझे चुभोएँगे। तब तू अन्दर तकलीफ़ के मारे कूदेगा और बच्चे बाहर ख़ुशी के मारे कूदेंगे। उसके बाद औरतें आएँगी कढ़ाई में पानी गर्म करेंगी और तेरे ऊपर डालेंगी। उस गर्म पानी के अन्दर तू मर जायेगा फिर तुझे सड़क पर फैंक दिया जायेगा। बिल्ली आयेगी और तुझे खा जायेगी। तो ये सब मुसीबतें उस नेमत के पीछे छुपी हुई हैं।

ईमान वालों का मुक़ाबला दज्जाल भी नहीं कर सकेगा

अल्लाह पाक फ़रमाते हैं कि हम अचानक पकड़ते हैं, और आदमी हैरान रह जाता है कि अरे यह क्या हो गया? जैसे-

फ़िरऔन, हामान और अबू जहल को पकड़ा।

क़ैसर व किसरा को अचानक पकड़ा।

आख़िर में याजूज माजूज और दज्जाल की भी अचानक पकड़ करेगा। हालाँकि दज्जाल के पास इतना माल होगा कि किसी ख़राब आदमी के पास हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर अब तक नहीं हुआ होगा।

और याजूज व माजूज के पास इतनी ताक़त होगी कि भटके हुए लोगों में इतनी ताक़त वाला आज तक नहीं गुज़रा। लेकिन जब अल्लाह की ताक़त उनके ख़िलाफ़ होगी, और अल्लाह के तकलीफ़ों वाले ख़ज़ाने से उनका ताल्लुक़ होगा, तो उनकी ताक़त और उनका ख़ज़ाना काम नहीं आएगा। और उन्हीं के ज़माने में ईमान वाले जो बड़े ग़रीब होंगे, संख्या भी नहीं के बराबर, लेकिन अल्लाह की ताक़त उनके साथ होगी। अल्लाह की बरकतें उनके साथ होंगी। तब उन ईमान वालों का मुक़ाबला याजूज व माजूज भी नहीं कर सकेंगे। दज्जाल बरबाद होगा। चालीस दिन के अन्दर याजूज व माजूज भी बरबाद होंगे। सिर्फ़ चन्द दिनों के अन्दर ईमान वालों के लिए अल्लाह तआला चारों तरफ़ से बरकतों के ख़ज़ाने खोल देगा।

मेरे मोहतरम दोस्तो! चूहा नहीं मानता है, क्योंकि उसको मुसीबत दिखाई नहीं देती। उसने चारों तरफ़ घूम-फिरकर कहा कि न तो बच्चे दिखाई देते हैं और न औरतें। यह तू बेकार की बातें करता है।

लेकिन आप जानते हैं कि सारी चीज़ें मौजूद हैं मगर चूहा नहीं देख सका। इसी तरह अल्लाह के नबी ने जो जन्नत और दोज़ख़ की बातें बताईं, वे सब सच और हक़ हैं। इससे सच्ची बात नहीं हो सकती। भले ही वह आज हमारी नज़रों से ओझल है।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेराज मे तशरीफ़ ले गए। वहाँ अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कुछ आईन्दा की बातें बताईं और मौजूदा ज़माने की भी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जन्नत को देखा, जहन्नम को देखा। ज़मीन से आसमान पर आमाल का जाना देखा और आसमान से ज़मीन पर फ़ैसलों का उतरना देखा।

करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है

ख़ुदा तआ़ला आसमान पर जो फ़ैसला करता है, उसका मुक़ाबला सारी दुनिया के लोग नहीं कर सकेंगे। अल्लाह का फ़ैसला तबाही व

बरबादी का आएगा तो सारी दुनिया के लोग मिलकर अपनी ताक़त और अपने सरमाये के ज़रिये बच नहीं सकते। और अल्लाह का फ़ैसला अमन व अमान का आएगा तो सारी दुनिया के लोग मिलकर उस अमन व अमान को ख़त्म नहीं कर सकते। करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है। अल्लाह को तस्लीम नहीं करोगे तो तुम्हारे बेड़े ग़र्क़ होंगे।

قُمْ فَاَنْذِرْ ٥ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ٥ (پ٢٩ سورة المدثر ع١٥)

तर्जुमाः- मेरे प्यारे नबी खड़े हो जाओ और लोगों को डराओ और अल्लाह की बड़ाई बयान करो।

हर जगह आप हज़रात को जमाअ़तें बना-बनाकर जाना है। अल्लाह की बड़ाई बयान करनी है। सब को समझाना है कि अल्लाह की ताक़त को तस्लीम करो तो तुम्हारे बेड़े पार होंगे। और अगर अल्लाह की ताक़त को तस्लीम नहीं करोगे तो जब तक अल्लाह ढील देगा पता नहीं चलेगा, और जिस दिन अल्लाह की पकड़ आएगी तो उस पकड़ से सारी ताक़तें और सारे सरमायेदार मिलकर नहीं बचा सकते।

इब्तिला और अ़ज़ाब किनके लिए?

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! फ़रमाँबरदारों के लिए जो नेमत आती है उसका नाम "फ़तहे बरकात" है। और नाफ़रमानों के लिए जो नेमत आती है उसका नाम "फ़तहे अबवाब" रखा गया। इसी तरह तकलीफ़ भी दो तरह की होती है- फ़रमाँबरदारों वाली तकलीफ़, इसका नाम "इब्तिला" है। और एक नाफ़रमानों वाली तकलीफ़ है उसका नाम "अ़ज़ाब" है।

وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ٥

(پ٢١ سورة السجدة ع١٥)

तर्जुमाः- और अलबत्ता चखाएँगे हम उनको थोड़ा अ़ज़ाब बड़े अ़ज़ाब से पहले। ताकि वे लौटकर आ जाएँ।

****

अज़ाब वापस लाने के लिए

दुनिया के अन्दर जितनी तकलीफ़ें अल्लाह की तरफ़ से आती हैं, वे इसलिए हैं कि आदमी वापस लौट आये। जैसे जब गाड़ी वर्जित क्षेत्र (NO INTERY ARIA) में चली जाती है तो पुलिस वाले सीटी बजाते हैं, लाल झण्डी दिखाते हैं और चिल्लाते हैं "लाईन डैंजर लाईन डैंजर" और डंडा मारते हैं। अगर ड्राईवर कहता जाए कि बिल्कुल नहीं लाईन किलयर और कहता हुआ आगे चला गया तो वह पुलिस बड़े पुलिस के पास फ़ोन कर देता है। वे गाड़ी की प्रतीक्षा में होते हैं। जब गाड़ी आती है तो एक दम से टायर फ़ैल कर देते हैं, लाईसेंस तलब करते हैं और हवालात के अन्दर बन्द कर देते हैं। फिर हवालात के अन्दर उसकी पिटाई करते हैं।

क़ियामत फ़ैसले का दिन

यह क़ब्र भी हवालात है और क़ियामत DAY OF FINAL JUDGEMENT यानी फ़ैसले का दिन। अब वह ड्राईवर हवालात के अन्दर जिस क़दर पिटता है वह तुम जानते हो। तब कहता है मैं वापस जाने को तैयार हूँ। मुझे छोड़ दो। तो पुलिस वाले कहेंगे कि तू वापस जाने को तैयार है। लेकिन अब हम तुझको वापस नहीं जाने देंगे। जब सीटी बजी थी, जब डंडा मोटर पर मारा था, जब लाल झण्डी तुझे दिखाइ गई थी, तब अगर वापस हो जाता और बाज़ आ जाता तो ठीक था। अब हम तुझे वापस नहीं होने देंगे।

इसी को अल्लाह पाक भी कहते हैं कि जब मैंने ज़लज़लों (भूकंप) के डंडे मारे, मैंने तूफ़ान की सीटियाँ बजाईं, मैंने ताऊन की बीमारी की झण्डियाँ दिखाईं ताकि तुम अपने रवैये से बाज़ आ सको और सही रास्ते पर आ जाओ। नबियों वाले तरीक़े पर आ जाओ। लेकिन उस वक़्त तो तुमने सुना नहीं और अब तुम अपने अन्दर तब्दीली करना चाहोगे, अपनी रविश से वापसी करना चाहोगे तो हम तुमको वापस होने और लौटने नहीं

****
देंगे। दुनिया के अन्दर नबियों ने आकर समझाया। नबियों का आना बन्द हुआ तो जमाअतों ने फिरकर समझाया लेकिन तुमने बात को नहीं समझा और उसी ग़लत रास्ते पर रहे। बावजूद यह कि तुम्हारे ऊपर डंडे ज़लज़लों के, तूफ़ानों के और हवाओं के पड़ते रहे, लेकिन तुम अपनी ग़लत रविश से नहीं रुके। अब मरने के बाद जब तुम पर सज़ायें आएँगी तो कहता है कि मैं अब अपने तरीक़े में सुधार करना चाहता हूँ। मैं अपने रास्ते से वापस आने को तैयार हूँ। लेकिन अब अल्लाह तुझे वापसी नहीं करने देगा।

حَتّٰىٓ اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنَ ○ (پ۱۸سورۃالمؤمنون ع۶)

तर्जुमाः- यहाँ तक कि पहुँचे उनमें से किसी को मौत, कहेगा ऐ रब! मुझको फिर भेज दीजिए।

मरने वाला कहता है कि ऐ मेरे परवर्दिगार! मुझे लौटा दे। अब मैं वापस जाकर अच्छे-अच्छे काम करूँगा। अगर मुझे हराम का माल लाखों में भी मिलेगा तब भी मैं नहीं लूँगा। थोड़े माल पर गुज़ारा करूँगा। मुझे तू लौटा दे।

अल्लाह कहेगा हम तुझे नहीं लौटातेः-

كَلَّا

हरगिज़ नहीं।

तुम्हारे सामने एक जगह बर्ज़ख़ है, उसके अन्दर तुम्हें उस दिन तक रहना होगा जब तक कि एक-एक को उठाकर अल्लाह के सामने पेश न कर दिया जाए। तुम्हें अब "आलमे बर्ज़ख़" (मरने के बाद जहाँ रूहें रहती हैं) में जाना होगा। अब तुमको लौटाऊँगा नहीं।

फ़रमाँबरदारों पर तकलीफ़ की मिसाल

और तकलीफ़ फ़रमाँबरदारों पर भी आती हैः-

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ. (پ۲ سورۃ البقرۃ ع۳)

अल्लाह फ़रमाते हैं कि हम तुमको आज़मा कर रहेंगे कुछ ख़ौफ़ से, भूख से और जान व माल और मेवों के नुक़सान से।

तुमको डर होगा कि अगर हमने अल्लाह की बात मानी तो हमारी आमदनी कम हो जाएगी। फिर बाद में डर ही नहीं बल्कि सच-मुच की तकलीफ़ भी होगी, भूख भी होगी और माल भी बजाए मिलने के और जाता रहेगा। जानें भी जाती दिखाई देंगी और नतीजा भी तुम्हारे ख़िलाफ़ दिखाई देगा।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं:-

وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ٥ الَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ٥ (پ۲ سورۃ البقرۃ ع۳)

तर्जुमाः- और सब्र करने वालों को खुशख़बरी दे दो कि जब उनके ऊपर तकलीफ़ आती है तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और उसी के पास लौटकर जाना है।

मौत एक पुल है

मिसाल के तौर पर हज को जाना है। बीवी बच्चे पहले जहाज़ से, भाई बहन दूसरे जहाज़ से, माँ-बाप तीसरे जहाज़ से और खुद चौथे जहाज़ से गए। कोई सदमा नहीं होता। क्योंकि दिल के अन्दर होता है कि सब जहाज़ मक्का मुकर्रमा पहुँच गए हैं। मैं भी पहुँच जाऊँगा।

اَلْمَوْتُ جِسْرٌ يُوْصِلُ الْحَبِيْبَ اِلَى الْحَبِيْبِ

तर्जुमाः मौत एक पुल है जो एक दोस्त को दूसरे दोस्त से मिलाता है।

तो हम भी अल्लाह के हैं और अल्लाह की तरफ़ जाना है। जितने भी इस दुनिया से हम से पहले चले गए हैं, अल्लाह के पास जाकर उनसे मुलाक़ातें कर लेंगे।

****

أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ٥

(پ۲ سورۃ البقرۃ ع۴)

तर्जुमाः- ऐसे ही लोगों पर इनायतें हैं अपने रब की और मेहरबानी। और वही लोग सीधी राह पर हैं।

विदेश में हमारी जमाअ़त का क़िस्सा

अब मैं अपने बयान को एक क़िस्सा सुनाकर ख़त्म करता हूँ। सारा बयान तो आप लोगों ने सुन लिया। आख़िरत की बात को आप लोगों ने बार-बार सुना। दुनिया के अन्दर का उतार-चढ़ाव सुना। नेमतों और तकलीफ़ों का इम्तिहान सुना। अब अगर एक क़िस्सा सुना दूँ तो सारी बातों के लिए ज़ेहन हमवार हो जाएगा। अल्लाह से दुआ़ करता हूँ कि अल्लाह तुम्हारा भी वैसा ही क़िस्सा बना दे।

हम लोग गए मुल्क शाम (सीरिया), और हमारे साथ अच्छी-ख़ासी जमाअ़त थी। हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहिब की ज़िन्दगी में हमारे विदेश के चार सफ़र हुए हैं। पहला हिजाज़े मुक़द्दस का **1971** ई० में। और दूसरा सफ़र उमरे के लिए और फिर वहाँ से मिस्र का। तीसरा सफ़र उमरे के लिए और फिर वहाँ से शाम का। और चौथा सफ़र मराकश का। ये चार सफ़र बड़े तफ़सीली हैं।

उन दिनों हमारा सफ़र शाम का था और हमारे साथ अच्छी जमाअ़त थी। दमिश्क़, हलब, हिमस वग़ैरह उन जगहों पर हमारी जमाअ़तें फिरीं। पैदल भी फिरीं और सवारियों से भी फिरीं। दमिश्क़ के अन्दर एक जगह हम लोग काम कर रहे थे। हमारे साथ सफ़र में जो लोग चलते थे वे ग़रीब भी थे और अमीर भी थे। डाक्टर भी थे और इन्जीनियर भी, क़ुली भी थे और मज़दूरी पेशा भी।

मस्जिद के उद्घाटन में शिरकत

हम लोग गश्त कर रहे थे। ऊपर से बर्फ़ पड़ रही थी। लोग मानूस

हो रहे थे। मस्जिदें भर रही थीं। इतने में एक मस्जिद का उद्घाटन वहाँ की हुकूमत की तरफ़ से तय हुआ। उस उद्घाटन के अन्दर कई मुल्कों के मंत्री और राजदूत और मुल्क शाम की सुप्रिम कोर्ट के जज (नयायधीश) और बहुत से मंत्री जमा हुए।

आप लोग जानते हैं कि जब कोई उद्घाटन होता है तो बड़े-बड़े लोग जमा हो जाते हैं और दो-दो मिनट की तक़रीरें करते हैं। और आख़िर में एक रस्सी (फ़ीता) होती है, उसको काट देते हैं। उद्घाटन हो गया।

अब वहाँ एक बड़े रसूख़ वाले शख़्स जो हमारी जमाअ़त के साथ रह चुके थे, उनके दिल में यह बात आई कि तब्लीग़ की बात सारे मंत्री और राजदूत भी सुनें। क्योंकि उन्हें यह सब सुनने का मौक़ा नहीं मिलता। उनसे मुलाक़ात करना भी मुश्किल होता है। क्योंकि उनके इर्द-गिर्द सुरक्षा बन्दोबस्त होता है। वह हमारे पास भी आए और कहने लगे कि तुम लोग भी हमारी इस मस्जिद के उद्घाटन में आ जाओ। मैंने कहा कि भाई हम लोग तो यहाँ पर काम करेंगे। मस्जिद का उद्घाटन सब मिलकर कर लें तो हम भी कभी उस मस्जिद में आएँगे और गश्त करेंगे। लोगों को जमा करेंगे और काम करेंगे। अभी मत ले जाइये। उन्होंने कहा कि नहीं! तुम्हें अभी चलना है।

आ़म लोगों में काम करना ज़्यादा फ़ायदेमन्द

हमने कहा कि देखो! ऐसे बड़ों के पास जाकर बात को समझाना मुश्किल है। आ़म पब्लिक तो बात को समझ रही है। उनके अन्दर जब दीनदारी आएगी, जब अख़्लाक़ आएँगे, जब वे क़त्ल व ग़ारत्गरी को छोड़ देंगे, चोरी-डकैती को छोड़ देंगे तो इन्शा-अल्लाह ये लीडर भी मुतास्सिर (प्रभावित) होंगे कि ये लोग अच्छे लोग हैं। लोगों को अच्छा बनाते हैं। इसलिए हमें आ़म लोगों के अन्दर काम करना है। लेकिन भाई उनकी ज़िद बढ़ी और हमारा इनकार बढ़ा। आख़िर हम हार गए तो हमने कहाः चलो।

वफ़्दों (प्रतिनिधि मंडलों) से मिलने का नबवी तरीक़ा

फिर हमने कहा कि हमारे ये कम्बल और कपड़े देखो, और उन लोगों को देखो, तो हमारा और उनका कोई जोड़ नहीं बैठेगा। ज़्यादा से ज़्यादा कपड़े ज़रा साफ़ कर लेंगे, टोपी ज़रा साफ़ पहन लेंगे।

दोस्तो! इसमें कोई हर्ज नहीं। वफ़्दों (प्रतिनिधि मंडलों) से मिलने के कपड़े रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अलग होते थे। ख़ैर! हम वहाँ चले गए। अपना-अपना कम्बल ओढ़कर एक तरफ़ जमाअ़त बैठ गई। उन लोगों की दो-दो मिनट की तक़रीरें सुनीं। उसके बाद उन्होंने कहा कि मौलवी साहिब आप बातें करें। मैंने कहा कि बात तो हो गई। उन्होंने कहा कि नहीं! तुम्हें भी करनी है। और उन्होंने मेरा तआ़रुफ़ (परिचय) लोगों से कराया कि यह हमारे हिन्दुस्तान से आए हुए मेहमान हैं। यह जो काम करते हैं उसका बहुत फ़ायदा हुआ है। कितनी जगहों पर चोरियाँ डकैतियाँ हो रही थीं, वहाँ के लोगों ने छोड़ दिया। क़त्ल व ग़ारत्गरी हो रही थी, लेकिन इनकी बरकत से कितनों की जानें बच गईं। ये जितने लोग हिन्दुस्तान से आए हैं ये हमारे मेहमान हैं। हमें इनकी भी बातें सुननी हैं। तो सबने कहा कि ज़रूर सुनेंगे। हम खड़े हो गए। अब ज़ाहिर है कि ऐसे मौक़ों पर ढाई घन्टे की तक़रीर नहीं हो सकती। यहाँ पर मुख़्तसर बयान किया।

दाना डालने वाले को राज़ी करो

हमने उन लोगों से कहा कि आज पूरी दुनिया के अन्दर जो मेहनत हो रही है वह ख़ानों के बदलने कि मेहनत हो रही है। हर आदमी चाहता है कि मैं नीचे के ख़ाने से ऊपर के ख़ाने में चला जाऊँ। लेकिन ख़ानों के बदलने से ज़िन्दगी नहीं बदलती। जिस ख़ाने में अल्लाह ने रखा है, उस ख़ाने में रहकर दाना डालने वाले को हम राज़ी कर लें तो कामयाबी है। जैसे कबूतर के लिए ख़ाने बने हुए हैं। नीचे से ऊपर तक। अब कबूतर

नीचे से ऊपर के ख़ाने में जाए, यह उसकी कामयाबी नहीं है। उसकी कामयाबी यह है कि दाना डालने वाले को राज़ी करे। अगर नीचे के ख़ाने में होगा तो भी कामयाब होगा। और ऊपर के ख़ाने में होगा तो भी कामयाब होगा। और नीचे के ख़ाने से ऊपर के ख़ाने में तो चला गया मगर दाना डालने वाले को नाराज़ कर दिया तो नीचे के ख़ाने वाले नीचे रहकर कामयाब होंगे और ऊपर के ख़ाने वाले ऊपर जाकर बरबाद होंगे।

दाना डालने वाला अल्लाह है। नीचे के ख़ाने में रहकर अल्लाह को राज़ी करे, और ऊपर के ख़ानों में जाकर भी अल्लाह को राज़ी करे। और ख़ानों के बदलने के लिए मेहनत न करे। आज हर आदमी ख़ानों के बदलने की मेहनत कर रहा है। अगर हवलदार है तो थानेदार बनने की कोशिश कर रहा है। पुलिस वाला कमिश्नर बनने की कोशिश कर रहा है। गवर्नर प्रधान मंत्री बनने की कोशिश कर रहा है। अगर पूरे मुल्क का प्रधान मंत्री बन गया तो अब भी उसके ज़ेहन में यह होता है कि आस-पास के दो-चार मुल्कों को हड़प कर ले। तो इस तरह हर आदमी ख़ाने के बदलने की मेहनत कर रहा है।

और हम जमाअत के लोग वह करने की कोशिश करते हैं जो अल्लाह और उसके रसूल ने बतलाया है कि ख़ानों के बदलने के बजाए जिस ख़ाने में हो, उसमें रहकर दाना डालने वाले को राज़ी करो। और इसके लिए ये छह नम्बर बड़े काम के हैं।

ईमान की ताक़त, नमाज़ की पाबन्दी, तालीम के हल्क़े, अल्लाह का ज़िक्र, क़ुरआन की तिलावत, दुआओं का एहतिमाम, एक-दूसरे की ख़ैरख़्वाही करना, इकराम करके आपस में संगठन पैदा करना। और इस दावत के काम को पूरी उम्मत में चालू करना।

एक अच्छी मिसाल

देखो! बनी इस्राईल नीचे के ख़ाने में थे। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को लोग नीचे के ख़ाने में समझते थे। और फ़िरऔन, हामान, क़ारून ये

****
सारे के सारे ऊपर के ख़ाने में थे। लेकिन उन्होंने ख़ाने के अन्दर दाना डालने वाले को नाराज़ कर दिया तो ऊपर के ख़ाने के अन्दर रहने के बावजूद बरबाद हो गए। और बनी इस्राईल ने अल्लाह को राज़ी कर लिया तो नीचे के ख़ाने के अन्दर रहकर भी कामयाब हुए।

हमारी दावत यह है कि तुम जौनसे भी ख़ाने में हो, दाना डालने वाले को राज़ी करके कामयाब हो जाओ। इसके लिए हम आप लोगों से चार-चार महीने माँगते हैं।

शुक्रिये का इज़हार

आप लोग भी किसी मौक़े पर हमारे मुल्क में तशरीफ़ लाएँ। आप लोगों के बाप-दादाओं ने आकर हमारे अन्दर कितना दीन फैलाया। और हमारे बाप-दादा बिल्कुल भटके हुए थे। तुम्हारे बाप-दादा ने हमारे बाप-दादा को दीन सिखाया। वरना हम सारे पहले एक से ज़्यादा खुदाओं मानने वाले थे। लेकिन तुम्हारे बाप-दादा ने हमें ईमान पर डाल दिया, हम आपका शुक्रिया अदा करते हैं।

मुल्क शाम में मस्जिद के उद्घाटन के मौक़े पर हमने इस तरह की बातें कहीं और फिर उनसे कहा कि देखो! हमारी जमाअतें तुम्हारे मुल्कों में आयेंगी तो जमाअतों के बारे में तुम पब्लिक से कह दो कि ये भले लोग हैं, इनका साथ दो।

हमारी जमाअत की पहचान

और हमारी जमाअत की पहचान और निशानी ये होंगी कि यह जमाअत अपना ख़र्च करके आयेगी। पैसा नहीं माँगेगी। कन्धे पर बिस्तर उठाएगी। मस्जिदों के अन्दर ठहरेगी। ये लोग अपना खाना पका कर खाएँगे। और लोगों के घरों पर जाकर कोशिश करके उन्हें मस्जिदों में लाएँगे। उनको नमाज़ सिखाएँगे। दीन सिखाएँगे। उनकी जमाअत बनाकर बाहर, निकालेंगे। और चार महीने की तश्कील करेंगे। यह हमारी उस

जमाअ़त की अ़लामत (पहचान) है। अगर तुमको कहीं ख़बर मिल जाए कि हमारे मुल्क में ऐसी जमाअ़त आई है तो ज़रा वहाँ के लोगों से कह देना कि उन लोगों को मस्जिदों में ठहराओ। उन लोगों से काम लो। दीन की बातों को सुनो। और आप लोग भी उन लोगों की बात सुनें।

हमारे ज़ेहन में यह था कि इन लोगों के ज़ेहन साफ़ हो जाएँ ताकि इनके मुल्कों में जमाअ़त जाए तो आसानियाँ हों।

आप लोग भी हिन्दुस्तान आएँ

ख़ैर! उसके बाद उन लोगों ने रस्सी काटी और मस्जिद का उद्घाटन हो गया। उसके बाद नाश्ता आया। हम सब और वे भी बैठ गए। हमारे ज़ेहन में यह बात थी कि आपस में तआ़रुफ़ (परिचय और जान-पहचान) होना चाहिए। उन्होंने तआ़रुफ़ कराया। ख़ूब हंसी-खुशी के साथ बातें हुईं। उनकी तश्कील करने की हमने कोशिश की कि अभी न जा सको तो कभी भी हिन्दुस्तान आना। और अगर हिन्दुस्तान आना हो तो हमारी बंगले वाली मस्जिद में ज़रूर आना। बिल्कुल सीधी-सादी मस्जिद है। पूरी दुनिया से लोग वहाँ आते हैं।

उर्दुन के लिए हमारी रवानगी

दूसरे दिन हमारा सफ़र उर्दुन के लिए था। हम रेल के अन्दर थे और वह बड़ी तेज़ी से अ़म्मान शहर की तरफ़ जा रही थी। उस रेल के अन्दर अ़रब नौजवान भी बैठे हुए थे। क़िमारबाज़ी हो रही थी। कैरम बोर्ड खेल रहे थे। शोर-गुल हो रहा था। जब हम लोग रेल के अन्दर दाख़िल हुए तो चारों तरफ़ से वे हमको घूम-घूमकर देखने लगे। हम भी चाहते थे कि कुछ बात हो। लेकिन यह चाहते थे कि ज़रा मानूस करके बात की जाए। इस बीच उन्होंने हमसे पूछा कि तुम कौन लोग हो? मैंने कहा कि हम लोग हिन्दुस्तानी हैं। उस ज़माने में जबलपुर के अन्दर बहुत ज़बरदस्त फ़साद (दंगा) हुआ था और वे लोग फ़साद के दृश्य टेलीवीज़न पर देखते

थे। उसके मन्ज़रों (दृश्यों) को वे लोग बयान करने लगे कि जबलपुर में यह हुआ वह हुआ। यह सियासी बात शुरू कर दी।

नेहरू जी कैसे आदमी हैं?

फिर उन नौजवानों में से एक ने कहा कि मैं आप से एक सवाल करना चाहता हूँ। मैंने कहा करो! उन्होंने कहा कि नेहरू कैसे आदमी हैं? (उस वक़्त हमारे मुल्क के प्रधान मंत्री नेहरू जी थे) इस क़िस्म की बात का जवाब देना हमारे लिए मुनासिब नहीं था। और फिर अपने मुल्क के प्रधान मंत्री के बारे में हम कोई ऐसी बात कहें जो उनके ख़िलाफ़ पड़े, यह भी ठीक नहीं। फिर हमने सोचा कि हमें तो सियासी क़िस्म की कोई बात करना नहीं, मुरीद अपने पीर की करे, मुजाविर अपने मदीने की करे, हमें तो बस तब्लीग़ की करनी है। तो हमने कहा कि एक इनसान हैं। उनके दो कान हैं। दो आँखें हैं। दो होंठ और एक ज़बान है। दो हाथ हैं। दो पैर हैं और एक दिल है। और अल्लाह ने हर इनसान को ये चीज़ें दी हैं। और इसका इस्तेमाल यूँ है। उसके बाद डेढ़ घन्टा तब्लीग़ की लाईन से बयान किया। वे लोग सुनते रहे। फिर हमने उनसे पूछा कि क्या आप लोग इस काम को करेंगे। उन लोगों ने कहा कि हम तैयार हैं। मैंने कहा कि सिर्फ़ चार महीने आप लोगों से माँग रहा हूँ। हम उर्दुन जा रहे हैं लेकिन अभी फ़िलहाल अ़म्मान की फ़लाँ मस्जिद में उतरेंगे। क्या तुम लोग वहाँ पहुँचकर अ़म्मान की फ़लाँ मस्जिद के अन्दर आओगे? उन लोगों ने कहा कि ज़रूर आएँगे।

ट्रेन गोया चलती-फिरती मस्जिद बन गई

अब वे लोग सियासत की बात भूल गए। उनकी समझ में यह बात आ गई कि ये लोग जो काम कर रहे हैं यही ठीक है। नमाज़ का वक़्त हुआ, नमाज़ पढ़ी, और उन लोगों ने भी पढ़ी। तालीम के हल्क़े में भी शिरकत की। ज़िक्र के हल्क़े में भी शरीक हुए। ट्रेन गोया चलती-फिरती

मस्जिद बन गई। फिर हम लोग अपने दूसरे कामों के लिए मश्विरे में शरीक हो गए कि आगे क्या करना है और कैसे करना है, और वे नौजवान अख़बार पढ़ने लगे।

मुल्के शाम में इन्क़िलाब आ गया

मैंने उनसे पूछा कि अख़बार में कोई ख़ास ख़बर है? उन्होंने कहा कि "है" मैंने पूछा "क्या ख़बर है?" उन्होंने कहा "मुल्के शाम के अन्दर इन्क़िलाब आ गया" मैंने कहा इन्क़िलाब? उन्होंने कहा कि "हाँ!" मैंने कहा कि "किसकी हुकूमत बनी?" उन्होंने कहा "फ़लाँ फ़लाँ की" मैंने पूछा और क्या-क्या हुआ? उन्होंने कहा कि फ़लाँ-फ़लाँ लोग जेल के अन्दर दाख़िल कर दिए गए हैं। और ये वे लोग थे जो मस्जिद के उद्घाटन में थे और हमारे साथ खाने में बैठे थे। और जिनसे हमने कहा था कि असल मेहनत ख़ाने के बदलने की नहीं है बल्कि जिस ख़ाने में हैं उसमें दाना डालने वाले को राज़ी कर लिया जाए। तो मैंने अपने साथियों से कहा कि देखो! उन लोगों को याद आ गया होगा कि हम ऊपर के ख़ाने में थे और आज हमको अल्लाह ने नीचे के ख़ाने में कर दिया। अल्लाह करे कि उनकी समझ में हमारी बात आ गई हो और वे अल्लाह को राज़ी करने वाले बन जाएँ।

मेरे मोहतरम दोस्तो! हमारा काम ऐसा है जो हर जगह हो सकता है लेकिन इसको सीखना पड़ेगा। करना तो पूरी ज़िन्दगी है और सारी उम्मत को यह काम करना है।

एक दम से उछलेगा तो गिर पड़ेगा

लेकिन हज़रत मौलाना इलियास साहिब हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहिब और हज़रत जी मौलाना इनामुल्-हसन साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया कि इस काम को पूरी ज़िन्दगी करना है और इसे पूरी उम्मत करे काम तो यही है। लेकिन धीमे-धीमे करना चाहिए एक दम से उछलेगा तो

गिर पड़ेगा। और सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ेगा तो मन्ज़िल तक पहुँच जाएगा। पहली सीढ़ी चार महीना है, इसमें आदमी हिक्मत सीखेगा और तब वह हिक्मत के साथ काम करेगा।

घर में दीन की फ़िज़ा कैसे बने?

हमारे बहुत से नौजवान भाई जमाअ़त में फिरे और दीनदारी आ गई। घर पर चले गए और घर पर जाकर दुकान पर बैठे। ख़ूब कमाकर दिया। बाप ख़ुश, माँ भी ख़ुश, बीवी भी ख़ुश। सारे घर के लोग ख़ुश। फिर उसने कहा अब्बा जान! मैं दुकान चलाऊँगा। भाई जान को एक चिल्ले के लिए जमाअ़त में भेज दें। भाई जान तैयार हो गए और जमाअ़त में चले गए। अब यह दुकान भी चला रहा है और घर का निज़ाम भी चला रहा है। और महीने के तीन दिन भी दे रहा है। गश्त, तालीम वग़ैरह भी कर रहा है और घर वाले ख़ुश हैं।

फिर कहा कि अब्बा जान! मेरा जी चाहता है कि मेरी अम्मी भाई जान के साथ तीन दिन के लिए औ़रतों की जमाअ़त के साथ चली जाएँ। अम्मी का ज़ेहन बना। फिर कहा कि अब्बा जान! मेरा जी चाह रहा है कि आप भी चार महीने दे दें। हम दुकान वग़ैरह चलाते रहेंगे। अब्बू भी चार महीने के लिए चले गए। अब सारा घर दीन की दावत में लग गया। दीन का माहौल हो गया। अब आधे लोग जमाअ़त में जाते हैं और आधे लोग घर पर रहते हैं। घर के काम करते हैं, कारोबार के निज़ाम को चलाते हैं।

अगर हमने भी ऐसा बनने की कोशिश की तो हमारे बड़े बूढ़े इन्शा-अल्लाह नौजवानों को नहीं रोकेंगे। और अगर वे रोकेंगे तो हम उन बूढ़ों की ख़ुशामद करेंगे।

अपना वाक़िआ़

जो शख़्स खड़ा हो गया और पुख़्ता इरादा कर लिया तो वह इन्शा-अल्लाह चार महीने पूरे कर लेगा। ऐसे कई क़िस्से हुए हैं। मैं बम्बई

के अन्दर इमामत किया करता था। एक जमाअत दिल्ली से पैदल चलकर बम्बई हमारी मस्जिद में आई। एक-एक दिन के लिए मुझे कई मर्तबा निकाला, और अमीरे जमाअत ने देखा कि मेरे ऊपर बड़ा असर पड़ा।

अमीर साहिब बिल्कुल बे-पढ़े थे। लेकिन एक हज़ार किलो मीटर पैदल चलने का मेरी तबीयत के ऊपर बड़ा असर पड़ा था। सारे लोगों ने देखा कि मौलवी पर बड़ा असर हुआ है। लेकिन उन लोगों ने बड़ी बेहतरीन तदबीर से काम लिया और मुझसे चार महीने नहीं माँगे और कहा कि हफ़्ते वाले इज्तिमा में आया करो। हम वहाँ पर जाते थे।

एक दिन एक ग्रेजुएट का बयान था। जो दो साल हिजाज़ मुक़द्दस (सऊदी अरब) में फिरकर आए थे। उनके बयान का मुझ पर इतना असर पड़ा कि उन्होंने चार महीने माँगे तो मैंने चार महीने उसी मस्जिद में खड़े होकर लिखवा दिये। घर गया तो घर वाले नाराज़, मस्जिद के मुतवल्ली नाराज़ और मक्तब (मदरसे) वाले नाराज़। बच्चों के माँ-बाप भी नाराज़। चालीस रुपये हमको इमामत के मिलते थे। और चालीस रुपया मक्तब के मिलते थे। ऊपर से दस हज़ार का क़र्ज़ा मुझ पर था। वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो चुका था। सारे घर वाले रोने लगे। लेकिन हमारे तब्लीग़ के जो दोस्त होते हैं उनको बहुत ग़म होता है, ख़ूब रो-रोकर दुआएँ माँगीं और मेरे पास आकर कहते रहे कि चलना है। हमने भी टिकट ख़रीद लिया। तीन सौ रुपये क़र्ज़ लिये और चले गए। बम्बई सैन्ट्रल स्टेशन पर हमारे रिश्तेदार रोकने आए और वे रो रहे थे। कहने लगे कि घर का पूरा ख़र्चा और ऊपर से इतना क़र्ज़ा है, क्या होगा? मैं भी परेशान हो गया।

चार महीने आज तक पूरे नहीं हुए

एक तब्लीग़ का काम करने वाला मुझको किनारे ले गया और कहा कि तुम यह समझ रहे हो कि तुम दीन का काम करोगे तो उजड़ जाओगे। अरे तुम चमकोगे। तुम्हरा घर चमकेगा। तुम्हारा मुल्क चमकेगा। यह तुम्हारा काम है जब ज़ोर से दर्द भरे लहजे में कहा तो मैं पानी-पानी हो

गया। मैंने कहा कि अच्छा मैं चलता हूँ। जेब में टिकट था। पैसे भी थे। मेरे रोकने वाले रिश्तेदार रोने लगे और कहते रहे उतर जाओ, उतर जाओ। लेकिन मैं नहीं उतरा और चला गया। और वे चार महीने आज तक पूरे नहीं हुए।

काश! मेरे चार महीने मौत तक पूरे न हों

और मैं तुम से दुआ़ की दरख़्वास्त करता हूँ कि वे चार महीने मौत तक पूरे न हों। और कोई काम रुका भी नहीं। सारे कामों को अल्लाह ने कर दिया। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप भी चार महीने और आठ महीने के लिए खड़े होकर अपने-अपने नाम लिखवा दें। अल्लाह तआ़ला हम सब को दीन का काम करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमायें और हमारा दीन के रास्ते में निकलना आसान फ़रमायें। आमीन।

तक़रीर (2)

आज हम लोगों में इस फ़िज़ा के न होने की बिना पर अगर किसी के घर पर जाकर पूछा कि "कहाँ हैं?" उन्होंने कहा कि बाज़ार में। "कब आयेंगे?" जवाब मिलेगा कि पता नहीं कब आयेंगे। इसलिये कि बाज़ार के तक़ाज़े में न मालूम कहाँ से कहाँ निकल जायें। तो बाज़ार जाने वालों के बारे में पता नहीं कि कब अयेंगे।

और अगर घर वाले कहें कि वह तो मस्जिद में गये हैं। कब आयेंगे? तो कहेंगे कि अभी आयेंगे। मस्जिद से तो फ़ौरन ही आ जाते हैं।

यहाँ कितना उलटा मामला है। वहाँ तो यह मामला था कि बाज़ार जाने के बाद जल्द ही आ जायेंगे और मस्जिद जाने के बाद पता नहीं। और हम लोगों का मामला यह है कि बाज़ार जाने के बाद पता नहीं कब आयेंगे और मस्जिद में गये तो फ़ौरन ही आ जायेंगे।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)
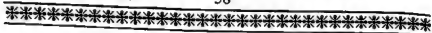
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ!

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो!

अल्लाह ने इस दुनिया के अन्दर इनसान को पैदा किया और उसकी ताक़त व हिम्मत के मुताबिक़ सलाहियत उसके अन्दर रखी। और ज़रूरत के अनुसार मेहनत का माद्दा भी रखा। अब इस मेहनत के ज़रिये इनसान अपनी ज़ात को क़ीमती कैसे बनाए? अगर इनसान इस मेहनत को अपनी ज़ात पर अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के बताए हुए तरीक़े पर ख़र्च करेगा तो इससे इसकी ज़ात क़ीमती बनेगी। और अगर यह अपनी मेहनत मख़्लूक़ के ऊपर लगा देगा तो बे-क़ीमत हो जाएगा।

अपनी ज़ात को क़ीमती बनाने का तरीक़ा

अपनी मेहनत को अपनी ज़ात पर सही तरीक़े पर लगाना, यह अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के ज़रिये और आसमानी किताबों के ज़रिये मालूम होगा। और हर ज़माने में नबियों ने यह काम किया है। अब चूँकि नबियों का आना बन्द हो गया तो यह काम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत के हवाले किया गया। यानी उम्मत नबियों वाला काम करे, और ऐसी फ़िज़ा बनाए कि जिस फ़िज़ा के अन्दर आदमी क़ीमती बन सके।

****

अपनी ज़ात पर मेहनत के फल

इनसान के क़ीमती बनने के लिए एक तरफ़ तो ईमान हो और दूसरी तरफ़ नेक आमाल हों, तब यह इनसान क़ीमती बनेगा। फिर अल्लाह तआला इसके दुनिया के हालात भी बनाएँगे और आख़िरत के भी हालात बनाएँगे। हर हाल में अल्लाह इसे कामयाब करेंगे।

नेमतों के अन्दर भी कामयाब होगा और तकलीफ़ों के अन्दर भी।

तन्दुरुस्ती के अन्दर भी और बीमारी के अन्दर भी।

मालदारी के अन्दर भी कामयाब, तंगदस्ती के अन्दर भी कामयाब।

कच्चे मकान के होगा तो कामयाब, पक्के मकान में होगा तो कामयाब।

जहाँ होगा कामयाब होगा। जब क़ब्र में जाएगा तो अल्लाह पाक अपने फ़ज़्ल व करम से वहाँ भी कामयाब करेंगे, और क़ियामत के दिन भी। बशर्ते कि नबियों के बताए हुए तरीक़े पर अच्छा बन जाए।

हर हाल में नाकाम

और अगर यह बुराईयाँ करता रहा। नबियों वाले तरीक़े पर न चला तो फिर यह इनसान बे-क़ीमत बनेगा। और बे-क़ीमत बनने के बाद यह इनसान नाकाम होगा। और हर हाल में नाकाम होगा। नेमतों में हो या तकलीफ़ों में हो, मालदार हो या तंगदस्त, बीमार हो या तन्दुरुस्त, हर हाल में यह नाकाम होगा। दुनिया के अन्दर भी और आख़िरत के अन्दर भी।

दीन की फ़िज़ा कैसे बनेगी?

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बताया हुआ तरीक़ा ऐसा है कि अगर कोई इसे अपनाये तो एक शख़्स तन्हा अच्छा बने ऐसा नहीं होगा, बल्कि दुनिया भर के लोग नेक बनेंगे। और सिर्फ़ नेक ही नहीं बल्कि दुनिया भर के लोग नेक बनाने वाले आदमी तैयार करेंगे। जब ये मेहनत करेंगे तो हर तरफ़ इसकी फ़िज़ा बनेगी। जैसे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में फ़िज़ा बनी। जहाँ-जहाँ सहाबा-ए-किराम

रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अज्मईन की जमाअतें गईं तो वहाँ-वहाँ ये सारी भलाईयाँ फैलती रहीं। और भलाईयों के फैलने पर अल्लाह पाक की मदद आती रही और बुराईयाँ मिटती रहीं। और बुराईयों वाले दबते रहे। बुराईयों वाले छुपते रहे।

बुराईयों वाले नेकियों पर आते रहे या मलियामेट हो गए।

अब वह काम कि जिसके ज़रिये इनसान भला बने और भलाई दुनिया में फैलकर अमन व अमान आए और आसमान से बरकतें उतरें, ज़मीन से बरकतें ज़ाहिर हों, इनसान के अन्दर जोड़ हो, मुहब्बतें पैदा हों। इसके लिए चन्द काम करने पड़ेंगे।

ईमान व यक़ीन कैसे ठीक होगा?

अव्वल ईमान की लाईन को ठीक करना होगा। ईमान को सात लाईन से ठीक करना है। और आमाल को चार लाईन से ठीक करना है। फिर दुनिया और आख़िरत के अन्दर कामयाबी है।

अब ईमान की सात लाईन को सही बनाना वह यह है:-

1. **आमन्तु बिल्लाहि** ………… अल्लाह का यक़ीन हो।
2. **व मलाइ-कतिही** ………… उसके फ़रिश्तों का यक़ीन हो।
3. **व कुतुबिही** ………… आसमानी किताबों का यक़ीन हो।
4. **व रुसुलिही** ………… अल्लाह के रसूलों का यक़ीन हो।
5. **वल्-यौमिल् आख़िरि** ………… क़ियामत का यक़ीन हो।
6. **वल्-क़द्रि ख़ैरिही व शर्रिही** ………… तक़दीर पर यक़ीन हो।
7. **वल्-बअ्सि बअ्दल् मौति** ………… मरने के बाद ज़िन्दा होने पर यक़ीन हो।

आगे में थोड़ी-थोड़ी तफ़सील इसकी अर्ज़ करूँगा। अल्लाह पाक हमें इस यक़ीन के पैदा करने की कोशिश की तौफ़ीक़ दे।

पूरी दुनिया के लिए अ़मली दावत

अब चार लाईन से आमाल ठीक करने होंगे। अव्वल इबादतों की लाईन ठीक करनी होगी। इस लाईन के अन्दर नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज, ये चार इबादतें हैं।

दूसरी लाईन, मुआ़शरत (सामाजिक ज़िन्दगी और रहन-सहन) ठीक करनी होगी।

तीसरे मामलात ठीक करने होंगे।

चौथे अख़्लाक़ ठीक करना होगा।

तो इबादात की जो लाईन बताई गई उस पर मेहनत करनी होगी। फिर समाजी ज़िन्दगी, रहन-सहन और घरेलू ज़िन्दगी, नबियों के तरीक़े पर आ जाएगी। और फिर मामलाती ज़िन्दगी और कारोबारी ज़िन्दगी भी नबवी तरीक़े पर आ जाए। इस सब के साथ अख़्लाक़ी मेयार आला हो जाए और हमारे अख़्लाक़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर हो जाएँ।

चार लाईन ख़ूब ज़ेहन में बैठा लोः-

इबादात की लाईन

समाजी ज़िन्दगी की लाईन

मामलात की लाईन

और अख़्लाक़ की लाईन।

अगर ये ठीक हो गईं तो ख़ूब जान लो कि यह पूरे आ़लम के लिए अ़मली तौर पर दावत होगी ...... लेकिन अ़मल के लिए क़ौल की भी दावत ज़रूरी है। मिसाल के तौर पर इस वक़्त मैं बोल रहा हूँ और आप सुन रहे हैं। तो इसके अन्दर ज़बान से बोलना भी होगा और अ़मली तौर पर वह चीज़ करनी भी होगी।

अ़मल के साथ इख़्लास की ज़रूरत

अब अ़मल के साथ-साथ एक चीज़ और होनी चाहिए और वह यह कि अन्दर की कैफ़ियत बनी हुई हो। ज़ाहिर में तो अ़मल हो और अन्दर से ख़ाली हो तो वह अ़मल भी काम नहीं आता। मिसाल के तौर पर शहीद है, सख़ी है, क़ारी है। उन्होंने अ़मल किया लेकिन अन्दर शोहरत का जज़्बा था। तो इस करने के बावजूद जहन्नम के अन्दर जलेंगे। तो एक तरफ़ क़ौल हो, एक तरफ़ अ़मल हो और एक तरफ़ अन्दर की कैफ़ियत भी बनी हुई हो।

नबी की मेहनत के तीन विषय

इन्हीं तीन चीज़ों दावत, तालीम और तज़किये (यानी अन्दर की सफ़ाई) के लिए हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिए दुआ़ की कि वह उम्मत की तरबियत इन्हीं तीन चीज़ों के साथ करें:-

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلاً مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِکَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْکِتَابَ وَالْحِکْمَةَ وَيُزَکِّيْهِمْ، اِنَّکَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَکِيْمُ ٥ (پ١، سورة البقرة، ع١٥)

तर्जुमाः- ऐ परवर्दिगार! भेज उनमें एक रसूल उन्हीं में का कि पढ़े उन पर तेरी आयतें और सिखा दे उनको किताब और तह की बातें और पाक करे उनको, बेशक तू ही है बहुत ज़बरदस्त, बड़ी हिक्मत वाला।

"यत्लू अ़लैहिम् आयाति-क" ...... यानी एक तरफ़ दावत होगी।

"व युअ़ल्लिमुहुमुल् किता-ब" .... यानी तालीम होगी।

"व युज़क्कीहिम्" .... यानी अन्दर की कैफ़ियत ठीक करेगा।

दावत के ज़रिये यक़ीन बनेगा। यक़ीन बनने के बाद फिर आदमी अ़मल करना चाहेगा। और अ़मल इल्म के बग़ैर सही नहीं होगा। फिर इल्म व अ़मल के सही होने का दारोमदार अन्दर की कैफ़ियत पर है, वह भी ठीक होनी चाहिए।

अन्दर इख़्लास होना चाहिए। अन्दर 'एहसान की सिफ़त' (यानी हर वक़्त यह तसव्वुर कि मेरे हर काम को अल्लाह तआला देख रहे हैं) होनी चाहिए। अन्दर अल्लाह पर भरोसा और तवक्कुल होना चाहिए।

बदकारी से बचता हो, तकब्बुर से बचता हो, दुनिया के लालच और ख़ुदग़र्ज़ी से बचता हो। दुनिया और माल की मुहब्बत उसमें न हो। तो ये तीन काम आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम करें, इसके लिए हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह से दुआ़ माँगी थी।

जिहाद की हक़ीक़त अल्लाह की तरफ़ बुलाना है

चुनाँचे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब मेहनत का मैदान तरतीब दिया तो उसमें ये तीनों बातें थीं। यानी दावत, तालीम और तज़किया (बातिन की सफ़ाई)। एक तरफ़ तो दावत का ख़ूब ज़ोर था। जितनी जमाअ़तें सहाबा की बाहर जाती थीं और फिर जितने जिहाद में जाते थे, तो उस जिहाद की हक़ीक़त भी तो दावत ही थी। लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाना। फिर अगर न मानें तो उनसे कहा जाता कि जिज़या (सुरक्षा के बदले लिया जाने वाला शुल्क) देकर समझौता कर लो। जिज़या देकर समझौता करेंगे तो वे रईयत बनेंगे। और कलिमा व ईमान वाले उनके पास जाकर बसेंगे। मस्जिदें बनायेंगे। मस्जिद वाले आमाल जारी करेंगे। वहाँ जाकर कारोबार करेंगे। और कारोबार को इस्लामी तरीक़े पर करके बताएँगे। वहाँ जाकर अपना घर भी बनाएँगे। और इस तरह घर के इस्लामी माहौल का मुज़ाहरा (प्रदर्शन) करेंगे।

एक तरफ़ मस्जिद और मस्जिद वाले आमाल हैं।

एक तरफ़ कारोबार और पाक इस्लामी कारोबारी तरीक़ा है।

एक तरफ़ घर और इस्लामी समाजी ज़िन्दगी गुज़ारने का नमूना है।

यह सब कुछ इस्लामी तरीक़े पर उनके सामने आएगा। अब जो यहूदी और ईसाई हैं, उनके गिरजाओं को नहीं तोड़ेंगे। उनके पादरियों और उलेमा को नहीं मारेंगे। उनके बीवी-बच्चों पर हाथ नहीं डालेंगे। सब

के सब इस मन्ज़र (दृश्य) को भी देखेंगे। इस तरह जब उनके सामने अ़मली तौर पर दीन आ जाएगा तो इन्शा-अल्लाह ईमान के अन्दर क़ौमों की क़ौमें आती चली जाएँगी।

तो इस जिहाद का असल मक़सद था अल्लाह की तरफ़ बुलाना और उसकी तरफ़ दावत देना। पहला काम तो क़ौली (मौखिक) दावत, दूसरा काम अ़मली दावत, तीसरे जिज़्ये के साथ समझौता या फिर मुक़ाबला और लड़ाई। यह तफ़सीली और अ़मली दावत है। जिस क़बीले और ख़ानदान में सहाबा दावत देने के लिए जाते तो उनसे कहतेः-

اَسْلِمْ تَسْلَمْ

यानी ख़ुदा की ताक़त को तस्लीम करो, तो तुम मज़े में रहोगे।

यह दावत मुख़्तसर और क़ौली है, अगर उसने यह क़बूल कर लिया। **"ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि"** अगर उसने पढ़ लिया और इसको मान लिया तो अब उससे कोई लड़ाई और झगड़ा नहीं। फिर एक जमाअ़त सहाबा किराम की मदीना मुनव्वरा में दीन सीखने और सिखाने का काम करती, और उसमें यही तीन बातें सीखते-सिखाते थे।

दावत, तालीम तज़किया (बातिन की सफ़ाई यानी अपने अख़्लाक़ और दीनी व समाजी ज़िन्दगी का सुधार करना और ख़ुद को बुराईयों से पाक करना)।

ईमान की बहार

एक तरफ़ मस्जिदे नबवी आबाद है। एक तरफ़ मदीने का बाज़ार भी आबाद है तो घर भी आबाद। मस्जिद के अन्दर सहाबा ईमान की बातें सीखते हैं। और जब बाज़ार में जाते हैं तो ईमानियात की लाईन, आमाल की लाईन की रियायत करते हुए चलते हैं कि अगर हम बाज़ारों के अन्दर ग़लत करेंगे तो हमारी नमाज़ क़बूल नहीं होगी। हमारे हज के अन्दर ख़लल पड़ेगा। इसी तरह जब घरों पर जाते थे तो मस्जिदों की रूहानियत कारोबार, बाज़ार और घरों के अन्दर भी थी।

मस्जिद को आबाद कैसे किया जाये?

आज भी यह माहौल बन सकेगा जबकि मस्जिद को आमाल से आबाद किया जाये। ईमानियात की लाईन से भी और आमाल की लाईन से भी। मस्जिद के अन्दर तालीम के हल्के, अल्लाह पाक का ज़िक्र, क़ुरआन पाक की तिलावत, नमाज़ों का पढ़ना, दुआओं का माँगना, मश्विरों का करना, बाहर से आने वाली जमाअ़तों की ख़ैर-ख़बर लेना, जमाअ़तों को बाहर भेजना, इसके बारे में सोचना कि कौनसी जमाअ़त को किस तरफ़ भेजा जाये और वहाँ जाकर वह कैसे काम करे। बाहर की कोई जमाअ़त कमज़ोर पड़ गई तो उसकी मदद के लिये कोई जमाअ़त भेजना। ये सारे काम मस्जिद में बराबर होते रहें, इससे मस्जिदें ज़िन्दा होंगी। मस्जिद के बाहर तक मस्जिद की फ़िज़ा बनेगी।

मस्जिद की आबादी के लिये सहाबा किराम का तरीक़ा

सहाबा किराम का मजमा आधा दिन मस्जिद में वक़्त गुज़ारता था और आधा दिन कारोबार में गुज़ारता था। आधी रात मस्जिद के अन्दर गुज़ारता था और आधी रात घर के अन्दर। सहाबा का एक मजमा सुबह को मस्जिद में आता तो एक मजमा कारोबार के अन्दर बाज़ार में रहता। अब बाज़ार वाला जो मजमा था वह दोपहर को मस्जिद के अन्दर चला गया। इसी तरह रात के भी दो हिस्से होते गये थे। अब घर देखो तो वह आबाद, मस्जिद देखो तो वह आबाद, कारोबार देखो तो वह आबाद। लेकिन एक बात यह थी कि अगर दीन का तक़ाज़ा आ गया तो नमाज़ के वक़्त सब मस्जिद में जमा हो जाते थे। नमाज़ के वक़्त कोई घर पर नहीं होता था। अब मस्जिद में आ जाने के बाद जो दीन का तक़ाज़ा है उसे पूरा करेंगे। उसके बाद ही मस्जिद वाले बाज़ार में कारोबार के लिये जायेंगे।
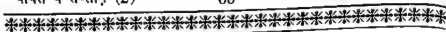
सहाबा जैसा मस्जिद से ताल्लुक़ होना चाहिये

लेकिन बाज़ मर्तबा ऐसा हुआ कि तक़ाज़ा बाहर जाने के लिये आ गया। अब जिसने सुबह से शाम तक का वक़्त मस्जिद में गुज़ारा उन्हीं के बारे में मश्विरा हो गया कि उन्हें बाहर जाना है। सहाबा को ऐसी आदत पड़ी हुई थी कि वहीं से बाहर चले जाते थे। बाज़ मर्तबा घर जाने का मौक़ा मिलता ही नहीं था। तो जो आदमी मस्जिद में आ जाता तो यह नहीं मालूम होता था कि वह बाज़ार में या घर में वापस आयेगा या दीन के किसी तक़ाज़े पर चला जायेगा।

अगर किसी के घर कोई जाये और पूछे मिसाल के तौर पर फ़लाँ सहाबी घर पर हैं?

घर वालों ने कहा "वह नहीं हैं" फिर पूछाः "कहाँ हैं?" घर वालों ने कहाः "मस्जिद के अन्दर हैं" फिर पूछाः "कब आयेंगे?" तो जवाब मिलता था कि "मस्जिद जाने के बाद पता नहीं कब आयेंगे" आयेंगे भी या वहीं से किसी दीन के तक़ाज़े पर जमाअत में चले जायेंगे। अल्लाहु अकबर।

अब दूसरे घर पर गये। पूछा फ़लाँ सहाबी घर पर हैं? जवाब मिला "नहीं" "कहाँ गये?" जवाब मिला "बाज़ार गये" "बाज़ार से वापस कब आयेंगे?" जवाब मिला "अभी आयेंगे"।

तो बाज़ार वालों के बारे में यह ज़ेहन था कि अभी आयेंगे, क्योंकि वे बाज़ार में बिना ज़रूरत नहीं ठहरते थे। मस्जिद में जो गया उसके बारे में यह था कि पता नहीं कब आयेंगे। क्योंकि फ़िज़ा ही यह बनी हुई थी।

मस्जिद में ताले क्यों लगते हैं?

और आज हम लोगों में इस फ़िज़ा के न होने की बिना पर अगर किसी के घर पर जाकर पूछा कि "कहाँ हैं?" उन्होंने कहा कि बाज़ार में। "कब आयेंगे?" जवाब मिलेगा कि पता नहीं कब आयेंगे। इसलिये कि

बाज़ार के तक़ाज़े में न मालूम कहाँ से कहाँ निकल जायें। तो बाज़ार जाने वालों के बारे में पता नहीं कि कब आयेंगे।

और अगर घर वाले कहें कि वह तो मस्जिद में गये हैं। कब आयेंगे? तो कहेंगे कि अभी आयेंगे। मस्जिद से तो फ़ौरन ही आ जाते हैं।

यहाँ कितना उलटा मामला है। वहाँ तो यह मामला था कि बाज़ार जाने के बाद जल्द ही आ जायेंगे और मस्जिद जाने के बाद पता नहीं। और हम लोगों का मामला यह है कि बाज़ार जाने के बाद पता नहीं कब आयेंगे और मस्जिद में गये तो फ़ौरन ही आ जायेंगे। इसी लिये मस्जिदों में दिन में ताले लगते हैं, क्योंकि मस्जिदें आबाद ही नहीं।

हमारी मेहनत के ध्रुव

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! मैं अ़र्ज़ कर रहा था कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के यहाँ तीन बातें थीं। दावत, तालीम, तज़किया। इन्हीं तीन बातों की तरबियत सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की हुई। इस वक़्त में जो हमारा काम है, उसके अन्दर भी यही बातें हैं। इन्हीं बातों को लेकर हमें चलना है। एक तरफ़ दावत, एक तरफ़ तालीम, एक तरफ़ तज़किया।

तज़किया के मायने

तज़किया के मायने अन्दर की सफ़ाई। अन्दर की सफ़ाई होनी चाहिए। अन्दर की सफ़ाई दिखाई नहीं देती। अन्दर का इख़्लास दिखाई नहीं देगा। अन्दर का तवक्कुल दिखाई नहीं देगा। लेकिन इसके ऊपर तो हाथ-पैर मारने ही होंगे। अलबत्ता इसकी एक निशानी दिखाई देने वाली है। जिसके दिल के अन्दर हिदायत का नूर उतर चुका होगा, उसको ईमान और दीनी आमाल के अन्दर कामयाबी दिखाई देगी। अब अगर आमाल का मुक़ाबला चीज़ों और ख़्वाहिशों से पड़ जाये तो फिर आमाल के मुक़ाबले में वह चीज़ों को क़ुरबान कर देगा।

और अगर दिल के अन्दर अंधेरा उतरा हुआ है तो उसको चीज़ों में कामयाबी दिखाई देगी। अगर मुक़ाबला चीज़ों का आमाल से पड़ जाये तो वह आमाल को क़ुरबान कर देगा और चीज़ों को ले लेगा। मिसाल के तौर पर अगर सच बोलता है तो पचास हज़ार रुपये की वह चीज़ बिकती है। और अगर सच को छोड़ता है तो पचपन हज़ार की बिकती है। तो जिसके दिल के अन्दर हिदायत का नूर और ईमान का नूर होगा वह सच वाला अ़मल करेगा और पाँच हज़ार को क़ुरबान कर देगा। और जिसके दिल के अन्दर ज़लालत और गुमराही का अंधेरा होगा तो वह सच को छोड़ देगा और पाँच हज़ार को ले लेगा।

अपना ऐब ज़ाहिर करने की ज़रूरत नहीं

अब इससे अपनी पूरी ज़िन्दगी का हिसाब और अन्दाज़ा लगाया जाये कि हम लोगों का ईमान कमज़ोर है या कितना ज़्यादा मज़बूत है। आमाल का जब चीज़ों से मुक़ाबला पड़ता है तो हम लोग चीज़ों की तरफ़ दौड़ते हैं या आमाल की तरफ़?

यह बात ढकी-छुपी हुई है, इसको ढकी-छुपी ही रखना है। अल्लाह ने जब पर्दा डाला है तो हमें पर्दा हटाना नहीं है। अल्लाह ने जब सत्तारी का मामला किया है तो किसी के ऐब को ज़ाहिर नहीं करना। अपने अन्दर कोई ख़राबी है तो उसका चर्चा लोगों के अन्दर करने की ज़रूरत नहीं है। ख़ुद अपनी ख़राबी के दूर करने की फ़िक्र करे। जब अल्लाह ने हमारे ऐब पर पर्दा डाला है तो अपना ऐब भी दूसरे के सामने ज़ाहिर न करो। लेकिन ऐब ठीक हो जाये अन्दर ही अन्दर इसकी कोशिश करे। इसके लिये कोशिश करना हमारा और आपका आपस का बार-बार मुज़ाकरा, बाहर जमाअ़तों में निकलना, मकान पर जाकर दावत का काम करना है। इससे माहौल बनेगा। और जब माहौल के अन्दर रहेगा तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि धीरे-धीरे अन्दर की ख़राबी साफ़ होती चली जायेगी।

अल्लाह पर ईमान लाने का मतलब

ईमान की वे सात लाईन जिसके अन्दर सबसे पहली चीज़ "आमन्तु बिल्लाहि" है यानी ईमान लाया मैं अल्लाह पर। इसका मतलब यह है कि सारी ज़ातों का यक़ीन निकाल दे और अल्लाह की ज़ात का यक़ीन लाये। हमेशा इसमें मुस्बत (सकारात्मक) और मनफ़ी (नकारात्मक) पहलू होगा। सारी ज़ातों का यक़ीन निकालना है, और अल्लाह की ज़ात का यक़ीन लाना है। इसका मतलब ज़मीन से आसमान तक, पूरब से पश्चिम तक, दक्षिण से उत्तर तक आसमान के ऊपर ज़मीन के नीचे जितनी भी मख़्लूक़ हैं, उनसे अल्लाह के बग़ैर कुछ नहीं होता। और अल्लाह पाक उन सारी मख़्लूक़ के बग़ैर सब कुछ करते हैं। अल्लाह पाक किसी काम के करने में किसी मख़्लूक़ के मोहताज नहीं हैं।

जितने हालात आते हैं वे अल्लाह पाक लाते हैं। इज़्ज़त और ज़िल्लत अल्लाह के हाथ में है। कामयाबी और नाकामी, इत्मीनान और परेशानी अल्लाह पाक के हाथ में है।

असबाब को इख़्तियार करना, तौहीद के ख़िलाफ़ नहीं

जितने भी सामूहिक हालात मुल्कों, शहरों और ख़ानदानों और कारोबार पर आते हैं, ये सारे हालात अल्लाह पाक के हाथ में हैं। दुनिया के अन्दर फैली हुई चीज़ों से कुछ नहीं होता। करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है। तन्दुरुस्ती अल्लाह देते हैं। दवा के अन्दर तन्दुरुस्ती नहीं है। दवा के अन्दर तन्दुरुस्ती के असरात अल्लाह डालते हैं तब मिलती है। और अगर तन्दुरुस्ती के असरात नहीं डालते तो नहीं होती, लेकिन अल्लाह पाक ने इलाज और दवा करने से मना नहीं किया। अल्लाह पाक ने असबाब में लगने से मना नहीं किया।

दरमियानी रास्ता

अल्लाह पाक ने जो असबाब बनाये हैं, वे बेकार नहीं हैं। असबाब

में आदमी लगेगा, कारोबार आदमी करेगा, खाना भी अदमी खायेगा, कपड़ा भी आदमी पहनेगा और आदमी दवा-दारू भी करेगा।

लेकिन एक शर्त के साथ कि यक़ीन अल्लाह पर हो। यक़ीन असबाब पर न हो। यहीं आकर चूक हो जाती है। यहीं से दो ग्रुप बनते हैं। एक ग्रुप तो वह बनता है जो सिर्फ़ असबाब ही में लगता और इसी को तय करता है कि मैं असबाब में लगूँगा।

ठीक है अल्लाह सब कुछ करते हैं लेकिन हमें भी तो कुछ करना चाहिये। ठीक है कि तन्दुरुस्ती तो अल्लाह देते हैं लेकिन दवा तो करनी चाहिये। तो यहाँ अल्लाह के साथ असबाब को जोड़ देते हैं। सारा यक़ीन असबाब पर होता है, तो यह क़िस्म बिल्कुल ग़लत है। क्योंकि उन्होंने असबाब को इख़्तियार किया, अल्लाह का यक़ीन छोड़ दिया।

एक क़िस्म वह है जो कहती है कि करने वाले अल्लाह हैं, छोड़ो असबाब को, निकल जाओ अल्लाह के रास्ते में। वही है पालने वाला, क्या रखा है कारोबार के अन्दर, छोड़ो और निकल जाओ अल्लाह के रास्ते में। यह भी ग़लत है।

अब सही क्या है? सही यह है कि यक़ीन तो करे अल्लाह पर, अल्लाह के कहने के मुताबिक़। अगर अल्लाह कहे असबाब में लगने को तो लगे। अगर अल्लाह कहे असबाब को छोड़ने को तो छोड़ दे। असबाब में लगना यह भी असल नहीं, असबाब को छोड़ना यह भी असल नहीं। असल अल्लाह की बात पूरी करना है:-

وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ (پ۲۸ سورۃ الجمعۃ)

यानी जब जुमा की नमाज़ पढ़ चुको तो ज़मीन में फैल जाओ, अल्लाह की दी हुई रोज़ी तलाश करो।

तो अब अगर जुमा की नमाज़ के बाद कोई दुकान पर चला गया तो उसको मुजरिम नहीं कहेंगे।

अल्लाह पर ईमान लाने के लिये ज़रूरी काम

एक बात ज़ेहन में रख लो कि असबाब को बिल्कुल छोड़ देना यह भी ग़लत हैं। और हर हाल में असबाब में लगा रहना यह भी ग़लत है। अल्लाह के कहने पर असबाब में लगना और अल्लाह के कहने पर असबाब को छोड़ना। यक़ीन अल्लाह पर हो, असबाब पर यक़ीन न हो। इसके हासिल करने के लिये दो काम करने होंगे- एक काम दावत का, दूसरा काम कुरबानी का। जितनी दावत की फ़िज़ा बनी होगी और जितनी बार अल्लाह की बोल बोली जायेगी और सुनी जायेगी, उतना ही अल्लाह का यक़ीन आयेगा।

अल्लाह के ग़ैर का यक़ीन कैसे निकलेगा?

ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के ग़ैर) का यक़ीन निकालने का तरीक़ा यह है कि जहाँ पर अल्लाह का हुक्म मिले वहाँ पर मख़्लूक़ को कुरबान कर दे। अब जितनी यह कुरबानी देगा, अल्लाह के हुक्म को पूरा करने के लिये, उतना ही मख़्लूक़ का यक़ीन निकलेगा।

तीन बातें अच्छी तरह समझ लो। एक तो असबाब में लगकर अल्लाह के हुक्मों को छोड़ देना, यह ग़लत है। दूसरे असबाब को बिल्कुल छोड़ देना, यह भी ग़लत है। और तीसरी चीज़ जो सही है वह यह कि अल्लाह पाक असबाब में लगने को कहे तो लगे और अगर छोड़ने को कहे तो छोड़ दे।

मिसाल के तौर पर आप कारोबार में लगे हुए हैं। आपने अल्लाह का हुक्मः

اَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا (پ۳سورۃالبقرۃ)

यानी अल्लाह ने बै (तिजारत) को हलाल किया है और सूद को हराम क़रार दिया है।

आपने इसको पूरा किया लेकिन कारोबार की मश्ग़ूलियतों के दरमियान

अज़ान की आवाज़ आई "हय्-य अ़लस्सलाह्" तो अब कारोबार में लगना ठीक नहीं। कारोबार को छोड़कर नमाज़ पढ़े। इसी तरह कारोबार में लगा रहा और हज फ़र्ज़ हो गया। हज का वक़्त भी आ पहुँचा तो अब कारोबार में लगना ठीक नहीं। अब कारोबार को छोड़कर हज को चला जाये। इसी तरह आदमी खेत के अन्दर हल चलाता है। गर्मी का सख़्त ज़माना है, अब आदमी कहे कि इतनी सख़्त गर्मी का ज़माना है, मैं रोज़ा कैसे रखूँ। तो यह सुना नहीं जायेगा। तुमको रोज़ा रखना है चाहे हल रात को चलाओ। अब अगर ज़कात फ़र्ज़ हो गई और साल गुज़र गया, पाँच लाख रुपये तुम्हारे ऊपर ज़कात फ़र्ज़ हुई, अब आदमी कहे कि पाँच लाख मैं कैसे निकालूँ मेरे तो कारोबार की रोलिंग ही रुक जायेगी। हम नहीं देंगे। हरगिज़ नहीं देंगे। पाँच लाख निकालना होगा। निकाल कर अलग रखे और ज़रूरतमन्दों को देता रहे। अब उसे कारोबार की रोलिंग में नहीं लेना है।

तो अल्लाह का हुक्म मिले तो असबाब में लगना और हुक्म मिले तो असबाब को छोड़ना, यह सब से सही रास्ता है। इसके अन्दर आदमी तरक़्क़ी करेगा। हाँ! इसके अन्दर मुजाहदा ज़रूर है। तकलीफ़ का उठाना और नफ़े को छोड़ना, इसकी आदत डालनी पड़ेगी। और यह ईमान की ताक़त के बग़ैर आदमी नहीं कर सकता।

हर नबी के हर अ़मल में

क़ियामत तक के लिये रहबरी है

इसकी मैं मुख़्तसर तौर पर मिसाल दूँ। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के वाक़िए से जिसे मैं तफ़सील से बयान नहीं करूँगा। मजमे में कोई आदमी ऐसा नहीं है जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के वाक़िआत न जानता हो। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम तूर पहाड़ पर गये। आपके हाथ में डंडा था। एक बात जान लो, हर नबी का हर अ़मल क़ियामत तक लोगों के लिये

रहबरी है। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के हाथ में जो डंडा था, उससे बकरियों के लिये पत्ते झाड़ते थे। अगर साँप आ जाता उसे मारते, थक जाते तो उस पर टेक भी लगा लेते। तो इससे मालूम हुआ कि नफ़े वाला सबब आदमी को इख़्तियार करना चाहिये। जैसे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने हाथों में डंडा रखा था।

अल्लाह के हुक्म की ताक़त

जब अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त के हुक्म पर उस डंडे को ज़मीन पर डाला तो अज़्दहा बन गया। अब मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उसकी तरफ़ कमर कर ली और बड़ी ज़ोर से पीछे की तरफ़ भागे कि कहीं यह अज़्दहा मुझे निगल न जाये और तकलीफ़ पहुँचाये। तो इन दोनों बातों से हमें क़ियामत तक के लिये मालूम हो गया कि नफ़े वाला सबब इख़्तियार करना चाहिये और तकलीफ़देह बात से बचना चाहिये। अब अल्लाह पाक ने इस मौक़े पर जो कलाम फ़रमाया था वह यह है:-

وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ٥ قَالَ هِيَ عَصَايَ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى ٥ قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ٥ فَاَلْقٰهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ٥ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى ٥ (پ۱۶ سورة طٰہٰ)

तर्जुमा:- यह क्या है तेरे दाहिने हाथ में ऐ मूसा! बोले यह मेरी लाठी है। मैं इस पर टेक लगाता हूँ और पत्ते झाड़ता हूँ इससे अपनी बकरियों पर। और मरे लिये इसमें चन्द काम और भी हैं। फ़रमाया डाल दे इसको ऐ मूसा! तो डाल दिया तो फिर वह उसी वक़्त साँप हो गया दौड़ता हुआ। फ़रमाया पकड़ ले इसको और मत डर, हम अभी लौटा देंगे इसको इसकी पहली हालत पर।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ ये दो बातें पेश आईं जिससे हमारी समझ में आ गया कि यह अल्लाह के हुक्म की ताक़त है। अल्लाह के हुक्म के अन्दर वह ताक़त है कि कमज़ोर डंडे को ताक़तवर अज़्दहा

बना दे और यह भी ताक़त है कि ताक़तवर अज़्दहे को कमज़ोर डंडा बना दे। यह सब कुछ अल्लाह के हुक्म की ताक़त है, डंडे की ताक़त नहीं। अब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने यह तय कर लिया कि डंडे को अल्लाह के हुक्म से पकडूँगा और अल्लाह के हुक्म से छोड़ दूँगा।

अल्लाह की कुदरत के कुछ और भी कमालात

एक दूसरा मोजिज़ा (अल्लाह की तरफ़ से नबियों को दी जाने वाली निशानी) भी अल्लाह पाक ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को दिया कि हाथ को बग़ल में डाला और फिर जब उन्होंने निकाला तो देखा कि वह बिल्कुल चमकदार है। तो डंडे वाले मोजिज़े (चमत्कार) से अल्लाह पाक ने बताया कि शक्लों को शक्लों से बदल देने की कुदरत मुझमें है। डंडे की शक्ल को अज़्दहे की शक्ल से बदलकर, और शक्ल को न बदल कर ख़ासियत को बदल देने की ताक़त व कुदरत मुझमें है। जैसे हाथ गिरेबान में डाला तो हाथ नहीं बदला लेकिन हाथ चमकदार बन गया। दोनों काम अल्लाह पाक करते हैं।

शक्लों का शक्लों से बदलना आज भी अल्लाह पाक कर रहे हैं। यह इनसान क्या है? 'मनी' (वीर्य) की शक्ल, फिर ख़ून के लोथड़े की शक्ल, फिर गोश्त के लोथड़े की शक्ल उसके बाद माँ के पेट के अन्दर चन्द उंगल का इनसान बना और उसके अन्दर आँख, कान, नाक, हाथ, पैर, दिल, दिमाग़, ओझड़ी, कलेजी, गुर्दा, मसाना वग़ैरह सारी चीज़ें मनी (वीर्य) के क़तरे से लेकर चार महीने के अन्दर अन्दर बना दीं। फिर उसके अन्दर रूह भी डाली। अल्लाह पाक शक्लों को शक्लों से बदल देते हैं जैसे बचपन की शक्ल को बुढ़ापे की शक्ल से बदल देते हैं।

गुठली को ज़मीन में डाला, वह तनावर दरख़्त बन गई। जिसमें सैकड़ों आम सालाना तैयार होते रहते हैं। सिर्फ़ डंडे से अज़्दहा, अज़्दहे से डंडा यही नहीं बल्कि अल्लाह की कुदरत के कमालात आज भी आ़म तौर पर दिखाई दे रहे हैं लेकिन कोई ग़ौर नहीं करता।

अल्लाह के हुक्म की ताक़त, वाकिआत की रोशनी में

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ बारह ख़ानदान थे। पीछे फ़िरऔ़न का लश्कर और आगे भरपूर समन्दर और बीच में मौज ही मौज। लेकिन अल्लाह के हुक्म पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने डंडे को समन्दर पर डाल दिया तो बारह रास्ते बन गये और बारह ख़ानदानों की जान बची।

दूसरा वाक़िआ़

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथी और क़बीला बनू इस्राईल के लोग मैदाने तीह के अन्दर प्यासे थे। उन लोगों ने पानी माँगा तो मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से कहा कि ऐ अल्लाह! मुझे पानी दे दे।

وَاِذِاسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ، فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا. (پ۱، سورۃ البقرۃ)

तर्जुमाः- जब पानी तलब किया मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम के लिये। पस कहा हमने कि अपनी लाठी को पत्थर पर मारो। पस फूट पड़े उससे बारह चश्मे।

इस मोजिज़े से बारह चश्मे जारी हुए। और बारह ख़ानदानों की ज़रूरत पूरी होने का इन्तिज़ाम हुआ। यह कब हुआ? जब अल्लाह के हुक्म से डंडे को समन्दर पर डाला और पत्थर पर मारा।

तीसरा वाक़िआ़

एक तीसरा वाक़िआ़ भी हुआ। वह यह कि जब जादूगरों ने पूरे जंगल को जादू से भर दिया। हर जगह देखो तो साँप ही साँप और हज़ारों लोग उसके देखने के लिये खड़े हुए।

उन जादूगरों को फ़िरऔ़न ने इखट्ठा किया था। उसने समझा कि मूसा अ़लैहिस्सलाम हार जायेंगे और मेरी बात चलती रहेगी। लेकिन मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ ताईदे इलाही थी। ख़ुदा का हुक्म हुआ कि डंडे को

ज़मीन पर डाल दो। अब ज़मीन पर डंडे का डालना था कि वह अज़्दहा बन गया और जादूगरों के कर्तब से बने हुए साँपों को निगलने लग गया। जादूगर फ़ौरन समझ गये कि यह किसी जादूगर का अ़मल नहीं हो सकता। यक़ीनन यह अल्लाह के नबी हैं। सज्दे में गिर पड़े और कहने लगेः-

امَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۝ رَبِّ مُوْسٰى وَهَارُوْنَ ۝ (پ۹سورۃ الاعراف رکوع۴)

यानी हम रब्बुल्-आ़लमीन पर ईमान लाये। हज़रत मूसा और हारून अ़लैहिमस्सलाम के रब पर ईमान लाये।

सब जादूगर मुसलमान हो गये। जब ये मुसलमान हुए तो तमाशाई मजमा जो खड़ा था उन्होंने भी कलिमा पढ़ लियाः-

"ला इला-ह इल्लल्लाहु मूसा कलीमुल्लाहि"

तो तीसरा काम यह हुआ कि अल्लाह के हुक्म से डंडे की अज़्दहे की शक्ल बन गयी।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के वाक़िआ़त से सबक़

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जब तक डंडे को अपने इख़्तियार से पकड़ते और छोड़ते रहे तो उसका फ़ायदा सिर्फ़ उनकी ज़ात जक सीमित रहा और जब अल्लाह के हुक्म से पकड़ा और छोड़ा तो एक तरफ़ बारह ख़ानदानों और क़बीलों की ज़रूरत पूरी हुई तो दूसरी तरफ़ हज़ारों इनसानों को हिदायत मिली।

इसी तरह अगर आज भी अल्लाह के हुक्म पर हम अपनी जान और माल को लगायेंगे, कुरबान करेंगे तो इन्शा-अल्लाह हमारी भी ज़रूरतें पूरी होंगी। सिर्फ़ हमारी ही परेशानियाँ दूर नहीं होंगी बल्कि लाखों और करोड़ों इनसानों की भी परेशानियाँ दूर होंगी। हिदायत सिर्फ़ हमको नहीं मिलेगी बल्कि लाखों और करोड़ों लोगों को भी मिलेगी। क्योंकि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम सारे नबियों में सब से अफ़ज़ल हैं। और वह पूरे आ़लम के लिये नबी बनकर तशरीफ़ लाये।

हमारी जान और माल अल्लाह की मिल्कियत है

हमारे पास एक तो जान है, और एक है माल। अल्लाह तआला का हुक्म इन दोनों नेमतों के बारे में यह है किः-

وَجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ، ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ (پ۱۰،سورۃالتوبۃ،رکوع۱۲)

तर्जुमाः- अपनी जान और माल से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यह अ़मल ही तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जान रहे हो।

यह जान और माल दोनों को अल्लाह पाक ने ख़रीद लिया है। जान ख़रीदी और सारा माल ख़रीदा है। इसलिये हमें अपनी जान व माल को वहाँ लगाना है जहाँ अल्लाह पाक हमें हुक्म करें। इन्शा-अल्लाह जब इस जान को अल्लाह के हुक्म पर कुरबान करेंगे और माल के नफ़े को अल्लाह के हुक्म पर कुरबान करेंगे तो सिर्फ़ बारह ख़ानदानों की ही ज़रूरत पूरी नहीं होगी, सिर्फ़ बारह ख़ानदानों ही की जान नहीं बचेगी, सिर्फ़ हज़ारों के अन्दर ही हिदायत नहीं फैलेगी बल्कि करोड़ों की हाजतें पूरी होंगी और करोड़ों की मशक़्क़तें दूर होंगी। करोड़ों को हिदायत मिलेगी।

हमारी यह जान और माल जो अल्लाह ने ख़रीदा है, यह सिर्फ़ चार महीने के लिये नहीं ख़रीदा हैः-

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ.

(پ۱۱،سورۃالتوبۃ)

यानी अल्लाह पाक ने मुसलमानों की पूरी जान और माल ख़रीद लिया है। और उसके बदले में जन्नत देंगे। जिसमें नेमतों की मूसलाधार बारिश होगी।

जान दी, दी हुई उसी की थी

पूरा माल और जान अल्लाह ने ख़रीद लिया है। कब तक के लिये? मौत तक के लिये।

يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ يُقْتَلُوْنَ. (پ۱۱،سورۃ التوبہ،رکوع۳)

तर्जुमाः- अल्लाह की राह में क़िताल (जंग और लड़ाई) करते हैं। पस क़त्ल करते हैं और क़त्ल किये जाते हैं।

अगर सहाबा पर अल्लाह के दीन का तक़ाज़ा आया कि सत्तर की जान ले लो तो बदर के दिन सत्तर की जान ले ली। और जब हुक्म आया कि अपनी जान दे दो तो उहुद में सत्तर ने अपनी जान दे दी।

अगर हुक्म आये जान लेने का तो ले लो, और अगर हुक्म आये जान के देने का तो दे दो। किसी चीज़ की परवाह न करोः-

يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَ يُقْتَلُوْنَ، وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ. (پ۱۱،سورۃ التوبہ،رکوع۳)

यह अल्लाह पाक का वायदा है तौरात, इन्जील और क़ुरआन के अन्दर। (यानी मुसलमानों को अल्लाह की राह में जिहाद करने का अज्र व सवाब जन्नत की शक्ल में मिलेगा)।

وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ، وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○ (پ۱۱،سورۃ التوبہ،رکوع۳)

यानी अल्लाह से ज़्यादा वायदा पूरा करने वाला कौन होगा। अल्लाह के साथ जो तुमने सौदा किया उस पर ख़ुश हो जाओ।

सहाबा ने बदर के अन्दर सत्तर को क़त्ल किया और उहुद के अन्दर सत्तर ने अपनी जान क़ुरबान की। तक़ाज़ा आया तो हिजरत कर दी। मदद का हुक्म आया मदद कर दी। कारोबारी सीज़न छोड़कर तबूक जाने का हुक्म आया तो तबूक चले गये। और अल्लाह के हुक्म पर जान व

माल की कुरबानियाँ देते रहे।

दावत के दर्जे

लेकिन बदर और उहुद की नक़ल उतार कर आज भी कोई तलवार लेकर काफ़िरों को मारना शुरू कर दे तो यह ग़लत बात होगी। क्योंकि पहले दावत होगी फिर मस्लेहतों को सामने रखते हुए पेशकश होगी। तब क़िताल (जंग और लड़ाई) होगा।

यहाँ जितने बे-ईमान बसते हैं, उन तक अभी दावत पहुँची ही नहीं। क्योंकि दावत तो सारी उम्मत के ज़िम्मे थी जो वह छोड़ चुकी है। इसका नुक़सान यह हुआ कि दूसरे लोग ईमान में आने बन्द हो गये। तीसरा नुक़सान यह हुआ कि जितने आमाल बाक़ी भी रहे वे बेजान रहे।

पूरी उम्मत अगर दावत के काम पर खड़ी हो जाये तो इसमें तीन फ़ायदे होंगे:-

1. आमाल ज़िन्दा होंगे।
2. आमाल ताक़तवर और जानदार होंगे।
3. दूसरों की तरग़ीब का सबब बनेंगे।

तो इस तरह चारों तरफ़ से लोग ईमान के अन्दर दाख़िल होते चले जायेंगे। और जब चारों तरफ़ से लोग ईमान में आने लगेंगे तो फिर उनको मारने की ज़रूरत नहीं होगी। लेकिन अभी तो दावत पहुँची नहीं, न तो किताबों के ज़रिये, न रिसालों के ज़रिये। करोड़ों, अरबों इनसान ऐसे हैं जिन तक अभी भी बात नहीं पहुँची है। खुद मुसलमानों के अन्दर दावत छूट जाने की वजह से लाखों मुसलमान ऐसे हैं जो कलिमें का लफ़्ज़ ही नहीं जानते। उन्हें मालूम ही नहीं कि इस्लाम क्या है?

जमाअ़त वालों के काम और कारगुज़ारी

रमज़ान के महीने में एक जगह जमाअ़त गई। वहाँ दिन के वक़्त में बारात का खाना हो रहा था। जमाअ़त वाले यह हाल देखकर कि रमज़ान

के महीने में दिन में खाना खा रहे हैं, रोने लग गये। गाँवों वालों ने कहा रो क्यों रहे हो? तुम भी खाओ। उन लोगों ने कहा कि हम खाने के लिये नहीं रो रहे हैं। बल्कि इस वजह से कि रमज़ान के महीने में अल्लाह का हुक्म रोज़ा रखने का है और यह रमज़ान का महीना है और सारा मजमा खाना खा रहा है। अल्लाह का हुक्म टूट रहा है। गाँव के बड़े-बड़े लोगों ने कहा कि रमज़ान क्या होता है? रमज़ान का तो महीना होता नहीं। वहाँ के लोग हिन्दी महीनों के नाम जानते थे। कार्तिक, बैसाख, जैठ, असाढ़ वग़ैरह। उन्होंने हिन्दी के बारह महीनों के नाम गिनवाये और कहा कि इसके अन्दर रमज़ान का महीना है ही नहीं। जमाअ़त वालों ने कहा कि रमज़ान इस्लामी महीनों का एक महीना है। मुहर्रम, सफ़र वग़ैरह में आता है। गाँव वालों ने पूछा कि रमज़ान के महीने में क्या होता है? बताया गया कि रोज़ा फ़र्ज़ है। रोज़े की हक़ीक़त बताई गयी। सब को जमा किया कलिमा पढ़ाया, जो उन्हें याद नहीं था। हालाँकि मुसलमान थे। नमाज़ सिखाई वुज़ू कराया। जमाअ़त वालों ने वहाँ जमकर काम किया। हिन्दुस्तान के अन्दर ऐसी-ऐसी जगहें बहुत सी हैं। उ. प्र. में भी, गुजरात में भी, कोई राज्य ख़ाली नहीं जिसमें ऐसा इलाक़ा न हो। इसी लिये जमाअ़त के काम करने वाले ऐसे इलाक़े को तलाश करते रहते हैं। उनमें से एक दो को जमाअ़त में निकालते हैं और फिर उन्हीं के ज़रिये इलाक़े में काम फैलाते हैं।

अल्लाह ने हमें किस काम के लिये ख़रीदा है?

अच्छा अब सवाल पैदा होता है कि जब अल्लाह पाक ने हमारी जान हमारा माल ख़रीद लिया है तो किस काम के लिये ख़रीदा है? और इसे कहाँ लगाएँ। अल्लाह पाक बता रहे हैं। इरशाद फ़रमायाः-

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعَابِدُوْنَ الْحَامِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرَّاكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ
الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ وَبَشِّرِ

الْمُؤْمِنِيْنَ ٥ (پ۱۱ سورة التوبة ركوع ۳)

उम्मत को अल्लाह ने ख़रीदा है इस काम के लिये जो इस आयत में बता दिया गया। और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा को इस काम में लगा भी दिया। और यह भी बता दिया गया कि यह काम करोगे तो अल्लाह की मदद तुम्हारे साथ आयेगी। चुनाँचे मदद आई। हर दौर में आई। हैरत में डालने वाली मदद आई। और यह मदद क़ियामत तक आती रहेगी।

हमारा करने का काम

अब काम क्या है?

"अत्ताईबू-न" एक मजमा ऐसा बन जाये जो ग़लत ज़िन्दगी छोड़ने वाला हो।

"अल्-आ़बिदू-न" जो सही दीनी ज़िन्दगी पर आने वाला हो।

"अल्-हामिदू-न" ग़लत रास्ते को छोड़ने और सही रास्ते पर आने पर अल्लाह की तारीफ़ करने वाला हो।

"अस्साईहू-न" एक जगह रहने वाला न हो। उम्मत के ग़म में तड़प रहा हो, चलने फिरने वाला हो। जैसे सहाबा-ए-किराम दीन की मेहनत के लिये चलते-फिरते थे। तो उम्मत भी एक जगह बैठने वाली न हो, बल्कि चलने-फिरने वाली हो:-

سِيَاحَةُ أُمَّتِىْ اَلْجِهَادُ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

यह इरशाद है रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का। यानी मेरे उम्मत का चलना-फिरना और मेरी उम्मत का टूर अल्लाह के दीन की मेहनत है।

"अर्राकिऊनस्साजिदू-न" नमाज़ के अन्दर रुकूअ़ और सज्दा करने वाली हो।

जान व माल अल्लाह की राह में लगाने का औसत

बाज़ मर्तबा जान व माल अल्लाह की राह में लगाने के ऐसे मौक़े आयेंगे कि पूरी जान और पूरा माल लगाना पड़ेगा। जैसे सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लगाया। कभी आधी जान आधा माल लगाना पड़ेगा। जैसे फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने किया। उनके अलावा अक्सर सहाबा किराम चार महीने बाहर आने-जाने के लिये ख़ास रखते और आठ महीने मकान पर नक़्ल व हरकत (सक्रियता) के लिये रखते और इसमें आधा दिन कारोबार करते, आधा दिन मस्जिद के लिये होता। आधी रात मस्जिद के लिये आधी रात घर के लिये। एक तिहाई जान व माल का औसत है अक्सर सहाबा का अल्लाह के रास्ते में।

पहले ख़ुद लोगों के लिये फ़ायदा पहुँचाने वाले बनो

अल्लाह पाक ने हमें दीन के काम के लिये ख़रीदा। सहाबा और ताबिईन (सहाबा की ज़ियारत करने वाले मोमिन हज़रात) ने इस काम पर अपनी जान और अपना माल लगाया। और अल्लाह पाक का बताया हुआ काम पूरा किया, तो अल्लाह तआला की ग़ैबी मदद और नुसरत उन लोगों पर आई और पूरे आलम पर उसके असरात पड़े। आज जान व माल को अल्लाह के बताये हुए हुक्मों पर लगाना बन्द हो गया इसलिये अल्लाह पाक ने मदद और नुसरत का दरवाज़ा बन्द कर दिया।

भैंस को चारा कब तक?

भैंस को चारा कब तक देते हैं? जब तक भैंस दूध देती है। और अगर भैंस दूध देना बन्द कर दे तो फिर भैंस को कसाई के हवाले कर देंगे। भैंस दूध दे तो भैंस वाला उसको चारा दे। तो जब तक यह उम्मत दूध दे रही थी लोग इससे फ़ायदा उठा रहे थे, तब तक अल्लाह पाक इसे चारा दे रहे थे, इसकी मदद कर रहे थे। और जब इस भैंस ने दूध देना

बन्द कर दिया तो अल्लाह पाक ने चारा देना बन्द कर दिया। मदद जो पहले आ रही थी अब नहीं आ रही है। काले, गोरे, गुलाबी, लाल, चार क़िस्म के गोश्त काटने वालों के हाथ कर दिया इस उम्मत को। अब पूरी दुनिया में इसे चारों तरफ़ काटा जा रहा है।

इसी पर एक क़िस्सा याद आ गया। दो पहलवान थे। दोनों कुश्ती कर रहे थे। दोनों थे ज़बरदस्त, कोई किसी को पछाड़ नहीं पाता था। सामने एक बैल खड़ा था। एक पहलवान ने मन्नत मानी कि ऐ अल्लाह! अगर मैं जीत गया तो तेरे नाम पर इस बैल को ज़िबह करूँगा और गोश्त ग़रीबों को दे दूँगा। अब दूसरा पहलवान घबरा गया। उसने भी मन्नत मान ली कि अगर मैं जीता तो उसको ख़रीद कर ज़िबह करके ग़रीबों को खिला दूँगा। दोनों ने एक ही मन्नत मानी। अब बैल खड़ा हुआ यह कह रहा था कि ऐ अल्लाह यह पहलवान जीते या यह पहलवान जीते, दोनों हालत में ज़िबह तो मुझे ही होना है। तो आज पूरी उम्मत का यही हाल है, कोई भी जीते कोई भी ओ़हदा पाये और सत्ता किसी के भी हाथ लगे, ज़िबह इसे ही होना है।

मरना जीना सिर्फ़ दीन के काम पर

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! हमारी यह ज़िल्लत सिर्फ़ इस वजह से है कि हमने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का दामन छोड़ दिया है। हमारी कोशिश अब यह हो कि जमाअ़तों की नक़्ल व हरकत (सरगरमी और चलत-फिरत) के ज़रिये पूरी उम्मत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का दामन पकड़ ले और फिर इसी काम पर लग जाये।

मरना जीना हो ही रहा है। मौत वक़्त पर आती है। ज़िन्दगी वक़्त तक रहेगी। दीन का काम करते-करते जिये और दीन का काम करते-करते मरे। इस उम्मत को इस बात पर खड़ा करना है कि मरना जीना सिर्फ़ दीन के काम पर हो। अल्लाह तआ़ला हम सब को इन बातों पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन।

तक़रीर (3)

ग़रीब और मालदार दोनों का कमाल

मेरे मोहतरम दोस्तो! मैं यह अ़र्ज़ कर रहा था कि ख़र्च का मामला सिर्फ़ मालदार ही पर नहीं बल्कि ग़रीब पर भी है। क्योंकि ग़रीब, ग़रीब को पहचानता है। ग़रीब का कमाल यह है कि किसी दरवाज़े पर माँगे नहीं। और मालदार का कमाल यह है कि जहाँ ग़रीब और परेशानहाल हों, वह उनकी ज़रूरतों को पूरी करे।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَنَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ!

मेरे मोहतरम दोस्तो व बुजुर्गो! इनसान की कामयाबी और नाकामी अल्लाह के हाथ में है। दुनिया के अन्दर भी और आख़िरत के अन्दर भी। सामूहिक तौर पर कामयाबी का मिलना या नाकामी का मिलना, व्यक्तिगत तौर पर कामयाबी का मिलना या नाकामी का मिलना, सब अल्लाह की तरफ़ से है। जो कुछ करते हैं अल्लाह करते हैं। और सारी मख़्लूक़ अल्लाह के क़ाबू में है।

सारी मख़्लूक़ ख़ुदा के हुक्म की पाबन्द

इनसान के अलावा जो मख़्लूक़ है, उससे अल्लाह पाक जो कुछ कहते हैं वह कर देती है। आसमान से कहा "थमा रह" तो वह थमा रहेगा। और कहेंगे "टूट जा" तो टूट जायेगा क़ियामत के दिन। तो दूसरी मख़्लूक़ के बारे में जिसका जो काम बता दिया, वह करेगी।

और अगर उसकी ड्यूटी बदल दी तो वह अपनी ड्यूटी बदल देगी। अल्लाह का जो हुक्म होगा उसके मुताबिक़ अमल करेगी। फ़रिश्ते, जो कुछ भी अल्लाह कहते हैं, करते हैं, उसके ख़िलाफ़ नहीं करते।

इनसान में ख़ैर का माद्दा भी है और शर का भी

लेकिन इनसान को अल्लाह पाक ने ऐसा बनाया है कि इसके अन्दर

दोनों ताक़तें रखीं। मानने की भी ताक़त है और न मानने की भी ताक़त है। अगर चाहे तो अपनी ताक़त और इख़्तियार को अल्लाह की मर्ज़ी पर लगाये। और अगर चाहे तो अपनी ताक़त और इख़्तियार को अल्लाह की मर्ज़ी पर न लगाये।

अब अगर इसने अपनी मर्ज़ी को कुरबान करके अल्लाह की मर्ज़ी पूरी कर दी तो गोया इसने बो दिया। जैसे खेत के अन्दर दस मन अनाज बो दिया तो जब उगेगा तो सौ मन बनकर निकलेगा। इसी तरह इनसान अगर अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी में बो देगा और कुरबान कर देगा तो इनसान की मर्ज़ी आख़िरत में उगेगी।

وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِيٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُوْنَ ٥ (پ٢٤)

यानी जन्नत के अन्दर तुमको वह मिलेगा जिसकी तुम्हारा नफ़्स ख़्वाहिश करेगा और जिसको तुम चाहोगे।

क्योंकि दुनिया के अन्दर इसने अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी पर कुरबान कर दिया था।

लेकिन अगर इसने अल्लाह की मर्ज़ी को छोड़ दिया और अपनी मर्ज़ी पर चलता रहा तो फिर जहन्नम के अन्दर इसकी कोई मर्ज़ी पूरी नहीं होगी। जो कुछ कहेगा वह नहीं होगा।

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَاهُمْ بِخَارِجِيْنَ مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ٥ (پ٦)

तर्जुमाः- जहन्नम से निकलने का इरादा करेंगे, हालाँकि वे उससे नहीं निकल सकते। और उनके लिये हमेशा वाला अ़ज़ाब होगा।

क्योंकि उसने अल्लाह की मर्ज़ी को छोड़कर अपनी मर्ज़ी को इख़्तियार किया था। लिहाज़ा आख़िरत में उसकी कोई मर्ज़ी पूरी नहीं की जायेगी ।

इस तरह दोस्तो! दुनिया की ज़िन्दगी ही असल ज़िन्दगी है। इसलिये कि इसी पर आख़िरत की ज़िन्दगी का बनना और बिगड़ना निर्भर है और इसी पर दुनिया की ज़िन्दगी का भी बनना और बिगड़ना निर्भर है।

****

इनसान के पास दो क़ीमती चीज़ें हैं, जान और माल

मेरे मोहतरम दोस्तो! अल्लाह जल्ल जलालुहू ने दुनिया व आख़िरत के अन्दर कामयाब करने के लिये इनसान को दो दौलतें दी हैं। अगर इन दोनों दौलतों को जैसे अल्लाह ने बताया है उस तरह लगायेगा तो कामयाब होगा। और अगर जैसे अल्लाह ने बताया है जान व माल की दौलत को वैसे नहीं लगायेगा तो फिर दुनिया व आख़िरत दोनों में नाकाम होगा। क्योंकि अल्लाह जल्ल जलालुहू ने बार-बार "युजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्" को याद दिलाया। यानी "वे लोग अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों के ज़रिये जिहाद करते हैं।"

और हमको अपने जान व माल को चार बातों पर लगाना है।

चार निस्बतें

अल्लाह पाक ने इनसान के अन्दर चार निस्बतें रखी हैं:-

1. आम जानदारों वाली निस्बत।
2. फ़रिश्तों वाली निस्बत।
3. ख़िलाफ़ते ख़ुदावन्दी वाली निस्बत।
4. नियाबते नुबुव्वत वाली निस्बत।

ये चार निस्बतें अल्लाह तआला ने इनसान के अन्दर रख दी हैं।

पहली निस्बत आम जानदारों वाली है। जैसे बैल, भैंस, मुर्ग़ी वग़ैरह को यह निस्बत मिली इसी तरह इनसान को भी मिली। कि अगर भूख लगे तो खाना है, प्यास लगे तो पीना है, गर्मी सर्दी का इन्तिज़ाम करना और अपनी ज़रूरतों और तक़ाज़ों को पूरा करना है।

दूसरी निस्बत फ़रिश्तों वाली है जो इबादत के ज़रिये पूरी होगी। फ़रिश्ते इबादत करते हैं। इबादत इस इनसान को भी दी।

तीसरी निस्बत ख़िलाफ़ते ख़ुदावन्दी वाली है। इनसान अल्लाह का

ख़लीफ़ा है। जैसा कि कुरआन पाक में फ़रमाया गयाः "इन्नी जाअ़िलुन् फ़िल्-अर्ज़ि ख़लीफ़-तन्" इसके मायने यह होंगे कि यह भूखों को खिलायेगा क्योंकि "रज़्ज़ाक़" का ख़लीफ़ा है। और दूसरों पर रहम करेगा क्योंकि "रहीम" का ख़लीफ़ा है। दूसरों की ग़लतियों को माफ़ करेगा क्योंकि "ग़फ़्फ़ार" का ख़लीफ़ा है। दूसरों पर करम करेगा क्योंकि "करीम" का ख़लीफ़ा है। दूसरों के ऐबों पर पर्दा डालेगा क्योंकि "सत्तार" का ख़लीफ़ा है।

और चौथी निस्बत नियाबते नुबुव्वत वाली है, क्योंकि अब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाद कोई नया नबी आने वाला नहीं है। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आख़िरी नबी हैं। लिहाज़ा नबियों की नियाबत में नबियों वाला दावत का काम करेगा।

जान व माल चार बातों पर

अब इसकी जान व माल चार बातों पर लगेगी। एक तो आ़म जानदारों वाली निस्बत पर यानी अपनी ज़रूरतों को पूरा करने पर। दूसरे **फ़रिश्तों वाली निस्बत** इबादत यानी नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज पर। तीसरे **ख़िलाफ़ते ख़ुदावन्दी** वाली निस्बत पर यानी अख़्लाक़ और हमदर्दी पर। **और चौथे नियावते** नबवी वाली निस्बत यानी दावत पर।

ज़कात का माल देना इबादत है, इसमें फ़रिश्तों वाली निस्बत आयेगी। **लेकिन ज़कात के** अ़लावा अगर किसी को दिया तो यह मेहरबानी और **हमदर्दी होगी।** यह देना फ़र्ज़ नहीं।

मिसाल के तौर पर कोई सैयद है। उसको ज़कात का माल लेना हराम है। **उसको** ज़कात के अ़लावा का जो माल देगा, बतौर अख़्लाक़ के देगा।

इसी तरह ग़ैर-मुस्लिम को भी ज़कात का माल नहीं दे सकता। लेकिन ग़ैर-मुस्लिम बहुत परेशानहाल है। अब अगर उसके ऊपर ज़कात के अ़लावा का माल लगायेगा तो यह बतौर अख़्लाक़ और हमदर्दी के होगा।

अ़द्ल व इन्साफ़ और अख़्लाक़ व एहसान

अल्लाह पाक ने इनसान को दो हुक्म दिये हैं- एक अ़द्ल व इन्साफ़ का, और दूसरा अख़्लाक़ व एहसान का।

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ (پ١٤)

तर्जुमाः- बेशक अल्लाह तआ़ला तुमको अ़द्ल व एहसान करने का हुक्म देता है।

अ़द्ल व इन्साफ़ के मायने यह हैं कि तेरे ज़िम्मे जो काम हैं उनको कर। लिहाज़ा ज़कात अदा करेगा तो यह अ़द्ल व इन्साफ़ में आयेगा। लेकिन ज़कात का माल ख़त्म हो गया। ज़रूरतमन्द बाक़ी रह गये हैं। परेशानहाल हैं, उनके घरों में फ़ाक़े हैं। चीख़ें मारने की आवाज़ें आ रही हैं। बच्चे बेचारे भूखे-प्यासे हैं। तो अब उन लोगों को जो माल देगा, ज़कात के अ़लावा होगा। और यह बतौर अख़्लाक़ व एहसान के लगायेगा।

क्योंकि अल्लाह पाक ने बता दिया कि जितना तुम लगाओगे उतना मैं दूँगा।

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ (پ٢٢)

यानी जितना तुम ख़र्च करोगे, पस अल्लाह उसका बदला देगा।

असल बदला देने की जगह आख़िरत है। असल बदला देने की जगह दुनिया नहीं है। दुनिया छोटी जगह है।

एक रुपया ख़र्च करने पर अल्लाह जो देंगे वह दुनिया के अन्दर समा नहीं सकता। नेकियाँ और बुराईयाँ जब तौली गईं तो बराबर निकलीं। एक रुपये के ख़र्च करने से वज़न बढ़ गया तो जन्नत में जायेगा।

तो जन्नत उसको एक रुपये के ख़र्च करने पर मिली। बाक़ी जितनी नेकियाँ थीं वे बुराईयों के मुक़ाबले में ख़त्म हो गईं। और जितनी बुराईयाँ थीं वे नेकियों के मुक़ाबले में साफ़ हो गईं। अब एक रुपया ख़र्च करने की वजह से वज़न बढ़ गया तो जन्नत मिलेगी।

जन्नत की नेमतें बेशुमार हैं

और छोटी से छोटी जन्नत जो मिलेगी वह इस दुनिया की दस गुना बड़ी होगी। जिसमें सत्तर बहत्तर बीवियाँ, अस्सी हज़ार नौकर-चाकर, दूध, पानी और पाक शराब की नहरें, सोने-चाँदी की ईंट के बने हुए मकानात, जोड़ने के गारे मुश्कों के, तकिये, गद्दे वग़ैरह बिछे हुए। ऐसी जवानी मिलेगी जो करोड़ों साल के बाद ख़त्म नहीं होगी और ऐसे कपड़े मिलेंगे जो गन्दे नहीं होंगे और हमेशा-हमेशा उसमें ऐश व अराम के साथ रहेंगे। और एक बड़ी नेमत यह मिलेगी कि हर हफ़्ते जुमा के दिन अल्लाह पाक मुलाक़ात करेंगे और सलाम भी करेंगे।

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ يَاأَهْلَ الْجَنَّةِ

तर्जुमा:- ऐ जन्नत वालो! तुम पर सलामती हो।

तो यह जितना मिला, एक रुपये के ख़र्च करने पर मिला। बाक़ी नेकियाँ तो बुराईयों के मुक़ाबले में ख़र्च हो गईं।

तो मैं कहता हूँ कि एक रुपया ख़र्च करने का बदला दुनिया में समा ही नहीं सकता। यह अल्लाह जो कहते हैं:-

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ (پ۲۱)

यानी जितना तुम ख़र्च करोगे, पस अल्लाह उसका बदला देगा।

जब अल्लाह बदला देगा तो अपनी शान के मुनासिब देगा। असल बदला जो देगा आख़िरत में देगा। वह दुनिया में समा ही नहीं सकता। तो मैं अर्ज़ कर रहा था कि आदमी ज़कात के अलावा माल क्यों लगायेगा? इसलिये लगायेगा ताकि अल्लाह के ख़ज़ाने से फ़ायदा उठाये।

इसके लिये मौक़ा तलाश करेगा कि कहीं ख़र्च करने का मौक़ा मिले, और इसको ऐसा समझेगा जैसे कोई दुकान मिल गई हो। एक आदमी को कारोबार मिलता है तो कैसा ख़ुश होता है कि मुझको कारोबार मिल गया, आमदनी होगी। इसी तरह अगर उसके पास कोई ज़रूरतमन्द आ गया तो

समझेगा कि यह आमदनी का ज़रिया होगा। इसके ज़रिये मेरी आमदनी होगी। मैं अल्लाह के ख़ज़ाने से फ़ायदा उठाऊँगा।

दर्दे दिल पैदा करो

दुकान पर आदमी बैठा है। आठ-नौ साल की बच्ची आ गई और कहती है कि मेरे पास दो रुपये हैं, मुझको गल्ला भी दे दो और मुझको घी, नमक और मिर्च भी दे दो। जो दूसरे और दुकानदार हैं, उन्होंने दो रुपये लिये और फेंक दिये और कहा कि यह सारी दुकान दो रुपये के अन्दर लूटने आई हो।

लेकिन एक ऐसा दुकानदार था जिसने अपनी जान और माल को ज़रूरियात, इबादात, अख़्लाक़ियात और दावत पर लगाना तय कर लिया था। उसने जब देखा कि आठ-नौ साल की लड़की दो रुपये लेकर आई तो पूछा कि तुम्हारे क्या हालात हैं? वह रोने लगी। उसने कहा कि मेरे अब्बा का हादसे के अन्दर इन्तिक़ाल हो गया। मेरी माँ बेवा हो गई। और मेरी माँ पर्दे में रहती है। लोगों के बरतन साफ़ करके अपनी ज़रूरतें पूरी करती है। आज उसे कोई मज़दूरी नहीं मिली, तो आज हमारे घर में फ़ाक़ा है। हमारी चार बहनें भी हैं। भाई भी छोटे-छोटे हैं।

अब यह सारा मन्ज़र सुनकर दुकानदार को रोना आ गया और उसने अच्छा-ख़ासा सामान एक बड़े टोकरे में रखकर अपने नौकर के हाथ उस लड़की के साथ भेज दिया। और वे दो रुपये भी वापस कर दिये।

अब जब दोनों घर गये तो खाना पका। धुआँ निकला। आँखों में से आँसू निकले कि अल्लाह उसका भला करे जिसने हमारे फ़ाक़े के अन्दर हमारा साथ दिया। अब उनकी आँखों के अन्दर जो आँसू हैं वे न मालूम कितनी नेमतें दिलवायेंगे।

जैसे बारिश बरस्ती है तो ज़मीन के अन्दर से कितने फल-फ़्रूट, तरकारियाँ वग़ैरह तैयार होती हैं। इसी तरह यतीम और बेवा के आँखों से

जब आँसू निकलेगा और उनके दिलों से दुआयें निकलेंगी तो बाज़ मर्तबा सात-सात नस्लों तक के फ़ाक़े दूर हो जाते हैं।

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! एक तरफ़ आदमी को वह करना है जो उसके ऊपर ज़रूरी है। क्योंकि उसके न करने पर जहन्नम में जाना पड़ेगा। और दूसरी तरफ़ जो ज़रूरी नहीं है बल्कि बतौर मेहरबानी और बतौर अख़्लाक़ के करना है वह भी करे ताकि अल्लाह की तरफ़ से उसके ख़ज़ाने से फ़ायदा पहुँचे।

"करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीं पर"

अल्लाह से अपने साथ जो काम कराना हो, तुम वह काम बन्दों के साथ करना शुरू कर दो। अगर आदमी चाहता है कि अल्लाह तआला मुझ पर रहम करे तो उसका तरीक़ा यह है कि वह दूसरों पर रहम करे। हदीस में है:-

اِرْحَمُوْا مَنْ فِی الْاَرْضِ یَرْحَمُکُمْ مَّنْ فِی السَّمَآءِ

तर्जुमा:- ज़मीन वालों पर तुम रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।

इसी तरह एक दूसरी हदीस में है:-

كَانَ اللّٰهُ فِیْ عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِیْ عَوْنِ اَخِیْهِ

तर्जुमा:- अल्लाह बन्दे की मदद में रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में रहता है।

तो अच्छा गुर यह है कि जो कुछ हमें अल्लाह से लेना है, वह हम दूसरों के साथ करना शुरू कर दें।

हम रहम करेंगे तो अल्लाह तआला हम पर रहम करेगा।

हम करम करेंगे तो अल्लाह तआला हम पर करम करेगा।

हम पर्दापोशी करेंगे तो अल्लाह हमारी पर्दापोशी करेगा।

तूने लोगों के खोटे सिक्के लिये मैंने तेरा खोटा अ़मल क़बूल किया

बनी इस्राईल का एक आदमी था। जो जानकर दूसरों के खोटे सिक्के ले लिया करता था और सामान पूरा दिया करता था। मशहूर हो गया कि खोटा सिक्का फ़लाँ जगह पर चलता है। तो लोग खोटा सिक्का लाते और पूरा सामान ले जाते।

उसका इन्तिक़ाल हो गया। ख़ुदा के सामने पेशी हुई। अल्लाह ने पूछा कि दुनिया से क्या लाये हो? उसने कहा कि मैं तो ख़ाली हाथ आया हूँ। इसलिये कि तेरी शान के मुनासिब हम कोई अ़मल नहीं कर सके।

इनसान कितना ही अच्छे से अच्छा अ़मल करे, सदक़ा करे, ख़ैरात करे, अल्लाह की शान के मुनासिब नहीं कर सकता। क्योंकि अल्लाह की शान बहुत बड़ी है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु की नमाज़ आला से आला थी। लेकिन उनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह सिखायाः-

अल्लाहुम्-म इन्नी ज़लमतु नफ़्सी ज़ुल्मन् कसीरंव्-व ला यग़्फ़िरुज़्-ज़ुनू-ब इल्ला अन्-त फ़ग़्फ़िर ली मग़्फ़ि-रतम् मिन् अ़िन्दि-क वर्-हम्नी इन्न-क अन्तल् ग़फ़ूरुर्रहीम।

तर्जुमाः- ऐ अल्लाह! हमने अपने ऊपर बहुत ज़ुल्म किया। और तेरे सिवा कोई गुनाहों को नहीं बख़्श सकता। बस तू मुझको बख़्श दे अपनी जानिब से। और मुझ पर रहम कर। बेशक आप बहुत बख़्शने और रहम करने वाले हैं।

देखो! कितनी ऊँची नमाज़ पढ़ी हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने, लेकिन आख़िर में क्या कहलवाया? कि ऐ अल्लाह! मैंने बहुत ज़ुल्म किया मुझको माफ़ फ़रमा। तो हमारी और तुम्हारी क्या हैसियत है।

मोहतरम दोस्तो! लेकिन अल्लाह का यह बहुत बड़ा करम है कि वह

मेहरबानी और फ़ज़्ल फ़रमा कर उसको क़बूल करते हैं। क़बूल करके फिर उसको बढ़ाते हैं और फिर जन्नत के अन्दर अल्लाह नेमतें देते हैं।

इसलिये उन्होंने यूँ कहा कि "ऐ अल्लाह पाक! मैं तो ख़ाली हाथ आया हूँ। तेरी शान के मुनासिब मेरा कोई अ़मल नहीं। मगर एक काम करता था कि लोगों के खोटे सिक्के ले लिया करता था" तो अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि तूने लोगों के खोटे सिक्के लिये तो मैंने तेरे खोटे आमाल क़बूल किये। उसके बाद उसको जन्नत के अन्दर दाख़िल कर दिया।

यह हमारा दावत का काम भी ऐसा ही है। जितना दूसरों को जन्नत की तरफ़ लाने की फ़िक्र करोगे, अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से इस फ़िक्र करने वाले को जन्नत की तरफ़ लेकर चला जायेगा। उन सब को जितनी बड़ी जन्नत मिलेगी, जिसने उन सब के ऊपर मेहनत की है, उसको उतनी बड़ी जन्नत अकेले मिलेगी।

इबादतों का मिज़ाज पैदा हो जाये

मेरे मोहतरम दोस्तो! इसलिये बहुत अच्छा गुर है दूसरों के साथ भलाई करना। मैंने यह भी बताया कि चार निस्बतों पर अपनी जान व माल को लगाना है- एक निस्बत आ़म जानदारों वाली है। इसमें तो अपनी ज़रूरतों पर अपने जान व माल को लगाना है। दूसरी निस्बत फ़रिश्तों वाली है। इसके अन्दर इबादात के ऊपर जान व माल को लगाना है।

इबादतें चार तरह की हैः-

1. नमाज़ 2. रोज़ा
3. हज 4. ज़कात

और इबादतों को ऐसे तरीक़े पर करना है कि इबादतों का मिज़ाज पैदा हो जाये।

एक है नमाज़ पढ़ना और एक है नमाज़ को ऐसे तरीक़े पर पढ़ना कि नमाज़ वाला मिज़ाज पैदा हो जाये। रोज़े वाला मिज़ाज पैदा हो जाए। ज़कात वाला मिज़ाज पैदा हो जाए। हज वाला मिज़ाज पैदा हो जाए।

****

नमाज़ का मिज़ाज है कि नमाज़ के बाहर भी अल्लाह के हुक्मों पर पाबन्दी आ जाए

मिज़ाज के क्या मायने हैं?

नमाज़ ऐसी पढ़ कि अल्लाह के हुक्मों पर जान लगाने का मिज़ाज पैदा हो जाए। क्योंकि पूरी जान को अल्लाह के हुक्मों पर लगाना है। पूरे बदन को अल्लाह के हुक्म में जकड़ना है। आँख, कान, ज़बान सब अल्लाह के हुक्मों में जकड़ा हुआ है। इधर-उधर नहीं देख सकता। कान हर एक की बात को नहीं सुन सकता। सिर्फ़ इमाम के इशारे पर रुकूअ़ सज्दा कर सकता है। इसका हाथ बंधा हुआ है। खड़ा हो तो कैसे हाथ बाँधे, रुकूअ़ में कहाँ रखे, कैसे रखे? सज्दे में किस तरह हाथ की उंगलियों को मिलाकर रखे और क़अ़दे के अन्दर उंगलियों को अपनी हालत पर छोड़कर रखे।

तो हाथ पर पाबन्दी, पैर पर पाबन्दी, यहाँ तक कि दिल व दिमाग़ पर पाबन्दी होती है। नमाज़ दस मिनट की होती है लेकिन इनसान को उसने अपना पूरा पावन्द बना दिया। अगर नमाज़ वाला मिज़ाज इनसान के अन्दर पैदा हो जाए तो यह नमाज़ के बाहर भी अल्लाह के हुक्मों का पाबन्द होगा।

अल्लाह के हुक्मों पर अपने तक़ाज़ों को दबाने का मिज़ाज पैदा हो जाए

और ज़कात का मिज़ाज क्या है?

ज़कात ऐसे तरीक़े पर अदा की जाए कि माल को अल्लाह के रास्ते में, ख़ैरात के कामों में ख़र्च करने का मिज़ाज पैदा हो जाए।

और रोज़े का मिज़ाज क्या है?

अल्लाह के हुक्म पर अपने तक़ाज़ों को दबाने का मिज़ाज पैदा हो

जाए। तो जब आदमी के अन्दर तीनों मिज़ाज पैदा हो जाएँगे-

अल्लाह के हुक्मों पर जान लगाने का मिज़ाज, अल्लाह के हुक्मों पर तक़ाज़े दबाने का मिज़ाज, अल्लाह के हुक्मों पर माल लगाने का मिज़ाज, तो अब आदमी सिर्फ़ रोज़े के अन्दर ही अपने तक़ाज़े को नहीं दबाएगा बल्कि जहाँ ज़रूरत पड़ेगी वहाँ दबाएगा। सिर्फ़ ज़कात के अन्दर ही माल नहीं लगाएगा बल्कि जहाँ ज़रूरत पड़ेगी, वहाँ लगाएगा। फिर जब ये चीज़ें पैदा हो गईं तो अन्दर अख़्लाक़ आयेंगे। जिसके नतीजे में यह दूसरों पर जान व माल लगाएगा और दूसरों के ऊपर जान व माल लगाने में अपने तक़ाज़ों को दबाएगा।

ईसार व हमदर्दी की अ़जीब मिसाल

और ये तीनों मिज़ाज सिर्फ़ मालदारों के अन्दर ही नहीं बल्कि ग़रीबों के अन्दर भी पैदा हों।

देखिए! बकरी की सिरी सात घरों के अन्दर फिरी। वे सारे के सारे ग़रीब थे। जिसके घर बकरी की सिरी आई वह भी ग़रीब था। लेकिन उसने सोचा कि मेरे तो दो बच्चों पर फ़ाक़ा है लेकिन मेरे पड़ोसी के तीन बच्चों पर फ़ाक़ा है। लिहाज़ा वह ज़्यादा मुस्तहिक़ है। तो उस सिरी को पड़ोसी को दे दी। उसका पड़ोसी भी ग़रीव, उसने देखा कि मेरे ऊपर तो दो दिन से फ़ाक़ा है, लेकिन मेरे पड़ोसी पर तीन-चार दिन का फ़ाक़ा है, लिहाज़ा वह ज़्यादा मुस्तहिक़ है। तो उसने बकरी की सिरी उसको दे दी। इसी तरह हर एक दूसरे पर ख़र्च करने के कारण निकालता रहा। वह सिरी फिरती-फिराती उसी पहले घर पर पहुँच गई। और उस पहले घर वाले ने पका कर खाई।

तो बकरी की सिरी सात घरों में फिरी और जहाँ से चली वहीं पहुँच गई। लेकिन सातों घरों के अन्दर आख़िरत की पूँजी तैयार हो गई। क्योंकि हर एक ने ईसार (अपने ऊपर दूसरे को तरजीह देना) और हमदर्दी वाला मामला किया।

बेइन्तिहा प्यारा अ़मल

इसी तरह एक घर के अन्दर मेहमान आया। खाना सिर्फ़ इतना है कि मेहमान खा सके। मेहमान के सामने खाना रखा गया और औ़रत ने चिराग़ की बत्ती ठीक करने के बहाने चिराग़ को गुल कर दिया। क्योंकि अगर चिराग़ जलेगा तो मेहमान को अन्दाज़ा हो जाएगा कि इतना ही खाना है और घर वालों को भी खाना है, तो थोड़ा खाएगा और छोड़ देगा। इसी वजह से उसने चिराग़ को गुल कर दिया ताकि मेहमान पेट भरकर खा ले।

देखिए! यहाँ खिलाने वाला जो मेहमान नवाज़ है, ग़रीब है। मालदार नहीं है, लेकिन उसके अन्दर कैसा ईसार और कैसी हमदर्दी और कैसा ख़र्च करने का जज़्बा है। आ़म तौर से जहाँ ख़र्च करने का मामला आता है वहाँ ज़ेहनों में यह बात आती है कि मालदार ख़र्च करें। हालाँकि ख़र्च करना सिर्फ़ मालदार के वास्ते नहीं है बल्कि ग़रीब भी करें। आ़म तौर से मालदारों को ग़रीबों की ज़रूरतों का पता नहीं चलता लेकिन ग़रीब ग़रीब को जानता है। एक दूसरे की तंगी को जानता है। ग़रीब के लड़के बच्चे रो रहे हैं। दूसरा ग़रीब जानता है कि क्यों रो रहे हैं। लेकिन मालदार को पता नहीं। तो अब यह ग़रीब दूसरे ग़रीब की ज़रूरत को पूरा करेगा।

मेरे मोहतरम दोस्तो! उस औ़रत ने चिराग़ गुल कर दिया कि मेहमान खा ले, हम खाएँ या न खाएँ।

अब सुबह के वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में जब यह सहाबी पहुँचे हैं तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आज रात तुमने कौनसा कारनामा अन्जाम दिया कि तुम्हारा और तुम्हारे जैसों का तज़किरा क़ुरआन में आया है:-

يُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ (پ٢٨)

तर्जुमा:- तंगी की हालत में रहकर भी दूसरों को अपने ऊपर तरजीह देते हैं।

दोस्तो! यह कितनी बड़ी चीज़ है?

अगर किसी को मालूम हो जाए कि एक मंत्री ने अपनी मज्लिस में मेरा तज़किरा किया है तो कितनी ख़ुशी होगी कि मेरा तज़किरा उस मंत्री की मज्लिस में हुआ।

और यहाँ भूखों को खाना खिलाने वालों का ज़िक्र अल्लाह क़ुरआन के अन्दर कर रहे हैं। और सिर्फ़ उसी आदमी के लिए नहीं जिसने खाना खिलाया बल्कि क़ियामत तक इस तरीक़े से जो भी दूसरों की ख़ैर-ख़बर लेगा, इस आयत में उसका भी ज़िक्र है।

बेदीनों को दीनदार बनाने की फ़िक्र

ख़ुदा के नज़दीक बेहद पसन्दीदा

तो आप अन्दाज़ा लगाएँ कि जो आदमी गश्त करके बेदीन को दीनदार बनाने की फ़िक्र करे, अगर वह बेदीन रह जाता तो जहन्नम के अन्दर बड़ी लम्बी भूख बरदाश्त करनी पड़ती, और दीनदार बनकर इतनी लम्बी भूख जो जहन्नम के अन्दर थी, जन्नत के अन्दर दाख़िल होकर दूर हो गई। तो उससे अल्लाह पाक कितना ख़ुश होंगे।

ग़रीब और मालदार दोनों का कमाल

मेरे मोहतरम दोस्तो! मैं यह अ़र्ज़ कर रहा था कि ख़र्च का मामला सिर्फ़ मालदार ही पर नहीं बल्कि ग़रीब पर भी है। क्योंकि ग़रीब, ग़रीब को पहचानता है। ग़रीब का कमाल यह है कि किसी दरवाज़े पर माँगे नहीं। और मालदार का कमाल यह है कि जहाँ ग़रीब और परेशानहाल हों, वह उनकी ज़रूरतों को पूरी करे।

मस्जिद के अन्दर जो ज़ेहन बनाया जाता था वह यूँ बनाया जाता था कि पालने वाला अल्लाह है। ज़रूरतें पूरी करने वाला अल्लाह है। ग़ैर से कुछ नहीं होता। लिहाज़ा अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह होना चाहिए। और उसी का हुक्म पूरा करना चाहिए। अल्लाह कामयाब करेंगे।

अल्लाह का हुक्म बनी इस्राईल ने पूरा किया था इसके बावजूद कि ग़रीब थे। झोंपड़ी में रहते थे। परेशानहाल थे। लेकिन जब अल्लाह का हुक्म पूरा किया तो अल्लह ने मेहरबानी फ़रमायी कि फ़िरऔन का कमाया हुआ माल इनके लिए हलाल बना दिया और उसे बनी इस्राईल के क़दमों में डाल दिया।

और फ़िरऔन के हाथ में सब कुछ था लेकिन उसने अल्लाह को नाराज़ कर दिया। फ़ौज लेकर निकला। समन्दर का पानी मिला और हमेशा-हमेशा के लिए ग़र्क़ हो गया। और जहन्नम के अन्दर जाने वाला बना और अ़ज़ाब के अन्दर मुब्तला हो गया।

तो अगर अल्लाह को राज़ी करने वाला ग़रीब भी है, अल्लाह उसकी मदद करता है। और अगर अल्लाह को नाराज़ करने वाला मालदार है तो अल्लाह उसकी भी पकड़ करते हैं।

बस ज़ेहन बनने की बात है

तो मस्जिद के अन्दर यह ज़ेहन बनाया जाता है और यह ज़ेहन लेकर ग़रीब भी बाहर निकला और मालदार भी बाहर निकला। मालदार को फ़िक्र हुई कि अल्लाह को राज़ी करने के लिए ज़कात भी देनी चाहिए। अगर ज़कात नहीं देगा तो उसका माल क़ियामत के दिन साँप बनेगा और उसके गले में अज़्दहा बनाकर डाला जाएगा और वह डसेगा। इसी तरह अगर ज़कात नहीं दी तो सोने-चाँदी का पतरा गर्म करके दाग़ा जाएगा। अब मालदार घबरा गया कि बहुत बड़ी मुसीबत मेरे सर पर आएगी।

और ग़रीब ने भी मस्जिद की बातें सुनीं तो ग़रीब का ज़ेहन यह था कि ज़िन्दगी माल से नहीं बनती। ज़िन्दगी चीज़ों से नहीं बनती। ज़िन्दगी तो अल्लाह बनाएँगे।

अब ग़रीब ने यह तय किया कि मेहनत मज़दूरी करके सूखी रोटी खा लेंगे लेकिन किसी से माँगेगे नहीं। अगर मैं माँगूँगा तो अल्लाह नाराज़ होंगे।

****

ग़ैरों से माँगना मोहताजी का दरवाज़ा खोलना है

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि जिसने माँगने का दरवाज़ा खोला तो अल्लाह उसके ऊपर मोहताजी का दरवाज़ा खोल देते हैं।

और दूसरी बात यह भी फ़रमाईः-

"जो सवाल करने वाला है, क़ियामत के दिन उसके चेहरे पर हड्डी होगी, गोश्त नहीं होगा।"

जब ग़रीब ने भी तय कर लिया कि मैं माँगूगा नहीं। बल्कि हम नमाज़ पढ़ेंगे। फिर मेहनत मज़दूरी करके जो रोटी चटनी मिलेगी उसपर गुज़ारा कर लेंगे, अल्लाह को नाराज़ नहीं करेंगे।

अमीर को इसकी फ़िक्र हुई कि मेरे ऊपर अल्लाह का अ़ज़ाब होगा अगर मैं ज़कात नहीं निकालूँगा। अब यह माल लेकर ग़रीब के पास गया और कहा कि पाँच सौ रुपये ज़कात क़बूल कर लो। तो ग़रीब ने कहा सेठ साहिब! मस्जिद के अन्दर हमने सुना है कि ज़िन्दगी पैसे से नहीं बनती बल्कि अल्लाह की बात मानने से बनती है। मैं तो अल्लाह की बात मानता हूँ। नमाज़ पढ़ता हूँ। ज़िक्र करता हूँ। तिलावत करता हूँ। अल्लाह मेरी ज़िन्दगी बनायेगा। फिर मालदार ने यूँ कहा कि अगर तू मेरा माल ले लेगा तो तुम्हारा मुझ पर एहसान होगा। गोया तूने मुझको अ़ज़ाब से बचा लिया। अल्लाह के वास्ते मुझ पर मेहरबानी करो। यह पाँच सौ रुपये क़बूल कर लो।

बेहतरीन मालदार कौन?

कहने वाले ने ख़ूब कहा है।

نِعْمَ الْاَمِيْرُ عَلٰى بَابِ الْفَقِيْرِ وَبِئْسَ الْفَقِيْرُ عَلٰى بَابِ الْاَمِيْرِ

तर्जुमाः- बेहतरीन मालदार वह है जो फ़क़ीर के दरवाज़े पर जाये, और बद्तरीन ग़रीब वह है जो मालदार के दरवाज़े पर जाये।

जब इस ग़रीब ने देखा कि यह तो बिल्कुल पीछे पड़ गया है तो कहा देखो! मुझको माफ़ करो। मैं तुम्हें एक दूसरे ग़रीब का घर बताता हूँ। वह बहुत ज़्यादा परेशानहाल है, उसको पाँच सौ रुपये दे दो। मालदार ने कहा कि आपने बहुत बड़ी मेहरबानी की कि एक ग़रीब का घर बता दिया। इस पाँच सौ को तुम ले लो, उसको मैं पाँच सौ और दे दूँगा। और मुझे ओरों के घर बता दो, ताकि वहाँ भी मैं ज़कात का माल दे सकूँ।

अपनी जान व माल दूसरों पर लगाना और दूसरों से बेपरवाह रहना

रसूले करीम सल्ल० की तालीम और जोड़ का तरीक़ा

मेरे मोहतरम दोस्तो! मस्जिद के अन्दर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़िन्दगी और ईमानियात की बातें एक-दूसरे को आदमी से बेपरवाह करती हैं, और हर एक का ज़ेहन अल्लाह की तरफ़ जाता है। इस तरह मालदारों और ग़रीबों के बीच जोड़ पैदा होता है। ग़रीब मालदार के दरवाज़े पर नहीं जाता कि अल्लाह मेरी ज़रूरत को पूरा करेगा।

एक आदमी झोंपड़े में बैठा है। उसके बीवी-बच्चे भी हैं। इतने में एक ग़ैर-मुस्लिम मालदार अपने बीवी-बच्चे के साथ गाड़ी के ज़रिये टी-पार्टी (चाय की पार्टी) में शिरकत के लिये जा रहा था। उसकी गाड़ी रास्ते में ख़राब हो गई। गर्मी का ज़माना है ग़रीब ने देखा कि उसकी गाड़ी ठीक नहीं हो रही है, परेशान है, तो उस ग़रीब ने यूँ कहा कि भाई देखो! सारे मोटर के अन्दर तप रहे हैं, उनको मेरे झोंपड़े में कर दो। अब उस ग़ैर-मुस्लिम औ़रत की मुस्लिम औ़रत ख़िदमत कर रही हैं। खाना खिला रही हैं। हाथ का पंखा बच्चे कर रहे हैं। मर्द को भी दूसरी जगह बैठाया और उसको भी खिलाया जा रहा है। अच्छा खाना था नहीं, लेकिन भूख लगी थी। भूख की हालत में वही खाना अच्छा मालूम हुआ।

फिर ग़रीब आदमी ने कहा कि मेरे पास मोटर तो नहीं है, बैलगाड़ी

है। अपने बीवी-बच्चों को बैलगाड़ी के अन्दर बिठाओ और तुम भी बैठो। और मैं तुम लोगों को लेकर तुम्हारे शहर छोड़ दूँ। और वहाँ से मेहताब मिस्त्री को लेकर आयेंगे। गाड़ी ठीक हो जायगी तो फिर ले जाना। उस आदमी ने वहाँ लेजा कर सब को छोड़ दिया और वहाँ से मेहताब को लेकर आया और गाड़ी बिल्कुल ठीक हो गई। अब उस ग़ैर-मुस्लिम मालदार के अन्दर उस ग़रीब की मुहब्बत आ गई कि इसने इतनी परेशानी की हालात में किस अन्दाज़ से हमारी ख़िदमत की। ग़ैर-मुस्लिम ने इरादा किया कि मैं इसको एक हज़ार रुपये दे दूँ। और हज़ार रुपये निकाल कर यूँ कहा कि मेरी तरफ़ से यह हज़ार रुपये क़बूल कर लो। उस ग़रीब ने कहा कि जितनी ख़िदमत मैंने तुम्हारी की है, यह तुम से लेने के लिये नहीं की बल्कि मैंने अल्लाह से लेने के लिये की है। हम अल्लाह से जन्नत लेंगे।

बताओ! अब उस ग़ैर-मुस्लिम के दिल के अन्दर उस ग़रीब मुसलमान की कितनी मुहब्बत आयेगी।

तो दूसरों के जान व माल से बेपरवाह (बेलालच) होना, और अपने जान व माल को दूसरों पर लगाना हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह ज़िन्दगी बतायी है और इस पाक ज़िन्दगी के अन्दर आपस में संगठन और मेलजोल पैदा होता है और जोड़ होता है।

परेशानहाल की परेशानी को दूर करना बेहतरीन इबादत है

मैं फिर आपको वे बातें याद दिला दूँ कि अल्लाह ने हमको चार निस्बतें दी हैं। एक आ़म जानदारों वाली निस्बत पर अपनी जान लगाये। दूसरे फ़रिश्तों की निस्बत पर यानी इबादत में लगे। और इबादतें चार तरह की हैं:- नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज। नमाज़ इस तरह पढ़े कि नमाज़ का मिज़ाज पैदा हो जाये।

आदमी मालदार है। नमाज़ पढ़ी, बाहर गया, देखा कि एक परेशानहाल टोकरी लेकर जा रहा है। टोकरी बार-बार गिर रही है। उसने

सोचा कि यह परेशानहाल टोकरी लेकर जा रहा है। अगर मैं इसकी परेशानी दूर कर दूँ तो अल्लाह मेरी परेशानी को दूर कर देगा। इसलिये उसने उसकी टोकरी सर पर रखी और उसकी मन्ज़िल तक पहुँचाया।

ख़िदमत से तवाज़ो पैदा होती है और तवाज़ो से अल्लाह दर्जों को बुलन्द करते हैं

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की ज़िन्दगी में ऐसे बहुत से वाक़िआत हैं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के दौर में एक बार एक बूढ़ी औरत थी। आँख, कान, हाथ, पाँव से माज़ूर थी। बहुत परेशानहाल थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सोचा कि मैं इस बूढ़ी औरत की ख़िदमत और इसका काम करूँ, तो अल्लाह मुझसे राज़ी होगा।

इतनी ऊँची हैसियत होने के बावजूद इस तरह से ग़रीबों से मिलना और उनकी ख़िदमत करना, इससे तवाज़ो पैदा होती है। और जब अल्लाह को राज़ी करने के लिये तवाज़ो पैदा होती है तो अल्लाह उसे ऊँचा कर देता है। हदीस में है।

مَنْ تَوَاضَعَ لِلّٰہِ رَفَعَهُ اللّٰهُ (حدیث)

तर्जुमाः- जो अल्लाह पाक के लिये छोटा बनता है, अल्लाह पाक उसे ऊँचा कर (यानी बड़ा बना) देते हैं।

और जो अपने को ऊँचा बनता है, अल्लाह पाक उसे नीचा कर देते हैं। जैसा कि यह भी हदीस में है।

وَمَنْ تَكَبَّرَ وَضَعَهُ اللّٰهُ (حدیث)

यानी जो तकब्बुर और घमण्ड करता है अल्लाह तआला उसको पस्त और ज़लील कर देता है।

एक फ़रिश्ता बाक़ायदा मुक़र्रर है। उस फ़रिश्ते का हाथ आदमी के सर पर है। उसको इतना हुक्म है कि अगर यह खुद बड़ा बनना चाहे तो इसको नीचा कर दे। और अगर अपने को अल्लाह के लिये नीचा करे तो

इसको ऊँचा कर दो।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का गवर्नर को कोड़े मारना तंबीह व एहतिराम की आला मिसाल

इसलिये हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु तवाज़ो व इन्किसारी सिखाते थे कि आदमी के अन्दर तवाज़ो पैदा हो जाये। हक़ीक़त में आदमी अपने को छोटा समझने लगे। हज़रत जालूत रज़ियल्लाहु अन्हु बहरीन के गवर्नर हैं। उन्होंने बड़ा कारनामा अन्जाम दिया। एक बार बैठे हुए थे, लोग बड़ी तारीफ़ कर रहे थे कि इन्होंने कितना बड़ा कारनामा अन्जाम दिया। बड़ी आमदनी हुई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु थोड़ी देर में पीछे से आये और उनकी कमर पर दो कोड़े ज़ोर से मारे। जब एक तरफ़ आदमी की तारीफ़ हो रही हो और उस हालत में उसकी पिटाई हो जाये तो कितनी रुस्वाई और शर्मिन्दगी होगी।

अब हज़रत जालूत परेशान हो गये कि किसने मुझे मारा। पीछे मुड़कर देखा तो हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उनको देखकर ख़ामोश हो गये। इसलिये कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का बड़ा एहतिराम (अदब और सम्मान) था।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की सख़्ती लोगों के दरमियान बहुत मशहूर थी। लेकिन सख़्ती के साथ-साथ तक़वा (परहेज़गारी) बढ़ा हुआ था।

हज़रत जालूत रज़ियल्लाहु अन्हु को जब दो कोड़े पड़े तो उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि हज़रत! अगर मेरे से कोई ग़लती हो गई हो तो मुझको बता दीजिए ताकि मैं ठीक कर लूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारी कोई ग़लती मेरे सामने नहीं आयी। लेकिन आगे की एहतियात के तौर पर दो कोड़े मारे। यह इसलिये मारे कि मजमे के अन्दर तुम्हारी तारीफ़ हो रही है। कहीं तुम्हारे ज़ेहन में यह बात न आ जाये कि मैं तो बहुत कुछ हूँ।

पिटाई नहीं करनी है

मौक़ा आ जाये तो पिटाई बरदाश्त करनी है

लेकिन मैं तुमको एक बात बता दूँ कि कहीं तुम लोग भी लोगों की पिटाईयाँ न करने लग जाना। नक़ल कौनसी बात की उतारनी है? इससे कौनसा उसूल मिला? क्या इससे यह उसूल मिला कि हम दूसरों की पिटाईयाँ करें? नहीं! इससे यह उसूल मिला कि अगर कोई ख़ुदा न करे जज़्बात में आकर हमारी पिटाई कर दे तो उसे हम हज़रत जालूत की तरह बरदाश्त करें। न यह कि हम हज़रत उमर की तरह पिटाई शुरू कर दें। हज़रत उमर की पिटाई के साथ उनका तक़्वा भी बहुत बढ़ा हुआ था जो हमारे तुम्हारे बस की बात नहीं।

हज़रत मौलान इलियास साहिब रह० का अख़्लाक़

हज़रत मौलाना इलियास साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि थके-मांदे रात को लेटे। मैवात के बड़े-बड़े चौधरियों में से दो चौधरी मिलने आये। हज़रत मौलाना के क़रीब ख़िदमत करने वाले लोग रहते थे। उन्होंने उन चौधरी साहिबान को रोक दिया और कहाः हज़रत आराम कर रहे हैं। आप चले जायें, सुबह को आना। हज़रत मौलाना को पता चल गया कि कोई चौधरी मिलने आये हैं। मौलाना उठकर कमरे में बैठ गये और कहा कि चौधरी को बुलाओ।

इसलिये कि दुनियावी लाईन का जो चौधरी होता है उसका भी इकराम करना चाहिए। दुनियावी लाईन का कोई भी बड़ा आदमी आये तो उसका इकराम (अदब और सम्मान) करना चाहिए।

हर क़ौम के सम्मानित आदमी का इक्राम करो

रसूले करीम सल्ल० का पाक इरशाद और अ़मल

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का पाक इरशाद है।

اَكْرِمُوْا كَرِيْمَ كُلِّ قَوْمٍ

तर्जुमाः- हर क़ौम के बड़े आदमी का इकराम (सम्मान व अदब) करो। चाहे वह दीनदार न हो। जब तुम उसका इकराम करोगे तो वह क़रीब आयेगा।

हातिम ताई के बेटे जिनका नाम अ़दी इब्ने हातिम था। बड़े लोगों में से थे। वह रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मिलने आये तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपने बिस्तर से उठ गये और अपने कपड़े को बिछा दिया कि मेरे इस कपड़े पर से चलकर मेरे बिस्तर पर आओ। हालाँकि हज़रत अ़दी इब्ने हातिम उस वक़्त तक मुसलमान न थे। तब भी सारे नबियों के सरदार उठ गये और खड़े होकर अपना कपड़ा बिछा दिया कि इस पर से होकर बिस्तर पर आयें।

लेकिन मेरे भाई! दुनियावी लाईन के जो चौधरी होते हैं, उनके अन्दर भी बड़ी सूझ-बूझ होती है। अ़दी इब्ने हातिम ने उस कपड़े को उठा लिया और उठाकर अपने सर पर रख लिया और कहा कि यह आपका कपड़ा ऐसा नहीं है कि मेरे पैरों के नीचे आये। यह कपड़ा तो सर पर उठाने के क़ाबिल है और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास बैठ गये। आपने उनको दीन की दावत दी। उन्होंने कलिमा पढ़ लिया। हमारी जमाअ़तों के अन्दर खुसूसी गश्त इसी लिये होता है।

किसी भी लाईन का कोई बड़ा आये तो उसका इकराम करना। इकराम करके उसको मानूस करना। मानूस करोगे तो यह बड़ा आदमी एक बार ज़बान से कह देगा कि यह अच्छा काम है तो न मालूम कितने आदमी इससे मानूस हो जायेंगे।

मेरे दोस्तो! अगर काम उसूल के साथ करेंगे तो हम दूसरों को इस काम से जोड़ने वाले बनेंगे।

अल्लाह तआ़ला हमें इस काम की क़द्र करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायें और हम, लोगों को इस काम से जोड़ने वाले बनें, और इस काम पर अपनी जान व माल को लगाने वाले बनें। आमीन।

तक़रीर (4)

यह तक़रीर 8 नवम्बर 1992 को बंगले वाली मस्जिद देहली में की गई।

जिस तरह अल्लाह तआला ने चीज़ों के अन्दर तासीर रखी है इसी तरह अल्लाह ने आमाल के अन्दर भी तासीर रखी है। लेकिन चीज़ों की तासीर के बारे में अल्लाह ने तजुर्बा करा दिया और आमाल की तासीर के बारे में अल्लाह ने वायदा किया। इनसान के तजुर्बे से ज़्यादा पक्की बात अल्लाह का वायदा है।

इनसान के तजुर्बे के ख़िलाफ़ हो सकता है लेकिन अल्लाह के वायदे के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! इनसान जो मेहनत करता है उससे दो माया तैयार होती हैं। एक माया इनसान के अन्दर बनती है और एक माया इनसान के बाहर बनती है।

इनसान के अन्दर की माया

इनसान के अन्दर की जो माया बनती है उससे ईमान बनेगा या कुफ़्र बनेगा। इल्म बनेगा या जहालत बनेगी। अमानत बनेगी या ख़ियानत बनेगी। अल्लाह का ध्यान बनेगा या ग़फ़लत बनेगी। रहम बनेगा या ज़ुल्म बनेगा। सच्चाई बनेगी या झूठ बनेगा। इख़्लास बनेगा या रियाकारी बनेगी।

इनसान की मेहनत से उसके बाहर की माया

और इनसान के बाहर जो माया बनती है उससे जायदाद बनेगी, माल बनेगा, घटिया क़िस्म की ग़िज़ा बनेगी या बढ़िया क़िस्म की ग़िज़ा बनेगी। बड़ी दुकान बनेगी या छोटी दुकान बनेगी। तो इनसान के अन्दर भी एक माया बनती है और बाहर भी एक माया बनती है।

कामयाबी का दारोमदार अन्दर की माया पर

लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उस माया पर जो बाहर बनती है उस पर कामयाबी और नाकामी का मदार नहीं बनाया, उसको कोई अहमियत नहीं

दी। बल्कि इनसान के अन्दर जो माया है उसको कामयाबी और नाकामी का दारोमदार बनाया। अगर अन्दर की माया बिगड़ गई तो दुनिया व आख़िरत की ज़िन्दगी भी बिगड़ गई। और अगर अन्दर की माया बन गई तो दुनिया व आख़िरत की ज़िन्दगी बन गई।

हर अ़मल में तासीर

जिस तरह अल्लाह तआ़ला ने चीज़ों के अन्दर तासीर रखी है इसी तरह अल्लाह ने आमाल के अन्दर भी तासीर रखी है। लेकिन चीज़ों की तासीर के बारे में अल्लाह ने तजुर्बा करा दिया और आमाल की तासीर के बारे में अल्लाह ने वायदा किया। इनसान के तजुर्बे से ज़्यादा पक्की बात अल्लाह का वायदा है।

इनसान का तजुर्बा ख़िलाफ़ हो सकता है अल्लाह का वायदा नहीं

इनसान के तजुर्बे के ख़िलाफ़ हो सकता है लेकिन अल्लाह के वायदे के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता। इनसान का तजुर्बा यह है कि आग जलाती है लेकिन बाज़ मर्तबा नहीं जलाती। देखो! हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम आग के अन्दर डाले गये लेकिन आग ने नहीं जलाया। इनसान का तजुर्बा यह है कि ज़हर मारता है लेकिन बाज़ मर्तबा नहीं मारता। देखो! हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ज़हर की पूरी शीशी पी ली मगर नहीं मरे।

इसी तरह आमाल की जो तासीर अल्लाह और उसके रसूल ने बताई है, वह बिल्कुल सही है। मिसाल के तौर पर नमाज़ पर कामयाबी का वायदा है:-

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ٥ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلٰوتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ٥

(پ۱۸، سورۃ المومنون)

यानी कामयाबी पा गये वे मोमिन हज़रात जो ख़ुशू ख़ुज़ू से (यानी नमाज़ को उसके आदाब के साथ) अदा करते हैं।

ख़ुशू ख़ुज़ू वाली नमाज़ पढ़ोगे तो अल्लाह कामयाब करेंगे। इसी तरह दुआ पर क़बूल होने का वायदा है:-

اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (پ۲)

यानी मुझसे दुआ माँगो, मैं क़बूल करूँगा।

इसी तरह ज़िक्र पर इत्मीनान व सुकून होने का वायदा है:-

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ (پ۱۳)

बेशक अल्लाह के ज़िक्र ही से दिल चैन व सुकून पाते हैं।

इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आमाल की तासीर पर जो वायदे किये हैं वे भी बिल्कुल सही हैं। मिसाल के तौर परः

"शादी करने से तंगदस्ती दूर होती है"

हालाँकि ज़ाहिर में मालूम होता है कि तंगदस्ती बढ़ जायेगी।

अ़मल में ताक़त ज़रूरी

तो अल्लाह और उसके रसूल के जितने वायदे हैं, वे बिल्कुल सही हैं। लेकिन एक बात ज़ेहन में बिठा लो कि यह उस वक़्त में होगा जब अ़मल जानदार हों और अ़मल ताक़तवर हों। ख़ाली अ़मल का ढाँचा हो तो उस पर वायदा नहीं है। इसकी मिसाल यह है कि जब भैंस ताक़तवर और तन्दुरुस्त होगी तो दूध-घी मिलेगा। लेकिन अगर सिर्फ़ भैंस का फ़ोटू हो या भैंस मरी हुई हो तो न उससे दूध मिलेगा और न घी मिलेगा।

अ़मल में जान कैसे आये?

अब आमाल जानदार कैसे हों? तो हमें हर अ़मल के लिये पाँच बातें करनी होंगी और उनको सीखना होगा।

पहली बात यक़ीन का सही होना।

दूसरी बात जज़्बे का सही होना।

तीसरी बात तरीक़े का सही होना।

चौथी बात ध्यान का सही करना।

और पाँचवीं बात नीयत का सही करना।

पहली बात यक़ीन का सही होना, इसका नाम है ईमान। दूसरी बात जज़्बे का सही होना, इसका नाम है एहतिसाब। तीसरी बात तरीक़े का सही होना, यानी हर काम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर करना। चौथे ध्यान का सही होना, इसका नाम एहसान है। और पाँचवीं बात नीयत का सही करना इसका नाम इख़्लास है।

सब कुछ करने वाले अल्लाह हैं

पहली चीज़ ईमान है। इसको हासिल करने के लिये दो काम करने हैं। एक अल्लाह का यक़ीन दिल के अन्दर लाना है और दूसरे तमाम मख़्लूक़ का यक़ीन दिल से निकालना है। सारी मख़्लूक़ से कुछ नहीं होता, करने वाले अल्लाह हैं। कारोबार करने से कुछ नहीं होता रिज़्क़ देने वाले अल्लाह हैं। दवा-इलाज करने से कुछ नहीं होता शिफ़ा देने वाले अल्लाह हैं। हर काम अल्लाह करने वाले हैं। अल्लाह जिसको चाहते मारते हैं और जिसको चाहते हैं ज़िन्दा रखते हैं। जिसको चाहते हैं इ़ज़्ज़त देते हैं और जिसको चाहते हैं ज़िल्लत देते हैं।

जमाअ़तों की चलत-फिरत का मक़सद

हमारी ये जमाअ़तें इसी लिये चल-फिर रही हैं ताकि हमें अल्लाह और उसके रसूल के बताये हुए वायदों पर यक़ीन आ जाये। और सारी मख़्लूक़ात और सारी लाईनों से अपने रिश्ते को काटकर एक अल्लाह से जुड़ने वाले बनें।

हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु का यक़ीन

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के अन्दर अल्लाह और उसके रसूल के वायदे पर यक़ीन को पैदा

किया। और इस क़द्र पैदा किया कि हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपनी मस्जिद में एक बार बैठे थे। किसी ने आकर ख़बर दी कि हज़रत मौहल्ले में आग लग गई है, आपका भी मकान जल गया। तो हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि नहीं जला। दूसरे ने ख़बर दी तब भी कहा कि नहीं जला। इसी तरह कई आदमियों ने कहा और आप इत्मीनान से बैठे रहे। थोड़ी देर के बाद एक आदमी आया उसने कहा कि पूरा मौहल्ला जल गया और आपका घर बच गया। उन्होंने कहा कि मैंने तो पहले ही से कहा था कि मेरे मकान में आग नहीं लगी।

लोगों ने पूछा कि हज़रत! आपने इतने इत्मीनान से कहा कि आग नहीं लगी, आख़िर क्या बात है? हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक दुआ़ बताई थी और उसके साथ-साथ यह भी बताया था कि जो शख़्स इसको सुबह में पढ़ लेगा तो वह शाम तक के अचानक के हादसों से महफ़ूज़ रहेगा। और अगर शाम को पढ़ लेगा तो सुबह तक के अचानक के हादसों से महफ़ूज़ रहेगा। मैंने उस दुआ़ को पढ़ लिया था। तो तुम कहते हो कि आग लग गई और अल्लाह के प्यारे नबी कहते हैं कि नहीं लगी। तो मैं तुमको सच्चा मानूँ या अल्लाह के प्यारे नबी को सच्चा मानूँ?

इसी तरह दोस्तो! हमें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बातों के यक़ीन को अपने दिल के अन्दर उतारना है और ईमान को मज़बूत और ताक़तवर बनाना है।

ईमान एक गहरा समन्दर है

देखो याद रखो! ईमान एक गहरा समन्दर है। जितनी इसकी मश्क़ करते रहोगे उतना ईमान बढ़ता रहेगा। किसी मौक़े पर जाकर यह बात ज़ेहन के अन्दर न आये कि मेरा ईमान मुकम्मल हो गया। हाथ-पैर मारते रहो। सहाबा किराम का ईमान इतना बढ़ा कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु यूँ कहते हैं कि मेरे को अकेले सात हज़ार के मजमे के

मुक़ाबले में भेज दो।

हम ईमान की लाईन से बहुत कमज़ोर हैं

मेरे मोहतरम दोस्तो! इस वक़्त मेरे ऊपर जो ग़लबा है वह यह कि हमारा ईमान बढ़ता रहे। अभी तो हम इसमें बहुत कमज़ोर हैं। अगर एक तरफ़ चीज़ों का निज़ाम (व्यवस्था) हो और दूसरी तरफ़ आमाल का निज़ाम हो, आमाल पर जो ख़ुदा तआ़ला के वायदे हैं, उन पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता, बल्कि हम तो चीज़ों के निज़ाम (व्यवस्था) को अपनाते हैं। अगर हमारे हालात ना-मुवाफ़िक़ हुए तो हम अपने हालात को मुवाफ़िक़ बनाने के लिए हर क़िस्म के तरीक़े इख़्तियार करते हैं और अल्लाह की तरफ़ रुजू नहीं करते तो हम ईमान के अन्दर बहुत कमज़ोर हैं। इसलिए हमें ईमानियात की लाईन को बहुत मज़बूत और ताक़तवर बनाना है।

इकराम और अख़्लाक़ के फ़ायदे

उसके बाद जब ईमान मज़बूत हो जाये और ताक़तवर हो जाये तो हमारे दिलों के अन्दर लोगों का इकराम (सम्मान) करना आयेगा। लोगों से हम अख़्लाक़ वाला मामला करेंगे और लोगों से मेलजोल रखेंगे, तो लोग इस्लाम की तरफ़ आयेंगे। "सुलह हुदैबिया" के अन्दर यही चीज़ पाई गई। जिससे लोग गिरोह के गिरोह इस्लाम में आने लगे और आज भी लोग इस्लाम की तरफ़ गिरोह के गिरोह आ सकते हैं अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली समाजी ज़िन्दगी, तरीक़ा, मामलात और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाला अख़्लाक़ हमारे अन्दर आ जाये।

ज़िन्दगी में हुज़ूरे पाक की सुन्नतें, जैसे बदन में रूह

अब मैं एक मिसाल दूँ कि ये दुनिया की जितनी माद्दी चीज़ें हैं, इनकी मिसाल बदन की सी है। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़ों और उनकी सुन्नतों की मिसाल रूह की सी है। बदन में अगर रूह है तो बदन काम करेगा। रूह के बग़ैर बदन काम नहीं करेगा।

तो ऐसे ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाला तरीक़ा ज़िन्दगियों के अन्दर अगर है तो अल्लाह उनको कामयाब करेगा। और अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाला तरीक़ा ज़िन्दगियों से निकल गया है तो आदमी जहन्नम के गढ़े के क़रीब होता चला जायेगा और आख़िर में अल्लाह तआ़ला उसे जहन्नम में डाल देंगे। जिसकी वजह से वह नाकाम और बरबाद हो जायेगा।

सुन्नते नबवी से ख़ाली ज़िन्दगी बेजान लाश है

और जब ज़िन्दगी के अन्दर हुज़ूरे पाक का तरीक़ा नहीं है तो उसकी मिसाल ऐसी है कि जैसे आपके घर के अन्दर दस पहलवान हैं। लेकिन उन दसों पहलवनों की जान निकली हुई है। लाशें पड़ी हुई हैं। तो उन पहलवानों की लाशें आपके किसी काम की नहीं हैं।

तो जब एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े को छोड़कर पन्द्रह बड़े-बड़े कारख़ाने बनाये। पन्द्रह फ़्लेट बनाये और बढ़िया क़िस्म की कारें ख़रीदीं, तो यह समझो कि यह लाशें तैयार कर रहा है। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े को छोड़कर जितनी भी दुनिया बनायी जायेगी वे लाशें हैं। उसमें मुसीबतों के कीड़े पड़ेंगे। आज पूरी दुनिया के अन्दर कीड़े पड़े हुए हैं, इसलिये कि लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े को छोड़कर दुनिया को बढ़ा लिया है।

दुनिया खेल थी

मेरे मोहतरम दोस्तो! क़ब्र के अन्दर जो लोगों को अ़ज़ाब दिये जाते हैं, वे ज़िन्दों को दिखाई नहीं देते। लेकिन मरने वाले को दिखाई देते हैं। जिस वक़्त वह मरेगा उसकी समझ में आ जायेगा कि दुनिया खेल थी। और उस खेल के अन्दर सारी ज़िन्दगी गुज़ार दी, और ये मुसीबतें सर पर आ गईं।

हर एक के अन्दर आख़िरत की फ़िक्र पैदा करना हमारी ज़िम्मेदारी

इसलिये मेरे मोहतरम दोस्तो! अपनी भी फ़िक्र करनी है, घर वालों की भी फ़िक्र करनी है, ख़ानदान वालों की भी फ़िक्र करनी है, बस्ती की और आस-पास वालों की भी फ़िक्र करनी है।

एक बात ज़ेहन में रखो कि ये जितने लोग दुनिया में लगे हुए हैं, दुनिया को अपना मक़सद बनाये हुए हैं। इसके हासिल करने के लिये हर मुम्किन कोशिश करते हैं। इन्हें अल्लाह और उसके दीन की तरफ़ बुलाना है। उनको दावत देनी है। ताकि उनकी ज़िन्दगी अल्लाह और उसके रसूल के बताये हुए तरीक़े पर आ जाये। उनको अल्लाह और उसके रसूल के बताये हुए वायदों पर यक़ीन आ जाये। क़ब्र, हश्र, जन्नत, दोज़ख़ का यक़ीन हो जाये और अल्लाह तआला उनसे राज़ी हो जाये और उनको इनामात से नवाज़े।

मुख़ालिफ़ फ़िज़ा के अन्दर भी दीन का काम करना है

लेकिन यहाँ पर आप हज़रात के ज़ेहन में यह बात आई होगी कि बाज़ मर्तबा आदमी दीन पर होता है और दीन का काम भी करता है लेकिन इसके बावजूद भी उसके ऊपर कई लाईन की परेशानियाँ आती हैं। मुश्किलें भी आती हैं लेकिन उससे घबराने की ज़रूरत नहीं है। हर नबी ने मुख़ालिफ़ फ़िज़ा के अन्दर दीन का काम किया। वे अल्लाह के दीन का काम करते रहे और हर क़िस्म की क़ुरबानी बरदाश्त करते रहे।

हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम की साबित-क़दमी (दृढ़ता)

हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के नबी हैं। उन्होंने अल्लाह के दीन की तरफ़ लोगों को बुलाया। लोगों ने उनकी बात नहीं मानी। और उन लोगों ने हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम की दावत के अन्दर रुकावट

पैदा की। इसके बावजूद जब आप दावत का काम करते रहे, तो उन लोगों ने आपके बदन को आरे के ज़रिये दो टुकड़ों में तक़सीम कर दिया।

रुकावटें बस अण्डे का छिलका

तो जिन लोगों ने मुख़ालिफ़ (ना-मुवाफ़िक़) फ़िज़ा का मुक़ाबला किया, साबित-क़दम (जमे) रहे और अल्लाह का दीन फैलाते रहे, वही लोग कामयाब हुए। मुख़ालिफ़ फ़िज़ा के अन्दर हमें भी दीन का काम करना है। इसमें हक़ की तरबियत होती है जैसे अण्डे के छिलके की रुकावट। इस रुकावट की वजह से अन्दर से गर्मी की फ़िज़ा मिली। फिर अल्लाह तआ़ला ने उस छिलके को तोड़ दिया।

इसलिये झगड़े की ज़रूरत नहीं, बल्कि सहाबा किराम का तरीक़ा अपनाने की ज़रूरत है

इसलिये हमें किसी से झगड़ने की ज़रूरत नहीं है। फ़िज़ा जैसी भी हो, उसके अन्दर हमें दावत के काम को काम बनाकर चलना है। और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के तरीक़े पर चलना है। जिस अन्दाज़ से उन्होंने दीन की दावत दी और लोगों को अल्लाह के दीन की तरफ़ बुलाया, बिल्कुल वही अन्दाज़ वही तरीक़ा हमें भी इख़्तियार करना है। किसी से झगड़ना नहीं है।

हज़रत इक्रिमा की इस्लाम से दुश्मनी और फिर इस्लाम क़बूल करना

अब देखिये! हज़रत इक्रिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ज़िन्दगी भर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुख़ालफ़त करते रहे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने समझाया-बुझाया इसके बावजूद वह नहीं माने, यहाँ तक कि फ़तहे-मक्का के दिन हज़रत इक्रिमा ने मुसलमानों पर हमला किया। इतनी सख़्त दुश्मनी थी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से और

मुसलमानों से, लेकिन जब अल्लाह तआ़ला ने मक्का फ़तह कराया तो उस मौक़े पर हुज़ूरे पाक ने ऐसे अख़्लाक़ बरते जिसकी कोई मिसाल नहीं मिलती। हज़रत इक्रिमा चूँकि हर दम लड़ाई झगड़े में रहे इसलिये उनको ख़तरा महसूस हुआ कि अगर मैं पकड़ा गया तो क़त्ल कर दिया जाऊँगा। इसलिये वह फ़ौरन मक्का से निकल भागे। उनकी बीवी मुसलमान हो गई थीं। उनके भाग जाने के बाद वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आईं और अ़र्ज़ किया, हज़रत! मेरे शौहर को अमन दे दीजिये। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अमन दे दिया। अब बीवी उनको ढूँढने चली। इक्रिमा तो मक्का से भागकर समन्दर की तरफ़ चले और कश्ती में बैठ गये। कि अब मैं मक्का में नहीं रहूँगा। लेकिन मेरे मोहतरम दोस्तो! आँसू बड़े काम आते हैं। काम करने वालों की कुरबानी अल्लाह पाक सुरक्षित और महफ़ूज़ करते हैं, उनके आँसुओं को भी अल्लाह पाक महफ़ूज़ करते हैं, और उनकी दुआ़ओं को भी अल्लाह पाक महफ़ूज़ करते हैं।

हज़रत इक्रिमा कश्ती में सवार हो चुके थे। सहाबा की दुआ़यें, उनकी बीवी की दुआ़यें और हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दुआ़यें रंग ला रही हैं। अल्लाह की शान देखिये, कश्ती भंवर में फंस गई। डूबने के क़रीब हो गई। सारे सवार परेशान हैं। कश्ती वाले ने कहा कि तुम बच नहीं सकते। उन लोगों ने कहा क्या करें? कश्ती वाले ने कहा कि कलिमा पढ़ लो तो बच सकते हो। हज़रत इक्रिमा कहते हैं कि हम इसी कलिमे से तो भागकर आये हैं, और यह कलिमा हमें यहाँ भी घेर रहा है।

मेहनत और दुआ़ की ज़रूरत

दोस्तो! दावत के इस काम की बरकत से वे लोग जो ख़ुदा का इनकार करने वाले थे, वे ख़ुदा का इक़रार करने वाले बने। अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े को अपने अन्दर जगह देने वाले बने। हराम व हलाल की परवाह करने वाले बने। और अब हम

अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह अपना फ़ज़्ल व करम उन लोगों पर करे जो एक से ज़्यादा ख़ुदा को मानते हैं। उन पर चढ़ावे चढ़ाते हैं। उनको मुश्किल-कुशा (संकट दूर करने वाला) और नफ़ा व नुक़सान का मालिक मानते हैं। अल्लाह उन लोगों पर भी अपना फ़ज़्ल फ़रमाये कि ये लोग भी अल्लाह से जुड़ने वाले बनें। और उसी को हर चीज़ का मालिक व मुख़्तार मानें।

जब कश्ती डूबने के क़रीब हुई तो उसके अन्दर के लोगों ने कलिमा पढ़ लिया। इक्रिमा की बीवी भी वहाँ पहुँच गई। उन्होंने रूमाल दिखाया कि आ जाओ। इक्रिमा ने कहा कि मक्का वाले मेरा गला काट डालेंगे। बीवी ने कहा कि मैं अमन ले चुकी हूँ। मियाँ-बीवी दोनों चले। रास्ते में बीवी से सोहबत (संभोग) करनी चाही। बीवी ने कहा कि यह नहीं होगा। इसलिये कि तुम काफ़िर हो और मैं मुसलमान हूँ। इसका इक्रिमा पर बड़ा ज़बरदस्त असर पड़ा। वह हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तशरीफ़ लाये। अल्लाह के रसूल ने सहाबा किराम से कहा कि इक्रिमा आ रहे हैं। उनके बाप अबू जहल को बुरा-भला मत कहना। गाली दोगे तो मुर्दे को नहीं पहुँचेगी, लेकिन ज़िन्दा को तकलीफ़ होगी। उनको सदमा होगा। जब इक्रिमा आये तो उनके स्वागत के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खड़े हो गये और हाथ पकड़कर अपने बिस्तर पर बिठाया और फ़रमाया कि इक्रिमा! अब भी कलिमा समझ में नहीं आया? फ़ौरन हज़रत इक्रिमा ने कलिमा पढ़ लिया और यूँ फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के प्यारे नबी! अब तक जितनी ताक़त मैंने इस्लाम के मिटाने पर लगाई है, उसकी दोगुनी ताक़त इस्लाम को ज़िन्दा करने के लिये लगाऊँगा। और अब तक जितना माल इस्लाम को मिटाने के लिये लगाया है, उसका दोगुना माल इस्लाम को ज़िन्दा करने पर लगाऊँगा।

सहाबा-ए-किराम की बेमिसाल क़ुरबानियाँ

इसी तरह आप सारे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की ज़िन्दगी का

मुताला (अध्ययन) करके देख लें तो आपको मालूम हो जायेगा कि तमाम सहाबा किराम ने दीन के फैलाने और इसको ज़िन्दा व रोशन करने के लिये हर क़िस्म की कुरबानियाँ दीं।

माल की कुरबानी दी।

वतन को कुरबान कर दिया।

हिजरत करके हब्शा और मदीना चले गये।

औलाद को कुरबान कर दिया।

बीवी को कुरबान कर दिया।

हर क़िस्म की कुरबानी देकर इस्लाम को बुलन्द और ऊँचा किया।

आज भी इस्लाम इसी तरह रोशन और मुनव्वर है। लेकिन इसे मानने वालों के अन्दर ऐश-परस्ती, ज़र-परस्ती और इस क़िस्म की बहुत सी ख़राबियाँ पैदा हो गई हैं। जिसकी बिना पर दिलों से इस्लाम की वक़्अत निकल गई। और आज हर क़िस्म की कुरबानियाँ दीन के बजाए दुनिया के लिये हो रही हैं।

दावत का काम और इसके फल

अल्लाह का फ़ज़्ल व करम हुआ कि उसने हमारे इस गिरावट के दौर में जहाँ इस्लाम की जड़ों को काटा जा रहा है और इस्लाम को मिटाने की हर मुम्किन कोशिशें हो रही हैं, इस दौर के अन्दर भी अल्लाह तआ़ला ने अपने कुछ नेक बन्दों के अन्दर दावत का एहसास पैदा किया, और अल्लाह तआ़ला ने इसके लिये हालात को साज़गार बनाया। और इस काम की वजह से बहुत से लोगों ने बुराई से तौबा कर ली। अच्छे काम करने वाले बने। और कितने लोगों ने अपने मामलात, सामाजिक ज़िन्दगी और अख़्लाक़ की हर लाईन की बुराईयों को दुरुस्त कर लिया। और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर अपना हर काम करने लगे। अब मैं अपने बयान को ख़त्म करता हूँ लेकिन इसका कुछ नतीजा भी निकलना चाहिये। अब वे लोग खड़े हो जायें जिनको अल्लाह के रास्ते में

****

चार महीने और चालीस दिन के लिये जाना है। खड़े हो जायें। अल्लाह तआला हम सब का अल्लाह के रास्ते में निकलना आसान फ़रमायें और हमें अपने हबीबे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कामिल पैरवी नसीब फ़रमायें, आमीन।

तक़रीर (5)

मेरे मोहतरम दोस्तो! हमारी जमाअतों की चलत-फिरत और सरगरमी जहाँ-जहाँ हो रही है, इसमें हमारी नीयत किसी का बेड़ा ग़र्क़ कराना न हो। जमातों की चलत-फिरत से हम सिर्फ़ यह चाहते हैं कि पूरी दुनिया के अन्दर बसने वाले इनसानों का ताल्लुक़ अल्लाह की ज़ात से हो जाये, और वे अच्छे आमाल पर आ जायें ताकि उनके बेड़े पार हो जायें। किसी का बेड़ा हमें ग़र्क़ नहीं कराना है, सब के बेड़े पार कराने हैं। लेकिन सब का बेड़ा पार उस वक़्त होगा जबकि सब का ताल्लुक़ अल्लाह से जुड़े, अल्लाह की ज़ात का ताल्लुक़ उन्हें मिले और उनके आमाल अच्छे हो जायें।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّاٰتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَ نَا وَ نَبِیَّنَا وَمَوْلَا نَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا کَثِیْرًا۔ اَمَّابَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ٥ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَکَرٍ اَوْ اُنْثٰی وَھُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْیِیَنَّہٗ حَیٰوۃً طَیِّبَۃً ۚ وَلَنَجْزِیَنَّھُمْ اَجْرَھُمْ بِاَحْسَنِ مَا کَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ٥ (پ۱۹ اعراف ع۳)

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! दुनिया के अन्दर ज़िन्दगी बसर करने के दो रास्ते हैं- एक रास्ता अल्लाह की मर्ज़ी वाला है, और वह ईमान का रास्ता है। दूसरा रास्ता इनसान की अपनी मर्ज़ी वाला है, और वह ख़्वाहिशात (इच्छाओं) का रास्ता है, चीज़ों वाला रास्ता है। उसमें अल्लाह की मर्ज़ी को छोड़कर आदमी अपनी मर्ज़ी पर चलता है।

दीन का रास्ता सीधा है

ये दो रास्ते हैं। इनमें बिल्कुल सीधा और आसान रास्ता कामयाबी और अमन व अमान लाने वाला रास्ता, चैन व सुकून, रहमतें और बरकतें उतरवाने वाला रास्ता, ज़मीनों के अन्दर से बरकतें और मुहब्बतें पैदा करने वाला रास्ता, मरने के बाद क़ब्र में सुकून पहुँचाने वाला रास्ता, हमेशा-हमेशा की जन्नत में दाख़िल करने वाला रास्ता, वह अल्लाह की मर्ज़ी वाला रास्ता है। जिस पर चलकर अल्लाह को राज़ी करते हैं।

दुनिया का रास्ता परेशानियों वाला है

दूसरा रास्ता वह है जो इनसान का अपनी मर्ज़ी वाला रास्ता है। जी चाही वाला रास्ता है। जिसके अन्दर उसका ज़ेहन चीज़ों को हासिल कराता और अपनी मर्ज़ी को पूरा कराता है। यह शुरू में और ज़ाहिर के अन्दर बहुत मज़ेदार और अच्छा मालूम होता है लेकिन अन्जाम के एतिबार से इस रास्ते पर दुनिया के अन्दर भी परेशानियाँ हैं, आपस की दुश्मनियाँ हैं, बरकतें उठ जाती हैं, हर एक की जान व माल और अबरू ख़तरे में पड़ जाती है। इस रास्ते पर चलने वाले चाहे नौकरी पेशा हों, ओहदेदार हों, विकसित देशों के हों या ग़रीब देशों के, वे इस रास्ते में परेशान होते हैं। जब वे अपनी मर्ज़ी पर चलते हैं, अल्लाह की मर्ज़ी को छोड़ते हैं।

हमारे ज़ेहन में यह होता है कि जितना मुल्क व माल होगा और चीज़ें होंगी, उतनी ज़िन्दगी बनेगी। लेकिन यह सोच रखने वाले और यह नज़रिया रखने वाले, और इस पर चलने वाले मौत के वक़्त, क़ब्र और फिर उससे आगे हश्र में, फिर उससे आगे जहन्नम में, राहत व आराम से मेहरूम होंगे। तकलीफ़ों व परेशानियों में होंगे, ज़िल्लत में होंगे।

दुनिया का सिस्टम फ़ना होने वाला और आख़िरत का सिस्टम बाक़ी रहने वाला है

दुनिया के अन्दर खाना भी है और भूख भी। अगर भूख महसूस हो रही है, आपने खाना खाया, भूख ख़त्म हो गई। तो दुनिया का निज़ाम फ़ना होने का है और ख़त्म होने वाला है। लेकिन आख़िरत का जो निज़ाम है, वह बाक़ी रहने वाला है। वहाँ एक ही बात होगी सिर्फ़ राहत या सिर्फ़ तकलीफ़। दुनिया के अन्दर दोनों बातें हैं, राहत भी है और तकलीफ़ भी है। अगर भूख है तो इसको मिटाने के लिये खाना भी है। प्यास है तो इसके लिये पानी भी है। रात का अंधेरा आया दिन का उजाला ख़त्म, गर्मी का मौसम आया सर्दी का मौसम ख़त्म। दुनिया में दोनों चीज़ें साथ

मिलेंगी। आदमी चाहे नेक हो या बुरा, तकलीफ़ हर एक पर आती है, और राहत भी हर एक पर आती है। कोई आदमी दुनिया में ऐसा नहीं कि जिसके लिये ज़िन्दगी भर राहत रही हो। या जिस पर ज़िन्दगी भर तकलीफ़ रही हो। हर एक पर राहत और तकलीफ़ दोनों आती हैं।

इनसान का आख़िरत का अन्जाम

मगर मौत के बाद एक चीज़ मुतैयन हो जाती है, राहत या तकलीफ़। अगर तकलीफ़ मुतैयन हो गयी तो फिर तकलीफ़ बढ़ती रहेगी। अगर बग़ैर ईमान के दुनिया से गया तो फिर वह तकलीफ़ हमेशा रहेगी। अगर मरने के बाद राहत तजवीज़ हो गयी, फिर तो राहत मरने के बाद ही से शुरू हो जायेगी। फ़रिश्तों के ज़रिये स्वागत होगा। क़ब्र के अन्दर जन्नत की खिड़की खोल दी जायेगी। उसे लिटा दिया जायेगा और कह दिया जायेगा कि जिस तरीक़े से दुल्हन सोती है सो जा। दिन में दो बार जगाकर उस खिड़की से उसका ठिकाना दिखाया जायेगा कि यह है तेरा ठिकाना। तो यह अल्लाह का महबूब बन्दा और अल्लाह की मर्ज़ी पर चलने वाला कहेगा कि ऐ अल्लाह! तू क़ियामत को जल्दी से क़ायम कर, ताकि मैं तेरे इनामात की जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ। क़ियामत तक वह क़ब्र में रहेगा। और जब क़ियामत का दिन आयेगा तो उसका हिसाब व किताब और हश्र के मर्हले इतने कम और मुख़्तसर वक़्त में होंगे कि जितना वक़्त चन्द रक्अत नमाज़ पढ़ने में गुज़रता है। गोया कि इतना वक़्त गुज़ारा और जन्नत में दाख़िल कर दिया गया। जन्नत में दाख़िल होगा तो फिर वहाँ पर किसी क़िस्म की तकलीफ़ ही नहीं। बाग़ात, नहरें, मकानात, बीवियाँ, अच्छे कपड़े, घूमना, टहलना खाना, पीना, अल्लाह की ज़ियारत करना, अल्लाह से बात करना नसीब होना। न जन्नत कभी ख़त्म होगी न जन्नती ख़त्म होंगे।

इनसान के मुजाहदे की मिक़्दार

लेकिन यह सब कुछ किसके लिये है? उसके लिये जो अल्लाह की मर्ज़ी पर चले। अल्लाह की मर्ज़ी पर चलने में एक मुजाहदा है, उस मुजाहदे के लिये आदमी तैयार हो जाये। मिसाल के तौर पर एक आदमी की साठ सत्तर साल उम्र होती है। उसमें भी पन्द्रह साल गुज़र गये बचपने के, बाक़ी बचे पैंतालीस-पचास साल, तो इसके अन्दर से रातें निकल गयीं सोने के अन्दर, अब रह गये सिर्फ़ दिन, तो इतनी देर तक अल्लाह की मर्ज़ी पर रहना है और इसमें सिर्फ़ एक ही मुजाहदा है और एक तकलीफ़ उठाना है। वह क्या है? वह है अपनी मर्ज़ी को छोड़ना। इसे आदमी बरदाश्त कर ले यानी अल्लाह की मर्ज़ी को पूरा करने के लिये अपनी मर्ज़ी को छोड़ दे। अपनी मर्ज़ी को जब छोड़ेगा तो अल्लाह की मर्ज़ी पूरी होगी। इस मुजाहदे पर अल्लाह तआला दरवाज़ा खोलते हैं हिदायत का। जब आदमी इस मुजाहदे को बरदाश्त करता है तो अल्लाह की छुपी हुई मदद उसके सामने आती है।

तू मुझे राज़ी करेगा तो मैं तुझे राज़ी करूँगा

ज़िन्दगी भर अल्लाह की मर्ज़ी को पूरा करना है। अगर मालदार है तो अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? इसकी तहक़ीक़ करे। ग़रीब अगर है तो अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? अगर शौहर है तो बीवी के बारे में अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? बीवी के लिये शौहर के बारे में अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? अपने बारे में, औलाद के बारे में, पड़ोसियों के बारे में अल्लाह की मर्ज़ी क्या है? बस इस बात को आदमी ठान ले और अपनी मर्ज़ी को क़ुरबान कर दे। फिर तो अल्लाह पाक बताते हैं कि अगर तू मुझे राज़ी कर लेगा तो मैं भी तुझे राज़ी कर दूँगा।

अच्छे आमाल के लिये शर्त

अब अल्लाह की मर्ज़ी वाला रास्ता, जिस पर चलकर अपनी मर्ज़ी को

क़ुरबान करना है, वह कौनसा रास्ता है? दो जुमले याद रखियेः-

"ईमान वाला रास्ता"...... और......"आमाल वाला रास्ता"

यानी दिल के अन्दर का ईमान व यक़ीन मज़बूत हो। दूसरे आमाल अच्छे हों। आमाल अगर अच्छे बनाने हैं तो उस वक़्त तक नहीं बन सकते जब तक अल्लाह के हुक्मों के मुताबिक़ न हों, रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ न हों। खाना खाना भी अगर अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ हो, हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ हो, तो यह खाना भी अच्छा अ़मल बन गया। और इसकी क़ीमत अल्लाह क़ियामत के दिन देंगे। इसी तरह कारोबार करना, शादी करना, नमाज़ पढ़ना अच्छा अ़मल बनता है। रोज़ा रखना, दावत का काम करना, मकान बनाना, यह भी अच्छे अ़मल बनेंगे लेकिन कब बनेंगे?

जबकि अल्लाह के हुक्मों के मुताबिक़ हों। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ हों। आमाल के अच्छा बनने और उनके क़बूल होने के लिये पहली शर्त ईमान की है।

ईमान की क़द्र व क़ीमत

ईमान इतनी क़ीमती दौलत है कि अगर इसका एक ज़र्रा लेकर आदमी इस दुनिया से गया तो उसको कभी न कभी जन्नत का मिलना तय है। अगर मरते वक़्त उसके दिल में ईमान है तो यह आदमी कभी न कभी जन्नत में ज़रूर जायेगा। अगर उसने दुनिया में गुनाह के काम किये हैं तो उन गुनाहों की सज़ा भुगत कर जन्नत में जायेगा। हाँ! अगर अल्लाह का मामला फ़ज़्ल का हुआ तो बिना सज़ा के भी अल्लाह जन्नत में दाख़िल कर देंगे। अल्लाह तआ़ला तो क़ादिरे मुतलक़ हैं। अगर अल्लाह अ़द्ल (इन्साफ़) पर आ गये तो गुनाहों की सज़ा देकर जन्नत में दाख़िल करेंगे। और अगर अल्लाह ने फ़ज़्ल का मामला किया तो हो सकता है कि किसी की शफ़ाअ़त पर अल्लाह माफ़ करके जन्नत दे दे या महज़ अपने

फ़ज़्ल से जन्नत दे दे। बहरहाल! जन्नत में जाना उस आदमी का बिल्कुल तय है। यह अल्लाह का वायदा है।

ईमान नहीं तो आमाल की ताक़त नहीं

लेकिन मरने के वक़्त तक ईमान बाक़ी रहे यह कैसे होगा? यह उस वक़्त होगा कि ज़िन्दगी भर आदमी ईमान की मेहनत करता रहे। आमाल की मेहनत करता रहेगा तब यह ईमान महफ़ूज़ रहेगा। क़ुरआन पाक में आप देखेंगे कि अल्लाह पाक ने आमाल पर जितने वायदे किये वे ईमान की शर्त पर किये।

नमाज़ पर अल्लाह का वायदा "कामयाबी" का है।

ज़िक्र पर अल्लाह का वायदा "इत्मीनान" का है।

रोज़े पर अल्लाह तआला का वायदा "तक़्वा" का है।

इसी तक़्वा पर अल्लाह का वायदा "मदद" का है।

ये जितने वायदे आमाल पर अल्लाह ने बताये या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताये, ये सब ईमान की शर्त के साथ हैं। अगर ईमान है तो आमाल में ताक़त है। अगर ईमान नहीं है तो फिर आमाल की कोई क़ीमत नहीं। ईमान पर अल्लाह ने वायदे किये हैं, और अल्लाह वायदा-ख़िलाफ़ी नहीं करता। क़ुरआन में जगह-जगह है:-

إِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ○ (پ٣)

وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلاً ○ (پ٥)

وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ○ (پ٥)

यानी अल्लाह अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता। अल्लाह से ज़्यादा सच बोलने वाला कोई नहीं। अल्लाह से ज़्यादा सच्ची बात कहने वाला कोई नहीं।

अल्लाह की ताक़त

अल्लाह क़ादिरे मुतलक़ है। अल्लाह बड़ी ताक़त वाला है। बहुत ख़ज़ानों वाला है। उसके ख़ज़ाने बेशुमार हैं। उसकी ताक़त बेइन्तिहा है। जितने वायदे अल्लाह करते हैं वे सब अपनी ताक़त से पूरा करते हैं। अपने ख़ज़ाने से पूरा करते हैं।

अल्लाह की ताक़त व क़ुदरत जिसकी न कोई हद है न हिसाब

अल्लाह कैसे ताक़त वाले हैं? अल्लाह ऐसे ताक़त वाले हैं कि ज़मीन व आसमान, चाँद व सूरज बनाया और किसी का सहारा नहीं लिया, अकेले अल्लाह ने बनाया। इसी तरह अपनी क़ुदरत के इस्तेमाल करने में मस्लेहत और हिक्मत के तौर पर इनसान से भी चीज़ों पर मेहनत कराते हैं, और फिर अपनी क़ुदरत से उसका नतीजा निकालते हैं। मियाँ-बीवी का मिलना एक सबब का दर्जा है। अन्दर बच्चे का पैदा करना यह अल्लाह का काम है। रोज़ाना तक़रीबन दो लाख सोलह हज़ार बच्चे दुनिया के अन्दर पैदा होते हैं। अल्लाह ऐसे क़ादिरे मुतलक़ हैं कि एक वक़्त में उन सारे बच्चों को उनकी माँओं के पेट में एक ही वक़्त में बनाते हैं। करोड़ों मादा जानवरों के पेट में अल्लाह एक ही वक़्त में बच्चे बनाते हैं। करोड़ों बीजों और गुठलियों के अन्दर से अल्लाह एक ही वक़्त में पौधे उगाते हैं। और फिर उसे दरख़्त बनाते हैं। फिर उसमें फल, फ़रूट, मैवे, तरकारियाँ उगाते हैं। अल्लाह ऐसे क़ादिरे मुतलक़ हैं।

दुनिया के अन्दर सारी फैली हुई चीज़ें अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से बनाईं और उसके बाद ये चीज़ें अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं निकलीं, बल्कि अल्लाह के क़ाबू में हैं। इन चीज़ों से अगर ज़िन्दगियों के बनाने का अल्लाह तआ़ला ने फ़ैसला किया तो ज़िन्दगियाँ बन जायेंगी। और अगर अल्लाह ने इन चीज़ों से ज़िन्दगियों के उजाड़ने का फ़ैसला किया तो

ज़िन्दगी उजड़ जायेगी।

ज़िन्दगी का बनना और बिगड़ना अल्लाह के फ़ैसले पर है

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम आग में डाले गये। आग उजाड़ने वाली चीज़ है। लेकिन हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की ज़िन्दगी बन गयी। क़ारून, हामान, शद्दाद, नमरूद और फ़िरऔन को मुल्क व माल के नक़्शे में ज़िन्दगी बनना दिखाई देता था। लेकिन अल्लाह ने उजाड़ने का फ़ैसला किया तो मुल्क व माल ज़िन्दगी न बना सका। क्योंकि ख़ुदा के फ़ैसले का मुक़ाबला दुनिया की कोई ताक़त नहीं कर सकती।

लेकिन ख़ुदा के यहाँ ज़िन्दगी के बिगाड़ने और बनाने का फ़ैसला अंधाधुंध नहीं होता। ज़िन्दगियों के बनाने का फ़ैसला अल्लाह उस वक़्त करते हैं जब आदमी के अन्दर ईमान और आमाल हों। और ज़िन्दगियों के उजाड़ने का फ़ैसला उस वक़्त करते हैं जब इनसान के अन्दर ईमान न हो और आमाल भी ख़राब हों, तब अल्लाह ज़िन्दगियों के उजाड़ने का फ़ैसला करते हैं।

ईमान वालों के लिये मुजाहदा भी होता है

एक बात ज़ेहन में रहे कि ईमान और आमाल वालों की ज़िन्दगियाँ अल्लाह बनाते हैं, लेकिन शुरू में उन्हें मुजाहदा (मेहनत, तकलीफ़ और जद्दोजहद) करना पड़ता है। वह मुजाहदा है क्या?

अल्लाह की मर्ज़ी को पूरा करने के लिये अपनी मर्ज़ी को क़ुरबान करना। इस मुजाहदे पर अल्लाह पाक की मदद आती है और ज़िन्दगी बनती है।

ग़लत लोगों को ढील दी जाती है

जो ईमान की दौलत से मेहरूम हैं, आमाल उनके पास नहीं हैं, अल्लाह पाक उनकी ज़िन्दगी एक दम से नहीं उजाड़ते बल्कि उन्हें मौत तक का मौक़ा देते हैं। अगर अल्लाह पाक ग़लत आदमियों की ज़िन्दगी

एक दम उजाड़ने पर आ जायें तो दुनिया में कोई ज़िन्दा बाक़ी नहीं रह सकता। अक्सर व बेश्तर बन्दों से ग़लती हो ही जाती है।

आदमी कितना ही ग़लत और बुरा काम करे लेकिन उसकी ज़िन्दगी एक दम से नहीं उजाड़ते बल्कि अल्लाह उसको मौक़ा देते हैं। मौत तक मौक़ा देते हैं और सीधे रास्ते की तरकीबें अल्लाह पाक करते हैं। उसपर तकलीफ़ें लाते हैं ताकि गिड़गिड़ा कर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो जाये। या राहतें लाते हैं कि शुक्र के तौर पर अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो जाये। उसके पास समझाने वाले भेजते हैं। जब तक अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का ज़माना था, अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम तकलीफ़ें उठा-उठाकर उन ग़लत चलने वाले लोगों को समझाते थे। नबियों का आना बन्द हुआ। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आख़िरी नबी आये, आपके बाद कोई नया नबी क़ियामत तक नहीं आयेगा तो अब इस पूरी दुनिया के अन्दर सही बात समझाना और पहुँचाना कौन करेगा? इसके लिये रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सवा लाख सहाबा का मजमा तैयार किया और उसको नमूना बनाया।

अब क़ियामत तक आने वाली उम्मत हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस तरबियत पाये हुए मजमे को सामने रखकर अपनी ज़िन्दगी की तरतीब बनाये। अपने जान व माल का इस्तेमाल करे तो उसके ज़रिये इन्शा-अल्लाह सुम्-म इन्शा-अल्लाह दुनिया के कोने-कोने में बसने वाले इनसानों तक ईमान वाली बात, आमाल वाली बात और अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करने वाली बात, दुनिया में अमन व अमान ला देने वाली बात और मरने के बाद जन्नत पाने वाली बात पूरी दुनिया के अन्दर पहुँच सकती है।

इस बिना पर अल्लाह तआ़ला ख़राब काम करने वालों को बिल्कुल से उजाड़ते नहीं बल्कि बहुत मौक़े और गुंजाईश देते हैं।

अल्लाह की पकड़ कब आती है?

मौक़ा देने के बावजूद, सही राह दिखाने वालों के भेजे जाने के बावजूद, उतार-चढ़ाव राहत व तकलीफ़ उन पर जो आता है उसके बावजूद अगर आदमी अपनी जी चाही पर रहा, और अपनी मन मानी पर रहा, अपनी ख़ुदग़र्ज़ी पर रहा, अपने बैर पर रहा, अपनी ज़िद पर रहा, तो आख़िरी दर्जे में जब अल्लाह की तरफ़ से पकड़ आती है तो अल्लाह की पकड़ आने के बाद दुनिया की बड़ी-बड़ी ताक़तें अल्लाह की पकड़ से नहीं बचा सकतीं। ग़लती की और फ़ौरन पकड़ा, ऐसा नहीं करते। अल्लाह बहुत करम वाले, बहुत फ़ज़्ल वाले, रहम वाले हैं। ख़ुदा ख़ूब मौक़े देते हैं। नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ौम को साढ़े नौ सौ साल का मौक़ा दिया।

फ़िरऔन को लम्बी मुद्दत तक का मौक़ा दिया। क़ैसर व किसूरा को मौक़ा दिया। इसी तरह याजूज व माजूज को हज़ारों साल का मौक़ा दिया जो ज़ुल्क़रनैन की दीवार के पीछे हैं। इसी तरह दज्जाल को मौक़ा देंगे।

इसी तरह जितने ग़लत काम करते हैं उन्हें मौक़ा देते हैं। एक दम से अल्लाह तआ़ला नहीं पकड़ते। लेकिन मौक़ा देने के बावजूद जब आदमी अपने इख़्तियार को नहीं समझता तो जब अल्लाह की आख़िरी पकड़ आती है तो उस ग़लत आदमी को अल्लाह की पकड़ से बचाने के लिये दुनिया की पूरी ताक़तें मिल जायें तो भी नहीं बचा सकतीं।

अल्लाह ने इनसान के अन्दर दो इख़्तियार रखे हैं। अपनी मर्ज़ी पर चलना और अल्लाह की मर्ज़ी पर चलना। अगर आदमी अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी पर दे दे तो ज़िन्दगी बन जायेगी। और अपनी मर्ज़ी पर चलता रहे तो उसकी ज़िन्दगी बिगड़ जायेगी। तो इनसान जब अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी पर दे दे तो ज़िन्दगी बन जायेगी और अपनी मर्ज़ी पर चलता रहे तो उसकी ज़िन्दगी बिगड़ जायेगी। तो इनसान जब अपनी मर्ज़ी को अपने इख़्तियार पर चलाता रहा और ख़राब काम करता रहा तो

अल्लाह ठीक होने और संभलने का मौक़ा देते हैं। फिर भी ठीक नहीं हुआ तो अल्लाह की पकड़ होगी जिससे बच पाना नामुम्किन होगा।

फ़िरऔन पर अल्लाह की पकड़ आई तो पूरा लश्कर जो उसके साथ था उसको बचा नहीं सका। क़ारून पर अल्लाह की पकड़ आई तो उसका माल उसके घर में था लेकिन वह उसे धंसने से बचा नहीं सका। कोई ताक़त नहीं बचा सकती अल्लाह की पकड़ से।

रूहानी ताक़तें भी अल्लाह की पकड़ से न बचा सकीं

बल्कि इससे भी आगे तरक़्क़ी करके अगर यह बात कही जाये तो ग़लत नहीं होगी कि जैसे सारी ताक़तें अल्लाह की पकड़ से नहीं बचा सकतीं, इसी तरह रूहानी ताक़तें भी अल्लाह की पकड़ से नहीं बचा सकतीं। यहाँ तक कि जब अल्लाह की पकड़ आई तो नूह अ़लैहिस्सलाम की रूहानी ताक़त अपने बेटे को नहीं बचा सकी। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की रूहानी ताक़त अपने बेटे को नहीं बचा सकी। यह याद रखना कि रूहानी ताक़तों का काम अल्लाह की पकड़ से बचाना नहीं, बल्कि जब अल्लाह की पकड़ आने वाली हो तो उससे डराना है। इरशाद फ़रमाया अल्लाह पाक ने:-

اِنَّـآ اَرْسَـلْنَـا نُوْحًـا اِلٰى قَوْمِـهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْ تِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○ (پ۲۹)

यानी अपनी क़ौम को समझाओ हमारी पकड़ आने से पहले।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम वालों को साढ़े नौ सौ साल तक समझाया और डराया लेकिन जब पकड़ आयी तो अपनी क़ौम को क्या बचाते अपने बेटे को नहीं बचा सके। तो यह ज़ेहन में बैठ जाये कि अल्लाह की पकड़ आने से पहले-पहले तक समझाने का काम इन रूहानी ताक़तों का है।

हमारी नीयत किसी का बेड़ा ग़र्क़ करना न हो

और भाई यह जमाअ़तों की चलत-फिरत और सक्रियता भी पूरी दुनिया को अल्लाह की पकड़ से बचाने के लिये है कि पूरी दुनिया अल्लाह की पकड़ से बच जाये। नूह अ़लैहिस्सलाम की साढ़े नौ सौ साल की मेहनत अपनी क़ौम का बेड़ा ग़र्क़ करने के लिये नहीं थी बल्कि अपनी क़ौम का बेड़ा पार कराने के लिये थी। लेकिन क़ौम का बेड़ा ग़र्क़ क्यों हुआ? इसलिये कि उन्होंने बात नहीं मानी। नूह अ़लैहिस्सलाम की नीयत क़ौम का बेड़ा पार कराने की थी। वह तो बहुत ग़म और दर्द के साथ क़ौम को दिन-रात समझाते रहते थे।

इसी तरह मेरे मोहतरम दोस्तो! हमारी जमाअ़तों की चलत-फिरत और सरगरमी जहाँ-जहाँ हो रही है, इसमें हमारी नीयत किसी का बेड़ा ग़र्क़ कराना न हो। जमातों की चलत-फिरत से हम सिर्फ़ यह चाहते हैं कि पूरी दुनिया के अन्दर बसने वाले इनसानों का ताल्लुक़ अल्लाह की ज़ात से हो जाये, और वे अच्छे आमाल पर आ जायें ताकि उनके बेड़े पार हो जायें। किसी का बेड़ा हमें ग़र्क़ नहीं कराना है, सब के बेड़े पार कराने हैं। लेकिन सब का बेड़ा पार उस वक़्त होगा जबकि सब का ताल्लुक़ अल्लाह से जुड़े, अल्लाह की ज़ात का ताल्लुक़ उन्हें मिले और उनके आमाल अच्छे हो जायें।

नमूना कौन लोग?

पूरी दुनिया अल्लाह की बातों पर यक़ीन करके अपने आमाल को अच्छा करे इसके लिये नमूना पहली सदी के सहाबा थे। उनकी पाकीज़ा ज़िन्दगी को जब लोगों ने देखा तो लोग गिरोह के गिरोह ईमान की तरफ़ मुतवज्जह हुए और अब आज के ज़माने में पूरी दुनिया के अन्दर बसने वाले इनसान अगर उन कलिमा पढ़ने वालों की पाकीज़ा ज़िन्दगियों को देखेंगे, उनके ईमान की ताक़त को देखेंगे, उनके आमाल के भला होने को

****
देखेंगे तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि उनका रुख़ अल्लाह की तरफ़ होगा।

अल्लाह पर यक़ीन रखने वालों के लिये वायदे

अब मैं आप हज़रात के सामने अ़र्ज़ करूँगा कि अल्लाह की ताक़त पर ईमान रखने वाले के लिये क्या-क्या वायदे हैं?

अल्लाह का वायदा एक तो जन्नत देने का है। वहाँ पर हमेशा-हमेशा के लिये राहत होगी। और ईमान पर इस दुनिया में अल्लाह के बहुत से वायदे हैं:

اَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ○

ईमान पर सर बुलन्दी का वायदा है।

وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

ईमान पर इ़ज़्ज़त का वायदा है।

इ़ज़्ज़त अल्लाह की तरफ़ से चलती है, रसूल के वास्ते से आती है और ईमान वालों को मिलती है।

एक वायदा ईमान वालों के लिये मदद का है।

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ○ (پ۲۴)

यहाँ रसूलों और ईमान वालों की मदद का वायदा किया है, दुनिया में भी और क़ियामत के दिन भी।

तो कामयाबी, सरबुलन्दी, इ़ज़्ज़त और परेशानियों से छुटकारे का वायदा अल्लाह पाक ने फ़रमाया। फिर इससे आगे हिफ़ाज़त का वायदा भी फ़रमाया है।

وَكَذٰلِكَ نُنْجِى الْمُؤْمِنِيْنَ ○

तर्जुमाः– और इसी तरह ईमान वालों को हम नजात देंगे।

اِنَّ اللّٰهَ يُدَافِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا (پ۱۷)

यानी अल्लाह पाक दूर करते हैं ईमान वालों से इस्लाम के दुश्मनों के मक्र व फ़रेब को।

अल्लाह का एक वायदा यह भी है कि उसका फ़ज़्ल मोमिनों के शामिले हाल रहता है:

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ۝ (پ٢٢)

और सब से आख़िरी बात यह कि अल्लाह ने अपनी ताईद व नुसरत (मदद और सहयोग) यहाँ तक कि अपना साथ भी मोमिनों के साथ होना बतला दिया है:

وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ (پ٩)

अल्लाह के ये सब वायदे ईमान पर हैं।

अल्लाह की ताक़त कब साथ होगी?

ईमान ताक़त वाला होगा तो इन्शा-अल्लाह आमाल भी अच्छे बनते जायेंगे। ईमान और आमाल अगर कमज़ोर लोगों में हों, ताक़तवर लोगों में हों, मालदार लोगों में हों, ग़रीबों में हों, तो अल्लाह राज़ी होकर एक काम तो यह करेंगे कि अल्लाह की ताक़त उनकी हिमायत में आ जायेगी। दूसरा काम यह होगा कि अल्लाह की नेमत के जो ख़ज़ाने हैं उनसे ताल्लुक़ और कनक्शन हो जाने के बाद फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से बरकतों वाला मामला होगा।

हमें मामूली रद्दोबदल करना है

एक बात मेरी सुन लें कि जब आप ईमान वाली लाईन पर आयेंगे तो जो अपनी ज़ाहिरी तरतीब कमाने खाने और घरों पर रहने की है, उस ज़ाहिरी तरतीब को ज़रा आगे-पीछे करना पड़ेगा। अल्लाह के हुक्म के मुक़ाबले में ज़ाहिरी तरतीब की हम परवाह नहीं करेंगे। यह काम करना पड़ेगा लेकिन अगर यह ज़ाहिरी तरतीब थोड़ी आगे-पीछे हो गई तो फिर अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम चलेगा। और फिर ग़ैबी निज़ाम से अल्लाह

ज़रूरतों को पूरा करेगा। उस ग़ैबी निज़ाम से परेशानियों को ख़त्म करेगा और ग़ैबी निज़ाम से अल्लाह अपने दीन को फैलायेगा और उसमें उन काम करने वालों को इस्तेमाल करेगा।

ज़ाहिरी तरतीब में नेक व बद बराबर

खुदा तआला की जो ज़ाहिरी तरतीब है उसमें खुदा का मामला आ़म तौर पर सबके साथ बराबर बराबर है। कितना ही ख़राब आदमी हो, कितना ही बिगड़ा हुआ आदमी हो, अल्लाह की शान में गुस्ताख़ी करने वाला हो, अगर वह भी दूध का जानवर लेगा तो अल्लाह उसे भी दूध देंगे। अण्डे के जानवर पालेगा तो अल्लाह उसे अण्डे देंगे। ज़मीनों पर मेहनत करेगा तो अल्लाह सब्ज़ियाँ, फल, फ़रूट, मैवे देंगे। यह नहीं कहेंगे कि तू बिगड़ा हुआ है, मैं तेरी खेती में अनाज नहीं होने दूँगा। ज़ाहिरी तौर पर अल्लाह का मामला सबके साथ एक जैसा है। दीनदार आदमी हल चलाये तो अल्लाह उसे अनाज देंगे, बेदीन चलाये तो उसे भी अनाज दे देंगे।

ज़ाहिरी तरतीब के अन्दर जो चीज़ तकलीफ़ पहुँचाने वाली है उससे दीनदार को भी तकलीफ़ होगी, बेदीन को भी तकलीफ़ होगी। पत्थर अगर किसी दीनदार आदमी को मारा जाये तो उस पत्थर से उसको भी तकलीफ़ होगी। यहाँ तक कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ताइफ़ के अन्दर पत्थर मारे गये तो आपके बदने मुबारक से भी ख़ून निकला। और यही पत्थर अगर किसी बेदीन को मारा जाये तो उसके बदन से भी ख़ून निकलेगा। राहत व आराम की ज़ाहिरी तरतीब में आ़म तौर से सब बराबर हैं।

ग़ैबी निज़ाम कब हिमायत में आयेगा?

अलबत्ता जो ईमान वाले हैं, वे अपनी तरतीब को आगे पीछे करते हैं। उसमें थोड़ी तकलीफ़ आती ज़रूर है, जैसे पेट पर पत्थर बाँधना, दाँतों

से पत्ते चबाना और तरह-तरह की तकलीफ़ों को उठाना। इन मुजाहदों को आदमी बरदाश्त करे और अल्लाह का हुक्म पूरा करे तो फिर उसके लिये अल्लाह का ग़ैबी इन्तिज़ाम होगा ज़रूरतों को पूरा करने का, परेशानियों के ख़त्म होने का और अल्लाह के दीन के फैलाने का। ये तीनों चीज़ें अल्लाह पाक ग़ैबी तरीक़े पर पूरा करेंगे।

बनी इस्राईल को अल्लाह की ग़ैबी मदद ने बचाया

अब इसकी आप हज़रात मिसालें सुन लें। बनी इस्राईल कमज़ोर, कम-ताक़त और संख्या में कम थे लेकिन उन्होंने मूसा अ़लैहिस्सलाम की तरबियत में ईमान और आमाल वाला रास्ता इख़्तियार किया। उस पर परेशानियाँ और दिक़्क़तें पेश आईं लेकिन उन्होंने अल्लाह के हुक्म को नहीं तोड़ा। ईमान और आमाल वाली लाईन को नहीं छोड़ा। अब बाद में अल्लाह की ग़ैबी मदद आ गयी। मिसाल के तौर पर अल्लाह ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के ज़रिये बनी इस्राईल से यह इरशाद फ़रमाया किः

اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِیْ (پ۱۶)

मेरे बन्दों को लो और मिस्र से निकल जाओ।

जब तक मिस्र में थे, फ़िरऔन के आदमी मारते थे, पीटते थे, ज़लील करते थे। और अब अल्लाह का हुक्म हुआ कि मिस्र को छोड़ दो। उन्होंने जब इस हुक्म को पूरा किया तो कुछ ज़ाहिरी तरतीब खाने-कमाने की ज़रूर मुतास्सिर (प्रभावित) हुई लेकिन उन्होंने इस हुक्म को पूरा किया और निकल गये। अब पीछे से फ़िरऔन अपना लश्कर लेकर आ गया। सामने समन्दर, ये बेचारे बीच में एक बहुत बड़े मुजाहदे में आ गये। सब कह पड़ेः "हज़रत! हम तो पकड़े गये।"

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से अल्लाह का ग़ैबी मदद का वायदा थाः

لَا تَخَافُ دَرَکًا وَّلَا تَخْشٰی ٥

डरना मत कि तुम्हें फ़िरऔन पकड़ लेगा, और न ही किसी भी और

तरह का ख़ौफ़ करना।

इस वायदे पर भरोसा करते हुए हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने ऐलान किया:

كَلَّآ اِنَّ مَعِیَ رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ o

हरगिज़ वह बात नहीं जो तुम कह रहे थे। मेरे साथ मेरा अल्लाह है जो रास्ता निकालेगा।

ज़ाहिरन कुछ नज़र नहीं आता था लेकिन अल्लाह पाक ने समन्दर में बारह रास्ते कर दिये। बनी इस्राईल उससे पार उतर गये। जब उन्हीं रास्तों पर फ़िरऔन आया तो पानी मिल गया और वह डूब गया।

इस तरह अल्लाह रब्बुल्-इज़्ज़त ने बनी इस्राईल को फ़िरऔन के शर (बुराई) से बचाया। मगर कब? जब उन्होंने अल्लाह के हुक्म को पूरा करने के लिये अपनी ज़ाहिरी तरतीब को आगे-पीछे कर दिया, और खुदाई तक़ाज़ों को पूरा कर दिया। तब ग़ैबी तरीक़े पर अल्लाह ने उनको बचा लिया।

सहाबा की क़ुरबानियाँ और अल्लाह की मदद

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! आप हज़रात इस बात को तय करें कि ईमान और आमाल के लिये हमें जो ज़ाहिरी तरतीब क़ुरबान करनी पड़ेगी हम उसे क़ुरबान कर देंगे लेकिन अल्लाह का हुक्म नहीं छोड़ेंगे। इसकी आला और मुकम्मल मिसाल सहाबा ने दी। सहाबा कमज़ोर थे। हर लाईन में कम-तक़ात थे। कम संख्या में थे। लेकिन वे अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिये अपनी ज़ाहिरी तरतीबें बराबर क़ुरबान करते रहे।

अगर हुक्म पूरा करने के लिये हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अपनी बीवी उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा छोड़नी पड़ीं तो छोड़ दिया, और उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को अपना बच्चा छोड़ना पड़ा तो छोड़ दिया, लेकिन हुक्म को पूरा किया। इतना मुजाहदा पड़ा कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा मक्का मुअ़ज़्ज़मा के बाहर आकर बड़ी मुद्दत तक

रोती रहतीं, अपने शौहर की जुदाई पर और अपने बेटे की जुदाई पर, लेकिन अल्लाह का हुक्म पूरा किया।

हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु अ़न्हु को अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिये माल छोड़ना पड़ा तो उन्होंने माल छोड़ा। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ को अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिये पूरा माल लेजाने की ज़रूरत पेश आई तो सारा का सारा माल ले गये। इसी तरह मुहाजिरीन सहाबा को अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिये वतन को एक दम से छोड़ना पड़ा तो वतन को हमेशा के लिये छोड़ दिया। मदीने वालों को अल्लाह का हुक्म पूरा करने के लिये, उन वतन छोड़ने वाले मुहाजिरीन का साथ देने के लिये मदीने के अन्सार सहाबा ने जो कुछ किया उन सब में ज़ाहिरी तरतीबें आगे-पीछे हो गईं। अन्सार ने मुहाजिरीन को अपना मकान दिया, अपना माल व असबाब दिया। यहाँ तक कि अगर किसी के पास दो बीवियाँ थीं तो एक को तलाक़ देकर अपने मुहाजिर भाई के साथ उसका निकाह कर दिया।

"मैं कहता हूँ कि अल्लाह के दीन का क्या होगा?"
(हज़रत सिद्दीके अकबर का जवाब)

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तीन हज़ार का मजमा हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ मुल्क शाम की तरफ़ भेजने का हुक्म दे गये थे। इस हुक्म को ख़लीफ़ा-ए-अव्वल सय्यिदना हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूरा किया। ऐसे वक़्त में जबकि रोम का बादशाह दो लाख का मजमा लेकर मदीना मुनव्वरा को तहस-नहस करने के लिये निकल चुका था। एक तरफ़ मुसैलमा कज़्ज़ाब नुबुव्वत का दावा कर चुका था। एक बड़ा मजमा उसके साथ हो चुका था। चारों तरफ़ से फ़ितने और फ़साद आ चुके थे। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दुनिया से तशरीफ़ लेजाने के बाद सारा मदीना ख़तरों से घिर चुका था। ऐसी हालत में हज़रत सय्यिदना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म "कि हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अ़न्हु की जमाअ़त को रवाना कर दो" को पूरा किया। उन्होंने जमाअ़तें रवाना कर दीं। अगरचे सहाबा ने सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कहा कि उन्हें रोक लो। लाखों का हमला होने वाला है, मदीने की औ़रतों बच्चों का क्या होगा? लेकिन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि मदीने की औ़रतों बच्चों को कहते हो, मैं कहता हूँ कि नबी के हुक्म का क्या होगा। अल्लाह के नबी का हुक्म जब बदर में पूरा हुआ तो बावजूद यह कि ज़ाहिरी तरतीब हमारी आगे पीछे थी लेकिन अल्लाह की मदद से काम बना।

ग़ज़वा-ए-हुनैन में हमारी ज़ाहिरी तरतीब बहुत मज़बूत और संगठित थी। बारह हज़ार का मजमा साथ था। तैयारी और सामान बहुत था। सामने वाले सिर्फ़ चार हज़ार थे। उनकी तैयारी और सामान इतना नहीं था लेकिन हमारे अन्दर ज़रा-सा यह ख़्याल आ गया कि हम तो भारी संख्या में हैं, और वे थोड़ी। कुछ लोगों की निगाह अल्लाह से हटकर अपनी संख्या पर रुकी तो अल्लाह की मदद आसमान पर रुक गई। तब ये बारह हज़ार का मजमा चार हज़ार के मुक़ाबले में भागने लगा, सिवाय चन्द के जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ रुक गये। जबकि ग़ज़वा-ए-बदर में तीन सौ तेरह, हज़ार के मुक़ाबले में थे और जम गये क्योंकि वहाँ अल्लाह की मदद थी।

क्यों मदद थी?

इसलिये कि बात पूरी कर दी थी।

अब यहाँ से मदद क्यों उठ गयी?

इसलिये कि बात पूरी होने में कसर रह गयी।

ग़ज़वा-ए-उहुद के अन्दर अल्लाह की मदद उठ गयी। इसलिये कि नबी ने एक बात फ़रमा दी थी, वह बात चन्द आदमियों से छूट गयी। नबी की बात का छूट जाना अल्लाह की मदद का रुक जाना है। नबी की बात का पूरा होना अल्लाह की मदद का उतरना है।

हम बग़ैर अल्लाह की मदद के कुछ नहीं कर सकते। न हमारा सामान कुछ कर सकेगा और न हमारी संख्या। हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने हुक्म पूरा किया। सब को भेज दिया। सिर्फ़ सौ दो सौ रह गये।

दोबरा फिर तक़ाज़ा आया, सूचनाएँ मिलीं कि कुछ लोग दीन इस्लाम से फिर रहे हैं। हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि हम सब लोग चलें, इस फ़ितने की रोकथाम करें। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया:

ऐ अमीरुल् मोमिनीन! मदीने की औरतों और बच्चों का क्या होगा?

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़ेहन में क्या था? कि तुम कहते हो कि मदीने की औरतों और बच्चों का क्या होगा? मैं कहता हूँ कि "अल्लाह के दीन का क्या होगा?"

एक तरफ़ मदीने की औरतों का ज़िन्दा रहना और मरना, एक तरफ़ अल्लाह के दीन का ज़िन्दा होना और मिटना है। इन दोनों का जब मुक़ाबला पड़ गया तो हम दीन को मुक़द्दम करेंगे। (यानी दीन को पहले सामने रखेंगे)।

अल्लाह के दीन का मिटना मैं गवारा नहीं कर सकता

(हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का बयान)

मुर्तद (दीन इस्लाम से फिर जाने वाले) लोगों से मुक़ाबले की तहरीक (आन्दोलन) हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने चलायी और कहा कि इस राह में मेरी भी शहादत हो जाये, उम्महातुल् मोमिनीन (नबी करीम की पाक बीवियाँ) शहीद हो जायें, हमारी लाशें तड़प रही हों, हमारा दफ़न करने वाला कोई बाक़ी न रहे, जंगल के भेड़िये और कुत्ते हमारी लाशों को खायें। सब कुछ मैं गवारा कर सकता हूँ लेकिन अल्लाह के दीन का मिटना मैं गवारा नहीं कर सकता।

हज़रत सिद्दीक़े अकबर का हौसला और ख़ुदा की ग़ैबी मदद

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के अज़्म व इरादे (हौसले व हिम्मत) के आगे सब की हुज्जतें (दलीलें और तर्क) शिकस्त खा गईं। सब निकल गये, मदीना ख़ाली हो गया। सिर्फ़ औरतें और बच्चे रह गये। चारों तरफ़ से परेशानियाँ ही परेशानियाँ घेरे हुए थीं। लेकिन जब कुरबानी दी तो अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम चला।

अल्लाह रब्बुल् इज़्ज़त ने हिरक़्ल (रोम के बादशाह) पर रौब डाल दिया। वह दो लाख का मजमा लेकर मदीना पर हमला किये बग़ैर वापस चला गया। मुर्तद (दीन से फिर जाने वाले) लोगों पर भी अल्लाह ने रौब डाला, वे सब के सब फिर ईमान की तरफ़ लौट आये। इस तरह महीने दो महीने के अन्दर, जो फ़िज़ा हज़रत नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम छोड़कर गये थे, वैसी ही फ़िज़ा हो गयी।

तेईस साला नबवी दौर ढाई साला सिद्दीक़ी दौर में मुजाहदात और उन पर मुरत्तब परिणाम

नबी पाक की सारी सीरत (जीवनी) में ख़ास तौर पर तेईस साल की नबवी ज़िन्दगी और ढाई साल के सिद्दीक़ी दौर में क्या मिलेगा?

अल्लाह के हुक्म पर दीन के तक़ाज़े पर कुरबानी देना। ज़ाहिरी तरतीब को आगे पीछे करना। इस पर तीन दरवाज़े अल्लाह ने खोले:

1. ज़रूरतों का पूरा करना।

यानी 'क़ैसर व किसरा' (रोम और ईरान के बादशाहों) के सारे ख़ज़ाने सहाबा के क़दमों पर डाल दिये। महज़ पच्चीस साल के अन्दर। अगर सात सौ साल तक कमाते तो इतना न मिलता। अल्लाह ने उससे ज़्यादा दे दिया।

****

2. परेशानियों के दूर करने में अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम चला। मुर्तद (दीन से फिर जाने वाले) लोगों का फ़ितना दबा दिया गया। ज़कात रोक लेने वालों को फिर ताबेदारों में दाखिल किया गया। क़ैसर व किस्रा की शिकस्त के बाद पूरे आलम पर रौब बैठ गया।

3. अल्लाह के दीन का फैलना।

नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ वाली तकलीफ़ पर हम हिन्दुस्तान वालों को ईमान मिला

हम हिन्दुस्तान वालों को जो ईमान मिला, यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ताइफ़ की तकलीफ़ पर मिला। ताइफ़ में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो तकलीफ़ उठायी कि आप पर पत्थर मारे गये, बेहोश हुए, बेहोशी की हालत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बाग़ में लाया गया। पानी का छिड़काव किया गया। आपकी आँख खुली। देखा कि हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम खड़े हैं। उनके सामने पहाड़ों का फ़रिश्ता खड़ा है। हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि अल्लाह ने सब देख लिया, सब सुन लिया। अल्लाह ने पहाड़ों का फ़रिश्ता भेजा है। प्यारे नबी आप इस फ़रिश्ते से जो कहेंगे, यह वही करेगा। अल्लाह के हुक्म से आया है। अगर कहिये तो दोनों पहाड़ मिलाकर ताइफ़ वालों को पीस दे।

लेकिन हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दिल मुबारक में इनसानियत का ग़म था। इनसानियत का दर्द था। इनसानियत की फ़िक्र थी। आपको कोई धक्के मारता तो भी दोबारा उसके पास जाते।

मोहतरम दोस्तो! बावजूद इसके कि लोग धक्के मार रहे थे। पत्थर मार रहे थे, लेकिन अल्लाह के नबी अल्लाह के अ़ज़ाब को रुकवा रहे थे।

ऐ मेरे अल्लाह! तू अ़ज़ाब को रोक दे। यह नहीं मानते तो हो सकता है कि इनकी औलाद मान ले।

एक तरफ़ से अ़ज़ाब रुकवाया जा रहा है, और जिनके ऊपर से अ़ज़ाब रुकवाया जा रहा है जब उनके पास जाते हैं तो वे पत्थर मार-मारकर बेहोश करते हैं। इस बेहोशी के बाद आपने जो दुआ़ माँगी वह किस क़द्र रहम-दिली और दर्द से भरी होगी। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दुआयें जो किताबों में आ गई हैं वे दुआयें ऐसी हैं जिनको सुनने वालों ने सुना लेकिन तन्हाई की दुआयें जो पूरी इनसानियत के ग़म में माँगी जाती थीं उनको किसी ने नहीं सुना। न मालूम वे कितनी दर्द भरी दुआयें होंगी।

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को मारने वाले और धक्का देने वालों की हरकत पर हमें ग़म और सदमा है। लेकिन सदमा हमें इस बात पर भी होमा चाहिये कि जिस पाकीज़ा ज़िन्दगी के लिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने धक्के खाये, आज मुसलमानों के घर से हुज़ूरे पाक का पाकीज़ा दीन और तरीक़ा धक्का खा रहा है। कारोबार और शादियों से धक्के खा रहा है।

यह बड़ी दर्द भरी बात है कि वे ज़ालिम दुश्मन थे। उन ज़ालिमों ने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को धक्के मारे। लेकिन दोस्तो! जिस पाकीज़ा दीन और पाकीज़ा तरीक़े को जारी करने के लिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने धक्के खाये, वही दीन और पाक तरीक़ा आज कलिमा पढ़ने वालों के घरों से धक्के खा रहा है और कारोबार से धक्का खा रहा है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कोई बद्-दुआ़ नहीं की और कहा कि अगर ये नहीं मानते हैं तो इनकी औलाद मानेगी। हालात ऐसे थे कि दीन के फैलने की कोई सूरत उस वक़्त नज़र नहीं आ रही थी। लेकिन आख़िर वक़्त में यही ताइफ़ वाले मदीने में आये और उन्होंने कलिमा पढ़ा। उन्हीं की नस्ल में हज़रत मुहम्मद इब्ने क़ासिम सक़फ़ी पैदा हुए। वह ईमान और आमाल वालों की एक जमाअ़त वहाँ से

लेकर चले और हिन्दुस्तान आये। सिन्ध के इलाक़े में क़दम रखा। उस ज़माने में हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश, बर्मा ये सब मुल्क हिन्दुस्तान ही में थे। वह ईमान और आमाल वाली एक जमाअ़त साथ लाये थे। लोगों ने उसे देखा और देखकर ईमान वाली बातें फैलीं और फैलती चली गईं। यहाँ तक कि आज करोड़ों की संख्या में कलिमा पढ़ने वाले मुल्क में फैले हुए हैं। जिनमें हम और आप भी हैं। यह मुहम्मद इब्ने क़ासिम सक़फ़ी रहमतुल्लाहि अ़लैहि के साथ आने वाली ईमान और आमाल वाली जमाअ़त की बरकत है।

घबराने की ज़रूरत नहीं

अब एक बात समझिये जो मैं आपको बता रहा हूँ। जमाअ़तों के फिरने में ज़ाहिर में कुछ होता दिखाई नहीं देता लेकिन फिर भी आप हज़रात काम करते रहें। अल्लाह तआ़ला ने इसके अन्दर दीन के फैलाने की, अमन व अमान लाने की, रहमतों के उतारने की, दीन के फैलने की ग़ैबी तरकीबों को अन्दर ही अन्दर छुपा रखा है। बाज़ मर्तबा ये चीज़ें हमारे सामने ज़ाहिर हो जाती हैं और बाज़ मर्तबा ग़ैर-मौजूदगी (अनुपस्तिथि) में ज़ाहिर होती हैं। इस बिना पर क़तई तौर पर घबराने की ज़रूरत नहीं कि इतने सालों से मैं मक़ामी काम कर रहा हूँ लेकिन कोई सुनता ही नहीं, और मैं फ़लाँ मुल्क में गया वहाँ किसी ने सुना ही नहीं। इसकी बिल्कुल परवाह न करें।

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने साढ़े नौ सौ साल तक मेहनत की। बात मानने वाले सिर्फ़ अस्सी आदमी थे। फिर भी काम करते रहे, तो उनकी नस्ल जो क़ियामत तक चली उसमें न मालूम कितने अल्लाह की बात मानने वाले पैदा हुए और होते रहेंगे।

अल्लाह उसी ताक़त के साथ आज भी मौजूद है

मैंने बनी इस्राईल की बात सुनाई। सहाबा की बात सुनाई। अब आगे

हमारी तुम्हारी बारी क्या है?

हम ईमान और आमाल वाली लाईन अपने अन्दर उतार लें। इसके दुनिया में आ़म करने की मेहनत को और इस काम को अपना काम बनायें। इस काम को अपना काम बनाने में अगर ज़रूरतों की ज़ाहिरी तरतीब आगे पीछे हो गई तो परवाह न करो और परेशानियाँ आएँ तो झेल जाओ। तब अल्लाह के हुक्म और फ़ैसले को देखो। आज भी वही ग़ैबी निज़ाम चलेगा। क्योंकि अल्लाह उसी ताक़त और उसी ख़ज़ाने के साथ आज भी मौजूद है।

अल्लाह की मदद के वायदे क़ियामत तक के लिये हैं

लेकिन जी यह चाहता है कि आज वाली बात को रोक करके क़ियामत से पहले आने वाले ज़माने का ज़िक्र करूँ। इसलिये कि आ़म ज़ेहनों में यह आता है कि बनी इस्राईल का ज़माना डंडों, ऊँटों और तलवारों वाला था। सहाबा का ज़माना भी डंडों, तलवारों और ऊँटों वाला था। और आज का ज़माना राकिट और ऐटम का ज़माना है। तो आज के ज़माने में भी क्या ईमान पर अल्लाह की मदद का जो वायदा है वह हो सकता है? बिल्कुल हो सकता है। क्योंकि अल्लाह के जो वायदे हैं, वे आज के लिये भी हैं। चाहे दुनिया कितनी ही ताक़त में आगे बढ़ जाये, तेज़-रफ़्तारी में आगे बढ़ जाये, ख़ज़ानों में आगे बढ़ जाये। यही नहीं आज के ज़माने को छोड़ दीजिये आज के बाद भी जो आने वाला ज़माना है जो ज़ाहिर-परस्तों, माद्दा-परस्तों के लिये आज से भी ज़्यादा तरक़्क़ी याफ़्ता (विकसित) दौर होगा, उस वक़्त भी अल्लाह की क़ुदरत, अल्लाह की ताक़त, अल्लाह के ख़ज़ाने, अल्लाह की बादशाहत भरपूर होगी। किसी दूसरे की शिरकत के बग़ैर होगी, किसी कमी के बग़ैर होगी, असीमित क़ुदरत व ताक़त के साथ ख़ुदा अपनी ग़ैबी मददों और ख़ज़ानों के साथ ईमान वालों की पुश्त को मज़बूत फ़रमायगा। उस वक़्त दीन के लिये बड़ी-बड़ी रुकावटें आयेंगी। एक रुकावट होगी दज्जाल की सरमायेदारी के

एतिबार से, एक रुकावट आयेगी याजूज व माजूज की ताक़त के एतिबार से। ये दो रुकावटें ऐसी होंगी कि अब तक दुनिया में ऐसी रुकावट नहीं आई।

दज्जाल के बारे में हर नबी ने पनाह माँगी है। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी पनाह माँगी है। उससे पनाह माँगने की तदबीरें बताई हैं।

याजूज व माजूज की इतनी बड़ी ताक़त आने वाली है कि उनकी संख्या पूरी दुनिया के इनसानों की संख्या से ज़्यादा होगी। उनकी संख्या सारी ग़लत ताक़तों से बढ़कर होगी। ये दोनों रुकावटें आख़िरी ज़माने में आयेंगी।

उस ज़माने में भी जो लोग ईमान व आमाल की लाईन पर अपनी ज़ाहिरी तरतीब को आगे पीछे करेंगे, कुरबानियों के लिये तैयार होंगे, अल्लाह के हुक्म को पूरा करेंगे तो फिर उनके लिये वही तीनों ग़ैबी मदद के दरवाज़े खुलेंगे। ग़ैबी मदद के ये तीनों दरवाज़े हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से अब तक खुलते रहे हैं और क़ियामत तक खुलते रहेंगे। तो आज ये तीनों दरवाज़े कैसे नहीं खुल सकते?

दज्जाल का फ़ितना

अब आप कुछ और सुनें। दज्जाल आयेगा और ख़ुदाई का दावा करेगा। जो उसो ख़ुदा मानेगा उसको राहत में रखेगा। चालीस दिन तक ईमान और आमाल वाले तकलीफ़ उठायेंगे। उनके लिये खेतों में तंगी, जानवर उनके दुबले, लेकिन उन्होंने तक़ाज़ों से मुँह मोड़ा, ख़ुदा की तरफ़ रुख़ किया, कुरबानी दी तो ख़ुदाई मदद आ पहुँचेगी और अगरचे वे अपनी आँख से देखेंगे कि जिन लोगों ने दज्जाल को ख़ुदा माना तो दज्जाल अपने को ख़ुदा मानने वालों के दुबले जानवरों को मोटा कर देगा, आसमान से कहेगा "बरस जा" तो वह बरस जायेगा। और वे लोग बड़े मज़े में रहेंगे। यह ख़ुदा की तरफ़ से इम्तिहान होगा। दज्जाल के कहने पर

अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दा कर देंगे, यह अल्लाह की तरफ़ से होगा। जैसे हम लोगों का इम्तिहान हमारा कारोबार है। कारोबार कराकर अल्लाह हमारी ज़रूरतों को पूरा करते हैं। हालाँकि अल्लाह क़ादिरे मुतलक़ है, लेकिन इम्तिहान के तौर पर कारोबार को हमारे सामने डाल दिया है।

इस वक़्त सामूहिक तौर पर पूरी दुनिया का जो इम्तिहान है वह साइंस की तरक़्क़ियाँ हैं। इन साइंस की तरक़्क़ियों को अल्लाह ने चलवाया। लेकिन आम ज़ेहन यह है कि साइंस वालों ने किया।

इसी तरह उस ज़माने को जो बेदीन होंगे वे समझेंगे कि दज्जाल ख़ुदा है क्योंकि बारिश बरसाता है, मुर्दों को ज़िन्दा करता है, जो कहता है वह हो जाता है। तो कुछ लोग उसे ख़ुदा मानेंगे और अल्लाह का हुक्म तोड़ेंगे और चालीस दिन तक मज़े में रहेंगे।

ईमान वाले और अच्छे आमाल वाले साफ़ कह देंगे कि तू ख़ुदा नहीं है। हमारा ख़ुदा तो अल्लाह है और वही कारसाज़ है। लोग उनका मज़ाक़ उड़ायेंगे और कहेंगे कि देखो दज्जाल को ख़ुदा नहीं माना तो कितनी तकलीफ़ में हो। वे कहेंगे कि हम इन तकलीफ़ों को बरदाश्त करके अपनी मर्ज़ी को क़ुरबान करेंगे। ख़ुदा की मर्ज़ी को पूरा करेंगे।

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के साथी अभी से बन रहे हैं

दज्जाल के जब चालीस दिन पूरे हो जायेंगे तो फिर ईमान वालों के लिये अल्लाह की ग़ैबी मदद होगी। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम जो लम्बी मुद्दत से आसमान पर हैं, वह उतरेंगे और जामा मस्जिद के पूरबी मीनारे पर उतरेंगे। सीढ़ी लायी जायेगी। आप नीचे तशरीफ़ लायेंगे और दज्जाल को "बाबे लुद" पर ख़त्म करेंगे।

आज "बाबे लुद" जहाँ है वहाँ की जमाअ़त हिन्दुस्तान में आयी। काम करके वहाँ गई जहाँ दज्जाल आने वाला है। वहाँ मस्जिद्वार जमाअ़तें बनी हुई हैं और काम कर रही हैं। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का इन्तिज़ार हो रहा है और दज्जाल के साथी तो पूरी दुनिया के अन्दर हैं,

वह तो आप जानते ही हैं। लेकिन हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के साथी भी अभी से बन रहे हैं। अल्लाह जल्ल शानुहू दज्जाल को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हाथों ख़त्म करा देंगे और जितने दज्जाल के चैले होंगे उन्हें भी ख़त्म कर देंगे। फिर ईमान वालों, बेकसों, बेबसों के लिये अल्लाह की तरफ़ से मदद के ग़ैबी दरवाज़े खुलेंगे।

याजूज व माजूज का फ़ितना

अब दूसरा मुजाहदा जो आयेगा वह याजूज व माजूज से होगा। याजूज व माजूज बड़ी लम्बी उम्र वाले हैं। किताबों में आता है कि एक एक जोड़ा याजूज व माजूज में से उस वक़्त तक नहीं मरता जब तक कि एक हज़ार आदमी उसकी नस्ल में पैदा न हो जायें। बड़ी ज़बरदस्त ताक़त वाले हैं। हज़रत ज़ुल्क़रनैन की दीवार के पीछे सब के सब मौजूद हैं। रोज़ाना दीवार को तोड़ने की कोशिश करते हैं लेकिन अभी तक नहीं तोड़ सके। क़ियामत से पहले वे तोड़ सकेंगे। वे तोड़ताड़ करके या ऊपर चढ़-चढ़ा करके लोगों के सामने आयेंगे, क्योंकि उनके बदन लम्बे-तड़ंगे होंगे। उनकी बड़ी भारी संख्या होगी। जितने इनसान होंगे उससे कई गुना ज़्यादा याजूज व माजूज होंगे। और पूरी दुनिया पर छा जायेंगे। यह पूरी दुनिया के लिये बहुत बड़ा हादसा होगा। जितने बेदीन और ग़लत क़िस्म के लोग होंगे, माद्दी ताक़तों और सरमायों पर घमण्ड और गर्व करने वाले लोग हैं, वे सब के सब हैरत में पड़ जायेंगे। चाँद पर चढ़ने वाले, जो हो सकता है कि कुछ दिनों में नामालूम दुनिया "मर्रीख़" पर कमन्द डाल दें और वहाँ पहुँच जायें, वे भी सब के सब हैरत में पड़ जायेंगे। ऐटमी ताक़त की खोज करने वाले न मालूम और कौन-कौनसी ताक़त की खोज कर चुके होंगे। वे भी सब के सब याजूज व माजूज के मुक़ाबले में ढीले पड़ जायेंगे।

याजूज व माजूज पर ख़ुदाई क़हर और ईमान वालों की ग़ैबी मददें

लेकिन ईमान वाले और आमाल का ज़ख़ीरा रखने वाले बेकसी के साथ-साथ ज़ाहिरी तरतीब और तक़ाज़ों को क़ुरबान करके पहाड़ों के ग़ारों में जा बसेंगे जहाँ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी तशरीफ़ ले जायेंगे। परेशानियाँ ही परेशानियाँ होंगी। याजूज व माजूज ऐसे तमाम लोगों को खा-पीकर साफ़ कर देंगे जो दुनियादार थे। जो ज़ाहिरी तरतीब में लगने वाले थे। जिन्हें अल्लाह के हुक्मों की परवाह नहीं थी। जिन्हें अल्लाह ने सही रास्ते पर आने का मौक़ा दिया और उन्होंने उससे फ़ायदा नहीं उठायाः

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًاۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

तर्जुमाः- और ऐसे ही पीछे लगाते हैं हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ लोगों के उनके करतूतों की बिना पर।

याजूज व माजूज कहेंगे कि बताओ हमारे मुक़ाबले में कौन है? यहाँ तक कि बैतुल्-मक़्दिस में जो बड़ा पहाड़ है उसके ऊपर चढ़ेंगे और आसमान की तरफ़ तीर चलायेंगे। अल्लाह पाक उन तीरों को ख़ून में भरकर वापस भेजेंगे। वे कहेंगे कि देखो दुनिया में तो हम ही हैं आसमान में भी हमने ख़ूँरेज़ी कर दी। दनदनाते फिरेंगे। अल्लाह तआला ग़लत लोगों को भी मोहलत दे देते हैं कि कर लो, फिर आख़िर में पकड़ करते हैं।

मेरे मोहतरम दोस्तो! उन ईमान वालों को खाने-पीने की सारी ज़ाहिरी तरतीब को छोड़कर ग़ार में जाना पड़ेगा। अब उनके खाने-पीने का क्या होगा? ग़ैब से अल्लाह पाक खाने पीने का इन्तिज़ाम करेंगे। वे लोग **"सुब्हानल्लाहि, अल्-हम्दु लिल्लाहि, ला इला-ह इल्लल्लाहु, वल्लाहु अक्बरु"** पढ़ेंगे। और इनके पढ़ने पर उनके पेट भरते रहेंगे। यह ग़ैबी इन्तिज़ाम ज़रूरतों के पूरा करने का होगा। लेकिन परेशानी कैसे ख़त्म हो।

तो ख़ूब रो-रोकर दुआयें माँग रहे होंगे। अल्लाह पाक बाज़ मर्तबा दीन का काम करने वालों के ज़ाहिरी सहारों को चारों तरफ़ से कभी हटा देते हैं और सिवाय अल्लाह के सहारे के कोई सहारा बचता नहीं। तब उस वक़्त जब वे गिड़गिड़ाते हैं तो अल्लाह की मदद आती है। यहाँ भी अल्लाह की मदद आयी परेशानियों के दूर करने की। वह यह कि याजूज व माजूज की गर्दनों पर कीड़े पड़ेंगे और कीड़े पड़ने की वजह से जो हज़ारों साल से ज़िन्दा थे थोड़ी देर के अन्दर ख़त्म हो जायेंगे। इस तरह उनसे नजात (छुटकारा) हासिल होगी। परेशानी ख़त्म होगी। लम्बी गर्दनों वाले जानवर याजूज व माजूज की लाशों को लेजाकर न मालूम कहाँ फेंक देंगे। फिर ईमान व आमाल वाले ग़ारों से बाहर आयेंगे और देखेंगे कि पूरी दुनिया से बेईमान ख़त्म हो गये। सिर्फ़ दीन ही दीन है, ईमान ही ईमान है।

हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम
और उनके साथियों की ख़ुदाई मददें

फिर अल्लाह बारिश बरसायेंगे। इतनी बरकत होगी कि एक बकरी का दूध एक जमाअ़त पेट भरकर पियेगी। एक अनार इतना बड़ा होगा कि पूरी एक जमाअ़त पेट भरकर खायेगी। उसका छिलका इतना बड़ा होगा कि छतरी की तरह ओढ़ा जायेगा।

ग़ैबी तरीक़े पर ज़रूरतों के पूरा होने का इन्तिज़ाम हुआ।

ग़ैबी तरीक़े पर परेशानियों के दूर होने का इन्तिज़ाम हुआ।

ग़ैबी तरीक़े पर दीन ही दीन होने का ऐसा इन्तिज़ाम हुआ कि सारी दुनियां में ईमान ही ईमान होगा, बेईमान एक भी न होगा।

ईमान और नेक आमाल क्या हैं?

अब मैं अ़र्ज़ करूँगा कि अल्लाह की ग़ैबी मदद जिन आमाल पर मिलेगी वे आमाल क्या हैं और कौनसे हैं। वे आमाल इस कलिमे में इकट्ठे कर दिये हैं:

امَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ ۔

आमन्तु बिल्लाहि व मलाइ-कतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल्-यौमिल् आख़िरि वल्-क़द्रि ख़ैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि तआ़ला वल्-बअ़्सि बअ़्दल् मौति।

आमन्तु बिल्लाही

ईमान लाया मैं अल्लाह पर।

इसके मायने यह हैं कि दुनिया में जितनी ज़ातें (शख़्सियतें) हैं, उनका यक़ीन दिल से निकल जाये और अल्लाह का यक़ीन दिल के अन्दर आ जाये। मुल्क व माल, सोना-चाँदी, रुपया-पैसा, इसका यक़ीन दिल से निकल जाये और अल्लाह का यक़ीन दिल में आ जाये। यह है अल्लाह पर ईमान लाना।

इसके लिये दो काम करने पड़ेंगे- एक यह कि अल्लाह का यक़ीन दिल में लाना और दूसरे मख़्लूक़ात का यक़ीन दिल से निकालना। मख़्लूक़ात दिखाई देती हैं और अल्लाह दिखाई नहीं देता। तो अल्लाह का यक़ीन ख़ुद नहीं आता उसे लाना पड़ता है। और मख़्लूक़ का यक़ीन ख़ुद आता है, उसे निकालना पड़ता है।

अल्लाह का यक़ीन कैसे आयेगा?

अब यह कि अल्लाह का यक़ीन कैसे लाया जाये और मख़्लूक़ात का यक़ीन कैसे निकाला जाये? इसके लिये दो काम करने पड़ेंगे- अल्लाह का यक़ीन दिल के अन्दर लाने के लिये बार-बार अल्लाह का बोल बोलना और सुनना। जितना अल्लाह को बोलना और सुनना होगा उतना ही अल्लाह का यक़ीन आयेगा। लेकिन कारोबार और घर का यक़ीन दिल से निकालने के लिये हमें दूसरा काम करना पड़ेगा। वह क्या है? वह "क़ुरबानी" है।

कुरबानी के ज़रिये चीज़ों का यक़ीन दिल से निकलेगा और बार-बार अल्लाह की बोली बोलने से अल्लाह का यक़ीन दिल के अन्दर आयेगा।

अब बार-बार अल्लाह की बोली बोलना और सुनना, इसके क्या मायने हैं?

यही मायने हैं दावत के।

दावत के क्या मायने हैं?

बार-बार अल्लाह का बोल बोलना और सुनना। इसी तरह अगर आप हज़रात रोज़ाना मस्जिदों को आबाद करने के लिये ढाई घन्टे का वक़्त देंगे, मस्जिद्वार जमाअ़त बानायेंगे, गश्त करेंगे तो ईमान के अन्दर तरक़्क़ी होती चली जायेगी।

लेकिन इसे पहले सीखना पड़ता है। इसे सीखने के लिये जमाअ़तों के अन्दर चार-चार महीने फिरकर कारोबार और घर की कुरबानी देना सीखा जाता है। ताकि अपनी ज़ाहिरी तरतीब को अल्लाह के दीन के तक़ाज़े पर कुरबान करके अल्लाह के हुक्म को पूरा करना आ जाये। इसमें सब से पहली बात यह है कि सब का ताल्लुक़ निकल कर अल्लाह की ज़ात का यक़ीन आ जाये। और यह दावत और कुरबानी की फ़िज़ा के अन्दर हासिल होगा।

व मलाइ-कतिही

और ईमान लाया मैं अल्लाह के फ़रिश्तों पर।

फ़रिश्तों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि जितना ज़ाहिरी निज़ाम दुनिया का है, मुल्क का, घर का, कारोबार का, सारे ज़ाहिरी निज़ामों से हमारा यक़ीन हटे और जो फ़रिश्तों वाला छुपा हुआ निज़ाम है उस पर हमारा यक़ीन आये। ज़ाहिरी निज़ाम आदमी के पास कितना ही बड़ा हो लेकिन अगर खुदा का ग़ैबी निज़ाम फरिश्तों वाला ख़िलाफ़ हो तो इस ज़ाहिरी निज़ाम में ज़िन्दगी उजड़ जायेगी।

ज़ाहिरी निज़ाम हाथों में चाहे कम हो, लेकिन फ़रिश्तों वाला ग़ैबी

निज़ाम हिमायत में है तो ज़िन्दगी बन जायेगी।

नमरूद, हामान, फ़िरऔन, क़ारून इनके पास तो ज़ाहिरी निज़ाम था। खुदा का ग़ैबी निज़ाम इनके ख़िलाफ़ था तो नतीजा बुरा निकला। हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और दूसरे अम्बिया और उनके मानने वाले लोगों के पास आ़म तौर से ज़ाहिरी निज़ाम बहुत कमज़ोर था लेकिन खुदा का ग़ैबी निज़ाम उनकी हिमायत में था। तो उनकी ज़िन्दगी बन गई।

तो इस पर ईमान लाना पड़ेगा कि ज़ाहिरी निज़ाम से यक़ीन हटे और ग़ैबी निज़ाम पर यक़ीन आये।

ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम क्योंकर हिमायत में आयेगा?

अब यह तरीक़ा सीखना पड़ेगा कि ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम हिमायत में कैसे आये?

जैसा कि बता दिया गया कि ईमान में ताक़त पैदा हो और आमाल अच्छे हों तो फिर ख़ुदा का ग़ैबी निज़ाम हिमायत में आयेगा। लेकिन इसके लिये भी मुजाहदा (मेहनत और कोशिश) करना पड़ेगा। ज़ाहिरी तरतीब को आगे पीछे करना पड़ेगा। पूरे चार महीने देने का मौक़ा नहीं था और निकल गये अल्लाह की ग़ैबी मदद पर यक़ीन करके तो अब ख़ुदा तआ़ला की ग़ैबी मदद आयेगी।

व कुतुबिही

और ईमान लाया मैं अल्लाह की किताबों पर।

इसके ज़रिये अल्लाह ने बताया कि जितने इनसानी उलूम हैं, उनसे यक़ीन हटकर अल्लाह के उलूम पर यक़ीन आ जाये। इनसानी उलूम क्या हैं? सोने-चाँदी, मुल्क व माल से यूँ होगा। ये इनसानी उलूम हैं। और अल्लाह के उलूम क्या हैं? जो अल्लाह ने इनसानों को आसमानी किताबों के ज़रिये दिया वह यह कि:

नमाज़ से कामयाबी, रोज़े से तक़्वा, दुआ़ से क़बूलियत, आमाल से

तासीर, कुरबानी से मदद।

إِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ (پ۲۶)

अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा।

अल्लाह का इल्म क्या है?

वह यह है कि किस अ़मल पर बुरा नतीजा निकलेगा और किस अ़मल पर अच्छा नतीजा निकलेगा। तो जब अल्लाह के उलूम वाली बातों पर हमारा अ़मल होगा तो आसमान से ज़िन्दगियों के बनाने के फ़ैसले आयेंगे। और जब अल्लाह के उलूम को छोड़ दिया और चीज़ों के चक्कर में पड़ गये तो जब "आसमानी फ़ैसला" ज़िन्दगियों के उजाड़ने का आयेगा तो सारी दुनिया की ताक़तें मिलकर ज़िन्दगी नहीं बना सकतीं।

व रुसुलिही

और ईमान लाया मैं अल्लाह के रसूलों पर।

शख़्सियत रसूलों की है। शख़्सियत मुल्क और माल से नहीं बनती। पैरवी के क़ाबिल अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम हैं। इस वजह से नबियों की पैरवी करनी है। आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हमें पैरवी करनी है। उन पर यक़ीन लाना है। उनकी बात मानने पर हमारी कामयाबी है। न मानने पर नाकामी है।

वल्-यौमिल् आख़िरि

और ईमान लाया मैं आख़िरत के दिन पर।

आज के दिन का यक़ीन दिल से निकाला जाये और आख़िरत के दिन का यक़ीन लाया जाये। हम और आप जो कुछ करें वह क़ियामत के दिन को सामने रखकर करें। आज को सामने रखकर न करें। कारोबार करें तो आज को सामने रखकर न करें। क़ियामत को सामने रखें। अगर हमने कारोबार के अन्दर ऐसी तरतीब रखी कि माल तो ज़्यादा मिला लेकिन अल्लाह का हुक्म टूटा तो क़ियामत के दिन अल्लाह के सामने

जाना पड़ेगा और हिसाब देना पड़ेगा।

وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِیْ عُنُقِهٖ وَنُخْرِجُ لَهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ كِتٰبًا یَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا ○ (پ ۱۵)

तर्जुमाः- आदमी का बुरा या भला अ़मल उसके गले का हार बना हुआ है और क़ियामत के दिन ऐ इनसान! वह तेरे सामने आयेगा।

اِقْرَاْ كِتٰبَكَ، كَفٰی بِنَفْسِكَ الْیَوْمَ عَلَیْكَ حَسِیْبًا ○ (پ ۱۵)

तर्जुमाः- अपना रजिस्टर तू ख़ुद ही पढ़ ले, और अपना हिसाब तू ख़ुद ही कर ले।

आज हमें जो करना है वह क़ियामत के दिन को सामने रखकर करना है कि क़ियामत में हमारी रुस्वाई और ज़िल्लत न हो। आज के दिन का यक़ीन निकले और क़ियामत के दिन का यक़ीन आये।

वल्-क़द्रि ख़ैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि तआ़ला

और ईमान लाया मैं इस पर कि अच्छी-बुरी तक़दीर अल्लाह की तरफ़ से है।

इनसान के ऊपर तकलीफ़ वाले हालात, राहत वाले हालात जो भी आते हैं वे अल्लाह की तरफ़ से आते हैं। लेकिन उसके अन्दर अपनी मर्ज़ी को छोड़ना और अल्लाह की मर्ज़ी पर चलना है। जो हाल तकलीफ़ वाला या राहतों वाला है, वह तो ख़त्म होगा लेकिन उस हाल के अन्दर जो अच्छा अ़मल या बुरा अ़मल किया है वह बाक़ी रहेगा। और उसका असर क़ब्र में, हश्र में, जहन्नम में पड़ेगा।

इसलिये मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! हालात से न तो घबराइये और न इतराइये। अच्छे हालात में इतराना नहीं, बुरे हालात में घबराना नहीं। अगर अच्छे और बुरे हालात में अल्लाह के हुक्म को पूरा कर दिया तो ये आमाल हमेशा बाक़ी रहेंगे। और क़ियामत के दिन जन्नत के अन्दर लेजा कर अल्लाह जो राहतें देंगे वे इन्हीं आमाल पर देंगे। और यूँ कहेंगे:

اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ٥ (پ ١٧)

जो तुमने अ़मल किया था, यह उसी का बदला है।

वल्-बअ्सि बअ्दल् मौति

और ईमान लाया मैं इस पर कि मरने के बाद ज़िन्दा होना है।

मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा होना है। इसका यक़ीन दिल के अन्दर आ जाये। यह सब ईमानियात की लाईन है। यह बार-बार बोलने और सुनने से मज़बूत होगी। मस्जिदे नबवी के अन्दर बाक़ायदा ईमानियात वाली लाईन चलती थी और ख़ूब इसके मुज़ाकरे होते थे।

ईमान के बढ़ने का तरीक़ा

ईमान की जो बातें आप हज़रात के सामने अ़र्ज़ की गईं, उसके बढ़ने का तरीक़ा बताया गया कि बार-बार मस्जिदों के अन्दर, घरों के अन्दर अल्लाह का तज़किरा हो। उसकी क़ुदरतों, ताक़तों और ख़ज़ानों का तज़किरा हो। अल्लाह की पकड़, अल्लाह के क़ैदख़ाने जहन्नम, अल्लाह के मेहमान-ख़ाने जन्नत, हिसाब-किताब के दिन क़ियामत का बार-बार मुज़ाकरा हो। जितना ज़्यादा मुज़ाकरा होगा उतना ज़्यादा ईमान बढ़ेगा। ये चार महीने, ये चिल्ले, ये महीने के तीन दिन, यह तो सीढ़ी है। यह आ़दत डालने के लिये है। जब हमारी और आपकी आ़दत पड़ जाये, इसके अन्दर अल्लाह पाक आगे बढ़ा दें और हमें नबियों वाला ग़म नसीब हो जाये तो फिर अल्लाह के दीन के तक़ाज़ों पर हम खड़े होने लगेंगे। हमारे कारोबारी और घरेलू तक़ाज़ों की ज़ाहिरी तरतीब आगे-पीछे होती रहेगी। और अल्लाह पाक अपने ग़ैबी निज़ाम से ज़रूरतें पूरी करेंगे। ग़ैबी निज़ाम से परेशानियाँ दूर करेंगे। अल्लाह पाक ग़ैबी निज़ाम से दीन के फैलाने के लिये हम सब को इस्तेमाल करेंगे। उसके बाद जब मौत आयेगी तो क़ियामत तक पाँव पसार कर सोना है।

जागना है जाग ले अफ़्लाक के साये तले
हश्र तक सोता रहेगा ख़ाक के साये तले

सोने की जगह क़ब्र और ऐश व आराम के साथ खाने पीने और ज़िन्दगी गुज़ारने की जगह जन्नत है। दीन का काम ख़ूब करने की जगह यह दुनिया है। इनामात लूटने की जगह आख़िरत है। अल्लाह तआ़ला हम सबको अपने दीन के लिये क़बूल फ़रमायें और अपनी मर्ज़ी के आमाल पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमायें। (आमीन)

तक़रीर (6)

यह तक़रीर 11 दिसम्बर 1994 को सालाना तब्लीग़ी इज्तिमा भोपाल में की गई।

गुनाहगार इनसान की मिसाल ऐसी है जैसे गन्दगी में लत-पत बच्चा। ऐसे बच्चे के साथ क्योंकि गन्दगी लगी हुई है, इसलिये उस गन्दगी से माँ को नफ़रत है, लेकिन बच्चे से माँ को मुहब्बत है। गन्दगी की वजह से माँ उस बच्चे को फेंक नहीं देती, बल्कि उसकी गन्दगी साफ़ करती है। फिर उसे सीने से लगाती है। इसलिये अगर कोई गुनाहगार मुसलमान मिले तो उसके गुनाहों से नफ़रत होनी चाहिये। और ईमान की वजह से उससे मुहब्बत होनी चाहिये।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَ نَا وَ نَبِیَّنَا وَمَوْلَا نَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ، صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰٓی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا کَثِیْرًا۔ اَمَّابَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ٥ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَکَرٍ اَوْاُنْثٰی وَھُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْیِیَنَّہٗ حَیٰوۃً طَیِّبَۃً وَّلَنَجْزِیَنَّھُمْ اَجْرَھُمْ بِاَحْسَنِ مَا کَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ٥ (پ۱۴)

وَقَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی:

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِکْرِیْ فَاِنَّ لَہٗ مَعِیْشَۃً ضَنْکًا وَّنَحْشُرُہٗ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ اَعْمٰی ٥ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِیْٓ اَعْمٰی وَقَدْ کُنْتُ بَصِیْرًا ٥ قَالَ کَذٰلِکَ اَتَتْکَ اٰیٰتُنَا فَنَسِیْتَھَا وَکَذٰلِکَ الْیَوْمَ تُنْسٰی ٥ (پ۱۶)

ईमान और आमाल वाला रास्ता

मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! ईमान और आमाल के बग़ैर जो आदमी चलता है, भटक जाता है। और ईमान व आमाल के साथ जो आदमी चलता है वह भटकता नहीं है।

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के पास मुल्क था लेकिन वह इसके बावजूद ईमान और आमाल वाले रास्ते पर रहे, और यह रास्ता क़ियामत तक आने वाले लोगों को बता दिया।

ज़िन्दगी के दो दौर

एक ज़िन्दगी दुनिया की है जो मौत के वक़्त ख़त्म होगी और एक ज़िन्दगी आख़िरत की है जो मरने के वक़्त से शुरू होगी और कभी ख़त्म नहीं होगी। अल्लाह तआ़ला ने बहुत पड़ा फ़ज़्ल व करम फ़रमाया कि उसने नबियों को भेजा। उन अम्बिया-ए-किराम ने आख़िरत की ज़िन्दगी को खोलकर बता दिया।

और दूसरा इन्तिज़ाम यह किया कि आसमान से 'वह्य' (फ़रिश्ते के ज़रिये अम्बिया पर अपना पैग़ाम) भेजी। अल्लाह की आसमानी 'वह्य' ने यह बात बताई कि मर्द हो या औ़रत, जिसने भी भला अ़मल किया उसके लिये दो फ़ायदे हैं।

दो फ़ायदे

एक फ़ायदा दुनिया के अन्दर है:

فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيٰوةً طَيِّبَةً (پ١٤)

कि उसकी ज़िन्दगी ख़ुशगवार होगी।

चाहे वह तंगदस्त हो या मालदार...... चाहे बीमार हो यह तन्दुरुस्त...... चाहे उसके ऊपर तकलीफ़ें हों या नेमतें...... दोनों हालतों में उसकी ज़िन्दगी ख़ुशगवार होगी।

दूसरा फ़ायदा यह बताया कि जो अ़मल यहाँ ईमान की ताक़त के साथ किया है, उस पर आख़िरत में अच्छे से अच्छा बदला इनायत फ़रमायेंगे। चुनाँचे फ़रमायाः

وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ (پ١٤)

यानी हम उनको उनके आमाल का बेहतरीन बदला इनायत फ़रमायेंगे।

जब अल्लाह बदला देने वाले होंगे तो अपनी शान के मुताबिक़ देंगे। छोटी से छोटी जन्नत अगर मिली तो उसकी चौड़ाई ज़मीन व आसमान के

बराबर होगी और लम्बाई की कोई हद नहीं।

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! इसलिये ईमान और नेक आमाल मर्द और औरत दोनों करें। दुनिया और आख़िरत के अन्दर इसके बारे में अल्लाह पाक ने वायदा फ़रमाया है।

दो तरह की सज़ायें

दूसरी आयते करीमा जो मैंने पढ़ी, उसके अन्दर अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाते हैं कि जिस आदमी ने अल्लाह पाक की नसीहतों से मुँह मोड़ा, उसके लिये भी दो तरह की सज़ायें हैं। एक:

فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنكًا (پ١٦)

कि उसकी ज़िन्दगी की राहें बिल्कुल तंग होंगी।

उसके दिल को चैन व सुकून न होगा। चाहे उसके पास कितना ही बड़ा बंगला और कारख़ाना हो और चाहे कितना ही रुपया और पैसा हो। और दूसरी सज़ा मरने के बाद वाली ज़िन्दगी में होगी। फ़रमाया:

وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ٥ (پ١٦)

और क़ियामत के दिन हम उनको अन्धा करके उठायेंगे।

जैसी करनी वैसी भरनी

रब्बे ज़ुल्जलाल की तरफ़ से सज़ा पाकर वह यूँ कहेगा:

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ٥ (پ١٦)

ऐ अल्लाह! मुझको अन्धा क्यों बना दिया। मैं तो आँखों वाला था। आलात (उपकरणों) के ज़रिये मैं बहुत दूर-दराज़ तक देखा करता था। तो अल्लाह पाक इरशाद फ़रमायेंगे:

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ٥ (پ١٦)

कि तेरे सामने मेरी आयतें बयान की गईं लेकिन तूने उनका ख़्याल नहीं किया और उन पर ध्यान नहीं दिया, तो अब हम भी तेरे ऊपर रहम

व करम का मामला नहीं करेंगे।

जैसी करनी वैसी भरनी, न माने तो करके देख
जन्नत भी है दोज़ख़ भी, न माने तो मरके देख

तो इन आयतों के अन्दर सुधरे हुए और बिगड़े हुए इनसानों की दुनिया और आख़िरत की दोनों बातें अल्लाह ने बता दीं।

अव्वल 'ईमान बिल्ग़ैब' की ज़रूरत

मरने के बाद इनसान पर नेमतें आएँ या तकलीफ़ें आएँ। इसको मरने वाला जानता है। जो लोग ज़िन्दा हैं वे नहीं जानते। लिहाज़ा सब से पहले 'ईमान बिल्ग़ैब' (ग़ैब पर ईमान) हो। अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बातों पर यक़ीन हो। इसी लिये अल्लाह पाक ने क़ुरआन के अन्दर अ़क़्ली दलीलें भी ख़ूब पेश फ़रमाई ताकि मेरे बन्दे ईमान और आमाल से मेहरूम न रह जायें और उनकी हमेशा की ज़िन्दगी न बिगड़े।

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! जो बिगड़े हुए लोग हैं, उनका भी इकराम (सम्मान) करना चाहिये। क्योंकि यह नहीं देखा जायेगा कि फ़लाँ कौन है? और किस ख़ानदान से ताल्लुक़ रखता है? और किस मुल्क का है? चूँकि उसने कलिमा पढ़ लिया है इसलिये वह क़ाबिले एहतिराम है। हाँ! अगर वह गुनहगार है तो उसके गुनाहों से नफ़रत होनी चाहिये, उससे नहीं। ईमान की वजह से उसका इकराम हो और गुनाह की वजह से उसके गुनाह से नफ़रत, न कि उसकी ज़ात से।

गुनाहगार की मिसाल

गुनाहगार इनसान की मिसाल ऐसी है जैसे गन्दगी में लत-पत बच्चा। ऐसे बच्चे के साथ क्योंकि गन्दगी लगी हुई है, इसलिये उस गन्दगी से माँ को नफ़रत है, लेकिन बच्चे से माँ को मुहब्बत है। गन्दगी की वजह से माँ उस बच्चे को फेंक नहीं देती, बल्कि उसकी गन्दगी साफ़ करती है। फिर

उसे सीने से लगाती है। इसलिये अगर कोई गुनाहगार मुसलमान मिले तो उसके गुनाहों से नफ़रत होनी चाहिये। और ईमान की वजह से उससे मुहब्बत होनी चाहिये।

गुनाहों से साफ़ करने की सूरत

अब गुनाह साफ़ कैसे हो?

उसे अच्छे और भले माहौल के अन्दर लाना चाहिये और भला माहौल जमाअ़तों के अन्दर निकलने से ख़ूब मिलता है। क्योंकि जो जमाअ़तें काम करती हैं, वे भला माहौल बनाती हैं। जब गुनाहगार निकलते हैं तो अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से कितने सुधर भी जाते हैं। ऐसे वाक़िआत इस दौर में भी हैं।

इस्लाही कोशिशें बेकार नहीं जातीं

अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का ज़माना तुम्हारे सामने पेश किया जाये तो ज़ेहनों में यह आता होगा कि वह तो बड़ा अच्छा दौर था। उस वक़्त बिगड़े हुए लोग जल्दी से दुरुस्त हो जाते थे। आज भला कहाँ सुधरते हैं?

अल्लाह का शुक्र है कि आज भी "डाका डालने वाले" दीन के दाई (दावत देने वाले) बन गये। और "शराब पीने वालों" ने ख़ुद शराब छोड़ दी और न मालूम कितनों के सुधारने वाले बन गये। इन वाक़िआत को ख़ुद आपने देखा होगा। इस मज्लिस के अन्दर भी बहुत से ऐसे होंगे कि जिनके अन्दर पहले बिगाड़ था लेकिन अब अल्लाह के फ़ज़्ल से सुधार आया है और यह सब इस्लाही (सुधार की) कोशिशें, तज़किये (गुनाहों से पाक करने) की, तालीम की, तब्लीग़ की बेकार नहीं जातीं।

इकराम की तरग़ीब

इस उमूमी सुधार के लिये हमें क्या करना पड़ेगा?

इसके लिये जो ईमान वाले हैं उनको जोड़ना और उनका इकराम

(सम्मान) करना है। जैसे हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत दूर से तशरीफ़ लाये। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से कोई रिश्तेदारी नहीं थी। लेकिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको खिलाया पिलाया।

इसी तरह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु पर बहुत ज़ुल्म हो रहा है तो उन्होंने उनको ख़रीदा और आज़ाद कर दिया।

मक्की आयाते क़ुरआनी तीन मज़ामीन मर मुश्तमिल

सब से पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कलिमा पढ़ने वालों को कलिमे की दावत पर खड़ा कर दिया। जब कलिमे की दावत दी जाने लगी और परेशानियाँ आईं तो क़ुरआन पाक के अन्दर मक्का में तीन बातें उतरीं।

1. अल्लाह पाक ने नबियों के पिछले क़िस्से सुनाये कि नबियों ने कैसी तकलीफ़ें उठाईं। और फिर आख़िर में अल्लाह की ग़ैबी मदद कैसी आयी। भटके और बिगड़े हुए लोग ख़ूब उछल-कूद कर रहे थे। उन पर अल्लाह पाक की कैसी पकड़ आयी ताकि उसे देखकर मौजूदा ज़माने के लोग अपनी फ़िक्र करें।

2. मरने के बाद क़ियामत तक की लम्बी ज़िन्दगी जो आने वाली है उसको ख़ूब बयान फ़रमाया। जन्नत को बयान फ़रमाया। दोज़ख़ को बयान फ़रमाया। क़ियामत का दिन कितना भारी है। किन लोगों के लिये आसान होगा और किन लोगों के लिये वह दिन भारी होगा। इसको बहुत तफ़सील से बयान फ़रमाया।

3. अल्लाह पाक ने बयान फ़रमाया कि वह यानी अल्लाह पाक तो दिखाई नहीं देता।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝ (پ ٧)

ये आँखें इस दुनिया में अल्लाह पाक को नहीं देख सकतीं और वह सब को देखता है।

और जब अल्लाह पाक दिखाई नहीं देते तो उनकी मारिफ़त (पहचान) कैसे हो? तो अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا (پ۷)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम्हारे पास निशानियाँ आयेंगी। अब जो उसको गहरी निगाह से देखेगा तो उसका काम बन जायेगा और जो अन्धा बनेगा उसका काम नहीं बनेगा। बल्कि वह बरबाद हो जायेगा।

अल्लाह की क़ुदरत व ख़ज़ाने का इल्म कैसे?

मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! अल्लाह पाक ने बताया कि मैं तो तुमको दिखाई नहीं देता लेकिन अपनी निशानियाँ तुमको दिखाऊँगा। इसी वजह से क़ुरआन पाक के अन्दर मक्की आयतों (यानी मक्का में उतरने वाली क़ुरआन पाक की आयतों) में ज़्यादा तर अपनी निशानियों का ज़िक्र फ़रमाया है।

ज़मीन, चाँद, सूरज, सितारे, समन्दर की मछलियाँ। इसी तरह शहद की मक्खी, इन चीज़ों का अल्लाह ने ख़ूब तज़किरा फ़रमाया और समझाया किः

मेरी निशानियों को, मेरी क़ुदरत को और मेरे ख़ज़ाने को पहचानो।

तो एक तरफ़ कलिमे की दावत दी गयी। और जब कलिमे की दावत क़बूल करने के बाद उन पर तकलीफ़ें आईं तो क़ुरआन नाज़िल हुआ यानी दावत के बाद मक्का मुकर्रमा के अन्दर दो तरह की बातें पेश आईं। बाज़ लोगों ने बात को माना और बाज़ लोगों ने क़बूल नहीं किया।

हज़रत तुफ़ैल इब्ने अ़मर दौसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु का इसलाम क़बूल करना

हज़रत तुफ़ैल इब्ने अ़मर दौसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु क़बीला बनू दौस के थे। बहुत बड़े शायर और ख़तीब थे। मक्का मुकर्रमा के अन्दर तशरीफ़ लाये। वहाँ काफ़िरों ने यूँ कहा कि देखो! उनकी (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की) बात को न सुनना। उनकी बात में असर बहुत होता है। जिसकी वजह से हर घर के अन्दर दो हिस्से हो गये हैं। बाज़ ईमान वाले और बाज़ ग़ैर-ईमान वाले। तो तुम्हारे भी क़बीले के दो हिस्से हो जायेंगे। यह उन लोगों ने इसलिये कहा कि क़बीला दौस में बड़ा इत्तिहाद (एकता और संगठन) था।

लेकिन दोस्तो! बातिल (झूठ और ग़ैर-हक़) पर मुत्तहिद (संगठित) रहना अच्छा नहीं है। अगर पूरी बस्ती यह तय कर ले कि हमें डाका डालना है लेकिन उसके अन्दर पाँच-सात लोग खड़े होकर कहें कि नहीं! ऐसा नहीं करना है, तो यह इख़्तिलाफ़ और मतभेद करना बहुत अच्छा है। वरना सब के सब क़ियामत के दिन जहन्नम के अन्दर जायेंगे और दुनिया के अन्दर भी परेशान होंगे।

तो जब उन लोगों ने कहा कि उनकी बात के अन्दर बहुत असर है। हर घर के अन्दर दो क़िस्म के लोग हो गये हैं, तो हज़रत तुफ़ैल बिन अ़मर दौसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपने कानों के अन्दर रूई डाल ली ताकि नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कोई बात सुन ही न सकें, जो प्रभावित कर दे।

लेकिन एक बार जबकि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बैतुल्लाह शरीफ़ (ख़ाना काबा) के अन्दर नमाज़ पढ़ रहे थे। यह अपने कान में रूई डाले हुए वहाँ से गुज़रे। ख़्याल आया कि मैं कोई ऐसा-वैसा आदमी तो नहीं हूँ। अ़रब का बड़ा शायर और ख़तीब हूँ। आपकी बात

सुनूँ। अगर समझ में आ गई तो मान लूँगा और अगर समझ में नहीं आई तो नहीं मानूँगा। यह सोचकर उन्होंने कान से रूई निकाल दी और थोड़ी सी बात सुनी। बात अच्छी लगी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पीछे-पीछे गये और आपके दरवाज़े पर जाकर अ़र्ज़ किया कि आप अपनी बात पूरी करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूरी सूरत पढ़कर सुनाई। बहुत मुतास्सिर (प्रभावित) हुए। वहीं पर कलिमा पढ़ लिया। कलिमा पढ़कर कहा कि मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं अपनी क़ौम के पास जाऊँ और उनको दावत दूँ। उनको दीन की तरफ़ बुलाऊँ ताकि वे लोग भी जहन्नम से बच जायें। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इजाज़त दे दी।

इकराम भी मशक़्क़त भी

मेरे मोहतरम दोस्तो व बुज़ुर्गो! मैं यह अ़र्ज़ कर रहा था कि बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने मान लिया और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इकराम किया। और बहुत से बिगड़े हुए लोगों ने मार-धाड़ शुरू कर दी। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक-एक को समझाते थे।

कोई आपके चेहरे पर थूक देता।

कोई आपके ऊपर धूल डालता।

कोई आपके रास्ते में काँटे बिछाता।

कोई नमाज़ की हालत में आपके ऊपर ओझ डालता।

तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर दोनों तरह के हालात आ रहे थे।

तकलीफ़ पर घबराना नहीं, आराम पर इतराना नहीं

अगर तकलीफ़ आये तो आदमी घबराये नहीं। और अगर आराम व नेमत मयस्सर हो तो आदमी इतराये नहीं। इसके लिये अल्लाह का ध्यान

रहना चाहिये और अल्लाह का ध्यान हासिल करने के लिये अल्लाह का ज़िक्र है। क़ुरआन की तिलावत है। दुआयें माँगना है।

चुनाँचे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम मक्का के अन्दर इन चीज़ों के अन्दर लग गये।

दूसरी बात यह कि जिन लोगों ने कलिमा पढ़ा है उनको इसकी दावत पर खड़ा करना है। तीसरी बात यह कि तालीम के हल्क़े बनाना, और चौथी बात इकराम की तरग़ीब (तवज्जोह दिलाना और दिलचस्पी पैदा करना) हो।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरी दुनिया के लिये रहमत

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ईमान लाने वाले, कलिमा पढ़ने वाले अलग-अलग क़बीले से ताल्लुक़ रखने वाले थे। कोई क़बीला बनी तमीम का, कोई क़बीला अश्हल का, कोई अ़ब्दे शम्स का, तो उनके अन्दर एकता और संगठन पैदा करने के लिये नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक दूसरे को इकराम करने की तरग़ीब दी।

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो! रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक ख़ानदान या एक घराने के लिये तशरीफ़ नहीं लाये बल्कि आप पूरी दुनिया के लिये रहमत बनकर तशरीफ़ लाये।

दावत का नबवी तरीक़ा

भटके हुए लोगों को डराने के लिये और सुधरे हुए लोगों को ख़ुशख़बरी देने के लिये आप तशरीफ़ लाये।

जो "मग़ज़ूब अ़लैहिम" (वे लोग जिन पर अल्लाह का गुस्सा और नाराज़गी हुई) और "ज़ाल्लीन" (रास्ते से भटके हुए और गुमराह लोगों) वाले रास्ते पर चलने वाले थे, उनको तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम डराते थे। और सीधे रास्ते पर चलने वालों को ख़ुशख़बरी देते थे।

पूरी इनसानियत की फ़िक्र ज़रूरी

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गों और दोस्तो! जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरी दुनिया के लिये तशरीफ़ लाये तो जिसने आपका कलिमा पढ़ा है, वह भी पूरी दुनिया की फ़िक्र करेगा।

अपनी फ़िक्र करेगा। घर वालों की फ़िक्र करेगा। ख़ानदान वालों की फ़िक्र करेगा। क़ौम की फ़िक्र करेगा। पूरी इनसानियत की फ़िक्र करेगा। यहाँ तक कि क़ियामत तक आने वाले सारे इनसानों की फ़िक्र करेगा।

दावत का काम, हर कलिमा पढ़ने वाले के लिये ज़रूरी

अ़ल्लाह तआ़ला ने दावत का काम हर कलिमा पढ़ने वाले को दिया। अल्लाह पाक फ़रमाते हैं:

يَآاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا (پ٢٨)

तर्जुमा:- ऐ ईमान वालो! तुम अपने आपको जहन्नम से बचाओ, और इसी तरह अपने घर वालों को जहन्नम से बचाओ।

इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने एक जगह और फ़रमाया किः

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ۝ (پ١٩)

तर्जुमाः- और अपने रिश्तेदारों और ख़ानदान वालों को डराओ।

यहाँ ख़िताब तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को है, लेकिन जो ख़िताब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को होगा वह पूरी उम्मत के लिये होगा। अगर वह ख़ुसूसियत के साथ आपके लिये न हो। इसलिये कि अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में दो बातें बताईं। एक तो यह कि तुम रसूलुल्लाह की पैरवी करोः

وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝ (پ٩)

कि तुम आपकी पैरवी करो तो हिदायत पा जाओगे।

और दूसरी बात यह कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की

इताअ़त (हुक्मों का पालन) करो:

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ (پ۵)

और रसूल की इताअ़त (फ़रमाँबरदारी) करो।

पैरवी और इताअ़त में फ़र्क़

पैरवी और इताअ़त में फ़र्क़ है। पैरवी का मतलब जो करें वह करो। और इताअ़त का मतलब जो कहें वह करो। तो ये दो आयतें और इसके अ़लावा बहुत सी आयतें हैं जिनके अन्दर यह बताया गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो करेंगे वह हम करेंगे, और जो हम से कहेंगे वह भी हम करेंगे।

इसलिये जो ख़िताब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को होगा, वह ख़िताब पूरी उम्मत के लिये होगा। बशर्ते कि वह ख़िताब आपके साथ ख़ास न हो।

नबी के लिये कुछ ख़ुसूसी अहकाम

बाज़ मर्तबा ख़िताब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़ुसूसियत के साथ होता है। जैसे चार औ़रतों से ज़्यादा शादियाँ करना आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये ख़ास था। अल्लाह पाक ने फ़रमाया कि यह सारे ईमान वालों के लिये नहीं है बल्कि सिर्फ़ आपके लिये है।

चुनाँचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी उम्र का पच्चीस साल का हिस्सा सिर्फ़ एक बेवा औ़रत हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के साथ गुज़ारा। उसके बाद जब मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गये तो बहुत समय तक चार बीवियाँ रहीं। फिर आख़िर में नौ तक पहुँच गईं ताकि क़ियामत तक आने वालों को मालूम हो जाये कि बीवी कैसी हो, और उसके साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये। यह बात पूरी उम्मत को मालूम हो जाये।

दावत का काम औ़रतों के लिये भी ज़रूरी

दावत का काम मर्द और औ़रत सब के लिये अल्लाह जल्ल जलालुहू ज़रूरी बताते हैं।

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ، اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ، اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ○ (پ١٠، سورة التوبة)

तर्जुमाः- मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रतें एक दूसरे के साथी हैं। ये भली बातें बतायें, बुरी बातों से रोकें। और नमाज़ क़ायम करें। ज़कात दें और अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त करें। उन पर अल्लाह रहम करेगा। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त हैं, हिक्मत वाले हैं।

औ़रत की चार निस्बतें

एक मर्द के पास आ़म तौर से चार क़िस्म की औ़रतें होती हैं:

एक तरफ़ माँ ...... एक तरफ़ बीवी ...... एक तरफ़ बहन ...... एक तरफ़ बेटियाँ।

इसी तरह औ़रतों के चारों तरफ़ तक़रीबन चार क़िस्म के मर्द होते हैं:

. एक तरफ़ बाप ...... एक तरफ़ शौहर ...... एक तरफ़ बेटा ...... एक तरफ़ भाई।

तो चार क़िस्म के मर्दों के बीच में एक औ़रत, और चार क़िस्म की औ़रतों के बीच में एक मर्द। जो एक दूसरे के साथी हैं। और उन सभों को क्या करना है?

يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ، (پ١٠)

1. एक दूसरे को भली बातें बतायें।
2. एक दूसरे को बुरी बातों से रोकें।

3. नमाज़ क़ायम करें।
4. ज़कात अदा करें (यानी हुक़ूक़ की अदायगी)।
5. अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (हुक्मों को पूरा) करें।

अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होना है

अल्लाह की रहमत से मायूस नहीं होना है। अल्लाह पाक ईमान वालों को जहन्नम के अन्दर जहन्नमियों को निकालने के लिये भेजेगा कि जाओ जहन्नम के अन्दर दाख़िल हो जाओ। और एक दीनार के बराबर भी जिसके अन्दर ईमान है, उसको निकाल लाओ। ये उसे निकाल लायेंगे। फिर कहा जायेगा कि जिसके अन्दर ज़र्रा बराबर ईमान हो, उसे निकाल लाओ।

अल्लाह बड़ा मेहरबान है। हम लोग ग़लतियाँ करते हैं, अगर वह पकड़ने पर आ जाये तो दुनिया के अन्दर कोई बच नहीं सकता। लेकिन अगर अल्लाह के रहम, करम, फ़ज़्ल और मेहरबानी की कोई नाक़द्री करे, तो नाक़द्री की पकड़ भी अल्लाह के पास बहुत है।

दो क़िस्म के इनसान

दो क़िस्म के इनसान हैं:

एक तो शुक्रगुज़ार और दूसरे नाशुक्रे।

مَايَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا ٥ (پ٥)

तुम्हें ख़ुदा अज़ाब देकर क्या करेगा? अगर तुम अल्लाह का शुक्र अदा करो, अल्लाह पर ईमान लाओ, तो अल्लाह बड़ा क़द्रदान है, जानकार है।

अल्लाह ईमान वालों की हर जगह मदद करता है

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! अल्लाह पाक अगर रहम करने पर आ जाये तो दुनिया में भी करेगा और आख़िरत में भी। कच्चे मकान में

करेगा और पक्के मकान में भी। तंगदस्ती में करेगा और मालदारी में भी। बीमारी में करेगा और तन्दुरुस्ती में भी। तकलीफ़ों में करेगा और नेमतों में भी। क़ब्र में करेगा और हश्र में भी। यहाँ तक कि जहन्नम के अन्दर जाकर ईमान वालों को जहन्नमियों को निकालना पड़ा तो जहन्नम के अन्दर भी करेगा। बल्कि जहन्नम के ऊपर से ईमान वाले जब गुज़रेंगे तो जहन्नम कहेगी कि जल्दी से तू मेरे ऊपर से गुज़र जा, कहीं तू मुझे ठन्डा न कर दे। तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ईमान वालों की हर जगह मदद करेगा। अल्लाह तआ़ला हाकिम भी है हकीम भी है। उसका हर काम हिक्मत (मस्लेहत और भेद) से भरा हुआ है।

दावत में औ़रतों के सहयोग का फ़ायदा

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! घर-घर इसलिये तालीम की तरतीब बनाना चाहिये ताकि औ़रतों और बच्चों का ज़ेहन बने। बाज़ औ़रतें, मर्दों से ज़्यादा काम करने वाली बन जाती हैं। बाज़ औ़रतों के दिल के अन्दर दीन का बड़ा दर्द होता है। जिनकी वजह से मर्द दीनदारी पर आ जाते हैं। अगर मर्द थोड़ी क़ुरबानी पर था तो औ़रतों ने उसे ज़्यादा क़ुरबानी पर खड़ा कर दिया।

इसलिये दावत के काम के संबन्ध में हर आदमी अपनी फ़िक्र करे, अपने घर वालों की फ़िक्र करे, अपनी बस्ती की फ़िक्र करे, अपने ख़ानदान की फ़िक्र करे, अपनी क़ौम की फ़िक्र करे, पूरी इनसानियत की फ़िक्र करे।

दावत प्यार व मुहब्बत से

घर वालों की फ़िक्र में सब से ज़्यादा नमाज़ की पाबन्दी करानी चाहिये। क़ुरआन पाक में है:

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا (پ١٦)

अपने घर वालों को नमाज़ की ताकीद करो और ख़ुद भी पढ़ो।

सारा मजमा तय कर ले कि सारी ज़िन्दगी नमाज़ नहीं छोड़नी है। और घर वालों को नमाज़ पढ़ाना है। मगर लड़ाई झगड़ा करके नहीं, प्यार व मुहब्बत से उन लोगों को नमाज़ पर लाना चाहिये। अगर कोई ग़लत काम हो रहा हो तो उसको सही करना है, ऐसे तरीक़े पर कि कोई झगड़ा न हो।

इसलिये कि झगड़ा हो गया तो बाज़ मर्तबा इस तरह से एक हक़ पूरा किया जाता है तो पन्द्रह हुक़ूक़ टूट जाते हैं।

बुराईयों से बेज़ारी भी ज़रूरी

हम यह नहीं कहते कि कोई ग़लत काम हो रहा हो तो उसको होने दो। बल्कि अगर ग़लत काम हो रहा है और उसको होने दिया गया बावजूद यह कि इसकी सलाहियत आपके अन्दर है कि न होने दें तो उसका वबाल बहुत ज़्यादा है।

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَاصَّةً وَّاعْلَمُوْآ اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ٥ (پ۹)

उस वबाल से डरो और बचो जो सिर्फ़ ग़लत काम करने वालों पर ही नहीं आयेगा, और जान लो! अल्लाह सख़्त पकड़ने वाले हैं।

जो चापलूसी और बुराई को देखकर उसको नज़र-अन्दाज़ करने के तौर पर ख़ामोश रहा ताकि लोग मेरे साथ जुड़ते चले जायें और उसको ठीक नहीं किया, बावजूद यह कि उसके अन्दर बग़ैर फ़ितने के ठीक करने की सलाहियत थी। तो यह भी वबाल से नहीं बच सकेगा। इसलिये अगर कहीं ग़लत काम हो रहा हो तो उसको सही करना है:

وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَان (پ۲)

गुनाह और नाफ़रमानी के कामों पर मददगार और सहयोगी मत बनो।

खुली फ़तह

हक़ बात कड़वी होती है। जब उसके ऊपर अख़्लाक़ की चाश्नी (मिठास) लगाओगे तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद करो कि तुम्हारा साथी कड़वे बोल को निगल लेगा। देखो मक्का के काफ़िर तेरह साल मुसलमानों को ख़ूब सताते रहे। उसके बाद हिजरत करके मुसलमान मदीना चले गये। वहाँ भी पाँच साल तक मुक़ाबला रहा। लेकिन अल्लाह की मदद ईमान वालों के साथ आयी। चुनाँचे जब छठे साल उमरा करने के लिये ईमान वाले डेढ़ हज़ार की संख्या में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ चले तो उन भटके हुए लोगों ने 'हुदैबिया' के स्थान में रोक दिया कि तुमको उमरा करने नहीं देंगे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हम लड़ाई करने नहीं आये हैं। हम तो वहाँ जाकर इबादत करेंगे। बैतुल्लाह का तवाफ़ करेंगे। फिर भी उन लोगों ने रोका।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को उन्हें समझाने के लिये भेजा गया। उनके वापस आने में देर हो गई और यहाँ मुसलमानों में ख़बर ग़लत मशहूर हो गई कि हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु शहीद कर दिये गये। तो सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने एक पेड़ के नीचे हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हाथों पर बैअ़त कर ली कि हज़रत! आप हमें मौत पर बैअ़त कर लें।

मक्का के काफ़िर पहले ही अल्लाह की मदद देख चुके थे। जब ईमान वालों ने बैअ़त कर ली तो वे घबरा गये और सुलह करने के लिये आ गये। जंगबन्दी (युद्धविराम) पर सुलह करने की पेशकश की। सहाबा ने जब उन्हें देखा कि ये घबराये हुए हैं और हमारी ताक़त तस्लीम कर रहे हैं तो हम उनसे ज़रा डटकर सुलह करें। अपनी भी मनवायें।

लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह की तरफ़ से यह हुक्म था कि तुम दबकर सुलह करो। यह बात किसी के गले नहीं उतरी सिवाये हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के। आप सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने दबकर सुलह कर ली। वहाँ से वापस लौटे तो रास्ते ही में यह सूरः नाज़िल हुई।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ۝ (پ۲٦)

हमने तुमको खुली फ़तह दे दी।

दावत की सीमाएँ

हमारा और आपका जज़्बा आम तौर से खाना और कमाना है। लेकिन अल्लाह पाक का हुक्म क्या है? दावत! कितनी दावत? अपनी फ़िक्र हो! अपनी क़ौम की फ़िक्र हो! आस-पास वालों की फ़िक्र हो! बस्ती की फ़िक्र हो! पूरी इनसानियत की फ़िक्र हो।

क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे लिये नमूना हैं। आपके बारे में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

وَمَآ أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِينَ ۝ (پ۱۷)

1. हमने आपको पूरी दुनिया के लिये रहमत बनाकर भेजा है।

وَمَآ أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَّنَذِيرًا ۝ (پ۲۲)

2. नहीं भेजा हमने आपको मगर सारे इनसानों को ख़ुशख़बरी सुनाने और डराने के लिये।

قُلْ يَآأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُوْلُ اللّٰهِ إِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (پ۹)

3. आप कह दीजिये कि ऐ लोगो! मैं तुम सब की तरफ़ रसूल बनाकर भेजा गया हूँ।

तो अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पूरी इनसानियत के लिये भेजा है, इसलिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो ग़म था, जो फ़िक्र थी, वह पूरी इनसानियत के लिये थी। और उम्मत के दिल के अन्दर भी पूरी इनसानियत की यही फ़िक्र डाली। अपनी फ़िक्र हो और पूरी इनसानियत की फ़िक्र हो तो पूरी इनसानियत सुधार के रास्ते पर आयेगी। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं:

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ (پ۲۱)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के अन्दर तुम्हारे लिये बेहतरीन नमूना है।

मोहतरम दोस्तो! जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की फ़िक्र पूरी इनसानियत के लिये क़ियामत तक के ज़माने के लिये है तो हमारी फ़िक्र भी पूरी इनसानियत के लिये हो और क़ियामत तक के ज़माने के लिये हो।

तवज्जोह के लायक़ बात

पूरी इनसानियत की फ़िक्र के क्या मायने हैं?

इसका मतलब है कि जिसने कलिमा पढ़ा हो, उसके अन्दर वह पाक ज़िन्दगी फ़ौरन और अ़मली तौर पर आ जाये। उसकी ज़ाती ज़िन्दगी का निज़ाम सही तरतीब पर हो। ऐसा न हो कि बात भी ठीक करता है, अ़मल भी ठीक करता है, लेकिन खुदा न करे दिल के अन्दर यह बात आ गई कि मैं दुरुस्तगी पर हूँ। मैं अच्छे अ़मल वाला हूँ तो खुदा हिफ़ाज़त फ़रमाये! यह बोल तबाह कर देने वाला है। यह बात तवज्जोह के लायक़ है। आदमी के दिल में शैतान यह बात पैदा करता है।

एक आदमी पहले डाका डाला करता था और अब दीन की दावत देने वाला बन गया, अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से, तो उसके ज़ेहन के अन्दर शैतान डालता है कि तू डाकू था, अब कैसा अच्छा बन गया। बेशक डाका डालने के मुक़ाबले में उसने अच्छा काम किया। दावत का काम करता है, रोज़ा रखता है, हज करता है, लेकिन दिल के अन्दर जब यह बात आ गई कि मैं तो डाकू था और अब कैसा अच्छा बन गया, तो यह तकब्बुर हो गया। और जब तकब्बुर आ गया तो अच्छा बनकर भी बरबाद होगा।

सुलह हुदैबिया ने दावत का मैदान उपलब्ध किया

बहरहाल! मैं कह रहा था कि हुदैबिया की सुलह हुई और दबकर हुई। जो किसी के गले से नहीं उतरी। मगर उसका फ़ायदा क्या हुआ?

जितने भटके हुए लोग थे, उनके साथ आपसी मेलजोल शुरू हो गया। मुलाक़ातें होने लगीं। मुलाक़ातों में उन्होंने देखा कि उन ईमान वालों का ईमान कितना मज़बूत है। उनकी इबादतें कैसी जानदार हैं। उन लोगों की समाजी ज़िन्दगी और रहन-सहन कितना दिलों को खींचने वाला है। उनके मामलात, लेन-देन कितने साफ़ हैं। किसी को ये लोग धोखा नहीं देते। उनका अख़्लाक़ी मेयार कितना बुलन्द है। जब ये सब बातें उन्होंने देखीं तो मानूस हुए और मानूस होकर ईमान की तरफ़ आने लगे।

लेकिन बाज़ ज़िद्दी और हठधर्मी वाले होते हैं। उन्होंने दो साल के अन्दर यह सुलह तोड़ दी। चुनाँचे जब नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा की तरफ़ चले तो अब उस वक़्त तक दस हज़ार सहाबा किराम का मजमा आपके साथ था।

जब अल्लाह तआला ने ईमान वालों को ताक़त दी और ताक़त के बावजूद उन्होंने दबकर सुलह कर ली, और नर्मी बरती तो काफ़िरों की समझ में आ गया कि बावजूद ताक़त के ये लोग दबकर सुलह कर रहे हैं। ये ख़ुशामदी लोग नहीं हैं। ये बड़े अख़्लाक़ वाले लोग हैं। चुनाँचे सन् आठ हिजरी में मक्का फ़तह हुआ तो सुलह हुदैबिया के बाद से अब तक सिर्फ़ दो साल के अन्दर ये ईमान वाले दस हज़ार की संख्या में हो गये।

अब दस हज़ार लोगों ने मक्का के अन्दर जाकर जो अख़्लाक़ बरता। अच्छे व्यवहार का जो नमूना पेश किया, उनके अख़्लाक़ व किरदार से मुतास्सिर (प्रभावित) होकर मक्का मुकर्रमा के अधिकतर क़बीले ईमान वाले हो गये। यहाँ तक कि सन् नौ हिजरी में तबूक का सफ़र हुआ। जिसमें तीस हज़ार का मजमा था। सन् दस हिजरी में तक़रीबन सवा लाख का मजमा ईमान वाला बन गया। जब नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

ने आख़िरी हज का ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया था और दावत वाले काम को इस उम्मत के हवाले करके इस दुनिया से तशरीफ़ ले गये थे।

दावत का ढंग और तरीक़ा

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और तमाम सहाबा किराम का दावत के काम का ढंग और तरीक़ा क्या था? कि जिसको हमें भी इख़्तियार करना है। सबसे पहले यह कि जिसने कलिमा पढ़ा वह कलिमे की दावत दे। दूसरी बात यह कि तालीम का हल्क़ा हो। तीसरी बात अल्लाह पाक का ज़िक्र हो। कुरआन पाक की तिलावत और दुआ़ का मांगना ज़्यादा से ज़्यादा हो। चौथी बात एक दूसरे का इकराम किया जाये।

नमाज़ दाई के लिये ख़ज़ानों की कुन्जी है

अब मुझे जो कहना है वह यह कि यह काम आ़लमी पैमानो (विश्व स्तर) पर करने का है। हर जगह जमाअ़त को भेजना है। और आमदनी का ज़ाहिर में कोई ज़रिया नहीं है। दो घण्टे दावत दो, दो घण्टे ज़िक्र करो, दो घण्टे तालीम करो, लेकिन जेब में एक पैसा भी नहीं आता, उलटा इकराम की तालीम व तल्क़ीन पर अ़मल करो तो जेब से निकलेगा ही। तो जिस काम के अन्दर ज़ाहिर में आमदनी न हो उस काम में ख़र्च ही ख़र्च हो, तो वह काम पूरी दुनिया के अन्दर कैसे चलेगा?

इसके लिये अल्लाह पाक ने रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को आसमान पर बुलाया और अपने ख़ज़ाने दिखाये। और उन ख़ज़ानों की कुन्जी दे दी और वह कुन्जी यही नमाज़ है।

दूसरे जितने अहकाम व आमाल हैं, वे तो ज़मीन पर उतरे लेकिन नमाज़ वाला हुक्म देने के लिये आसमान पर बुलाया गया। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वहाँ से नमाज़ का तोहफ़ा लेकर तशरीफ़ लाये। तब सब सहाबा किराम ख़ुश हो गये कि हमें तो सारे ख़ज़ानों की कुन्जी मिल गई। अब जहाँ भी हमको ज़रूरत पड़ेगी, नमाज़ पढ़कर

अल्लाह से माँगेंगे।

जमाअ़त बनाना ज़रूरी

मोहतरम दोस्तो! जो बातें मैंने आप हज़रात से अ़र्ज़ कीं उनको रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मक्का के अन्दर शुरू फ़रमाया तो अफ़राद तैयार हुए, लेकिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम चाहते थे कि एक मजमा तैयार हो। क्योंकि फ़िज़ा मजमे से बनेगी। इसी लिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अन्दर एक-एक के पास जाते थे।

मालूम हुआ कि अकेले काम न करें, बल्कि साथी बनायें। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बारह ''नुक़बा'' (साथी) थे। हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के ''हवारिय्यीन'' (साथी) थे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी अपने साथी बनाये थे। सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने भी अपने साथी बनाये थे। इसलिये जितना भी दुनिया के अन्दर दावत का काम हो रहा है सिर्फ़ अकेले न करें। अगर साथी बनाये गये तो बीमारी की वजह से, मौत की वजह से, सफ़र की वजह से, काम रुकेगा नहीं बल्कि आगे तक चलता रहेगा। और अगर साथी नहीं बनाया बल्कि अकेला करता है तो एक आदमी आख़िर कितना काम करेगा।

शैतान का धोखा

बड़े हज़रत जी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का एक मलफ़ूज़ (उपदेश) मैंने पढ़ा तो मैं हैरत में पड़ गया। इरशाद फ़रमायाः

''आदमी ख़ूब काम करे और अपने आपको थका दे, लेकिन दूसरे काम करने वाले आदमी न बनाये तो यह उसके लिये शैतान का धोखा है''।

इसलिये ख़ुद को भी लगाता रहे और दूसरों को भी लगाये। यह हर नबी ने किया, और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी किया।

दावत में संगठन की अहमियत

हमारे काम करने वालों को "बाँझ" बनकर नहीं मरना है। बाँझ बनने के क्या मायने हैं?

"फ़लाँ आदमी मर गया तो काम बन्द हो गया"

"फ़लाँ आदमी उस इलाक़े से सफ़र करके चला गया तो काम बन्द हो गया"

नहीं! ऐसे अन्दाज़ से काम किया जाये कि दूसरे काम करने वाले बनें। जिस क़द्र काम करने वाले आगे बढ़ते रहेंगे तो इन्शा-अल्लाह पीछे वालों को उतना ही ज़्यादा काम करने का तजुर्बा होगा।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का साथ किसी ने नहीं दिया। मदीना के अन्सार ने साथ दिया। अन्सार रज़ियल्लाहु अ़न्हुम आपको मदीना मुनव्वरा ले गये। यहाँ पर जो काम इनफ़िरादी (व्यक्तिगत) तौर पर हो रहा था वह अब इज्तिमाई (सामूहिक) तौर पर होने लगा। तालीम का हल्क़ा इज्तिमाई तौर पर होने लगा। नमाज़ जमाअ़त के साथ होने लगी। एक दूसरे से हमदर्दी करना यह इज्तिमाई तौर पर होने लगा। और एक बड़ी पाकीज़ा ज़िन्दगी मुहाजिरीन और अन्सार की मिलकर बनी। जिसके परिणामस्वरूप बदर, ख़न्दक़, और उहुद वग़ैरह की जंगों के यादगार कारनामे और अल्लाह की मदद के वाक़िआत पेश आये।

इमामों के इमाम वाली नमाज़

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह पाक ने ऊपर बुलाया। क्योंकि ऊपर वालों की भी तमन्ना थी। नीचे वाले आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर ज़ियारत कर लेते थे। लेकिन ऊपर वाले यानी फ़रिश्ते उनमें जिनको इजाज़त होती है वही यहाँ आ सकते थे। तो यह तमन्ना थी कि एक बार हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ऊपर वालों को भी अपना जलवा दिखा जायें। तारीख़ तय हो गई। हज़रत

जिबराईल अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये। सवारी के लिये मख़्सूस जानवर पर हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम और हज़रत रसूले कायनात सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा हुए। पहला सफ़र बैतुल्-मक़्दिस का हुआ। थोड़ी ही देर में वहाँ पहुँचे। सारे अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम नमाज़ के इन्तिज़ार में थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नमाज़ पढ़ाई। हालाँकि सभी रूहानियत की लाईन के इमाम थे। और हर नबी की रूहानी ताक़त वह थी जिसका मुक़ाबला फ़िरऔ़न, हामान, क़ारून, क़ौमे लूत, क़ौमे आ़द और क़ौमे समूद नहीं कर सकीं। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इन इमामों के इमाम बने।

तो हमको जो नमाज़ मिली है वह इमामों के इमाम की नमाज़ है। हमको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली नमाज़ मिली है। बड़ी ताक़त वाली नमाज़ है जो अल्लाह ने हमें दी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े की ताक़त

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के नबी हैं। समन्दर के अन्दर बारह रास्ते बने और उसके अन्दर उनकी उम्मत अपने नबी के साथ चली। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े में क्या ताक़त है?

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम क़ब्र मुबारक के अन्दर तशरीफ़ रखते हैं। हज़रत उमर फ़ारूक़ का दौर है। हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु के साथ हज़ारों का मजमा है। सामने दरिया-ए-दजला है और दरिया-ए-दजला के उस पार ईरान का बादशाह किसरा लाखों के मजमे के साथ है। चूँकि वे लोग अल्लाह की मदद देख चुके थे। तो उनके ज़ेहन में यह बात थी कि इन लोगों से छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिये। इन लोगों से छेड़छाड़ करेंगे तो ये अल्लाह को पुकारेंगे। और जब

अल्लाह की मदद इन लोगों के साथ आयेगी तो उसका मुक़ाबला कोई नहीं कर सकता। फिर उन लोगों ने सोंचा कि दरिया-ए-दजला बीच में है लिहाज़ा कश्तियाँ और पुल तोड़ दिये जायें ताकि ये लोग इस पार आ ही न सकें।

दजला और क़तरा बराबर

अब ये लोग क्या करें?

इन लोगों ने सोचा कि सारी मख़्लूक़ अल्लाह की क़ुदरत के मुक़ाबले में एक जैसी है। "अल्लाह की क़ुदरत के मुक़ाबले में दजला और क़तरा बराबर हैं।" अगर अल्लाह मारने पर आये तो क़तरे से मार सकता है। और अगर न मारने पर आये तो दजला भी नहीं मार सकता।

हमारे और तुम्हारे नज़दीक दजला (नहर) और क़तरा बराबर नहीं हैं। और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का ज़ेहन था कि दजला और क़तरा बराबर हैं। इनकी कोई हैसियत नहीं है। करने वाली ज़ात अल्लाह की है। यह कहकर घोड़े दरिया-ए-दजला में डाल दिये गये।

तारीख़ के लिखने वाले इस क़िस्से को तारीख़ से मिटा नहीं सकते। इसलिये कि जिन पर यह क़िस्सा हुआ वे हज़ारों की संख्या में थे। और जिन्होंने अपनी आँखों से देखा है वे लाखों की संख्या में थे। कितना भी रद्दोबदल कर डाला लेकिन तारीख़ लिखने वाले इस क़िस्से को बदल नहीं सके।

हम यतीम व मिस्कीन नहीं

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के नबी हैं। समन्दर के अन्दर बारह रास्ते बने और उसके अन्दर उनकी उम्मत अपने नबी के साथ चली तो बनी इस्राईल का यह हाल था। उम्मती चले, नबी के साथ चले। रास्ता बना, उस रास्ते में चले। और यहाँ क्या हाल है?

सिर्फ़ उम्मती चले, नबी के बग़ैर चले, और पानी के ऊपर चले और

उम्मती क्या उम्मती के घोड़े भी चले।

यह है ताक़त रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के काम की। इसलिये हम यतीम नहीं, हम मिस्कीन नहीं। हमारे पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का लाया हुआ पाक तरीक़ा है।

क़ुसूरवार हम हैं

आज सारी मुसीबत और बला इसलिये है कि इस पाक तरीक़े की नाक़द्री हो रही है। मिसाल के तौर पर चौराहे का सिपाही है जो हाथ देता है और ट्रैफ़िक को कन्ट्रोल करता है। जब चौराहे का सिपाही हट जाता है तो गाड़ियाँ एक दूसरे से टकरा जाती हैं। ठीक उसी ट्रैफ़िक पुलिस की तरह आज पूरी दुनिया के अन्दर जितने टकराव हो रहे हैं, उसके क़ुसूरवार हम और आप हैं। इसलिये कि यह उम्मत चौराहे के सिपाही की तरह है। यह हर जगह लोगों को कन्ट्रोल करती थी। और उनको रास्ते पर लाती थी।

चाँद पर पहुँच जाना कमाल नहीं

बहरहाल! नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सारे नबियों को नमाज़ पढ़ाई। पहला स्टेशन बैतुल-मक़्दिस था। दूसरा स्टेशन पहला आसमान। लोकल गाड़ियों की तरह रास्ते में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कहीं नहीं रुके। क्योंकि फ़ास्ट (मेल) गाड़ियाँ छोटे-छोटे स्टेशन पर नहीं रुकतीं। आप चाँद पर नहीं उतरे। चाँद के ऊपर साइंस वाले अब उतरे हैं। सैकड़ों साल की मेहनत के बाद चाँद के ऊपर पहुँचना कोई कमाल नहीं है बल्कि उंगली के इशारे से चाँद के दो टुकड़े कर देना बहुत बड़ा कमाल है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उंगली से इशारा किया, चाँद के दो टुकड़े हो गये।

मक़सद का दर्जा दलील से बढ़कर

यह मोजिज़े (अल्लाह की तरफ़ से दी हुई पैग़म्बरी की निशानी) के

तौर पर था। लेकिन मोजिज़ा नुबुव्वत का मक़सद नहीं है। मोजिज़ा नुबुव्वत की दलील है। **अत्तहिय्यात** में **"अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु"** पर जो उंगली उठी थी, यह नुबुव्वत के मक़सद में से है। आपका नमाज़ के अन्दर हरकत करना नुबुव्वत के मक़सद में से है और चाँद का दो टुकड़े कर देना यह नुबुव्वत की दलील के तौर पर है। और मक़सद का दर्जा दलील से बढ़कर है। आपकी उंगली का इशारा जो **अत्तहिय्यात** में होता था उसमें ताक़त ज़्यादा है, चाँद के दो टुकड़े करने के मुक़ाबले में।

अब आपका बदन मुबारक जो नमाज़ में हरकत करता था, बताओ उसमें कितनी रूहानी ताक़त रही होगी। जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दावत के अन्दर हरकत करते थे उसमें कितनी रूहानी ताक़त रही होगी। आपकी हिजरत में कितनी रूहानी ताक़त रही होगी। और यह सब रूहानी ताक़त आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरी उम्मत के अन्दर तक़सीम कर गये हैं। तो जितना आपका रूहानियत वाला अ़मल अपनाया जायेगा, उसके अन्दर भी अल्लाह तआ़ला रूहानियत वाली ताक़त मुन्तक़िल फ़रमायेंगे।

हमारे नबी की रूहानी ताक़त

मेरे मोहतरम दोस्तो! आपके आसमानी सफ़र यानी मेराज का दूसरा स्टेशन पहला आसमान था और इस तरह सातों आसमानों पर आपका जाना हुआ। आपने जन्नत को देखा, आपने जहन्नम को देखा। ज़मीन से ऊपर आमाल का जाना देखा। आसमान से फ़ैसले का उतरना देखा। बाज़ अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम से अलग-अलग मुलाक़ातें भी हुईं। फिर आप सातों आसमान से ऊपर भी तशरीफ़ ले गये। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इतने ऊपर तशरीफ़ ले गये कि एक मक़ाम पर हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि इसके ऊपर मैं नहीं जा सकता। हालाँकि हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम बड़े रूहानी ताक़त वाले और सारे फ़रिश्तों के सरदार हैं। जिनके एक पर के एक किनारे से क़ौमे लूत की

सारी बस्तियाँ उलट गईं। जब हज़रत जिबराईल की इतनी ज़्यादा जिस्मानी ताक़त है तो अन्दाज़ा लगाओ कि रूहानी ताक़त किस क़द्र होगी।

लेकिन एक मक़ाम पर जिबराईल अ़लैहिस्सलाम कहते हैं कि इससे ऊपर मैं नहीं जा सकता।

अगर यक सरे मू-ए-बरतर परम
फ़रोग़े तजल्ली बसोज़द् परम

तर्जुमाः- बाल बराबर भी अगर मैं ऊपर उड़ा तो अल्लाह तआ़ला की तजल्ली मुझे जलाकर राख कर देगी।

यहाँ पर आकर हज़रत जिबराईल अ़लैहिस्सलाम की रूहानी और जिस्मानी ताक़त ख़त्म हो गई। जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जिस्मानी परवाज़ उससे भी ऊपर की हुई है। इससे अन्दाज़ा लगायें कि आपकी रूहानी परवाज़ कितनी होगी।

हम यतीम नहीं हैं, मिसकीन नहीं हैं। हमारे पास इस क़द्र ताक़त वाला नबी है जो हमें यह तरीक़ा देकर गया है। पस इस तरीक़े पर चलकर आपकी ताक़त क़ियामत तक हमारे लिये मददगार रहेगी।

दरे फ़ैज़े मुहम्मद वा है, आये जिसका जी चाहे
न आये आतिशे दोज़ख़ में जाये जिसका जी चाहे

فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ (پ١٥)

तर्जुमाः- पस जो चाहे ईमान लाये और जो चाहे कुफ़्र करे।

ज़िक्रे रसूल के साथ फ़िक्रे रसूल भी अपनाना ज़रूरी

मोहतरम दोस्तो! यह रजब का महीना सिर्फ़ मेराज के वाक़िआत बयान करके ख़त्म करने का नहीं है। रबीउल् अव्वल का महीना रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सिर्फ़ ज़िक्रे पैदाईश के लिये नहीं है बल्कि आपकी फ़िक्र के लिये है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र सिर्फ़ रबीउल् अव्वल के ही महीने में नहीं करना है बल्कि आपका ज़िक्र क़दम-क़दम पर करें।

मेरे मोहतरम दोस्तो! मेराज के महीने की क़द्रदानी यह है कि हम सब के सब नीयत करें कि जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूरी उम्मत के ऊपर यह काम डाला, तो एक-एक उम्मती के ज़िम्मे अपनी फ़िक्र, अपने घर की फ़िक्र, ख़ानदान की फ़िक्र, बस्ती की फ़िक्र, आस-पास की फ़िक्र और पूरी इनसानियत की फ़िक्र, यहाँ तक कि क़ियामत तक आने वाले ज़माने की फ़िक्र, अल्लाह और उसके रसूल ने हम सब पर डाला। तो हम सब इस फ़िक्र को अपने अन्दर पैदा करें।

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! नीयत करो कि पूरे आ़लम के अन्दर जितने उम्मती बसे हुए हैं, उनमें दावत के काम को अपनी पूरी ज़िन्दगी का मक़सद बनायेंगे।

दावत का काम लोगों में हैसियत के मुताबिक़

मोहतरम दोस्तो! चूँकि यह काम सामूहिक है। कारोबार करने वाला हो या कारख़ाने वाला, खेती करने वाला हो या बन्जर बस्तियों में रहने वाला। यह काम उन सब का है और उन सब लोगों में करना है। बन्जर बस्तियों में जाकर अगर कुछ नहीं कर सकते तो कम से कम लोगों के कलिमे को ठीक करा दो। अगर एक आदमी का कलिमा ठीक हो गया तो न मालूम कितनों का कलिमा ठीक होगा। कलिमे के अल्फ़ाज़ ठीक कराने के साथ उनकी ज़बान में उसके मायने भी बताये जायें कि: **अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अल्लाह के सच्चे रसूल हैं।** फिर इस कलिमे का जो तक़ाज़ा है और कलिमे से हमने जो मुआ़हदा किया है वह सब के सामने आ जाये।

दावत में यूसुफ़ी किरदार की ज़रूरत

मोहतरम दोस्तो! यह इज्तिमाई (सब के मिलकर करने का) काम है। और इज्तिमाई काम के अन्दर अख़्लाक़ी मेयार ऊँचा होना चाहिये। अपनों के साथ भी और दूसरों के साथ भी।

चुनाँचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब सहाबा किराम का दस हज़ार का मजमा लेकर मक्का के अन्दर दाख़िल हुए तो मक्का वालों ने समझा कि हमने इन लोगों को जो इक्कीस साल सताया है, आज ये लोग हमसे बदला लेंगे। हमको क़त्ल करेंगे, हमारी औरतों और बच्चों को बाँदी और गुलाम बनायेंगे। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको जमा करके फ़रमाया कि क्या तुमको मालूम है कि मैं आज तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूँ?

उन लोगों ने एक ज़बान में कहा कि आप हमारे नेक भाई की नेक औलाद हैं, हम आप से भलाई की उम्मीद करते हैं।

हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि आज मैं तुमसे वही कहूँगा जो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपने भाईयों से कहा थाः

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ٥ (پ۱۳)

"आज तुम पर कोई ज़्यादती और जुल्म नहीं होगा। अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, वह बड़ा ही रहम करने वाला है।"

आज तुम सब के सब आज़ाद हो!

पत्थर-दिल हिन्दा भी मोम हो गईं

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ऐसा करीमाना अख़्लाक़ देखकर हिन्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हा जैसी पत्थर-दिल औरत भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर बैअ़त हो गईं और कहने लगीं कि कल यही वक़्त था और मक्का मुकर्रमा के बाहर सारे ख़ेमे लगे हुए थे। दरमियान मैं आपका ख़ेमा था। सारे ख़ेमों में सबसे दुश्मन ख़ेमा आपका था। लेकिन चौबीस घण्टे में मेरा ज़ेहन इतना बदल गया कि इस वक़्त मक्का मुकर्रमा में सारे ख़ेमों के बीच में आपका ख़ेमा है। और सारे ख़ेमों में सबसे महबूब ख़ेमा मेरे नज़दीक आपका है। इसी तरह हमें भी

अपने अख़्लाक़ के मेयार को बुलन्द करना है और हर एक के साथ अख़्लाक़ बरतना है।

मेरे मोहतरम दोस्तो! मैं अपने बयान को ख़त्म करता हूँ मगर इसका कोई नतीजा निकलना चाहिये। इसलिये एक वायदा यह करो कि जब तक तश्कील का काम न हो जाये, तब तक आप हज़रात जमकर बैठेंगे और मजमे के जमाने का सवाब लेंगे। खुद उठकर मजमें को उखाड़ने वाले नहीं बनेंगे।

अब हमारे तश्कील वाले हज़रात जहाँ न पहुँचे हों वहाँ पहुँच जायें, और जहाँ मौजूद हों, वहाँ खड़े हो जायें और आप हज़रात अपना अपना नाम लिखवायें। अल्लाह तआला हम को दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाये। आमीन।
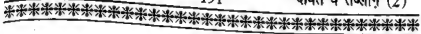
तक़रीर (7)

हर्ज इसमें है कि जिससे मुनासबत हो उसकी नाहक़ तरफ़दारी की जाये। यह है ग़लत और लड़ाई की चीज़। और जिससे मुनासबत नहीं उसका जो हक़ है वह भी दबा लिया जाये। अपने ग्रुप के आदमी की नाहक़ तरफ़दारी करना और दूसरे ग्रुप की हक़-तल्फ़ी करना, इसका नाम अ़सबिय्यत है। और यह आदमी को अल्लाह से दूर करने वाली चीज़ है।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ০

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَ نَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَا نَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

इनसानों के मुख़्तलिफ़ तबक़े

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! अल्लाह जल्ल शानुहू ने इनसानों को मुख़्तलिफ़ तबक़ों में पैदा किया है। अल्लाह ने इनसानों का एक तबक़ा नहीं बनाया। किसी को अल्लाह ने मर्द बनाया, किसी को औरत बनाया। किसी को हाकिम बनाया, किसी को महकूम बनाया। किसी को अल्लाह ने कारख़ाने वाला बनाया और किसी को मज़दूर बनाया। किसी को अल्लाह ने एशियन और यूरोपियन बनाया, किसी को अफ़रीक़न बनाया। अल्लाह ने मुख़्तलिफ़ तबक़ों में इनसानों को पैदा किया है। और अल्लाह ने सारे तबक़ों की कामयाबी जोड़ में रखी है, और तोड़ में नाकामी रखी है। इन सारे तबक़ों में अगर जोड़ है तो इसमें अल्लाह तआला कामयाब करेंगे। और अगर इनमें आपस में तोड़ है तो अल्लाह तआला नाकाम करेंगे।

जोड़ और कामयाबी का तरीक़ा

अब जोड़ कैसे होगा? और तोड़ कैसे होगा? इसको समझो। अगर रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लाया हुआ रूहानी तरीक़ा ज़िन्दगियों में आ जाये तो इससे आलमी पैमाने (विश्व स्तर) पर जोड़ होगा। जितना-जितना रूहानी तरीक़ा आता जायेगा उतना जोड़ होता

जायेगा। क़ौमों का जोड़ क़ौमों से, मुल्कों का जोड़ मुल्कों से। ख़ानदानों का ख़ानदानों से। घर वालों का आपस में जोड़। सबके अन्दर जोड़ होगा अगर रूहानी तरीक़ा आयेगा।

तोड़ और नाकामी का रास्ता

और अगर रूहानी तरीक़ा निकल कर "नफ़सानी तरीक़ा" आयेगा। "जी चाही वाला तरीक़ा" आयेगा तो इसके अन्दर तोड़ होगा। क़ौमों में तोड़ होगा, ख़ानदानों में तोड़ होगा, यहाँ तक कि जब रूहानी तरीक़ा निकल जाता है तो घर वालों के अन्दर भी तोड़ होता है। मियाँ-बीवी में तोड़ होता है, बाप बेटे में तोड़ होता है। और अगर "रूहानी तरीक़ा" हो तो पूरब और पश्चिम वालों में जोड़ हो जाता है। और अगर रूहानी तरीक़ा निकल जाता है तो आपस के अन्दर भी लड़ाईयाँ हो जाती हैं।

अलग रंग अलग ढंग

और इसके समझने की मिसाल जो है, वह बदन और रूह है। पूरे बदन के अन्दर जोड़ है। इसलिये कि अन्दर रूह मौजूद है। रूह निकल जाती है तो पूरे बदन का जोड़ ख़त्म हो जाता है। हालाँकि बदन के अन्दर अल्लाह ने जो हिस्से बनाये वे अलग-अलग डिज़ाईन के बनाये। अलग-अलग रंग के बनाये। हर हिस्से का काम अलग है। हाथ का काम पकड़ना, पैर का काम चलना, कान का काम सुनना, हर एक का काम अलग है, हर का डिज़ाईन अलग है। आँख का डिज़ाईन देखिये कैसा, नाक कैसी उभरी हुई, कान कैसे दबे हुए, पेट कैसा उभरा हुआ। कमर कैसी पिचकी हुई, हाथ कैसे लटके हुए और पैर कैसे ज़मीन पर अटके हुए। तो हर एक की जगह भी अलग, हर एक का काम भी अलग, हर एक का रंग भी अलग और हर एक का डिज़ाईन भी अलग।

बदन के अंग जोड़ का अच्छा नमूना

लेकिन इन सब के अन्दर आपस में जोड़ है। और ख़ुदा न करे

आदमी कहीं जा रहा है और कीचड़ में फिसल कर गिर गया और कमर की हड्डी टूट गई, तो ज़बान शोर मचायेगी, डाक्टर को बुलायेगी। डाक्टर से बात करेगी। हालाँकि ज़बान को कोई तकलीफ़ नहीं है। कान डाक्टर की बात सुनेगा। हाथ डाक्टर को पैसा देगा दूसरा हाथ डाक्टर से दवा लेगा, और जहाँ तक हाथ पहुँच सकेगा वह मरहम-पट्टी करेगा। तो पूरा बदन कमर की हड्डी को फ़ायदा पहुँचाने में लगा हुआ है। आँख का देखना, कान का सुनना, ज़बान का बोलना, हाथ का पकड़ना, ये सब कमर की हड्डी के ठीक होने के लिये इस्तेमाल हो रहे हैं।

इसी तरह अगर पैर में साँप ने काट लिया तो पूरा बदन उसके इलाज की तरफ़ मुतवज्जह होगा। और आपने यह कभी नहीं देखा होगा कि जब फिसल कर हड्डी टूटी तो बदन के किसी हिस्से ने ताना दिया हो कि कमबख़्त पैर! तूने फिसल कर कमर की हड्डी तोड़ दी। यह नहीं होता। बल्कि हर अंग उसकी हमदर्दी में लग जाता है। इसी तरह मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! जब हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का रूहानी तरीक़ा आयेगा तो मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) तबक़ों में जोड़ होगा।

दोस्तो! बावजूद यह कि हर आदमी की सूरत अल्लाह ने अलग बनायी, आवाज़ अलग बनायी। किसी की आवाज़ दूसरे से मिलती है। किसी की सूरत दूसरे से मिलती-जुलती है। किसी का मिज़ाज और तबीयत दूसरे से मिलती है। और बाज़ों का दूसरे से कुछ नहीं मिलता। न मिज़ाज मिलता है, न तबीयत मिलती है, न शक्ल व सूरत मिलती है, न आवाज़ मिलती है।

लेकिन इसमें कोई हर्ज नहीं, यह तो अल्लाह की तरफ़ से है और "आ़लमे अर्वाह" (रूहों की दुनिया) में यह तय हो चुका है। जैसा कि हदीस में है:

اَلْاَرْوَاحُ جُنُوْدٌ مُّجَنَّدَةٌ

वहाँ रूहें सारी की सारी एक साथ में थीं।

वहाँ जिसको जिससे मुनासबत हो गयी उनका यहाँ भी आपस में जोड़ बैठेगा और जिसको जिससे मुनासबत नहीं हुई यहाँ भी उससे जोड़ नहीं बैठेगा और न मुनासबत होगी। लेकिन इसमें कोई हर्ज नहीं।

असबिय्यत बुरी चीज़ है

हर्ज कहाँ है? हर्ज इसमें है कि जिससे मुनासबत हो उसकी नाहक़ तरफ़दारी की जाये। यह है ग़लत और लड़ाई की चीज़। और जिससे मुनासबत नहीं उसका जो हक़ है वह भी दबा लिया जाये। अपने ग्रुप के आदमी की नाहक़ तरफ़दारी करना और दूसरे ग्रुप की हक़-तल्फ़ी करना, इसका नाम असबिय्यत है। और यह आदमी को अल्लाह से दूर करने वाली चीज़ है।

मुनासबत का होना और न होना इसमें कोई हर्ज नहीं। बाज़ों से होगी और बाज़ों से नहीं होगी। कोई आदमी ऐसा नहीं कि जिससे सभी मुहब्बत करते हों, कुछ को मुहब्बत होगी कुछ को नफ़रत होगी।

अपने आपको थका दो

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़लीफ़ा बनाया तो बहुत सी वसीयतें फ़रमाईं। उनमें एक बात हज़रत सिद्दीक़ ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से यह फ़रमायी कि मैं तुम्हारे ऊपर ऐसा काम डालता हूँ जो थका देने वाला है। इस वक़्त में अल्लाह पाक ने अपने करम से हमें और तुम्हें जो यह काम दिया है यह थका देने वाला है अगर कोई करे। और अगर कोई न करे तो सारे दिन पड़ा रहे। कोई पूछने वाला नहीं कि तू क्यों सारे दिन पड़ा रहता है। और अगर आदमी करता रहे तो ख़ूब थका देने वाला काम है। इस काम के अन्दर अपने को थका देने वाला कामयाब है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि नींद भी पूरी न करे, खाना भी न खाये। अपनी तन्दुरुस्ती बाक़ी रखनी पड़ेगी ताकि ज़्यादा काम कर सके।

ऐसा भी है कोई जिसे सभी अच्छा कहें

हज़रत सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हज़रत उमर से यूँ कहा कि मैं तो दुनिया से जा रहा हूँ और काम तुम्हारे हवाले कर रहा हूँ। और यह थका देने वाला काम है। उसके बाद यह एक बड़ी अ़जीब बात इरशाद फ़रमायी। वह सुनने की है। फ़रमायाः

اَحَبَّكَ مُحِبٌّ وَاَبْغَضَكَ مُبْغِضٌ

बहुत से आदमी तुमसे मुहब्बत करेंगे। कहेंगे कि हाँ! अच्छा हुआ यह काम हज़रत उमर के हवाले हो गया। यह वे कहेंगे जिनको तुम्हारे मिज़ाज से मुनासबत होगी। और जिन लोगों को तुम्हारे मिज़ाज से मुनासबत नहीं होगी, उन्हें बड़ी नागवारी होगी। वे कहेंगे कि अरे-अरे यह काम इनके हवाले हो गया? ठीक नहीं हुआ।

तो फिर दोस्तो! हमारी और तुम्हारी क्या हैसियत है? हम क्यों यह समझें कि सारे के सारे लोग हमारी हाँ में हाँ मिलायेंगे। ऐसा होगा नहीं।

मश्विरा आपस में जोड़ का रूहानी तरीक़ा

तो मिज़ाज भी अलग, सूरत भी अलग, आवाज़ भी अलग, राहें भी अलग, अब इसमें जोड़ बिठाने का रूहानी तरीक़ा क्या है?

दोस्तो! वह है मश्विरा। मश्विरा एक बड़ी अ़जीब व ग़रीब चीज़ है। हर काम मश्विरे से हो। नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमाते हैं:

مَاخَابَ مَنِ اسْتَخَارَ وَمَا نَدِمَ مَنِ اسْتَشَارَ وَمَا عَالَ مَنِ اقْتَصَدَ

तीन बातें रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाईं:

1. जिसने इस्तिख़ारा किया वह नुक़सान नहीं उठायेगा।
2. जिसने मश्विरा किया वह नहीं पछतायेगा।
3. और जो दरमियानी चाल चलेगा वह मोहताज नहीं होगा।

अल्लाह की ताक़त सबसे बड़ी है

और हमारी दावत क्या है? नबियों वाली है। हमारी दावत यह है कि अल्लाह की ताक़त इतनी बड़ी है कि सारी की सारी ताक़तें इसके सामने कोई हैसियत नहीं रखतीं। और अल्लाह के ख़ज़ाने इतने बड़े हैं कि दुनिया के सारे ख़ज़ाने उनके सामने कोई हैसियत नहीं रखते।

ख़ुदा की ताक़त को तस्लीम कर लो। ख़ुदा के ख़ज़ाने को तस्लीम कर लो। ख़ुदा की ज़ात व सिफ़ात को मानो और ख़ुदा की बात को मानो, अल्लाह की मदद तब आयेगी।

जिस तरह बेकसी और बेबसी में अल्लाह की मदद बदर में आयी, क़ियामत तक अल्लाह की मदद आती रहेगी। अपनी बेकसी और बेबसी पर घबराने की ज़रूरत नहीं। हम जिस अल्लाह के मानने वाले हैं, वह अल्लाह बेकस और बेबस नहीं है। वह अल्लाह बड़ी ताक़त वाला है। एक हुक्म से ज़मीन व आसमान बन गये और फिर एक हुक्म के ज़रिये ज़मीन व आसमान को तोड़ देगा।

हो जा, तो वह हो जाता है

वह जिस काम को करना चाहता है सिर्फ़ कह देता है "हो जा" तो वह हो जाता है। अगर कहें "जल्दी-जल्दी हो जा" तो वह चीज़ जल्दी-जल्दी हो जाती है। और अगर कह दें कि धीमे-धीमे हो जा, तो वह चीज़ धीमे-धीमे होती है।

दुनिया में धीरे-धीरे और आख़िरत में झटपट

दुनिया में आम तौर से अल्लाह तआला धीरे-धीरे करते हैं। आख़िरत में अल्लाह तआला आम तौर से झटपट कर देंगे। पलक झपकते काम कर देंगे।

अल्लाह तआला धीमे-धीमे करते हैं। चाँद धीमे-धीमे बड़ा होता है। सूरज धीमे-धीमे ऊपर आता है। इनसान नौ महीने में बनता है। मुर्ग़ी का

बच्चा उनतीस दिन में बनता है। तरबूज़ की बैल चार महीने में फैलती है।

शायद कुछ लोगों को हमारी यह बात अजीब सी लगती हो कि मौलवी साहिब पुराने ख़्याल के आदमी हैं। कहते हैं कि मुर्ग़ी का बच्चा उनतीस दिन में बनता है। हालाँकि अब चन्द घण्टों में मुर्ग़ी का बच्चा पैदा हो जाता है।

तो दोस्तो! यह ग़ैर-साबितुन्नसब (जिसके माँ-बाप का पता न हो) बच्चा होता है। उसमें वह तत्व नहीं होता जो साबितुन्नसब बच्चे में होता है। मुर्ग़ी का वह बच्चा जो डायरेक्ट मुर्ग़ी के परों के नीचे से निकलता है। उसमें जो बात होती है मशीनों के ज़रिये बनकर निकलने वाले बच्चे में नहीं होती। वह रूखा-सूखा होता है। उसमें वह बात नहीं होती जो बात कुदरती चीज़ों के अन्दर होती है। लेकिन बहरहाल फिर भी कुछ देर तो लगती ही है।

दुनिया में अल्लाह पाक हर काम करते हैं धीमे-धीमे। ज़मीन व आसमान को छह दिन में बनाया। और इनसान को ज़मीन में दफ़न करने के बाद फिर उसे कियामत के दिन उठायेंगे। लेकिन आख़िरत में अल्लाह पाक हर काम झटपट करेंगे। दूध की नहरें झटपट, शहद की नहरें झटपट। जन्नती जो माँगेगा उसको झटपट मिलेगा, देर नहीं लगेगी। वहाँ का हर काम झटपट होगा।

पहला सूर फूँका, झटपट सब मर जायेंगे। दूसरा सूर फूँका झटपट सब ज़िन्दा हो जायेंगे। यह नहीं कि छोटा बच्चा जैसे धीरे-धीरे जवान होता है। ऐसा नहीं होगा। सब एक दम से बिल्कुल ज़िन्दा, और एक दम से जन्नत के अन्दर नेमतें और जहन्नम के अन्दर तकलीफ़ें। हर काम वहाँ का झटपट और हर काम यहाँ का धीमे-धीमे। लेकिन बाज़ मर्तबा अल्लाह पाक अपनी कुदरत को दिखाने के लिये दुनिया के अन्दर भी कामों को झटपट कर देते हैं। जैसे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने डंडा डाला, अज़्दहा बन गया। अज़्दहे को पकड़ा, डंडा बना दिया। यह झटपट हुआ।
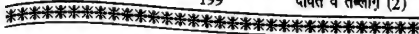
अल्लाह के सामने रोना

ईमान वालों का सबसे बड़ा हथियार

और झटपट करने में क्या होता है? इसमें ईमान वालों की मदद होती है। कभी-कभी अल्लाह तआला दिखा देते हैं कि ये ईमान वाले जो हर वक़्त मुजाहदा बरदाश्त करते हैं, ये ख़ूब मारे-पीटे गये, वतन छोड़ा हब्शा गये, तीन साल के बायकाट का मुजाहदा बरदाश्त किया। फिर बदर के अन्दर मुजाहदा, ये बे-सरोसामान और थोड़े से लेकिन उनके पास जो सबसे बड़ी ताक़त है वह अल्लाह पर यक़ीन है कि करने वाली ज़ात अल्लाह की है। ये अल्लाह से माँगते हैं कि ऐ अल्लाह! तेरे यहाँ तो कोई कमी नहीं है।

सारी रात हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम रोते रहे और सुबह को भी बहुत रोये कि ऐ अल्लाह! सब तेरे हाथ में है। ऐ अल्लाह! तू ही करने वाला है। ईमान वालों का बहुत बड़ा हथियार अल्लाह के सामने रोना और अल्लाह से माँगना है।

करने वाले अल्लाह हैं

ज़ाहिर के अन्दर कुछ दिखाई नहीं देता। अबू जहल का मजमा (फ़ौज) यह समझता था कि बस थोड़ी देर और है, ज़्यादा देर नहीं। फिर करेंगे चाय-पार्टी और फिर करेंगे बहुत बड़ा खाना-पीना। उसके ज़ेहन में यह था। और मुसलमान जो हैं उनके ज़ेहन में यह था कि करने वाला अल्लाह है। हम अल्लाह से माँगेंगे। अब यहाँ पर तेरह-चौदह साल के मुजाहदे के बाद जो मदद आयी झटपट आयी। ऐसी झटपट कि ऊपर से फ़रिश्ते उतर आये और एक मुट्ठी कंकर अबू जहल के मजमे पर डाली तो वे आँख ही मलते रहे और ईमान वालों ने अल्लाह के कहने के मुताबिक़ उनके ज़हरीले फोड़ों का आपरेशन शुरू कर दिया। सत्तर फोड़ों का आपरेशन हो गया और उनके सत्तर जगादरी पकड़े गये और बाक़ी

सहम गये और भाग गये। और वे सोच रहे हैं कि आख़िर यह हुआ क्या? तेरह-चौदह साल तक जिनको हमने पीटा वे आज हमको पीट रहे हैं। हुआ यह कि तेरह-चौदह साल से वे यह कह रहे थे कि देखो! करने वाले अल्लाह पाक हैं, मख़्लूक़ात से धोखा न खाना। इन मख़्लूक़ात से कुछ नहीं होता।

मेरे लिये मेरा अल्लाह काफ़ी है

हर क़िस्से में यही दिखाई देता है। नमरूद कहता है: "MY WORSHIP MY ORDER" (मेरी पूजा करो यह मेरा आदेश है)। उसका जो वज़ीर था वह बावला था। उसने कहा कि मैं नमरूद की मान लूँगा तो पब्लिक जो होगी वह भी बात मान लेगी। आग जलाई और कहा कि इसमें इब्राहीम को डाल दो। लेकिन हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का हथियार क्या था?

"मेरे लिये मेरा अल्लाह काफ़ी है"

दोस्तो! अल्लाह पर भरोसा, यह बड़ी भारी चीज़ है। हमारे काम करने वालों को तक़वा (परहेज़गारी) और तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) तक पहुँचना है। जब आदमी दावत का काम करेगा तब ईमान की जड़ बनेगी और बराबर दावत दोगे तो उसमें ईमान का पानी चलेगा फिर दीन का दरख़्त बनेगा। तो ज़ाहिरी आमाल बदलेंगे, चहरे बदलेंगे, लिबास बदलेंगे, नमाज़ पढ़ेंगे, रोज़े रखेंगे, ज़कात देंगे, हज करेंगे, तालीम के हल्क़े क़ायम करेंगे, ज़िक्र करेंगे, अच्छी-अच्छी बातें करेंगे, क़ुरआन पढ़ेंगे, मस्जिदों को आबाद करेंगे।

ज़ाहिरी आमाल मक़बूल भी और ना-मक़बूल भी

लेकिन लोगों के जो ज़ाहिरी आमाल होते हैं, ये तो कभी मक़बूल होते हैं और कभी ना-मक़बूल। कभी तो अल्लाह के यहाँ क़बूल और कभी रद्द। नमाज़ दो तरह की होती है। एक नमाज़ जन्नत में ले जाती है:

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ o الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلٰوتِهِمْ خَاشِعُوْنَ o (پ۱۸)

कामयाब हो गये वे मुसलमान जो अपनी नमाज़ों को ख़ूब ध्यान और तवज्जोह (और आजिज़ी) के साथ पढ़ते हैं।

लेकिन एक नमाज़ वह होती है जो जहन्नम में ले जाती है:

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ o الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلٰوتِهِمْ سَاهُوْنَ o الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ o (پ۳۰)

ऐसे नमाज़ियों के लिये बड़ी ख़राबी है जो अपनी नमाज़ को भुला बैठते हैं (यानी छोड़ देते हैं)। जो ऐसे हैं कि जब नमाज़ पढ़ते हैं तो रियाकारी (दिखावा) करते हैं। और ज़रूरतमन्द को मामूली इस्तेमाली चीज़ भी नहीं देते।

रोज़ा भी दो तरह का होता है। एक रोज़ा जन्नत में ले जायेगा और दूसरा रोज़ा जहन्नम में ले जायेगा। शहीद भी दो तरह के हैं एक शहीद वह जिसके बड़े ऊँचे दर्जे हैं, और एक शहीद वह जो जहन्नम में जायेगा। सख़ी (दानवीर) भी दो तरह के होते हैं। हाफ़िज़ भी दो तरह के होते हैं, एक हाफ़िज़ वह कि जिन्हें कहा जायेगा "पढ़ता जा और जन्नत के दर्जों में चढ़ता जा" और बहुत से क़ुरआन की तिलावत करने वाले ऐसे हैं कि क़ुरआन उन पर लानत करता है।

तो जितने ज़ाहिरी आमाल हैं वे दो तरह के हैं। मक़बूल या ना-मक़बूल। लेकिन अब एक दिशा मुतैयन करनी है कि मक़बूल हो जायें। तो इसके लिये क्या करना पड़ेगा? अन्दर की ख़ूबियाँ बनानी पड़ेंगी। जिन्हें ईमानी सिफ़ात कहते हैं। और वह तक़वा (परहेज़गारी) और तवक्कुल (ख़ुदा पर भरोसा) है।

दो बुनियादी चीज़ें तक़वा और तवक्कुल

फिर एक बार सुनो! दावत दोगे तो ईमान का पानी मिलेगा। ज़ाहिरी आमाल बनेंगे। और बराबर दावत देते रहोगे तो ईमान का पानी मिलता

रहेगा। फिर अन्दर की ख़ूबियाँ बनेंगी। जिसका नाम ईमानी सिफ़ात है। और वह तक़्वा और तवक्कुल है।

एक बार फिर सुनो।

दावत का काम बराबर उसूलों के साथ होता रहा, ईमान को पानी मिलता रहा तो आमाल ज़ाहिर होते रहेंगे। और इन्शा-अल्लाह ईमानी सिफ़ात पैदा होती रहेंगी। तक़्वा और तवक्कुल पैदा होगा। सब्र पैदा होगा। एहसान की कैफ़ियत (यानी यह तसव्वुर कि मेरे हर अमल को अल्लाह देख रहे हैं) पैदा होगी। फिर इन्शा-अल्लाह आदमी मक़बूल हो जायेगा और उसे अल्लाह की हिमायत मिलेगी।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:-

إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصَّابِرِيْنَ ۝ (پ۲)

बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝ (پ۱۰)

और जान लो कि अल्लाह साथ है डरने वालों के।

إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝ (پ۱۴)

और अल्लाह उनके साथ है जो परहेज़गार हैं और जो नेकी करते हैं।

وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ (پ۲۱)

बेशक अल्लाह साथ है नेकी वालों के।

जहाँ-जहाँ अल्लाह ने "मअ्" शब्द का ज़िक्र किया है (यानी मेरी हिमायत...... मैं तुम्हारे साथ हूँ) तो वहाँ अन्दरूनी सिफ़ात के बारे में कहा है। ज़ाहिरी आमाल को नहीं कहा।

अल्लाह ने यूँ नहीं कहा कि "मैं नमाज़ियों के साथ हूँ" "ज़कात देने वालों के साथ हूँ" "रोज़ेदारों के साथ हूँ" "हाजियों के साथ हूँ" क्योंकि नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात दोनों तरह के होते हैं- मक़बूल भी ना-मक़बूल भी। इसलिये अल्लाह ने यह कहा कि मैं मुत्तक़ियों के साथ हूँ। मैं एहसान

की सिफ़त रखने वालों के साथ हूँ। मैं सब्र कने वालों के साथ हूँ। और ये सब की सब ईमानी सिफ़तें हैं।

काम करने वालों को ईमानी सिफ़ात तक पहुँचना है। और ईमानी सिफ़ात यानी तक़्वा और तवक्कुल दिल के अन्दर छुपा होता है। कोई आदमी दावे के साथ नहीं कह सकता कि मैं अन्दर से बना हुआ हूँ। आख़िर तक फ़िक्रमन्द रहना पड़ेगा।

ये दो बड़ी ख़ूबियाँ हैं तक़्वा और तवक्कुल। क्योंकि ईमानी आमाल को सारी दुनिया देख रही है कि यह आदमी तालीम के हल्के में बैठता है, ज़िक्र करता है, क़ुरआन पढ़ता है, नमाज़ पढ़ता है, सदक़ा करता है, ख़ैरात करता है, खाना देता है, दूसरों का क़र्ज़ा अदा करता है। यह सब दिखाई देता है।

लेकिन ईमानी सिफ़ात, यह अन्दर की छुपी हुई चीज़ है। तक़्वा (परहेज़गारी) और तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) अन्दर की चीज़ है। यह अन्दर की चीज़ जब बन जायेगी तो अल्लाह की ग़ैबी मदद आयेगी। यह जो ग़ैबी मदद से क़ुरआन भरा हुआ है और सहाबा के मुताल्लिक़ जो तुम सारी ग़ैबी मदद सुनते हो। और ताबिईन (सहाबा की ज़ियारत करने वाले मोमिनों) के साथ जो सारी ग़ैबी मदद सुनते हो, और जितनी ग़ैबी मदद अल्लाह की बाद वालों के साथ सुनते हो। वह ग़ैबी मदद अल्लाह पाक क़ियामत तक करता रहेगा। लेकिन इसके लिये ज़रूरी है कि दावत की फ़िज़ा हो, ईमान का पानी हो। ज़ाहिरी आमाल बनें और ईमानी सिफ़ात यानी तक़्वा और तवक्कुल अन्दर आये।

जमाअत का काम दुनिया के कोने-कोने में

अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से इस काम को ग़ैबी मदद के ज़रिये दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाया।

पाकिस्तान, बंगलादेश, फ़ीजी, न्यूज़ीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, अफ़रीक़ा, जापान, कम्बोडिया, थाईलैण्ड, सिंगापुर, मलेशिया, इन्डोनेशिया,

इमारात, ख़लीज के सारे देश, सीरिया, इस्तंबोल, कनाडा, यूरोपियन देश, कैलिफ़ोरनिया, फ़्राँस।

अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से हर जगह जमाअत को पहुँचा दिया। अब हर जगह अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर की आवाज़ लग रही है।

फ़्राँस के अन्दर दो हज़ार स्थानों पर पंज-वक़्ता नमाज़ें हो रही हैं और उसमें "अल्लाहु अकबर" की आवाज़ लग रही है। दावत की इस मेहनत से अल्लाह ने इतना फ़ज़्ल फ़रमाया, इतना फ़ज़्ल फ़रमाया कि अब हवाई जहाज़ के चालक भी "अल्लाहु अकबर" कहते हैं। कैलीफ़ौरनिया जहाँ फ़िल्म कंपनी के अड्डे हैं वहाँ पर फ़िल्म एक्टर भी अल्लाहु अकबर की आवाज़ लगा रहे हैं। फ़िल्म एक्टर भी चार महीने लगाकर गया है।

हम बेसहारा और बे-मददगार नहीं हैं लेकिन.......

सबसे बड़ा अल्लाह, ज़मीन व आसमान को पैदा करने वाला अल्लाह। मूसा अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबी मदद करने वाला अल्लाह। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की ग़ैबी मदद करने वाला अल्लाह। बदर के मैदान में मदद करने वाला अल्लाह।

दोस्तो! क्या वह आज हमें बेसहारा और बे-मददगार छोड़ देगा? लेकिन हम उसकी ज़ात पर भरोसा तो करें। अपने अन्दर तक़्वा और तवक्कुल तो पैदा करें। अपने अन्दर यह यक़ीन तो पैदा करें कि करता-धरता अल्लाह ही हैं। दुनिया की मख़्लूक़ से कुछ नहीं होता।

सारी मख़्लूक़ अल्लाह के नियंत्रण में

सारी मख़्लूक़ अल्लाह के क़ाबू के अन्दर है। अल्लाह ख़ालिक़ (पैदा करने वाला और बनाने वाला) है। सारी चीज़ें मख़्लूक़ (पैदा की हुई और बनाई हुई) हैं। और मख़्लूक़ ख़ालिक़ के क़ाबू में रहती है। आग बन गई। अल्लाह के क़ाबू से नहीं निकली कि हर एक को जला डाले। आग हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को नहीं जला सकी। और हज़रत अबू मुस्लिम

****

ख़ौलानी को नहीं जला सकी।

मुसैलमा कज़्ज़ाब की नुबुव्वत की मन्तिक़ नहीं चली तो उसने हज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी को उठाया और आग में डाल दिया। लेकिन आग उन्हें नहीं जला सकी। इसलिये कि अल्लाह पाक ने आग की ड्यूटी बदल दी थी।

उसके बाद मुसैलमा कज़्ज़ाब और परेशान हुआ और उसने कहा कि यह आदमी अगर यहाँ रहा तो मेरी नुबुव्वत की मन्तिक़ नहीं चलेगी। तो उन्हें उठाकर बाहर निकाल दिया।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْلَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ۝ (پ۱۳)

यानी बेईमानों ने नबियों से कहा कि या तो हमारा धर्म क़बूल करो, नहीं तो हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे। जिनका यक़ीन अल्लाह पर नहीं था और जो ज़ाहिर पर यक़ीन करने वाले थे उन बेईमानों ने हर ज़माने में नबियों से और नबियों का काम करने वालों से कहा कि या तो हमारा धर्म क़बूल करो, नहीं तो हम तुम्हें अपने देश से निकाल देंगे। जब उन्होंने यह कहा तो आसमानी पैग़ाम आया कि हम उन सब को तबाह व बरबाद कर देंगे और उनकी जगह तुमको बसायेंगे।

فَاَوْحٰٓى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ ۝ (پ۱۳)

ये आयतें पढ़-पढ़कर अबू जहल के मजमे को सुनाईं तो उन लोगों ने कहा कि ये तो पुराने क़िस्से हैं। फिर अल्लाह ने बदर के अन्दर ग़ैबी मदद करके बताया तो सब की आँखें खुल गईं।

अल्लाह ने नबियों के मानने वालों को बसाया। नूह अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले बस गये। हूद अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले बस गये। सालेह

****

अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले बस गये। लूत अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले बस गये। मूसा अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले बस गये। और बाक़ी सारे ख़त्म हो गये।

और अल्लाह का यह वायदा क़ियामत तक के लिये है। लेकिन कब?

ذٰلِکَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَخَافَ وَعِیْدِ ۝ (پ۱۳)

यह उसके लिये है जो क़ियामत के दिन मेरे सामने खड़े होने से डरे, और मेरी धमकियों से डरे। और अपने अन्दर आख़िरत की फ़िक्र पैदा करे।

पूरी दुनिया की समस्याओं का हल

तो सारे आ़लम की समस्याओं का हल क्या है? ख़ूब क़ियामत का तज़किरा, ख़ूब आख़िरत का तज़किरा और ख़ूब आख़िरत का बोलना और सुनना। इतना बोलना और सुनना कि अपने भी दिल में उतर जाये और दूसरों के दिल में भी उतर जाये। यहाँ तक कि पूरी ज़िन्दगी अहकामे ख़ुदावन्दी पर जारी हो जाये। नमाज़ें भी चालू हो जायें। ज़कातें भी चालू हो जायें और होते-होते तक़वा और तवक्कुल तक पहुँच जायें।

मेरे मोहतरम दोस्तो! अच्छी तरह समझ लो यह बात पूरी दुनिया के अन्दर चलानी है कि सारी मख़्लूक़ अल्लाह के क़ाबू में है। जो अल्लाह का फ़ैसला होगा वह करेंगे। और अल्लाह ने अपना फ़ैसला बता दिया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली ज़िन्दगी अगर तुम्हारी ज़िन्दगी में होगी तो मेरा फ़ैसला तुम्हारी हिमायत में होगा। और जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली ज़िन्दगी को छोड़ेगा तो मेरा फ़ैसला उसके ख़िलाफ़ होगा। और जब अल्लाह का फ़ैसला ख़िलाफ़ होगा तो कामयाबी के सारे सामान में भी आदमी उजड़ जायेगा। और अल्लाह का फ़ैसला अगर हिमायत में होगा तो अगरचे सारा सामान तकलीफ़ों वाला होगा लेकिन अल्लाह उसके अन्दर कामयाब करेंगे। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम आग में डाले जा रहे हैं। सारा सामान तकलीफ़ों

वाला है। लेकिन अल्लाह का फ़ैसला हिमायत में है। तो अल्लाह ने क्या किया कि आग की ड्यूटी बदल दीः

قُلْنَا يَانَارُ كُونِىْ بَرْدًا وَّسَلَامًا عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ ٥ وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَخْسَرِيْنَ ٥ (پ١٧)

आग से कह दिया कि ठंडी हो जा। आग ठंडी हो गयी। और उन लोगों ने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बारे में जो प्लान बनाये थे, वे सब फ़ेल हो गये।

अल्लाह की शान बड़ी है

लेकिन इनसान कमज़ोर क़िस्म का है। वह इस हक़ीक़त को नहीं समझता। अल्लाह तेरे जैसा नहीं, अल्लाह की शान बड़ी ऊँची है। तू तो ऐसा है कि अगर तूने पिस्तौल बनाई और वह तेरे हाथ से निकल गयी और दुश्मन के हाथ में पहुँच गयी तो वह तेरी बनाई हुई पिस्तौल से तुझे गोली मार देगा। लेकिन अल्लाह की शान यह है कि उसने आग बनाई और वह दुश्मन के हाथ में पहुँच गयी तब भी वह अल्लाह के हुक्म से बाहर नहीं निकली।

जब दुश्मन ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को आग में डाला तो आग उन्हें नहीं जला सकी, क्योंकि अल्लाह ने आग से कह दिया "ठण्डी हो जा" तो वह ठण्डी हो गयी।

हज़रत ख़ालिद का बेमिसाल यक़ीन

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अ़न्हु जिहाद के मैदान में हैं। सामने जो अल्लाह के दुश्मन थे उनके पास ज़हर की शीशी थी। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूछा कि इसे क्यों लिये हुए हो। वे बोले कि अगर हम हारेंगे तो यह ज़हर खाकर मर जायेंगे तुम्हारे क़ाबू में नहीं आयेंगे। और कहा कि यह ऐसा ज़हर है कि अगर कोई एक क़तरा भी पी ले तो वह मर जायेगा।

हज़रत ख़ालिद ने कहा कि ज़हर मुझे दो। ज़हर लिया और यूँ कहा:

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ. وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ o

शुरू करता हूँ उस अल्लाह के नाम से कि नहीं नुक़सान पहुँचा सकती है उसके नाम के साथ कोई चीज़ ज़मीन में और न आसमान के अन्दर। और वह हर एक की बात को सुनने वाला और हर एक चीज़ को जानने वाला है।

यह दुआ पढ़ी और पी लिया। मरे नहीं। वे सारे हैरत में पड़ गये। अरे यह क्या हुआ?

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल व दिमाग़ में बैठा हुआ था कि मौत व ज़िन्दगी अल्लाह के हाथ में है। ज़हर से कुछ नहीं होता।

ज़रूरी तंबीह

लेकिन दोस्तो! मेरी इस बात को सुनकर तुम ज़हर न पीने लगना। इसलिये कि हमको अल्लाह ने ज़ाहिरी असबाब का पाबन्द बनाया है। और अल्लाह पाक ने हमें ज़ाहिरी असबाब में लगने का हुक्म भी दिया है। और देखो! ये जितने वाक़िआत खुदा की ग़ैबी मदद के हैं इनके बारे में हमेशा याद रखो कि खुदा की ग़ैबी मदद इनसान के क़ाबू में नहीं होती। ग़ैबी मदद अल्लाह के क़ाबू में है।

जब अल्लाह पाक ग़ैबी मदद करने पर आते हैं तो वह हैरत-अंगेज़ (आश्चर्य जनक) काम करा देते हैं। जिस तरह हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से करा दिया कि उन्होंने ज़हर पी लिया और मरे नहीं।

जो जान माँगो तो जान दे दें

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अगर नमरूद को खुदा का बेटा कहते तो वह आग में न डालता। लेकिन फिर जहन्नम की आग में जाना पड़ता। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने आपको आग में डाल दिया।

अल्लाह ने आग ठंडी कर दी।

क़ैसर व किस्‌रा भी थर्रा गये

अल्लाह क़ादिरे मुतलक़ हैं। अल्लाह कामयाव करने पर आ जायें तो नाकामी के नक़्शों में भी कामयाब कर देते हैं।

सहाबा किराम के मकान छोटे, कपड़े उनके मोटे और वे खजूरें खाकर ज़िन्दगी गुज़ारने वाले, लेकिन उनके मुक़ाबले में बड़ी-बड़ी हवेलियों वाले 'क़ैसर' (रोम का बदशाह) व 'किस्‌रा' (ईरान का बादशाह) थर्रा गये।

काम करने वाले दोस्तों में तवक्कुल की सिफ़त ज़रूरी

दोस्तो! तवक्कुल की सिफ़त हमारे काम करने वालों में पैदा होनी चाहिये। अल्लाह तआला खुद कहते हैं कि में पूरब व पश्चिम का निज़ाम चलाने वाला हूँ। लिहाज़ा तुम लोग मुझ एक अल्लाह की इबादत करो और मुझ एक अल्लाह की बात मानो। और तुम्हारे जो काम हैं, वे मेरे हवाले कर दो और तुम अपने कामों का मुझे वकील बना दो। जब पूरब व पश्चिम के कामों को मैं करता हूँ तो अगर तुम मुझे अपने कामों का वकील बनाओगे तो क्या मैं तुम्हारे कामों को नहीं बना सकूँगा।

अल्लाह तआला खुद फ़रमाते हैं:

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلاً ٥ (پ٢٩)

पूरब व पश्चिम का निज़ाम अल्लाह चलाते हैं। अल्लाह के सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं है।

और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बात माननी है:

وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ٥

और उनकी पैरवी करो, उम्मीद है कि तुम हिदायत पा जाओ। और सहाबा किराम के तरीक़े पर चलना है।

तवक्कुल की हक़ीक़त

तवक्कुल का खुलासा यह है कि अल्लाह की बात मान कर काम करना। तवक्कुल के मायने कुछ लोग यह समझते हैं कि कारोबार छोड़ दिया जाये। यह ग़लत है। बहुत सों से यह ग़लती हुई है।

तवक्कुल हर एक में था

सहाबा दो तरह के थे- एक क़िस्म वह थी कि कारोबार के साथ दीन का काम करते थे। और एक क़िस्म 'अस्हाबे सुफ़्फ़ा' की थी। उनको कारोबार का वक़्त नहीं मिलता था। तो सहाबा दोनों क़िस्म के मिलेंगे। कारोबार के साथ दीन का काम करना और बग़ैर कारोबार के दीन का काम करना। लेकिन एक बात याद रखना कि तवक्कुल दोनों में था। और किसी ने सुस्ती की बिना पर दीन के काम को छोड़ा नहीं।

कारोबार पाँव की ज़न्जीर न बने

कारोबारियों में तवक्कुल के साथ दो बातें होनी चाहियें। एक तो कारोबार में हलाल व हराम को देखें। पैसे के कम-ज़्यादा होने को न देखें। और कारोबारियों के लिये दूसरी बात यह है कि जब दीन के तक़ाज़े आयें और अल्लाह का हुक्म आये तो यह कारोबार रुकावट न बने। जैसे 'ग़ज़वा-ए-तबूक' कि कारोबारी सीज़न में अल्लाह का हुक्म आया तो कारोबारी सीज़न उनके लिये रुकावट नहीं बना।

ख़न्दक़ की लड़ाई हो या उहुद की लड़ाई। जब भी नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को आवाज़ दी तो सहाबा एक दम से तैयार हो गये। उन्होंने कभी कोई उज़्र नहीं किया।

आज मुसलमान हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़ों को धक्का दे रहा है

ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किस-किस तरह की

तकलीफ़ें बरदाश्त कीं, और सहाबा किराम कितनी बड़ी संख्या में शहीद हुए। तब यह दीन हम तक पहुँचा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लाया हुआ प्यारा दीन आज मिट रहा है। हुज़ूर का तरीक़ा मिट रहा है। लेकिन इस पर जान देने वाला तो कौन कहे, रोने वाले भी नहीं हैं। जिस पाक दीन और पाक तरीक़े के लिये रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने धक्के खाये, आज नबी करीम का वह पाकीज़ा रूहानी तरीक़ा मुसलमानों के घरों से धक्के खा रहा है।

मुसलमानों के कारोबार से हुज़ूरे पाक का तरीक़ा धक्के खा रहा है। शादियों में हुज़ूरे पाक का तरीक़ा धक्के खा रहा है। मुसलमानों के कपड़ों से धक्के खा रहा है। मुसलमानों के चेहरों से धक्के खा रहा है।

मेरे दोस्तो! यह बहुत ज़्यादा रोने की चीज़ है।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के करीमाना अख़्लाक़

मेरे मोहतरम दोस्तो! रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दस हज़ार का मजमा लेकर मक्का में फ़ातिहाना (विजयी) दाख़िल हो रहे हैं लेकिन शाही रौब व दबदबे के साथ नहीं, बल्कि अख़्लाक़े करीमाना के साथ और बारी तआला की शुक्रगुज़ारी के साथ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैतुल्लाह (काबा शरीफ़) के अन्दर तशरीफ़ ले गये। आपके सीने में पूरी इनसानियत का दर्द था। आपने वहाँ पर जाकर दर्द भरी दुआयें माँगीं कि ऐ अल्लाह! इस इनसानियत का तेरे से ताल्लुक़ हो जाये ताकि यह जहन्नम से बचकर जन्नत में चली जाये।

कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन यह समझ रहे थे कि अब तो मुसलमान इक्कीस साल का सारा बदला लेंगे। मक्का में ख़ून की नदियाँ बहेंगी। हमें लूटा जायेगा। तबाह व बरबाद किया जायेगा। ख़ून बहाया जायेगा।

लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि किसी शख़्स

को जो ख़ुदा और रसूल पर ईमान लाया है, यह जायज़ नहीं कि वह मक्का में ख़ूँरेज़ी करे, और इनसान तो इनसान किसी हरे-भरे पेड़ का भी काटना जायज़ नहीं। और आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐलान फ़रमा दियाः

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ اِذْهَبُوْا فَاَنْتُمُ الطُّلَقَاءُ

आज तुम पर कोई मलामत नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।

मेरे मोहतरम दोस्तो! जब हम अख़्लाक़ बरतेंगे तो इनसानी दिल अल्लाह की तरफ़ पलटा खाते चले जायेंगे।

अख़्लाक़े करीमाना से हज़रत हिन्दा का पत्थर जैसा दिल मोम हो गया

अबू सुफ़ियान की बीवी, उ़तबा की बेटी हिन्दा, जिसने हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के चचा हज़रत अमीर हमज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के नाक कान काटे, आँखें निकालीं, सीना चाक करके जिगर निकाला और उसको दाँतों से चबाया था। वह भी इस्लाम क़बूल करने और हुज़ूर की बैअ़त क़बूल करने के लिये आगे बढ़ी। कुछ लोगों ने कहा कि कल तक तो तुम बहुत शोर मचाती थीं, आख़िर यह चौबीस घण्टे में तुम्हें क्या हो गया?

हिन्दा ने कहा कि जब यह दस हज़ार मुसलमानों का मजमा मक्का के अन्दर दाख़िल हुआ तो मैंने अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर लिया और मेरा ख़्याल था कि तेरह साल मक्का के और आठ साल मदीना मुनव्वरा के, इक्कीस साल का बदला मुसलमान हम से लेंगे। ख़ूब क़त्ल करेंगे। मक्का में ख़ून की नदियाँ बह रही होंगी और लाशें उसके अन्दर तड़प रही होंगी। ये औरतों के साथ बदकारियाँ करेंगे। ढोल बजायेंगे। चिरागाँ करेंगे। यह मेरा ज़ेहन था।

लेकिन रात का बड़ा हिस्सा गुज़र गया। कहीं से रोने की आवाज़

नहीं आयी। मैंने चुपके से घर का दरवाज़ा खोला तो मैंने देखा कि पूरे मक्के के अन्दर अंधेरा है। तो मुझे बहुत हैरत हुई कि इक्कीस साल के बाद मुसलमानों के हाथों मक्का फ़तह हुआ लेकिन न तो चिराग़ जलाये जा रहे हैं, न गाना बजाना है, न किसी को क़त्ल कर रहे हैं, न किसी की अ़स्मत लूट रहे हैं। और यह सारा मजमा गया कहाँ?

मैं ख़ाना काबा के पास पहुँची तो देखा कि सारे के सारे इबादत में लगे हुए हैं। कोई तवाफ़ कर रहा है, कोई नमाज़ पढ़ रहा है, कोई तिलावत कर रहा है।

गालियाँ सुनकर दुआयें दीं

हिन्दा कहती है कि मेरी पूरी ज़िन्दगी मक्का में गुज़र गयी लेकिन हरम शरीफ़ के अन्दर इतनी इबादत होते हुए मैंने अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं देखी, जितनी आज की रात इबादत हुई और सारे दहाड़ें मार-मारकर रो रहे थे। मैं तो यह समझी थी कि आज ये बैतुल्लाह पर पहुँचे हैं तो जो हमने इनको इक्कीस साल सताया है, ये ख़ूब बद्-दुआयें देंगे। लेकिन ये लोग कह रहे थे कि या अल्लाह! तू इन लोगों को हिदायत दे ताकि जहन्नम के अ़ज़ाब से ये लोग बचें। ऐ अल्लाह! तू इन मक्के वालों पर करम कर। रो-रोकर ये दुआयें कर रहे थे।

हिन्दा कहती है कि मेरा दिल भर आया और मुझे यक़ीन हो गया कि ये लोग सिवाये हमारी भलाई के और कुछ नहीं चाहते। फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में गईं और इस्लाम क़बूल किया और कहा कि आज से पहले आपके ख़ेमे, आपके नाम और आपके काम से बदतर मेरे नज़दीक कोई ख़ेमा, कोई नाम और कोई काम न था। लेकिन अब आपके ख़ेमे, आपके नाम और आपके काम से बढ़कर और कोई चीज़ महबूब और प्यारी नहीं है।

तो मेरे मोहतरम दोस्तो! जब हम अख़्लाक़ बरतेंगे तो इनसानों के दिल अल्लाह की तरफ़ पलटा खाते चले जायेंगे।

क़ाबिले क़द्र अफ़रीक़ी और अमरीकी भाईयो

हमें आपस के अन्दर भी एक दूसरे के साथ अख़्लाक़ बरतना है। ये जो अफ़रीक़ा और अमरीका के भाई हैं, इनकी ख़ुसूसियत के साथ क़द्र करना। ये अपने आराम व राहत को छोड़ कर तुम्हारे मुल्क में आये हैं महज़ दीन के लिये। अल्लाह हम सब को उनकी क़द्र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

अफ़रीक़ा के अन्दर हमारे अफ़रीकन भाई जब जमाअत के काम से लगे हैं तो वहाँ उन्होंने अपनी जान व माल को किस तरह से दीन के काम पर लगाया। वहाँ पैदल जमाअतें काम कर रही हैं। सैकड़ों मकतब (दीनी मदरसे) क़ायम हो गये। उनके अन्दर क़ुरआन के हिफ़्ज़ करने वाले बने, क़ारी बने, जो मस्जिदों में इमामत कर रहे हैं। उनकी औरतों के अन्दर पर्दे आ गये। उनकी औरतों में दीनदारी आ गयी।

ख़ास तौर पर पूरबी अफ़रीक़ा के अन्दर हमारे जो भाई हैं, उनकी ज़िन्दगियों को देखिये तो रोना आता है।

बस दोस्तो! अल्लाह जिससे काम लेना चाहे ले लेता है। मैं अपने अमरीकी भाईयों और अफ़रीक़ी भाईयों से हाथ जोड़कर अर्ज़ करूँगा कि अगर हमारे से कोई कोताही हो जाये तो अल्लाह के वास्ते तुम उसे माफ़ करना।

काश! पूरी उम्मत दीन की दावत पर खड़ी हो जाये

याद रखो मेरे मोहतरम दोस्तो! छह नम्बरों की पाबन्दी के साथ काम करना। और काम करने वाले आदमी बनाना। फिर वे आदमी दूसरों को बनायें। इस तरह पूरे आलम का एक प्रोग्राम बनाना, मक़ामी कामों का प्रोग्राम बनाना। ग़रीब बस्तियों के अन्दर भी जाना और मालदारों को भी नहीं छोड़ना। सबको लगाना है, और रातों को उठकर दुआयें माँगनी हैं। और पूरी उम्मत दीन की दावत पर खड़ी हो जाये, इसकी फ़िक्र करनी है।

लेकिन दोस्तो! इसका पहला क़दम ज़िन्दगी में एक बार चार महीना है। कितनी-कितनी क़ुरबानियाँ, देने वालों ने दीं और आज भी बड़ी से बड़ी क़ुरबानियाँ देने वाले दे रहे हैं। तो क्या आप ज़िन्दगी में एक बार चार महीने नहीं दे सकते।

बोलो भाई हिम्मतें करके बोलो! चार महीना नक़द चाहिये। बाद की तारीख़ नहीं। आज की तारीख़ में खड़े हो जाओ। और जो तुम्हारी मजबूरियाँ हों, उनके दूर होने के लिये अल्लाह से रो-रोकर दुआ माँगो।

अब बोलो हिम्मत करके। चार-चार महीने के लिये कौन-कौन तैयार हैं। अपने-अपने नाम पेश करो। अल्लाह तआला हम सबके लिए अपने दीन के रास्ते में निकलना आसान फ़रमाये और रुकावटों को दूर फ़रमाये। आमीन।
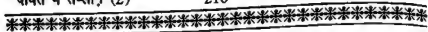
तक़रीर (8)

जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नबी बनकर आये तो सब से पहले एक मर्द ने आपकी बात मानी। यानी सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने। एक औ़रत ने मानी यानी हज़रत ख़दीजा कुबरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने। एक बच्चे ने मानी यानी हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने।

तो अगर मर्द लगे रहे और औ़रतों और बच्चों का ज़ेहन न बना तो हमारा काम पूरा नहीं होगा। औ़रतों और बच्चों के ज़ेहन बने बग़ैर हमारा काम अधूरा होगा। आप काम में आगे नहीं बढ़ सकेंगे। अगर घर वालों का ज़ेहन न बना हो। इसलिये घर वालों का ज़ेहन बनाना ज़रूरी है।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى:

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ، اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ٥ (پ۱، سورة البقرة)

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! अल्लाह तबारक व तआला ने इनसानों की भलाई और उनके लिये हमेशा-हमेशा की कामयाबी के लिये जो राह दिखायी वह क़ुरबानी की राह है। क़ुरबानी की इस राह पर चलकर इनसान दुनिया और आख़िरत की भलाई पा सकता है।

चुनाँचे एक मर्द की क़ुरबानी, यानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम।

एक औरत की क़ुरबानी, यानी हज़रत हाजरा अ़लैहस्सलाम।

एक बच्चे की क़ुरबानी, यानी हज़रत इसमाईल अ़लैहिस्सलाम।

इन क़ुरबानियों पर अल्लाह पाक ने बैतुल्लाह शरीफ़ (काबा शरीफ़) की तामीर करवाई। फिर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ माँगी। उम्मते मुस्लिमा का वजूद माँगा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का वजूद माँगा।

****

हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की दुआ

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُوْلاً مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ ايَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ، اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ٥ (پ١سورة البقرة)

ऐ अल्लाह! इस उम्मत में एक ऐसा नबी पैदा कर दे जो तीन काम करे- एक तो दावत के ज़रिये ईमान में ताक़त पैदा करे। और जब ईमान के अन्दर ताक़त पैदा हो जाये और लोग अमल की तरफ़ आने लगें तो ऐ अल्लाह! उनको इल्म दे। इल्म के साथ-साथ ज़ाहिरी आमाल बनेंगे तो उसी के साथ उनका तज़किया (बातिन की सफ़ाई) भी कर दे कि अन्दर की सफ़ाई होती रहे।

ईमान और अख़्लाक़ ताक़तवर होते रहें, ज़ाहिरी आमाल बनें, तक़्वा और तवक्कुल पैदा हो और अन्दर की सफ़ाई होती रहे।

दावत, तालीम, तज़किया इन तीनों कामों की तरबियत करने वाला नबी दे दे।

काम पूरा कब होगा?

जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम नबी बनकर आये तो सब से पहले एक मर्द ने आपकी बात मानी। यानी सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने। एक औ़रत ने मानी यानी हज़रत ख़दीजा कुबरा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने। एक बच्चे ने मानी यानी हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने।

तो अगर मर्द लगे रहे और औ़रतों और बच्चों का ज़ेहन न बना तो हमारा काम पूरा नहीं होगा। औ़रतों और बच्चों के ज़ेहन बने बग़ैर हमारा काम अधूरा होगा। आप काम में आगे नहीं बढ़ सकेंगे। अगर घर वालों का ज़ेहन न बना हो। इसलिये घर वालों का ज़ेहन बनाना ज़रूरी है।

मर्दों से ज़्यादा क़ुरबानी औ़रतों की है

औ़रतें नरम दिल की होती हैं। उनके सामने जब ढंग से बात आती

है तो उनके दिल मर्दों से ज़्यादा नरम होते हैं। बड़ी रोने वाली होती हैं। और जब मर्द जमाअ़त में निकलते हैं तो क़ुरबानी मर्दों से ज़्यादा औरतों की होती है। मर्द जब अल्लाह के रास्ते में निकलता है तो उस औरत पर क्या बीतती है वह हम नहीं समझ सकते। जब उसका ज़ेहन बना होता है तो सारी तकलीफ़ें बरदाश्त करती है।

बाप तो गया जमाअ़त में, ईद का दिन आया, अब बच्चे रो रहे हैं। माँ का ज़ेहन बना हुआ है। वह अल्लाह के रास्ते में निकलने की अहमियत और क़द्र व क़ीमत समझती है। ईद अल्लाह के रास्ते में हो इस पर हमें क्या मिलेगा, वह इस बात को जानती है।

ईद के दिन जब बच्चे रोने लगे तो उसने बच्चों को समझाना शुरू किया कि देखो बेटे! मौहल्ले वालों की ईद आज है, कल बासी और परसों ख़त्म। और तुम्हारे अब्बा जो अल्लाह के रास्ते में गये हैं तो उसके बदले में अल्लाह पाक हमको जन्नत में ऐसी ईद देंगे जो हमेशा-हमेशा रहेगी। वह ईद कभी बासी नहीं होगी।

जन्नत का राहत व आराम

और फिर बच्चों को क़ुरआन की आयतें पढ़कर सुनाईं और उनका ज़ेहन बनायाः

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ٥ اُولٰٓئِکَ الْمُقَرَّبُوْنَ ٥ فِیْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ ٥ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِیْنَ ٥ وَقَلِیْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِیْنَ ٥ (سورۃ الواقعہ پ۲۷)

जो लोग दीन के काम में आगे बढ़ने वाले हैं, वे अल्लाह के ख़ास और क़रीबी होंगे। और नेमतों वाले बाग़ीचों में होंगे। पहले ज़माने में ऐसे बहुत ज़्यादा होते थे, बाद के ज़माने में ऐसे कम हुए हैं।

عَلٰی سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ مُّتَّکِئِیْنَ عَلَیْهَا مُتَقٰبِلِیْنَ ٥ (سورۃ الواقعہ پ۲۷)

सोने के तार से जड़े हुए तख़्तों पर जन्नत में तकियों पर टेक लगाये हुए आमने-सामने बैठे होंगे।

****

जन्नत वालों की ख़ुराक

يَطُوفُونَ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ٥ بِاَكْوَابٍ وَّ اَبَارِيْقَ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ٥ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ٥ (سورۃ الواقعہ پ ٢٧)

ख़िदमत गुज़ार (सेवक) छोटी उम्र के चारों तरफ़ चक्कर लगा रहे होंगे। ऐसे आबख़ोरों (प्यालों) और गिलासों के साथ जो ऐसी शराब से भरे होंगे जो पाक होगी। गन्दी नहीं होगी। न सिर दुखेगा और न बकवास लगेगी।

यह तो जन्नत में पीने के लिये अल्लाह पाक ने बताया। और खाने के लिये?

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ٥ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ٥ (سورۃ الواقعہ پ ٢٧)

यानी जिस परिन्दे का गोश्त पसन्द आ जाये खा लो। जो मेवे पसन्द आ जायें खा लो। यह तो खाना और पीना बताया।

मन पसन्द जन्नती औ़रतें

इसके बाद ज़रूरत पड़ती है मर्दों को औ़रतों की, और औ़रतों को मर्दों की। इसके बारे में अल्लाह पाक फ़रमाते हैं:

وَحُوْرٌ عِيْنٌ ٥ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ٥ (سورۃ الواقعہ پ ٢٧)

निहायत ख़ूबसूरत औ़रतें होंगी जैसे छुपे हुए मोती।

दूसरी जगह अल्लाह पाक हूरों के कुछ और गुण बयान फ़रमाते हैं। इरशाद फ़रमायाः

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ٥ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ٥

(سورۃ الرحمٰن پ ٢٧)

उन औ़रतों को किसी इनसान और न किसी जिन्न ने छुआ भी नहीं होगा। ऐ इनसानो और जिन्नातो! तुम अल्लाह की कौन-कौनसी नेमतों को

झुठलाओगे।

आगे इरशाद फ़रमाया:

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ٥ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ٥ (سورة الرحمٰن پ٢٧)

उन सब बाग़ों में अच्छी औरतें हैं ख़ूबसूरत। फिर तुम क्या-क्या नेमतें अल्लाह की झुठलाओगे।

यानी वे औरतें चहरे-मोहरे के एतिबार से शौहर को पसन्द आयेंगी। और मिज़ाज व अख़्लाक़ के एतिबार से भी।

दुनिया के अन्दर बाज़ मर्तबा चेहरा तो पसन्दीदा लेकिन मिज़ाज ना-पसन्दीदा। और बाज़ मर्तबा मिज़ाज और अख़्लाक़ अच्छे हैं लेकिन चेहरा पसन्द नहीं।

पाकीज़ा जन्नत

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيمًا ٥ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ٥ (سورة الواقعة پ٢٧)

कोई बेहूदा बकवास जन्नत के अन्दर सुनने में नहीं आयेगी। सलाम सलाम की आवाज़ चारों तरफ़ से आयेगी।

फ़रिश्ते सलाम करेंगे। जन्नती आपस में सलाम करेंगे और जब जन्नती अल्लाह पाक से मुलाक़ात करेंगे तो उस वक़्त में अल्लाह पाक भी सलाम करेंगे जैसा कि इसको क़ुरआन पाक में इस तरह बयान किया है:

سَلَامٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيمٍ ٥ (سورة يٰسٓ پ٢٣)

जहन्नम वालों की परेशानकुन ज़िन्दगी

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! इसके विपरीत दूसरी ज़िन्दगी परेशानकुन है। जिसने हाथ, पैर, कान वग़ैरह को अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ और नबी पाक के तरीक़े को छोड़कर इस्तेमाल किया तो क़ियामत के दिन कहा जायेगा:

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ٥ (سورة يٰسٓ پ٢٣)

ऐ मुजरिमो! अलग हो जाओ। तुम्हारा रास्ता अलग है उनका रास्ता अलग है।

फिर वहाँ मुजरिमों के लिये परेशानियाँ ही परेशानियाँ होंगी।

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ٥ (سورۃ الرحمٰن پ ٢٧)

मुजरिमों को फ़रिश्ते देखकर पहचान लेंगे और उनके पेशानी के बाल और पैरों को पकड़कर जहन्नम में ले जायेंगे।

इतना भयानक मन्ज़र सामने आने वाला है। अल्लाह ने मरने से पहले इस दुनिया में ही ख़बर दे दी है ताकि उस भयानक मन्ज़र से अपने को बचाने के लिये तुम सीधे रास्ते पर आ जाओ और दावत की फ़िज़ा बनाओ और नबियों के तरीक़े को इख़्तियार करो।

कहीं अल्लाह गद्दों पर मिलता है?

अल्लाह पाक रहमान व रहीम (रहम और मेहरबानी करने वाले) हैं तो क़ह्हार व जब्बार (क़हर वाले और ग़ुस्सा करने वाले) भी हैं। अगर कोई बात अल्लाह को ना-पसन्द आयी और अल्लाह पाक ने धुतकार दिया तो बड़ी परेशानी होगी।

हज़रत इब्राहीम इब्ने अधम अपने वक़्त के बादशाह थे। बहुत ही ऐश व आराम में रहते थे। अल्लाह पाक जब किसी को हिदायत देने पर आते हैं तो ग़ैबी तरीक़े से मदद करते हैं। छत के ऊपर से खट-खट की आवाज़ आयी। उन्होंने कहा कि कौन है? आवाज़ आयी कि मैं आया हूँ। उन्होंने कहा क्या बात है? उसने कहा कि मेरा ऊँट गुम हो गया है मैं छत पर तलाश कर रहा हूँ।

उन्होंने कहा कि ऊँट कहीं छत पर मिलता है?

इस पर आवाज़ आयी कि कहीं अल्लाह गद्दों पर मिलता है? अगर अल्लाह की तलाश है तो निकल जाओ और अल्लाह के दीन का काम करो। हज़रत इब्राहीम इब्ने अधम बेचैन हो गये और अल्लाह के दीन के काम में निकल गये।

तो सीधी-सीधी बात सुन लो कि अल्लाह गद्दों पर नहीं मिलता। ऐश व आराम घर का छोड़ने में तकलीफ़ ज़रूर है मगर जहन्नम की तकलीफ़ से, हश्र की तकलीफ़ से, क़ब्र की तकलीफ़ से इसे ज़रा भी निस्बत नहीं।

लेकिन दोस्तो! यह बात भी ज़ेहन में रहे कि अल्लाह तक पहुँचने के लिये फ़क़ीरी की गुदड़ी ही ओढ़ना ज़रूरी नहीं। वाक़िआत हर तरह के मिलते हैं। आख़िर औरंगज़ेब आलमगीर रहमतुल्लाहि अ़लैहि को हुकूमत के नक़्शे में रहते हुए अल्लाह से ताल्लुक़ मिला।

हज़रत अहमद चिन्टू का वाक़िआ

इसी तरह अहमदाबाद में हज़रत अहमद चिन्टू रहमतुल्लाहि अ़लैहि थे। बड़े बुज़ुर्गों में थे। हज को गये तो बड़े-बड़े उलेमा ने रास्ते में फ़ैज़ हासिल किया। अहमदाबाद गये तो उनके दिमाग़ में एक बात पड़ी। सोच-बिचार किया कि मेरे बाद यह सिलसिला किसके ज़रिये क़ायम रहेगा। जैसे ज़िम्मेदार लोग जब मरते हैं तो अपने काम को बड़े को सौंप देते हैं।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब इस दुनिया से जाने लगे तो बता दिया कि मेरा यह काम मेरी उम्मत के लिये है। तो उन्होंने कहा कि मेरी नमाज़े जनाज़ा वह शख़्स पढ़ायेगा जिसने बग़ैर वुज़ू आसमान न देखा हो। और फिर मेरे बाद रूहानियत का काम भी वही करेगा। आपका इन्तिक़ाल हो गया तो वसीयत के मुताबिक़ ऐलान हुआ। ऐलान सुनकर अहमदाबाद की हुकूमत चलाने वाले अहमद शाह निकल आये और कहा कि आज मेरे शैख़ ने मुझे बेनक़ाब कर दिया। मेरे राज़ को खोल दिया और ख़ुद जनाज़े की नमाज़ पढ़ायी।

यही वह थे जिन्होंने बग़ैर वुज़ू के आसमान नहीं देखा था। हुकूमत का कारोबार भी चलाते रहे और फिर लोगों की रूहानी तरबियत का सिलसिला भी शुरू कर दिया।

ज़िन्दगी के हर शोबे (विभाग) के अन्दर आदमी रूहानी बन सकता है

तो आदमी तिजारतों के साथ रूहानी बन सकता है। खेतों के साथ रूहानी बन सकता है। हुकूमतों के साथ रूहानी बन सकता है। मुलाज़मतों के साथ रूहानी बन सकता है। हर शोबे के अन्दर रहकर रूहानी बन सकता है।

किसी शोबे (मैदान और विभाग) के अन्दर रहकर रूहानियत छोड़नी पड़े, ऐसा नहीं है। और यह मुजाहदे वाली ज़िन्दगी जो हम कह रहे हैं यह थोड़े वक़्त के लिये है। हमेशा के लिये नहीं। कारोबार को घर-बार को मशग़ूलियात को थोड़े वक़्त के लिये छोड़ना है। हमेशा के लिये नहीं।

ग़लत से सही की तरफ़ मोड़ो

हम यह नहीं कहते कि हमेशा के लिये छोड़ो बल्कि यह कहते हैं कि ग़लत से सही की तरफ़ मोड़ो। मोड़ने के अन्दर आपको मुजाहदा (मेहनत और कुरबानी) करना पड़ेगा। एक बात यह भी डंके की चोट पर कह रहा हूँ कि दावत का काम अल्लाह ने पूरी उम्मत के लिये ज़िन्दगी भर के लिये कर दिया है। इसलिये दावत का काम ही असल होगा। बक़िया बातें ज़िमनी होंगी। (यानी इसी के अन्तर्गत होंगी)।

इस तरह बच्चों में माहौल बनेगा

मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! उन बच्चों की माँ ने जिनका बाप अल्लाह की राह में निकल गया था। अपने बच्चों को ख़ूब सुनाया और समझाया। बच्चों के सामने जन्नत का मन्ज़र खींचा तो बच्चे बहुत खुश हुए। बाहर निकल गये। मौहल्ले के बच्चों को बिठाया और माँ वाली बात बच्चों के सामने कहनी शुरू कर दी और कहा कि तुम्हारी ईद कल बासी होगी और परसों ख़त्म हो जायेगी। और हमारी ईद हमेशा ताज़ी रहेगी।

जन्नत में क़िस्म-क़िस्म के फल मिलेंगे।

तो उस दाओ़ी (दीन की दावत देने वाले) के बच्चे कह रहे थे और मौहल्ले के बच्चे सुन रहे थे। और दाओ़ी का जज़्बा अपने बच्चों के ज़रिये नई नस्ल में मुन्तक़िल हो रहा था।

जिस इलाक़े के अन्दर अल्लाह ने दीन के ऐसे-ऐसे दाओ़ी तैयार कर दिये उनका जज़्बा, उनका दिल का दर्द, उनकी तड़प इन्शा-अल्लाह नस्ल-दर-नस्ल मुन्तक़िल होगी। दीन के दाओ़ी जन्म लेते रहेंगे, जमाअ़तें निकलती रहेंगी। फिर पिछलों के उन नेक आमाल का सवाब उनके आमाल नामे में अल्लाह पाक लिखते रहेंगे। क़ियामत तक यह काम चलता रहेगा। और क़ियामत तक सवाब मिलता रहेगा।

असल चीज़ अल्लाह का हुक्म है

मोहतरम दोस्तो! बाज़ मर्तबा तक़ाज़ा होता है कि ''बस खड़े हो जाओ'' और बाज़ मर्तबा यह होता है कि नहीं! जितना बस में है उतना सामान करो।

बदर के दिन अल्लाह ने सामान नहीं करने दिया क्योंकि वहाँ यह बताना था कि हमारे साथ ईमान है। हम सामान लेकर नहीं आये हैं। चुनाँचे अल्लाह की मदद से मुसलमान जीते। यह इसलिये था ताकि सब के दिल पर चोट पड़ जाये। लेकिन कभी यह भी क़िस्सा हुआ कि बहुत दूर का सफ़र है, तेज़ गर्मी, कारोबारी सीज़न, खजूरें पक्की तैयार हैं। बहुत बड़ी ताक़तवर फ़ौज से मुक़ाबला है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब जिहाद में जाते थे तो अगर आपको पूरब की तरफ़ जाना होता तो आप पश्चिम के हालात पूछते। छुपाने के लिये ऐसा किया जाता ताकि दुश्मन चौकन्ना न हो जाये। लेकिन यह ऐसा ग़ज़वा (दीन की लड़ाई) था कि इसके अन्दर अगर बग़ैर तैयारी के लोग चले चलते तो परेशानी हो सकती थी। इस मौक़े पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बता दिया कि फ़लाँ जगह जाना है, ताकि

लोग तैयारी करके चलें।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूरा माल लगाया।

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आधा लगाया।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पूरे लश्कर के तिहाई ख़र्च का ज़िम्मा लिया।

हर सहाबी ने अपनी हिम्मत के अनुसार भरपूर हिस्सा लिया।

सहाबी औ़रतों ने अपने ज़ेवरात उतार दिये। मगर यह सरोसामान, मालों के ढेर, काफ़ी नहीं हुआ। लेकिन अल्लाह की क़ुदरत बहुत बड़ी है। सामान से कुछ नहीं होता। अगर अल्लाह सामान की तैयारी का हुक्म करें तो करो, और अगर हुक्म न करें तो न करो।

आँखों देखी राह और कानों सुनी राह

देखो! दो रास्ते हैं। एक रास्ता तो हिदायत वाला है और दूसरा गुमराही वाला। हिदायत वाला रास्ता अल्लाह का बताया हुआ है। नबियों का रास्ता है। कामयाबी तक पहुँचाने वाला रास्ता है।

और गुमराही वाला रास्ता जी चाही वाला रास्ता है। इनसान को नाकाम करने वाला रास्ता है। हिदायत वाले रास्ते में अल्लाह पाक जो कहेंगे करना है। गुमराही वाले रास्ते में जो जी में आये वह करना है। गुमराही वाले रास्ते में आदमी आँखों देखी पर चलेगा। हिदायत वाले रास्ते पर अल्लाह और उसके रसूल की बात को कानों से सुनकर चलेगा, चाहे वह आँखों से दिखायी न दे।

दीन को ताक़त कब मिलेगी?

यह बात आदमी में उस वक़्त आयेगी जबकि अल्लाह की ताक़त, अल्लाह का ख़ज़ाना, अल्लाह की ज़ात, अल्लाह की सिफ़ात का मुज़ाकरा (ज़िक्र करना और बार-बार दोहराना) इतना हो कि उसका यक़ीन दिल के अन्दर उतर जाये। इसलिये ईमान की और अल्लाह की बातों का करना

और सुनना नये लोगों के लिये भी बार-बार ज़रूरी है, और काम में लगे हुए पुराने लोगों के लिये भी ज़ेहन के अन्दर घबराहट बिल्कुल नहीं आनी चाहिये कि कलिमे वाली बातों का मुज़ाकरा तो हम करते ही हैं, हर जगह कलिमे वाली बात होती है। हम हज करके आयें फिर भी कलिमे वाली बात, नमाज़ पढ़कर आयें तो कलिमे वाली बात, बार-बार कलिमे वाली बात हो। घबराना बिल्कुल नहीं। इसलिये कि घबराने के अन्दर बिगड़े हुए लोगों की बू पायी जाती है:

وَإِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَاحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ

(سورۃ الزمر پ۲۴)

सिर्फ़ अल्लाह का ज़िक्र मुश्रिकीन के सामने किया जाता था तो उनके दिल डूब जाते थे।

हालाँकि वे अल्लाह तआ़ला की बड़ाई को जानते थे। ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले अल्लाह को जानते थे। जब किसी मुसीबत में फंस जाते थे तो सिर्फ़ अल्लाह ही को पुकारते थे। अल्लाह का बिल्कुल इनकार नहीं था। लेकिन उनका दिल देवी-देवताओं में लगता था। अगर देवी-देवताओं का तज़किरा किया जाता तो उनके दिल खुश हो जाते थे। उछल जाते थे। लेकिन अगर सिर्फ़ अल्लाह का तज़किरा होता तो सुन लेते थे। लेकिन उनकी तबीयतें बुझी होती थीं। इसलिये उन लोगों से हमें मुनासबत (ताल्लुक़) नहीं होनी चहिये। (कि हम भी उन जैसे बन जायें)।

बार-बार अल्लाह का तज़किरा, अल्लाह की बोल बोलना। बार-बार अल्लाह वाली बात सुनना है। इससे अल्लाह की ताक़त मिलेगी, मदद मिलेगी, दिल के अन्दर नूर आता रहेगा और वह ताक़तवर बनता रहेगा। जिस तरह ग़िज़ा बदन के लिये ज़रूरी है, नहीं खायेगा तो आदमी कमज़ोर हो जायेगा। परेशानी होगी। इसी तरह रूह की ग़िज़ा अगर मिलनी बन्द हो गयी तो धीरे-धीरे रूह अन्दर से कमज़ोर हो जायेगी। और जब रूह कमज़ोर पड़ जायेगी तो रूहानियत वाले आमाल भी कमज़ोर पड़ जायेंगे।

नमाज़ भी कमज़ोर हो जायेगी। धीरे-धीरे सारे आमाल कमज़ोर हो जायेंगे। फिर दुआयें कमज़ोर होती चली जायेंगी।

इनसानियत जा रही है, हैवानियत आ रही है

बुज़ुर्गो और दोस्तो! हमको अल्लाह ने इसलिये पैदा किया ताकि हमें अल्लाह की मारिफ़त (पहचान) मिले। अल्लाह की बात को मानें। अल्लाह की नेमतों के ख़ज़ाने से फ़ायदा उठायें। अल्लाह के अज़ाब से बचें।

जानवरों का सुनना सरसरी तौर पर होता है। वह सरसरी तौर पर देखकर और मौजूदा नफ़े और नुक़सान को सामने रखकर आगे बढ़ता और पीछे हटता है। इनसानों में भी जानवरों जैसे लोग होते हैं:

لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا. اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ، اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ o

(سورۃ الاعراف، پ۹)

तर्जुमा:- उनको दिल दिये समझते नहीं। आँख दी देखते नहीं। कान दिये सुनते नहीं। ये जानवरों जैसे हैं बल्कि इससे भी ज़्यादा ग़ाफ़िल हैं।

हालाँकि इस ज़माने में मशीनों के ज़रिये हज़ारों मील दूर की चीज़ें देख लेते हैं। सुनना तो ऐसा हो गया है कि चाँद पर बैठकर कुत्ता खाँसा और ज़मीन पर बैठकर उसको सुन रहे हैं। रेडियो, टेलीफ़ोन के ज़रिये बात सुनी जा रही है। तो सुनना भी बहुत ज़्यादा हो गया और देखना भी बहुत ज़्यादा हो गया और समझना भी। अपनी समझ से ऐटमी ताक़त खोज निकाली। अपनी समझ से रॉकिट बनाये और न मालूम कहाँ तक पहुँचे। कैसी-कैसी तहक़ीक़ात (खोज) कर डालीं। तो ज़ाहिर के अन्दर सुनना भी हो गया, देखना भी हो गया और समझना भी हो गया। लेकिन अल्लाह शिकायत करते हैं कि:

आँख दी लेकिन देखते नहीं...... कान दिये लेकिन सुनते नहीं...... दिल दिये लेकिन समझते नहीं...... ये जानवरों की तरह हैं बल्कि इससे

भी गये गुज़रे हो गये हैं।

यानी देखते तो हैं लेकिन सरसरी तौर पर, जानवरों की तरह मौजूदा नफ़े व नुक़सान को देखते हैं। सुनते तो हैं लेकिन सरसरी तौर पर मौजूदा नफ़े व नुक़सान को जानवरों की तरह। समझते भी हैं लेकिन मौजूदा नफ़े और नुक़सान को जानवरों की तरह।

इसके मुक़ाबले में अल्लाह को कैसा देखना और सुनना पसन्द है, वह आपको बताऊँ?

गहरी निगाह से देखना! दिल की आँखों से देखना!

जिस तरह ज़ाहिरी आँखें हैं इसी तरह दिल की भी आँखें हैं। जिस तरह ज़ाहिरी कान हैं इसी तरह दिल के भी कान हैं।

इसलिये गहरी निगाह से देखना दिल की आँखों से देखना है:

فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِىْ فِى الصُّدُوْرِ ٥

(سورۃ الحج پ ۱۷)

यानी आम तौर से ये आँखें अंधी नहीं होतीं। अलबत्ता दिल की आँखें अंधी होती हैं।

ज़ाहिरी निगाह दुरुस्त है दिल की निगाह अंधी है। यह आँख फ़िरऔन को भी दी थी। हामान को भी दी थी। क़ारून को भी दी थी। अबू जहल को भी दी थी।

ज़ाहिरी निगाह दुरुस्त होने के बावजूद ये अंधे थे। इन आँखों से जानवरों की तरह सरसरी निगाह से देखने की वजह से। कुरआन किस अन्दाज़ में समझा रहा है:

فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِىْ فِى الصُّدُوْرِ ٥

(سورۃ الحج پ ۱۷)

यानी आम तौर से ये आँखें अंधी नहीं होतीं। अलबत्ता दिल की आँखें अंधी होती हैं।

दिल की निगाह की ख़राबी का असर क्या होगा इसको भी साफ़ तौर से बता दिया गयाः

مَنْ كَانَ فِي هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (سورۃ بنی اسرائیل، پ ۱۵)

जो यहाँ अंधा होगा वह आख़िरत में भी अंधा होगा।

और यह बात साफ़ हो गयी कि यहाँ अंधा होने के मायने उनके दिल की आँखों का अंधा होना है।

मख़्लूक़ात की दो क़िस्में

अल्लाह ने अपनी क़ुदरत से दो क़िस्म की चीज़ों को बनाया है। एक तो वह जो हमको बनाकर दिखा दिया। और एक वह जो हमारी नज़र से पोशीदा हैं। जैसे अल्लाह ने फ़रिश्ते बनाये। इस वक़्त ज़मीन से आसमान तक मजमे पर अल्लाह पाक की ज़ात से उम्मीद है कि फ़रिश्ते ही फ़रिश्ते हैं। जैसा कि हदीसे पाक में आता है कि जहाँ अल्लाह की पाकी बयान की जाती है तो वहाँ ज़मीन से आसमान तक फ़रिश्ते जमा हो जाते हैं। और जब आदमी दीन सीखने निकलता है तो फ़रिश्ते उसके पैर के नीचे अपने पर बिछाते हैं। तो उनके बारे में ख़बर दी गयी, मगर ये हमें दिखायी नहीं देते।

जो मख़्लूक़ अल्लाह ने ऐसी बनायी कि दिखायी देती और महसूस होती है उसको आँखों से देखकर उस पर ग़ौर करें तो इन्शा-अल्लाह मारिफ़त मिलेगी। और दूसरी वह मख़्लूक़ जो अल्लाह ने बनायी और हमको दिखायी नहीं देती मगर उसकी ख़बर दे दी है तो ऐसी मख़्लूक़ को ग़ौर से सुनना। जैसा कि आप इस बयान में सुन रहे हैं। तालीम के हल्क़ों में मुज़ाकरा कर रहे हैं। गश्तों के अन्दर आप ज़बान से बोल रहे हैं।

हासिल यह कि दिखायी देने वाली मख़्लूक़ को गहरी निगाह से देखता है और न दिखायी देने वाली मख़्लूक़ के बारे में ग़ौर से सुनता है। आँख का काम देखना, कान का काम सुनना, ज़बान का काम उसको बार-बार

बोलना है। आँख, कान, ज़बान इन तीनों बातों को समझ लिया तो इन्शा-अल्लाह ईमान की ताक़त दिल के अन्दर उतरनी शुरू हो जायेगी। और जितनी ईमान की ताक़त दिल के अन्दर उतरेगी, आदमी उतना ही आमाल में अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ चलेगा। इसके लिये जो मुजाहदा (मेहनत, तकलीफ़ और कोशिश) आयेगा, आदमी उसको गवारा करेगा।

आमाल की ताक़त

मुजाहदों के बाद आमाल में कुव्वत व ताक़त आयेगी। आमाल में अल्लाह ने कितनी ताक़त रखी है यह बात तो ख़ासकर मरने के बाद ज़ाहिर होगी। हाँ! कभी आमाल की ताक़त दुनिया में भी ज़ाहिर होती है। मरने के बाद जो ताक़त ज़ाहिर होगी वह मरने वाला देखेगा।

चूँकि हमें दुनिया के अन्दर दावत देनी है। अल्लाह पाक ने हिदायत का एक इन्तिज़ाम यह भी किया है कि आमाल वाली लाईन पर चलने वालों के आमाल की ताक़त ज़ाहिर कर देते हैं। इसके बावजूद कि यह बे-सरोसामान होते हैं लेकिन इनकी ताक़त ज़ाहिर हो जाती है। अक्सर अम्बिया और उनके मानने वाले बे-सरोसामान और उनके मुक़ाबले में आने वाले ख़ूब साज़ो-सामान वाले, लेकिन अल्लाह पाक ने उनकी ग़ैबी मददें कीं। जिसको दुनिया वालों ने देखा।

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! आमाल की ताक़त कब नसीब होगी? जब देखना, बोलना, सुनना सही हो जायेगा। और अल्लाह का यक़ीन, उसके ख़ज़ाने का यक़ीन हम दिलों में उतार लेंगे:

اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ٥

(سورۃ بنی اسرائیل، پ۱۵)

आँख, कान और दिल के बारे में क़ियामत के दिन पूछा जायेगा कि तुमने इनको कहाँ इस्तेमाल किया।

इसी को अल्लाह तआला शिकायत के अन्दाज में कहते हैं:

"दिल दिया समझते नहीं, कान दिये सुनते नहीं, आँख दी देखते नहीं"।

अल्लाह के ख़ज़ाने की वुस्अत

गहरी निगाह से अल्लाह की नेमतों के ख़ज़ाने का देखना और उसकी निशानियों को पहचानना और फिर उसको क़ुबूल करना ही कामयाबी है। तुम जितने लोग बैठे हो हर एक की सूरत अलग-अलग और नई-नई है। हर एक की आवाज़ अलग है। यह ख़ुदा के ख़ज़ाने की निशानी है। ख़ुदा तआला की क़ुदरत की निशानी है। अल्लाह तआला की शान देखो! जितने इनसान आज तक पैदा हुए और रोज़ाना दो तीन लाख बच्चे पैदा होते हैं। हर एक को अल्लाह तआला आवाज़ अलग देता है, हर एक को अल्लाह सूरत अलग देते हैं। एक सूरत के और एक आवाज़ के पूरी दुनिया में दो आदमी आप नहीं पा सकते। तो ख़ुदा तआला के ख़ज़ाने में सूरतें बेशुमार हैं और आवाज़ें बेशुमार हैं। हर एक को अलग-अलग दे रहा है। लेकिन ख़त्म नहीं हो रही है। यह ख़ुदा तआला की क़ुदरत और ख़ज़ाने की निशानी है।

सोना और जागना मरने-जीने की निशानी है

अल्लाह की निशानियों में से ज़मीन व आसमान का पैदा करना है। अल्लाह की निशानियों में से लहजा अलग देना है। हर एक को सूरत अलग देना है।

लेकिन निशानी है किसके लिये? जो ग़ौर करेंगे, जानकार होंगे। उनके लिये निशानी है। जो मौजूदा नफ़ा और नुक़सान के लिये फ़िक्रमन्द हैं उनके लिये नहीं।

इसी तरह अल्लाह तबारक व तआला हमें एक दूसरी निशानी बता रहे हैं, वह नींद है। हमको अल्लाह ने नींद भी एक निशानी दी है।

रात को सोना और दिन में जागना

जी हाँ मरने के बाद भी क़ब्र में सोना और क़ियामत के दिन जागना है। दिन में सब चारों तरफ़ कारोबार करते हैं। रात हुई तो सो गये। सुबह हुई तो फिर उठे और चल-फिरकर कारोबार शुरू किया। फिर रात को सो गये। तो यह सोना और जागना निशानी है मरने और जीने की। सोने और जागने पर आदमी ग़ौर करे तो समझ में आ जायेगा मरना और जीना।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَحْیَانَا بَعْدَ مَآ اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ ٥

तर्जुमाः- तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिये साबित हैं, जिसने हमको मरने के बाद ज़िन्दा किया। और क़ियामत के दिन उसी के पास जाना है।

हश्र की तकलीफ़ें क़ब्र से बढ़कर हैं

तो क़ब्र में सोये हुए क़ियामत में जागे। जैसे रात में सोये हुए दिन में जागे। अब तुम कहोः

"मौलवी साहिब! जो लोग काफ़िर और गुनाहगार हैं उनको तो अज़ाब होगा। वे कहाँ सोते हैं?"

तो मेरे भाई क़ियामत के दिन का भयानक मन्ज़र ऐसा होगा कि उसके मुक़ाबले में जो क़ब्र का मन्ज़र था वह ऐसा होगा जैसे ख़्वाब। जिस तरह दुनिया ख़्वाब के अन्दर एक आदमी बहुत परेशान दिखायी दे रहा है लेकिन उस परेशानी के बाद थानेदार ने उसको जगा दिया, हथकड़ियाँ लगाईं, पिटाई शुरू कर दी और भरे बाज़ार में लेकर चला। तो उसे मालूम होगा कि ख़्वाब के अन्दर जो तकलीफ़ें देख रहा था वे बहुत हल्की थीं और धोखा था, और ये तकलीफ़ें हक़ीक़त हैं।

इसी तरह मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! क़ब्र में भी आदमी को चाहे जितनी मुसीबतें हों, कुफ़्र व शिर्क या किसी दूसरे गुनाह की वजह से होंगी लेकिन क़ियामत के दिन जो तकलीफ़ आयेगी उसके मुक़ाबले में यह

****

कहेगा कि इससे अच्छा था कि मैं क़ब्र में रहता।

مَنْ ؕ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا، هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ۝

(سورۂ یٰسٓ، پ۲۳)

अरे हमको हमारे इस सोने की जगह से किसने उठाया। तो उससे कहा जायेगा कि यह वह बात है जिसका अल्लाह ने वायदा किया और नबियों ने ख़बर दी।

बिल्कुल ऐसी ही मिसाल जब थानेदार ने मारना शुरू किया तो मालूम हुआ कि ख़्वाब (सपने) की तकलीफ़ धोखा थी। और यह हक़ीक़त है।

और इसी तरह ईमान वाले जब उठेंगे तो क़ियामत के दिन नेमतें ही नेमतें होंगी। क़ब्र में भी नेमतें थीं और हश्र में भी नेमतें।

आख़िरत की कामयाबी के लिये मतलूबा सिफ़तें

दुनिया में भी और आख़िरत में भी अल्लाह की नेमतों से लज़्ज़त हासिल करने, जन्नत में मक़ाम पाने के लिये अब हमें करना क्या होगा? तो बुज़ुर्गो और दोस्तो!

आख़िरत की फ़िक्र पैदा हो जाना, अल्लाह की बड़ाई दिलों में आ जाना, अल्लाह का डर पैदा होना ही नेमतों की अधिकता और ज़्यादा होने का सबब होगा। जन्नत का हमेशा का सुकून बख़्शेगा। सारी दुनिया की बेहैसियती का यक़ीन पैदा करेगा। सच कहता हूँ अगर आख़िरत की फ़िक्र पैदा हो जाये, अल्लाह की बड़ाई लोगों के अन्दर आ जाये तो रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े में कामयाबी दिखायी देने लगेगी और धीरे-धीरे सारे मसाइल (समस्याएँ) चुटकी में हल हो जायेंगे।

दूसरी सिफ़त

दूसरी चीज़ तक़वा (परहेज़गारी) पैदा करना है। तक़वा ऐसा कि अल्लाह की बड़ाई व किबरियाई के सामने ग़ैरुल्लाह और शैतानी कुव्वतें बेहैसियत नज़र आयें।

तीसरी चीज़

अन्दरूनी सिफ़ात के बनाने में ख़ूब फ़िक्र पैदा करना। फिर ज़ाहिरी सामान जितना बस में हो उसका मुहैया करना ज़रूरी है। बदर के अन्दर ज़ाहिरी सामान किया गया जितनी हैसियत थी। फिर तबूक के अन्दर ज़ाहिरी सामान करने में ख़ूब तरग़ीब दी। (यानी इसकी तरफ़ तवज्जोह दिलाई)।

फ़िक्र का माहौल कैसे बनेगा?

मेरे मोहतरम दोस्तो! जब आप हज़रात अल्लाह के दीन के वास्ते और अल्लाह के वास्ते खड़े हो जायेंगे, और दीन के काम को अपना काम बनायेंगे तो विभिन्न प्रकार के हालात होंगे। उन हालात के बारे में बैठकर फ़िक्र करना पड़ेगा। लेकिन यह फ़िक्र कब करोगे? जब आपकी औरतों और बच्चों का ज़ेहन बना होगा। और ज़ेहन बनाने के लिये मानूस करना ज़रूरी है। बहुत से काम करने वाले पहुँचते हैं तो सारी औरतें और बच्चे सहमे हुए होते हैं। माँ कहती है तुम्हारे अब्बा आ रहे हैं। ज़रा ख़ूब अदब से बैठ जाओ। बीवी सहमी हुई कि न मालूम किस बात पर आकर ख़फ़ा हो जायें। जैसे कोई थानेदार घर में आ गया हो। यह तो बिल्कुल शरीअ़त के ख़िलाफ़ है।

माहौल बनाने का नबवी तरीक़ा

थानेदार की तरह घर में जाना कि सारी औरतें डर रही हों, बच्चे डर रहे हों, सहम रहे हों। यह हमारा तरीक़ा नहीं होना चाहिये। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तो वहशत (सहमने और ख़ौफ़ पैदा करने) का माहौल बनाने की तालीम नहीं देते।

एक जंग के मौक़े पर हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने कहा कि चलिये मैं और आप दौड़ लगायें और देखें कौन आगे आता है? रसूले करीम सल्लल्लाहु

****
अ़लैहि व सल्लम पीछे रह गये और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा आगे हो गईं। देखो! एक बीवी को किस अन्दाज़ से मानूस किया जाता है? यह हम लोगों के लिये रहबरी होना, एक दम से दारोग़ा की तरह जाना बिल्कुल ठीक नहीं। औलाद को तुम मानूस करो। औलाद बिल्कुल बिगड़ी हुई हो, नमाज़ न पढ़ती हो, बीवी बिल्कुल बेपर्दा हो, बेदीन हो, लेकिन उसको मानूस करोगे तो तुम जीतोगे।

औरत टेढ़ी पसली से पैदा हुई है

मानूस करने के बावजूद, दावत का काम करने के बावजूद, बहुत सी बातें तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होंगी, उसे बरदाश्त करो। इसलिये कि औरत टेढ़ी पसली से पैदा हुई है। अगर टेढ़ी रखते हुए काम लोगे तो ले सकोगे, और टेढ़ी को बिल्कुल सीधी करना चाहोगे तो टूट जायेगी। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बढ़ गयीं। फिर दूसरे सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ज़रा दौड़ें। अब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का बदन ज़रा भारी हो चुका था। दौड़ीं, लेकिन पीछे रह गईं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आगे निकल गये। अब हुज़ूर पाक फ़रमाते हैं:

देखो! वहाँ तुम आगे हो गईं और यहाँ पर मैं आगे हो गया।

हाय! तुम में से एक भी बीवी के साथ दौड़ने वाला नहीं। यह सुन्नत तो किसी ने अदा नहीं की।

उलटी को उलटी करोगे तो सीधी हो जायेगी

यह भी नहीं कि बीवी की हर बात में "हाँ में हाँ" मिलाओ। अगर वह बात ढंग की कर रही है तो बात मानो। और अगर बात ठीक नहीं है तो उसका ज़ेहन बनाओ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है जो हमने उलेमा से सुना है। मैंने इसे मौलाना यूसुफ़ साहिब से सुना है:

شَاوِرُوْهُنَّ وَخَالِفُوْهُنَّ

मश्विरा करो, फिर उलटा कर दो।

औ़रतें आ़म तौर से उलटी बात करेंगी। तो मशिवरे करो। लेकिन जो राय वे दें, उसका उलटा करो।

बात औ़रतें उलटी करती हैं। जब उलटी को उलटी करोगे तो सीधी हो जायेगी। पस "मश्विरा करो, फिर उलटा कर दो", सीधा हो जायेगा। लेकिन यह क़ायदा अगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का साबित हो जाये तो क़ायदा कुल्लिया नहीं होगा। यह क़ायदा अक्सरिया है। लेकिन अगर कोई बीवी तुमसे यह कहे कि तुम चार महीने के लिये जमाअ़त में चले जाओ तो उसको मान लेना।

दावत हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी

मेरे मोहतरम दोस्तो! इस मजमे में एक हिस्सा पर्दा में रहने वाली औ़रतों का भी है। वे सुनें और जो न हों तो ये सब मर्द मौजूद हैं। हर मर्द चार क़िस्म की औ़रतों के बीच रहता है- बीवी, माँ, बहनें और बेटियाँ। और औ़रतें चार क़िस्म के मर्दों के बीच रहती हैं- बाप, शौहर, भाई, बेटे। यह तो हमारी इज्तिमाई (सामूहिक) ज़िन्दगी है। औ़रतें मर्दों वाली हैं और मर्द औ़रतों वाले हैं। और अल्लाह पाक ने दावत का काम मर्द और औ़रत दोनों के ज़िम्मे डाला है:

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ، (پ۱۰، سورۃ التوبۃ)

तर्जुमा:- मुसलमान मर्द और मुसलमान औ़रत एक उसूल के साथ जुड़े साथी हैं कि भली बातों का हुक्म करते हैं, बुरी बातों से रोकते हैं और नमाज़ों को क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं, अल्लाह की बात मानते हैं और उसके रसूल की।

****

अल्लाह जल्द ही रहम करेगा

अल्लाह हाकिम है। लेकिन जिस अन्दाज़ का तुम रहम चाहते हो, वैसा रहम न दे तो तुम घबरा न जाना। क्योंकि अल्लाह हकीम भी है। जो तुम चाहते हो वैसा वह नहीं करता।

अ़रब वालों ने कहा मौलाना यह सारा मामला क्या है? हम भी जिहाद करते हैं लेकिन हमारी मदद नहीं होती। तो फिर हमने उनका गुस्सा ठंडा किया और यह बात सुनायी। जिस पर अ़रब वालों ने मुझे डाँटना शुरू कर दिया। मैंने कहा वायदा तो किया है अल्लाह ने, और डाँट रहे हो मुझको। यह मेरा वायदा नहीं है, वायदा तो अल्लाह का है। तब वे हंस पड़े। इससे मेरा मक़सद उनके ग़ुस्से को ठंडा करना था। उसके बाद फिर वह बात जो आप हज़रात को सुनाई, उनको सुनायी कि अल्लाह ने पहले तेरह साल रोका। फिर मदीने में कहा कि आपरेशन तुम खुद करो ताकि चन्द का आपरेशन होकर, दूसरे सही रास्ते पर आ जायें।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रहमत की शान

दूसरे नबियों के ज़माने में आ़म तौर पर यह होता रहा कि जितने लोग बिगड़े हुए थे, उन सब का सफ़ाया अल्लाह ने किया। ज़लज़ला, तूफ़ान और सैलाब वग़ैरह से। रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तमाम जहानों के लिये रहमत हैं। आ़लमी तौर पर ज़लज़ले नहीं आयेंगे। बस कहीं-कहीं ज़लज़ला, कहीं-कहीं सैलाब और कहीं-कहीं तकलीफ़ व परेशानी। अल्लाह पाक ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कहा कि आप खुद और सहाबा किराम भी मिलकर उनका आपरेशन करो। उन्होंने आपरेशन किया।

अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शाने रहमत की रियायत न होती तो जितने मुजरिम दुनिया के अन्दर हैं सबको अल्लाह ख़त्म कर देता। लेकिन चूँकि फ़रमाँबरदार भी हैं इसलिये अल्लाह पाक कहीं-कहीं

ज़लज़ले लाते हैं। ताकि मुजरिमों की आँखें खुलें। सारे मुजरिमों को अल्लाह पाक ख़त्म नहीं करते।

आ़लमी नबी का एहतिराम

अलबत्ता जब ऐसा दिन आयेगा कि पूरे आ़लम में आ़लमी (विश्व व्यापी) नबी की बात मानने वाला एक आदमी भी बाक़ी नहीं रहेगा। ऐसा भी कोई न हो जो अल्लाह ही कहता हो, तो उस दिन जो ज़लज़ला आयेगा वह आ़लमी पैमाने पर आयेगा। और जो सैलाब आयेगा, आ़लमी पैमाने पर आयेगा। उस दिन आसमान भी टूटेगा। पूरी ज़मीन फटेगी। और अल्लाह इस आ़लम को तोड़-फोड़कर क़ियामत ला देगा। लेकिन अगर आ़लमी नबी की बात मानने वाला एक भी रहा और वह भी नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज कुछ नहीं कर रहा है, सिर्फ़ अल्लाह-अल्लाह कर रहा है तो ज़मीन, आसमान, चाँद, सूरज का निज़ाम चलता रहेगा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आ़लमी नबी होने के एहतिराम व सम्मान में।

ख़ुदा की ताक़त का अन्दाज़ा

जब अल्लाह के नाम में इतनी ताक़त है कि आसमान व ज़मीन का सारा निज़ाम बरक़रार है सिर्फ़ नाम पर, तो अल्लाह के बताये हुए काम में कितनी ताक़त होगी? और वह ताक़त क़ियामत के दिन ज़ाहिर होगी। इसी लिये इसका बार-बार मुज़ाकरा करने की ज़रूरत है।

रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देखा कि कुछ लोग बैठे हुए हंस रहे हैं। फ़रमाया कि मौत का तज़किरा करो। जो सारी लज़्ज़तों को तोड़ने वाली है। ख़त्म करने वाली है।

اَكْثِرُوْا ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ الْمَوْتُ

अगर तुम बार-बार इसके तज़किरे करोगे तो फिर तुम्हारी यह कैफ़ियत नहीं होगी। जो तुम नहीं जानते अगर वह तुमको मालूम हो जाये

तो हंसना बन्द कर दोगे रोना शुरू कर दोगे। मैदानों में चले जाओगे। औरतों से सोहबत (संभोग) करना छोड़ दोगे।

नेक व बद के साथ क़ब्र का मामला

फिर इरशाद फ़रमाया कि क़ब्र रोज़ाना ऐलान करती है कि:

मैं वहशत का घर हूँ। कीड़ों का घर हूँ। तन्हाई का घर हूँ। अजनबियत का घर हूँ।

जब कोई ईमान वाला क़ब्र के अन्दर जाता है तो वह कहती है कि दुनिया में जितने लोग हैं उनमें सबसे ज़्यादा मुझे तू प्यारा है। आज तू देखेगा कि मैं तेरे साथ क्या सुलूक करती हूँ। फिर क़ब्र जहाँ तक नज़र पहुँचे वहाँ तक कुशादा (खुली हुई) हो जायेगी और जन्नत का दरवाज़ा खुल जायेगा। इतना खुल जायेगा, जहाँ तक उसकी निगाह जा सकती है।

और अगर कोई मुजरिम दुनिया से जायेगा तो क़ब्र कहती है कि पूरी दुनिया के अन्दर जितने लोग जीते हैं उनमें तू मेरा सबसे बड़ा दुश्मन था। और मुझे तुझसे नफ़रत है। अब तू देखेगा कि मैं तेरे साथ क्या सुलूक करती हूँ। उसके बाद वह क़ब्र दोनों तरफ़ से मिल जायेगी और उसकी पसलियाँ ऐसी मिल जायेंगी जैसे दोनों हाथ की उंगलियाँ एक दूसरे में दाख़िल कर दी जायें और उसे काटने के लिये सत्तर अज़्दहे ऐसे मुक़र्रर कर दिये जायेंगे कि अगर उनमें का एक भी ज़मीन पर फूँक मार दे तो क़ियामत तक वहाँ घास और दाने का उगना बन्द हो जाये।

सुनने-सुनाने में तरतीब का लिहाज़ ज़रूरी है

मेरे मोहतरम दोस्तो! क़ियामत का दिन तो इतना भारी होगा कि वह उस क़ब्र की तकलीफ़ को भूल जायेगा। ऐसा समझेगा जैसे सपना देख रहा हो और कहेगा:

مَنْ ۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا، هٰذَا مَا وَعَدَالرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ○

(سورۂ یٰسٓ، پ۲۳)

अरे हमको हमारे इस सोने की जगह से किसने उठाया। तो उससे कहा जायेगा कि यह वही है जिसका अल्लाह ने वायदा किया था और नबियों ने सच बात कही थी।

इसलिये दावत के मुज़ाकरे हों, क़ब्र के मुज़ाकरे हों, क़ियामत के मुज़ाकरे हों। ख़ूब ख़ूब मुज़ाकरे हों।

मर्दों में हों, घर में औरतों के सामने इसके मुज़ाकरे हों, बच्चों के सामने मुज़ाकरे हों।

लेकिन भाई ज़रा एहतियात के साथ। छोटे बच्चों के सामने इतना भयानक मन्ज़र क़ियामत का क़ायम करोगे तो बच्चे डर जायेंगे। ऐसा नहीं करना है। सब कुछ तरतीब से हो। किसको कितना सुनाना है तरतीब के साथ हो।

मुसलमानों की ज़िन्दगी में पाँच बातें लानी हैं

(1) मुसलमानों के अन्दर दावत को पहुँचाओ।

(2) मुसलमानों की ज़िन्दगी अ़मली ज़िन्दगी बन जाये इसकी मेहनत करो।

(3) ईमान के अन्दर ताक़त आ जाये।

(4) हमारा रहन-सहन और समाजी ज़िन्दगी और कारोबारी लाईन नबवी तरीक़े पर आ जाये।

(5) हमारा अख़्लाक़ी मेयार ऊँचा हो जाये।

ये पाँच बातें हमें कोशिश करके मुसलमानों के अन्दर लानी हैं। जो सहाबा के अन्दर हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मेहनत से आईं।

इस्लामी तर्ज़े ज़िन्दगी के साथ इस्लामी आईडियल ज़िन्दगी के साथ अगर कोई दुनिया में जियेगा तो जहाँ पर करने वाले होंगे, न करने वाले भी होंगे। वे जब इस पाक ज़िन्दगी को देखेंगे तो गुट के गुट ईमान की तरफ़ चले आयेंगे। कोई लड़ाई-झगड़े की ज़रूरत इन्शा-अल्लाह नहीं होगी।

हमारी आवाज़ सब से अलग हो

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जमाअतों को बाहर भेजा करते थे तो यूँ फ़रमाते थे कि पहले तो कलिमे की दावत देना। न मानें तो समझौते और मेलजोल की बात करो। यानी जिज़या (जान व माल की हिफ़ाज़त के बदले में टैक्स) अदा करो। और अगर वे सुलह-सफ़ाई के लिये तैयार न हों तो फिर उसके बाद का आपरेशन करो।

जैसे फ़ायर ब्रिगेड (आग बुझाने वाली गाड़ी) मोटर के सामने पाँच आदमी आ जायें तो डरेगा नहीं। मोटर को उन पाँच आदमियों के ऊपर चढ़ा देगा।

लेकिन फ़ायर ब्रिगेड की आवाज़ अलग होती है, सब रास्ते ख़ाली कर देते हैं। इसी तरह पूरे आलम के अन्दर आवाज़ें लग रही हैं, वे हैं:

मुल्क व माल ...... सोना चाँदी ...... रुपये पैसे ...... दुकान खेत।

इससे यह हो जायेगा, उससे वह हो जायेगा।

हमारी आवाज़ यह हो कि इनसे कुछ नहीं होता। करने वाले अल्लाह हैं। जैसे फ़ायर ब्रिगेड (आग बुझाने वाली गाड़ी) की आवाज़ अलग होती है, उसको सुनकर सब हट जाते हैं। अगर हमारी आवाज़ यह होगी तो धीरे-धीरे लोगों को इत्मीनान होगा और लोग बात मानेंगे और दीन का काम करने लगेंगे, इन्शा-अल्लाह।

जिहाद बग़ैर दावत के नहीं

एक बार जॉर्डन में जमाअत गई। अरब नौजवान जमा हो गये और कहा कि यहूदियों से क़िताल बाद में करेंगे पहले तो तब्लीग़ करने वालों से जिहाद करना चाहिये। क्योंकि इन तब्लीग़ करने वालों ने जिहाद का जज़्बा मुसलमानों के अन्दर ठंडा कर दिया है। जबकि सारी क़ौमों में जिहाद का जज़्बा भरा पड़ा है।

मामला सामने आया। अमीर सूझ-बूझ रखने वाला था। वह खड़ा हो

गया और उन नौजवानों से यूँ कहा कि सारे नौजवानों को तुम जमा करो और पाँच मिनट की बात तुम सुन लो। अगर समझ में न आये तो हमें क़त्ल कर देना। सब जमा हो गये।

उसने खड़े होकर एक बात कही कि जिहाद बग़ैर दावत के ऐसा है जैसे नमाज़ बग़ैर वुज़ू के। दावत है नहीं और जिहाद कर रहे हैं। नमाज़ बग़ैर वुज़ू के होती नहीं और जिहाद भी बग़ैर दावत के करोगे तो अल्लाह पाक उसे क़बूल नहीं करेगा। वे सब के सब सन्नाटे में आ गये।

जोश के साथ होश और होश के साथ जोश ज़रूरी

फिर कुछ नौजवान खड़े हो गये और उन्होंने कहा कि पहले यहूदियों को दावत देंगे ताकि अल्लाह की मदद आये। नौजवानों को जोश बहुत होता है उनको तो होश की लगाम लगानी पड़ती है। और बड़ी उम्र वालों में ज़रा जोश का धक्का लगाना पड़ता है। दोनों ही काम करने पड़ते हैं।

अब अगर तुम्हारे अन्दर इतना होश हो गया कि ज़िन्दगी में चार महीने देने की हिक्मत समझ गये लेकिन अभी तैयार नहीं हो तो इस काम के लिये तुमको जोश का धक्का लगाना पड़ेगा। और जोश इतना आ गया कि बीवी को डाल दूँगा बेवाख़ाने में और बच्चों को डाल दूँगा यतीम ख़ाने में। और घर बेच दूँगा और पूरी ज़िन्दगी अल्लाह के रास्ते में निकल जाऊँगा तो उसके ऊपर ज़रा होश की लगाम देंगे। दोनों काम यहाँ होते हैं। अब अगर यह नहीं मालूम कि फ़लाँ के अन्दर होश ज़्यादा है या जोश तो वहाँ मश्विरे की ज़रूरत है।

लेकिन जिसने पूरी ज़िन्दगी में चार महीने दिये तो उसके सामने इतनी जोशीली बात करनी चाहिये कि वह आज ही चार महीने दे दे। अगर तुम कहो कि तरतीब कामों की बनाकर फिर दूँगा, ऐसा नहीं है। जो 'घर' गया वह 'घिर' गया। जिसने कहा 'फिर' वह हो गया 'फुर'। वह हमारे क़ाबू में नहीं आता। यहाँ पर खड़े होकर जो चार महीने लिखवायेगा तो सब कहेंगे "हाँ" और जब घर जाओगे और वहाँ इरादा करोगे तो सब कहेंगे ना!

जब हाँ की फ़िज़ा में हाँ न कह सको तो ना की फ़िज़ा में हाँ कैसे कह सकोगे? इसलिये शैतान के चक्कर में न आना और आज ही चार महीने के लिये खड़े हो जाओ।

इस्लामी ज़िन्दगी का नमूना भी ज़रूरी है

बहरहाल! मैं अ़र्ज़ कर रहा था अ़रब वालों की बात। अमीर ने फिर पाँच मिनट बैठकर बात सुन लेने की दरख़्वास्त की और कहा कि यहूदियों को जिस इस्लाम की दावत दोगे वह कौनसा इस्लाम है?

वह इस्लाम जो किताबों में लिखा है और रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में था, या वह इस्लाम जो आज मुसलमानों के अन्दर है।

अगर मुसलमानों के अन्दर जो इस्लाम है उस इस्लाम की दावत दोगे तो कहेंगे कि यह इस्लाम तो हमारे अन्दर भी है। आज चोरी, डकैती, लूट, खसूट, धोखा, ग़बन, ख़ियानत मुसलमान मुसलमान होकर करते हैं तो हम यहूदी होकर करते हैं। अगर इस्लाम यह है जो आज के मुसलमानों में है तो मुसलमान होकर तुम्हारा यह इस्लाम है और हमारा यह इस्लाम यहूदी बनकर है। पस वे लेग इस ज़माने के इस्लाम को तो क़बूल करेंगे नहीं। और अगर तुम कहो कि वह इस्लाम जो किताबों में लिखा है जो हमारे बुज़ुर्गों में और सहाबा में था, ताबिईन में था, उस इस्लाम पर आ जाओ। तो वे साफ़-साफ़ कह देंगे कि वह इस्लाम तो हुज़ूरे पाक के ज़माने में चलने के क़ाबिल था। रॉकिट के ज़माने में चलने के क़ाबिल नहीं। अगर रॉकिट के ज़माने में चलने के क़ाबिल होता तो सब से पहले मुसलमान इस पर चलता। वे लोग तो तुम से यही कहेंगे। इसलिये ज़रूरत इस बात की है कि पहले हमारे अन्दर इस्लामी ज़िन्दगी आ जाए। और मुसलमानों को इस्लामी तरीक़े पर लाने के लिये सीखने की ज़रूरत है। इसके लिये मुसलमानों को सब्र सीखना पड़ेगा। बरदाश्त सीखना पड़ेगा। कड़वी-कड़वी सुननी सीखना पड़ेगी।

सीखे बग़ैर कामयाबी नहीं

एक इलाक़े के अन्दर जमाअ़त ने काम किया। नमाज़ी बहुत बढ़ गये तो वहाँ के इमाम से अ़र्ज़ किया कि आप भी चलिये जमाअ़त में। उन्होंने कहा कि जमाअ़त का काम तो देख लिया है अब हम ख़ुद ही कर लेंगे। चुनाँचे उन्होंने दिन में पाँच बार गश्त करना शुरू कर दिया। सुबह के वक़्त जो सोये रहते थे उनकी चारपाईयें को मस्जिद में लाकर रख दिया और उनसे नमाज़ पढ़ने के लिये कहा। तो पहले दिन तो उन्होंने बरदाश्त कर लिया। दूसरे दिन वे डंडा लेकर सोये। जब सुबह का वक़्त हुआ और उनके साथी गश्त के लिये आये तो उनकी ख़ूब पिटाई की। तो सीखे बग़ैर मुसलमानों के अन्दर दावत देने जाओगे तो कामयाब नहीं होगे।

चार महीने के अन्दर क्या सीखा?

जॉर्डन की जमाअ़त वालों ने अ़रब के नौजवानों से कहा कि चार महीने के लिये हमारे मुल्क में आ जाओ। चुनाँचे उनकी चार महीने की जमाअ़त बन गयी और उसे पूरा भी कर दिया। फिर मैं उन लोगों को लेकर बैठा। मैंने कहा कि हाथ में चूड़ियाँ पहन ली हैं क्या? जिहाद का वह जज़्बा बिल्कुल ख़त्म क्यों हो गया? ढीला क्यों पड़ गया? उन्होंने कहा कि मौलवी साहिब! आप ताने क्यों मार रहे हैं? मैंने कहा कि तुम जाओगे अपने मुल्क और वहाँ लोग यह पूछेंगे तो मैं उनका बनकर आप से पूछ रहा हूँ। वे लोग तुमसे पूछेंगे कि चार महीने के अन्दर तुमने क्या सीखा?

तो मैं तुमको ख़ुद बताऊँ कि तुमने चार महीने में कितना सीखा है? तुमने चार महीने में ज़िन्दगी के हर शोबे (विभाग) को नबवी तरीक़े पर चलाना सीखा है ताकि अल्लाह की मदद आ जाये।

कारोबारी लाईन, घरेलू लाईन, सियासी लाईन यहाँ तक कि फ़ौज में अगर तुम हो, वह भी नबवी तरीक़े पर आ जाये।

जब आप नबवी तरीक़े पर आ जायेंगे और नबवी तरीक़ा ज़िन्दगी में

होगा तो अल्लाह की मददें आयेंगी। अब उनकी समझ में आ गया कि दीन को हर जगह लाना है और जब अल्लाह की मदद आयेगी तो पहला काम यह होगा कि लोगों के ज़ेहन दीन की तरफ़ आयेंगे और पूरे आ़लम के अन्दर दीन की फ़िज़ा बनेगी। फिर जब दीन की फ़िज़ा पूरे आ़लम में बननी शुरू होगी तो उसके असरात दूसरों पर पड़ने शुरू होंगे। और जब दूसरों पर पड़ेंगे तो अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि चाहे गोरा हो या काला, हर एक का ताल्लुक़ अल्लाह से हो जायेगा।

दावत से ख़िलाफ़त तक

जब सब के सब ईमान की तरफ़ आ जायेंगे तो उनका बन्दोबस्त चलाने के लिये कोई अमीरुल्-मोमिनीन (मुसलमान बादशाह) होना चाहिये। तब सब के सब लोग और उलेमा तलाश करेंगे कि अमीरुल्-मोमिनीन किसको बनायें? ख़लीफ़ा किसको बनायें? जिसमें सलाहियत हो और सलाहियत तो हुकूमत चलाने वालों में है, दीन नहीं था वह उनमें आ गया। उन्होंने आपस में मश्विरा किया कि चलो गोरे चौधरी से कहेंगे कि आप हमारे ख़लीफ़ा बन जायें। वहाँ जाकर देखा गोरा चौधरी रात को रो रहा है। सब लोग और उलेमा उससे मिले और कहा कि आप हमारे ख़लीफ़ा बन जायें। वह हिचकियाँ मार-मारकर रोयेगा। इन्शा-अल्लाह कहेगा भाई! नहीं मैं तो अपने ही लिये डरता हूँ क़ियामत के दिन बड़ी अ़दालत में हाज़िर होने से। जब सारे लोगों का ख़लीफ़ा बन जाऊँगा तो सब का हिसाब मुझे देना पड़ेगा। मैं ख़लीफ़ा नहीं बनूँगा।

अब तुम लोग लाल चौधरी के पास चले। देखा तो उसका भी वही हाल है, उसने भी कह दिया कि मैं नहीं। मेरा क़ियामत का मामला बिगड़ जायेगा।

मश्विरा होगा कि अब काले चौधरी के पास जाओ। तो वे लोग काले चौधरी के पास जाकर कहते हैं: आप हमारे ख़लीफ़ा बन जायें। हमारे हाकिम बन जायें। उससे भी मयूसी होगी तो उलेमा मिल-बैठकर मश्विरा

****

करके किसी एक को ख़लीफ़ा बना देंगे। फिर पूरे आलम के अन्दर तीन बातें चलेंगी:

या तो कलिमा पढ़ो ...... या तो जिज़्या (इस्लामी हुकूमत में रहने का टैक्स) दो और सुलह करो ...... या तो आ जाओ क़िताल (जंग) के लिये।

अभी से वह काम जो उस अमीर के करने का है, तुम करने लग जाओ। अभी से अगर आपने ग़ैर-मुस्लिमों को मारना शुरू कर दिया तो मुझे बाज़-बाज़ मौक़ों पर इसमें गुनाह होने का ख़तरा मालूम होता है। तब वे मजबूर होंगे अपनी जान बचाने के लिये। अपने बचाव के लिये कुछ न कुछ करने पर।

हमारे काम की शुरुआत कच्ची ईंट से

मैं कहता हूँ कि इस तरीक़े के लड़ाई-झगड़े से हमारा दीन मुतास्सिर (प्रभावित) होगा। हमारा काम तो कच्ची ईंट से शुरू होगा। सब से पहले वही पाँच बातें मुसलमानों में पैदा हों, तब पूरे आलम में उसके असरात ज़ाहिर होंगे।

अब एक बात कहकर मैं अपनी बात ख़त्म करूँ। ये पाँच बातें हमारे काम करने वालों में अभी नहीं हैं। लेकिन इसके बावजूद अल्लाह ने पूरे आलम पर असर डाला या नहीं? अल्लाह क़ादिरे मुतलक़ हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये। कुरआन उतरा तो 'क़ैसर' व 'किसरा' की हुकूमतें मातहत हो गईं। आप पैदा हुए तो 'किसरा' (ईरान के बादशाह) के महल के चौदह कंगूरे टूट पड़े और महल की दीवार में दरार पड़ गये।

'किसरा' ने एक सपना देखा था। दरबार में आया। नजूमियों (ज्योतिषियों) को बुलवाया। उनके बस में ताबीर नहीं थी। शाम के अन्दर एक बड़ा नजूमी था। उससे पूछने गये। वह मरने के क़रीब था। मरते-मरते उसने कहा कि बनी इस्राईल से नुबुव्वत निकल चुकी। बनी इसमाईल में आ गयी। और वह नबी आ चुके हैं।

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ये असरात हैं। अभी 'वह्य' (अल्लाह का पैग़ाम) आप पर नहीं उतरी। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की चालीस साल की उम्र भी नहीं हुई। सिर्फ़ पैदा ही हुए हैं और पूरे आ़लम पर असरात ज़ाहिर हो गये।

यह बात भी जो हम कह रहे हैं वह वजूद में आयेगी लेकिन अभी हम लोगों में वह सलाहियत वे सिफ़तें नहीं। हमारे अल्लाह ने, महबूब नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूरे आ़लम के अन्दर असर डाला है, हम भी अगर कुरबानी में आगे बढ़ गये तो क्या अ़जब है कि क़ौमें की क़ौमें और मुल्क के मुल्क ईमान वाले बन जायें। तब देखेंगे कि क़ियामत के दिन एक-एक आदमी लाखों करोड़ों को जन्नत में लेकर जा रहा है। यह बात बग़ैर कुरबानी दिये नहीं हो सकती।

इसलिये खड़े होकर ऐसे लोग अपना नाम पेश करें जिन्होंने आज तक अपना नाम पेश नहीं किया है।

ख़त्म शुद

तक़रीर (9)

यह तक़रीर नवम्बर 1992 में बंगले वाली मस्जिद देहली में की गई।

आप और हम अल्लाह से अपने बारे में जो चाहते हैं हम अल्लाह के बन्दों के बारे में वह करना शुरू कर दें। बड़ी अ़जीब चीज़ है यह, बड़ी अ़जीब चीज़ है। अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह हमारे ऐबों पर पर्दा डाले तो हम दूसरों के ऐबों पर पर्दा डालें। अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह हम पर रहम करे तो हम दूसरों पर रहम करें। यह बड़ी अ़जीब चीज़ है। अगर हम यह चाहते हैं कि अल्लाह हमारी ग़लतियों को माफ़ करे तो हम दूसरों की ग़लतियों को माफ़ करें। इससे अल्लाह हमारी ग़लतियों को माफ़ करेगा। बड़ी अ़जीब चीज़ है यह।

(इसी तक़रीर का एक हिस्सा)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا، مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَ نَبِيَّنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا. اَمَّابَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ٥ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ٥ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِئُوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُوْنَ ٥ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ٥ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ٥ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ٥ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ٥ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ، وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ٥

चीज़ों के तीन दर्जे

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! हर चीज़ के तीन दर्जे होते हैं। एक मेहनत और कोशिश का, दूसरा दर्जा उस चीज़ का वजूद, तीसरा दर्जा उसका फ़ायदा। खेती के अन्दर भी यह चीज़ है। पहले मेहनत फिर खेती

फिर उसका फ़ायदा। बिल्कुल इसी तरीक़े से दीन का मामला है। पहले मेहनत होती है कोशिश होती है, उसके बाद दीन वजूद में आता है, और उसके बाद उसका फ़ायदा होता है।

दीन का असल फ़ायदा

दीन का जो असल फ़ायदा है वह है अल्लाह का राज़ी होना। अल्लाह जब राज़ी हो गये तो बहुत बड़ा फ़ायदा मरने के बाद भी होगा। हमेशा की जन्नत में आदमी जायेगा। और हमेशा की जहन्नम से आदमी बचेगा।

दुनिया के अन्दर अल्लाह के राज़ी होने का फ़ायदा यह होगा कि अल्लाह तआला खुश होकर अपनी कुदरत को हिमायत में लायेंगे। अपनी नेमतों के ख़ज़ाने से ताल्लुक़ पैदा फ़रमा देंगे। तो अल्लाह तआला बरकतें, रहमतें, सुकून, चैन, इत्मीनान, मुहब्बतें, अमन व अमान, यह देंगे। इलाक़ाई तौर पर, व्यक्तिगत तौर पर, अ़मली तौर पर जितना-जितना दीन ज़िन्दा होगा, अल्लाह राज़ी होंगे।

मगर दीन एक दम से ज़िन्दा नहीं होता। इसपर मेहनत करनी पड़ती है। हर नबी ने मेहनत की। फिर दीन ज़िन्दा हुआ। हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दीन की मेहनत करने का जो तरीक़ा बतलाया उस तरीक़े पर जितनी मेहनत होती जायेगी तो अल्लाह तआला अपनी कुदरत से दीन को ज़िन्दा फ़रमाते जायेंगे, और इसका फ़ायदा भी देते चले जायेंगे। लेकिन इनसान मेहनत सही करे।

अब ये हमारी जमाअ़तें जो अल्लाह के रास्ते में जा रही हैं। ये उस मेहनत को सीखने के लिये जा रही हैं, और उस मेहनत का करना तो ज़िन्दगी भर है (इन्शा-अल्लाह) घर पर रहें तो अपने मक़ाम पर वह मेहनत करनी है, बाहर जायें तो बाहर जाकर वह मेहनत करनी है। लेकिन मेहनत पहले सीखी जाती है। तो इस वक़्त मैं आप हज़रात से बात मुख़्तसर तौर पर अ़र्ज़ करूँगा।

दीन को ज़िन्दा करने की मेहनत का तरीक़ा

इस मेहनत का तरीक़ा क्या है? यह मेहनत कैसे की जाये, जिससे दीन ज़िन्दा हो? इस मेहनत के करने में सब से पहले जो चीज़ मिलेगी वह हिदायत का नूर मिलेगा दिल में इन्शा-अल्लाह। नबियों वाली मेहनत जो करता है अल्लाह उसे हिदायत का नूर देता है। एक तो नबियों वाली मेहनत हो और एक दुआ हो। ये दो बातें अगर हों तो अल्लाह पाक हिदायत का नूर देते हैं।

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ○

नबियों वाली मेहनत पर अल्लाह तआला का हिदायत का वायदा है। और जिस आदमी में अल्लाह की तरफ़ रुजू हो, तलब हो अल्लाह उसे हिदायत देता है। नबियों वाली मेहनत क्या है? इसको आप हज़रात के सामने बहुत मुख़्तसर अन्दाज़ में अर्ज़ किया जायेगा। हमारी जाने वाली जो जमाअतें हैं वे ख़ूब ध्यान से इस बात को सुनें और जो मित्रगण वापस जाने वाले हैं, वे हज़रात भी ग़ौर से सुनें। क्योंकि वापस जाने वाले जो हज़रात हैं, अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि वे इज्तिमा में शरीक होकर अगर नक़द जमाअत में निकले नहीं हैं तो उम्मीद है कि आईन्दा निकलेंगे, इसलिये ये बातें काम आयेंगी। और अपने मक़ाम पर जाकर भी वे काम शुरू कर देंगे। अल्लाह का यह फ़ज़्ल है कि हर जगह काम करने वाले कुछ न कुछ मौजूद हैं। इसलिये मक़ाम पर जाकर ही काम शुरू कर दें।

तब्लीग़ के काम का तरीक़ा

अब काम का तरीक़ा क्या है? ये जमाअतें जो अल्लाह के रास्ते में जा रही हैं। ये काम किस तरीक़े से करें? एक तो इस बात को ज़ेहन में बिठा लें कि इस मेहनत को छह बातों की पाबन्दी के साथ करना है। छह नम्बरों से हटना नहीं है। ख़ूब इसे ज़ेहन में बिठा लें। और यह काम करने के लिये हमारा वक़्त मस्जिदों के अन्दर गुज़रे। और एक बात यह

ज़ेहन में बिठा लें कि जो ज़िम्मेदार (अमीर) जमाअत का बना हो, उससे जुड़कर काम करें। उसकी बात को मानें। बाज़ार में घूमना-फिरना न हो। काम के अन्दर लगे रहें। अब मैं वे छह बातें अ़र्ज़ कर दूँ।

छह नम्बर पूरा दीन नहीं

छह बातें क्या हैं? किस तरह हमें काम को शुरू करना है, और आख़िर तक काम को उसी तरीक़े पर करना है। ये जो छह नम्बर हैं यह पूरा दीन नहीं हैं। लेकिन पूरे दीन पर चलने की इससे इस्तेदाद (सलाहियत और योग्यता) पैदा होती है।

पहली चीज़

इन छह नम्बरों में सब से पहली चीज़ कलिमा है। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब नबी बने तो आपने कलिमे की दावत को लेकर घर-घर फिरना शुरू किया। वह कलिमे की दावत को लेकर घर-घर दर-दर फिरे। तो सब से पहली चीज़ कलिमा है। कलिमे के एक तो मायने हैं, और एक होता है इसका लफ़्ज़। इसका लफ़्ज़ (यानी उच्चारण) भी ठीक करना चाहियेः

ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम)

बहुत आसान है। इसका तर्जुमा यह हैः

"सिवाये अल्लाह के कोई माबूद (इबादत और पूजने के क़ाबिल) नहीं, और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसके सच्चे रसूल हैं।"

अल्लाह का शुक्र है, उसका एहसान है कि हम सब की पेशानी अल्लाह ही के सामने टिकती है।

जड़ मज़बूत होनी चाहिये

लेकिन इस कलिमे को दिल में उतारने के लिये बार-बार अल्लाह की अ़ज़मत (बड़ाई) और अल्लाह की ताक़त व क़ुदरत, अल्लाह के ख़ज़ाने, अल्लाह की ज़ात, अल्लाह की सिफ़ात, अल्लाह की नाफ़रमानियों पर

****

पकड़ और फ़रमाँबरदारियों पर मदद, मरने के बाद अल्लाह ख़ुश होकर जन्नत में दाख़िल करें, नाराज़ हो जायेंगे तो जहन्नम में दाख़िल करें, बार-बार अल्लाह का तज़किरा हो, अल्लाह की बड़ाई का तज़किरा हो। यह जितना ज़बान से बोलेंगे और कानों से सुनेंगे उतना ही हमारे दिलों के अन्दर अल्लाह का यक़ीन उतरेगा, जड़ जमेगी। कलिमे की जड़ जम जाने के बाद फिर अगले सारे आमाल बड़े ताक़तवर बनते हैं। हर अ़मल में ताक़त पैदा होती है। अगर पेड़ की जड़ न जमी हो और आप पत्तों में पानी पिलाते रहे। फलों में पानी पिलाते रहे लेकिन जड़ सूख रही है, तो ख़ाली पत्तों और फलों को पानी पिलाने से कुछ नहीं होगा। जड़ मज़बूत होनी चाहिये। कलिमा यह जड़ है, और ज़ेहन के अन्दर यह बात बिठानी है कि कलिमा बोलकर और सुनकर ही अल्लाह की बड़ाई और उसकी ताक़त व कुदरत का यक़ीन आयेगा।

ज़िन्दगियों का बनाना और ज़िन्दगियों का बिगाड़ना अल्लाह के हाथ में है। दुनिया के अन्दर फैली हुई चीज़ों से ज़िन्दगियों के बनने और बिगड़ने का ताल्लुक़ नहीं है। जिसकी ज़िन्दगी अल्लाह बनाये उसकी ज़िन्दगी बनेगी। जिसकी ज़िन्दगी अल्लाह बिगाड़े उसकी बिगड़ेगी। लेकिन अल्लाह ज़िन्दगियों को अंधाधुंध बनाते भी नहीं और बिगाड़ते भी नहीं।

ज़िन्दगियों के बनाने का क़ानून

अल्लाह के नज़दीक ज़िन्दगियों के बनाने का उसूल और क़ानून मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का लाया हुआ पाकीज़ा तरीक़ा है। जितना वह ज़िन्दगियों में आयेगा तो उतनी ज़िन्दगियाँ बनती चली जायेंगी, दुनिया व आख़िरत की। और जितना वह तरीक़ा ज़िन्दगियों से निकलता जायेगा, उतनी ज़िन्दगियाँ उजड़ती चली जायेंगी दुनिया और आख़िरत की। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा पूरी ज़िन्दगी में आये इससे अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला ज़िन्दगियों के बनाने का होगा। नेमतों के दरवाज़े अल्लाह तआ़ला खोलेंगे। और अगर तकलीफ़ें आईं तो उन तकलीफ़ों के अन्दर अल्लाह की मददें छुपी होंगी, और

अल्लाह की रहमतें छुपी होंगी। अगरचे तकलीफ़ है लेकिन उसके अन्दर आदमी को मज़ा आयेगा, अल्लाह का ताल्लुक़ मिलने की वजह से। यह है कलिमा! इसकी दावत को लेकर घर-घर और दर-दर फिरना और बार-बार अल्लाह का बोल बोलना और सुनना है।

नमाज़ पर अल्लाह की मदद आती है

जब हमने यह इक़रार कर लिया कि हमें अल्लाह की बात को मानना है और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े को मानना है। जब यह बात तय कर ली तो देखना पड़ेगा सब से पहले जो हुक्म है अल्लाह का, दिल में कलिमे का यक़ीन जमाने के बाद वह हुक्म नमाज़ का है। पाँचों वक़्त की नमाज़ यह हर मुसलमान मर्द और औरत पर ज़रूरी है। अब यह नमाज़ सिर्फ़ उठक-बैठक बनकर न रहे बल्कि नमाज़ ऐसी चीज़ है कि इस पर अल्लाह की मदद आती है। क्योंकि नमाज़ में अल्लाह पाक ख़ुद हम से यह कहलवा रहे हैं:

اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ ٥

ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं।

मदद अल्लाह से माँगेंगे इबादत करने के बाद।

इबादत पर अल्लाह की मदद कब आयेगी?

लेकिन इबादत पर अल्लाह की मदद कब आयेगी? जब यह इबादत अल्लाह को पसन्द आ जाये। बाज़ार में कोई चीज़ लेकर आप बैठते हैं तो उसकी क़ीमत कब मिलती है? जब ख़रीदार को आपकी वह चीज़ पसन्द आ जाये तो फिर वह उसकी क़ीमत देता है। इसी तरह नमाज़ भी अल्लाह को पसन्द आ जाये।

नमाज़ अल्लाह को कब पसन्द आयेगी?

पसन्द जब आयेगी कि नमाज़ सही तरीक़े पर पढ़ी जा रही हो।

नमाज़ को सही तरीक़े पर पढ़ने में पहले तो उसका रुकूअ़-सज्दा, सही तरीक़े पर खड़ा होना, इसके साथ-साथ नमाज़ के अन्दर जो चीज़ें पढ़ी जाती हैं वे हमें सही याद हों। रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें जो दुआ़यें बताई हैं वे हमें सही याद हों, और इसके साथ-साथ नमाज़ के अन्दर अल्लाह का ध्यान हो, नमाज़ के मसाइल से भी जानकारी हो। नावाक़फ़ियत (जानकारी न होने) पर नमाज़ सही नहीं होती।

इख़्तिलाफ़ी मसाइल जमाअ़त में बयान न किये जायें

तब्लीग़ का यह काम पूरे आ़लम में हमें करना है तो इसके अन्दर जो इख़्तिलाफ़ी मसाइल हैं, उनके तज़किरे को मना करते हैं। और वजह इसकी यह है कि हर आदमी मसले का बताने वाला बन जायेगा। हमारी जमाअ़तों में ज़्यादातर ऐसे लोग निकलते हैं जो नावाक़िफ़ होते हैं। तो हर आदमी मसले बताने वाला न बने। और दूसरी मस्लेहत यह है कि मसाइल में इख़्तिलाफ़ (राय का मतभेद) होता है। तो अगर मसाइल बयान करने शुरू किये तो इख़्तिलाफ़ (झगड़ा और मतभेद) हो जायेगा और काम नहीं होगा।

मेरे मोहतरम दोस्तो! मसाइल का तज़किरा नहीं किया जाता, फ़ज़ाइल का तज़किरा किया जाता है।

बड़ी अ़जीब चीज़

आसान सी तदबीर बता दी जाये आपको कि आप और हम अल्लाह से अपने बारे में जो चाहते हैं हम अल्लाह के बन्दों के बारे में वह करना शुरू कर दें। बड़ी अ़जीब चीज़ है यह, बड़ी अ़जीब चीज़ है। अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह हमारे ऐबों पर पर्दा डाले तो हम दूसरों के ऐबों पर पर्दा डालें। अगर हम चाहते हैं कि अल्लाह हम पर रहम करे तो हम दूसरों पर रहम करें। यह बड़ी अ़जीब चीज़ है। अगर हम यह चाहते हैं कि अल्लाह हमारी ग़लतियों को माफ़ करे तो हम दूसरों की ग़लतियों को माफ़ करें। इससे अल्लाह हमारी ग़लतियों को माफ़ करेगा। बड़ी अ़जीब

चीज़ है यह।

मैंने तेरे खोटे अ़मल क़बूल किये

एक हिकायत

एक आदमी था। उसकी आ़दत यह थी कि वह खोटे रुपये ले लेता था, और माल पूरा देता था। पूरी ज़िन्दगी उसकी गुज़र गयी और उसका इन्तिक़ाल हुआ। मशहूर हो चुका था कि फ़लाँ दुकान पर खोटा सिक्का चल जाता है। और वह खोटे सिक्के ले लेता था। चीज़ पूरी देता था और वह खोटा सिक्का ख़ुद किसी को नहीं देता था। दूसरे को खोटा सिक्का देना यह बुरा है। लेकिन खोटा सिक्का जान कर ले लेता था। लेना बुरा नहीं। मरने के बाद अल्लाह के सामने पेशी हुई। "क्या लाया है?" उसने कहा ऐ अल्लाह! कोई अ़मल तेरी शान के मुताबिक़ मेरे पास नहीं। तेरी शान बहुत बड़ी है। बस दुनिया से मैं इतना करके आया हूँ कि मैंने लोगों के खोटे सिक्के ले लिये, तो अल्लाह तआ़ला इसका जवाब देंगे कि तूने दुनिया में लोगों के खोटे सिक्के लिये तो मैं भी तेरे खोटे अ़मल क़बूल कर लूँगा। यह बड़ी अ़जीब चीज़ ज़िक्र कर रहा हूँ।

मेरे मोहतरम दोस्तो और बुज़ुर्गो! अल्लाह से अपने बारे में जो मामला कराना हो, बन्दों के साथ वह मामला करना शुरू कर दो। बड़ी अ़जीब चीज़ है। बहुत मश्क़ का मौक़ा है। जमाअ़तों में निकल कर मश्क़ का मौक़ा है। साथियों के साथ भी और जहाँ जाओगे वहाँ वालों के साथ भी। यह है चौथी चीज़।

तब्लीग़ का काम सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिये हो

एक है पाँचवीं चीज़...... वह है नीयत का ख़ालिस करना। यानी काम

जो दीन का किया जाये वह सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी करने के लिये किया जाये। उसमें दुनिया की कोई ग़रज़ न हो। अल्लाह को राज़ी कर लें। और मैं आपको बताऊँ कि अल्लाह को कौन राज़ी करेगा? जिस आदमी के अन्दर अल्लाह के ख़ज़ानों का यक़ीन उतरा होगा, अल्लाह की क़ुदरत और ताक़त का यक़ीन उतरा होगा, तो वह आदमी दीन का काम इस छोटी सी दुनिया की ग़रज़ के लिये नहीं करेगा। कभी भी वह नहीं करेगा। क्योंकि अल्लाह के ख़ज़ानों के मुक़ाबले में यह पूरी दुनिया मच्छर के पर की भी हैसियत नहीं रखती। तो जिसने अल्लाह के ख़ज़ानों का यक़ीन पैदा कर लिया अपने दिल में और अल्लाह की क़ुदरत का यक़ीन पैदा किया तो इन्शा-अल्लाह सुम्-म इन्शा-अल्लाह वह दीन का काम दुनिया के लिये कभी नहीं करेगा। बड़ा बनने के लिये कभी नहीं करेगा, सिर्फ़ अल्लाह के लिये करेगा।

ईमान और इख़्लास में ताक़त क्योंकर पैदा हो?

इसको मैं दूसरे लफ़्ज़ों में बताऊँ। जितनी ईमान के अन्दर ताक़त होगी उतना इस आदमी के इख़्लास में ताक़त होगी। और ईमान की ताक़त जो पैदा होती है वह बार-बार अल्लाह का बोल बोलना और सुनना जिसका नाम है दावत की फ़िज़ा। इसमें ईमान की ताक़त पैदा होती रही तो इन्शा-अल्लाह इख़्लास की ताक़त भी पैदा होगी। हर अमल अल्लाह को राज़ी करने के लिये किया जाये, इसकी हमें मश्क़ करनी है। इसमें किसी लाईन की ख़ुदग़र्ज़ी न आये, इसमें अपनी जी चाही न आये, बस अल्लाह राज़ी हो जाये।

अल्लाह राज़ी कब होगा?

लेकिन अल्लाह राज़ी कब होगा? जब वे पाँच बातें जो बताई गईं- ईमान की ताक़त हो, नमाज़ वाला जज़्बा हो, हुज़ूर वाला तरीक़ा हो, अल्लाह वाला ध्यान हो और ईसार व हमदर्दी हो। फिर यह लोगों के

हुकूक़ अदा करता रहे। बन्दों के हुकूक़ का अदा करना। यह तो बिल्कुल क़ानूनी हुक्म है ख़ुदा का। इसके बाद फिर ईसार व हमदर्दी वाली बात आती है जो अख़्लाक़ी हुक्म है कि जिस पर अल्लाह इसके दर्जों को बुलन्द करेगा। ये चन्द बातें जो आप हज़रात के सामने अ़र्ज़ की हैं, इसकी अन्दरूनी कैफ़ियतें हर अ़मल के अन्दर वजूद में आती चली जायें।

तब्लीग़ की मेहनत नबियों वाली मेहनत है

और एक छटी बात है और वह है दावत की मेहनत मक़ाम पर रहे तो करनी, बाहर रहे तो करनी। क्योंकि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम आख़िरी नबी हैं, और आपके बाद कोई नबी आने वाला नहीं है। यह अल्लाह पाक ने तय कर दिया। नबियों का आना बेहद ज़रूरी था। क्योंकि नबियों के आने पर लोगों को अल्लाह वाला रास्ता मिलता था और लोग अल्लाह से ताल्लुक़ पैदा करते थे। अल्लाह को राज़ी करते थे। दुनिया में चमकते थे। मरने के बाद जन्नत में जाते थे लेकिन नबियों का आना जब बन्द हुआ तो फिर नबियों वाला काम रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस उम्मत के हवाले कर दिया कि यह नबियों वाला काम पूरी उम्मत मिलकर करेगी। ताकि पूरे आ़लम के अन्दर अल्लाह के बन्दों का ताल्लुक़ अल्लाह से हो जाये और अल्लाह के बन्दे ईमान वाले रास्ते पर आ जायें। अल्लाह के बन्दे अमन व अमान में आ जायें। अल्लाह की रहमतों में आ जायें। क्योंकि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पूरे आ़लम के लिये रहमत हैं। पूरी दुनिया वालों की परेशानी ख़त्म हो जायेगी। यह कब होगा? जब यह उम्मत इस दावत के काम को करे और रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस दावत के काम को कराने के लिये सवा लाख सहाबा किराम का मजमा तैयार कर दिया। क़ियामत तक के लिये वह नमूना रहेगा। क्योंकि क़ियामत तक जो लोग दुनिया में आयेंगे, अनेक हालात के, अनेक मिज़ाज के तो वे किस तरीक़े से दावत के काम को करें। ग़रीब आदमी कैसे करेगा, मालदार आदमी

कैसे करेगा, ज़्यादा सूझ-बूझ वाला आदमी कैसे करेगा, कम सूझ-बूझ वाला आदमी कैसे करेगा। क्योंकि हमारे इस दावत के काम में कोई अनफ़िट नहीं है।

हर अ़मल में हुज़ूरे पाक की पैरवी ज़रूरी

मेरे मोहतरम बुज़ुर्गो और दोस्तो! दावत का यह काम, तब्लीग़ का यह काम जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की नियाबत में और नबियों की नियाबत में इस पूरी उम्मत को मिला है, वह पूरी ज़िन्दगी के लिये मिला है। अल्लाह तआ़ला ने यह कहाः

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ

ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) आप कह दो सब से कि अगर तुम लोग मुझसे मुहब्बत करते हो तो तुम मेरी पैरवी करो। यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी करो। जब तुम रसूले पाक की पैरवी करोगे तो मैं तुमसे मुहब्बत करने लगूँगा।

अल्लाह कहते हैं कि मैं तुमसे मुहब्बत करने लगूँगा। पहला दर्जा तो यह है कि हम अल्लाह से मुहब्बत करें। दरमियान का वास्ता क्या है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी करें तो नतीजा क्या निकलेगा, अल्लाह हमसे मुहब्बत करने लगेंगे। और अल्लाह जब मुहब्बत करने लगेंगे तो इससे ऊँची दौलत क्या होगी हमारे लिये। लेकिन इसमें बीच की कड़ी क्या है? रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी। यानी आपके तरीक़े पर चलिये। अब देखिये खाने में हुज़ूर का तरीक़ा, पीने में, शादी में, मकान में, नमाज़ में, रोज़े में, हज में हुज़ूर का तरीक़ा ज़िन्दगी भर के लिये। चार महीने के लिये नहीं, चिल्ले के लिये नहीं, बल्कि ज़िन्दगी भर के लिये।

एक बात बड़े ध्यान से और ज़रा दिल लगाकर सुनो कि खाना, पीना, इस्तिन्जा, नमाज़, रोज़ा, इनमें हुज़ूरे पाक का तरीक़ा, हुज़ूरे पाक की पैरवी।

अ़र्ज़ यह करता हूँ कि वह मेहनत व दावत की लाईन और वह कोशिश जो रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नुबुव्वत मिलने के दिन से शुरू की और दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के दिन तक करते रहे, कोई दिन इससे ख़ाली नहीं गया।

दावत के काम को कितना और कैसे करें?

सहाबा ने जब से कलिमा पढ़ा, मौत तक उन्होंने दावत की मेहनत की। तो इसमें भी तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा होना चाहिये। जैसे खाने में हुज़ूरे पाक का तरीक़ा, पीने में हुज़ूरे पाक का तरीक़ा। तो दावत की और दीन की मेहनत और कोशिश की जो लाईन है इसमें भी तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा होना चाहिये। और फिर बेतकल्लुफ़ अ़र्ज़ कर दूँ कि हुज़ूरे अकरम ने इस काम को कितना किया और कैसे किया। सहाबा ने कितना किया और कैसे किया। तो आपका दिल गवाही देगा कि यह दावत का काम और यह दीन की मेहनत का काम इसको सहाबा ने अपना काम बनाया ज़िन्दगी भर के लिये। तो यह तब्लीग़ का जो काम है यह तो हमें अपना काम बनाना है और काम बना करके करना है। लेकिन चूँकि हम इससे बहुत दूर हो चुके हैं, इन चौदह सौ सालों के अन्दर, तो हमारे बड़ों ने इसकी बिल्कुल पहली सीढ़ी हमें यह बता दी कि ज़िन्दगी में एक बार चार महीने अल्लाह के रास्ते में निकलना और इस पाकीज़ा ज़िन्दगी को सीखना और इस पाकीज़ा काम को सीखना, फिर साल का एक चिल्ला, महीने के तीन दिन, हफ़्ते के दो गश्त, एक अपनी मस्जिद में एक दूसरी मस्जिद में, और रोज़ाना की तालीम अपने घर में, अपनी औरतों, बच्चों के अन्दर यह रोज़ाना की दो तालीमें। और रोज़ाना ढाई घण्टे अपनी मस्जिद के आबाद करने में फ़ारिग़ करना, रोज़ाना के ढाई घण्टे इसके साथ तस्बीहात व तिलावत वग़ैरह की पाबन्दी में, इतना अगर आदमी कर ले तो उसने गोया पहली सीढ़ी पर क़दम रखा इस पाकीज़ा काम की, जो पाकीज़ा काम अल्लाह के नबी पूरी

उम्मत के सुपुर्द कर गये हैं, ज़िन्दगी भर के लिये।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के काम को हम अपना काम बनायेंगे तो हमारी समस्याएँ हल होंगी

ध्यान से इस बात को दिल में उतार लो कि हम हुज़ूरे पाक के काम को जितना अपना काम बनायेंगे। आप हज़रात बिल्कुल इस बात के बारे में परेशान न होना कि हमारी औ़रतों की परवरिश का क्या होगा और हमारे बच्चों की परवरिश का क्या होगा। जो अल्लाह डाकुओं को पालता है, तो अगर यह मजमा और हम सारे के सारे रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के काम को अपना काम बनायें, तो क्या अल्लाह हमें भूखा रखेगा? हमारी औ़रतों को भूखा रखेगा? अल्लाह हमारे बच्चों को भूखा रखेगा? इतनी बड़ी बात अल्लाह के बारे में समझना, हरगिज़ नहीं! हरगिज़ नहीं। नीयत करें हम सारे के सारे कि अल्लाह पाक हमको इस छोटी सी ज़िन्दगी जो चालीस-पचास साल की ज़िन्दगी है, मौत आने के बाद हम कुछ नहीं कर सकेंगे, चाहेंगे तो भी नहीं कर सकेंगे। तो यह ज़िन्दगी हमारी सिर्फ़ खाने कमाने में न गुज़रे बल्कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के काम को हम अपना काम बनायें, और हुज़ूरे पाक के दर्द को अपना दर्द बनायें। हुज़ूरे पाक के ग़म को अपना ग़म बनायें।

ग़ैबी तरीक़े पर अल्लाह परेशानियों को दूर करेगा

अगर हमने हुज़ूरे पाक के दर्द को अपना दर्द बना लिया तो मैं सच कहता हूँ कि यह दुनियावी लाईन की जो तकलीफ़ें हैं, या तो अल्लाह पाक इन तकलीफ़ों से नजात देगा और अगर तयशुदा तकलीफ़ें आ भी गईं तो वे तकलीफ़ें आसान होंगी हुज़ूरे पाक के दर्द और ग़म के मुक़ाबले में। और अल्लाह ग़ैबी तरीक़े से उन परेशानियों को दूर करेगा। जैसे किसी की नाक बन्द हो गई और वह नोशादर और चूना रगड़ कर सूँघे तो कैसे नाक उसकी खुल जाती है। तो अल्लाह पाक परेशानियों को दूर करेगा,

ज़रूरतों को पूरा करेगा।

अल्लाह थोड़े वक़्त में बरकत देगा

इसका यह मतलब बिल्कुल न लिया जाये कि हुज़ूरे पाक के काम को अपना काम बनाने वाला आदमी कारोबार नहीं करेगा या घर नहीं देखेगा। कारोबार भी करना होगा, घर भी देखना होगा। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने सब किया। लेकिन हुज़ूर के काम को काम बनाने का मतलब यह हो कि जब अल्लाह के दीन का तक़ाज़ा आ जाये तो अपनी कारोबारी और घरेलू तरतीब को थोड़ा आगे-पीछे करना और दीन के तक़ाज़े को मुक़द्दम करना। उससे फ़ारिग़ होकर फिर कारोबार और घर को देखना। और उसमें अल्लाह पाक का मामला यह होगा कि वक़्त चाहे थोड़ा बचे, कारोबार में भी और घर में भी, लेकिन अल्लाह पाक थोड़े से वक़्त के अन्दर हैरत-अंगेज़ बरकतें दे देगा। वह क़ादिरे मुतलक़ है।

हमारे करने का काम क्या है?

लेकिन मेरे मोहतरम दोस्तो! हमारे बड़ों ने बहुत सोच-समझकर हमारी सारी कमज़ोरियों की रियायत फ़रमाकर हमें यह बताया है कि तुम कुछ नहीं कर सकते तो पूरी ज़िन्दगी में से एक बार चार महीने दे दो। और फिर सालाना, माहाना, रोज़ाना और हफ़्ते की जो तरतीब बतायी गयी वह करो। इसके अन्दर क्या होगा? कारोबार और घरेलू तरतीब जो है, उसको ज़रा आगे-पीछे करना होगा। आगे-पीछे तो होगा ही लेकिन उसके आगे-पीछ करने में हमारा अल्लाह से जो ताल्लुक़ होगा, मक़ामी काम और बाहरी काम करने में जो हम सब के दिल में अल्लाह का ताल्लुक़ पैदा होगा, और जो नबियों का ग़म और दर्द दिलों के अन्दर पैदा होगा, कि ऐ अल्लाह! दुनिया के अन्दर करोड़ों आदमी बग़ैर कलिमे वाले मर-मरकर जहन्नम में जाते रहे और हमने इसके बारे में कुछ नहीं किया।

और हमारे करने का काम क्या है? कि जिसने कलिमा पढ़ा, उसमें

नबी पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाली पाकीज़ा ज़िन्दगी, रहन-सहन आ जाये, पाकीज़ा मामलात और लेद-देन आ जाये। अख़्लाक़ ऊँचे और शरीफ़ाना आ जायें।

आख़िरत की दौलत व सरमाया

इस मक़सद के लिये मेहनत व दावत की वह तरतीब दरकार है जो अ़र्ज़ की गयी। साथ ही महीने के तीन दिन इस काम के लिये फ़ारिग़ हों। पहले तो रोज़ाना ढाई घण्टे हों, न मालूम उस ढाई घण्टे के अन्दर आप कितने घरों और दरों पर जायेंगे और आप कितने दर्द और फ़िक्र के साथ उस ढाई घण्टे के अन्दर न मालूम कितने लोगों का रुख़ अल्लाह की तरफ़ मोड़ने का ज़रिया बन जायेंगे।

यह आपके लिये एक दौलत व सरमाया होगा और आख़िरत के अन्दर आपके काम आयेगा। इसलिये सारे का सारा मजमा इस बात को ठान ले कि ऐ मेरे अल्लाह! हम इस दुनिया के अन्दर आये हुए थे हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दर्द को अपना दर्द बनाने, ऐ अल्लाह! हम कहाँ लग गये, सिर्फ़ खाना और कमाना। इसलिये अल्लाह से माफ़ी माँगकर और यह कहकर कि ऐ अल्लाह! हमारी कमज़ोरियों की रियायत करके, हमारे बड़ों ने जो उम्र भर के चार महीने कहे हैं, ऐ अल्लाह! वह हम से तू दिलवा ही दे। और सालाना चिल्ला और माहाना तीन दिन ऐ अल्लाह! इतना तो हम कम से कम कर गुज़रें। सारा मजमा इसके लिये नीयत करे।

क़ीमती लोग

दो क़िस्म के लोग इस मजमे में बैठे हैं। कुछ तो अल्लाह के रास्ते में जा रहे हैं। अल्लाह के रास्ते में जाने वाले इतने क़ीमती लोग हैं कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनको छोड़ने जाया करते थे। हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु उनको छोड़ने जाया करते थे।

अल्लाह की राह में निकलने के फ़ज़ाइल

अल्लाह की राह में निकलने के फ़ज़ाइल बताये गयेः

لَغَدْوَةٌ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوْرَوْحَةٌ خَيْرٌ مِّنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا

एक सुबह या एक शाम अल्लाह के रास्ते में निकलना दुनिया और इसके अन्दर की सारी चीज़ों से बेहतर है।

किस क़द्र खुशनसीबी, किस क़द्र नेकबख़्ती है। अल्लाह के रास्ते में निकलने वालों के कपड़ों के ऊपर जो धूल और बदन पर जो धूल आती है, उस बदन पर जहन्नम का धुआँ हराम हो जाता है। कितनी खुशनसीबी है निकलने वाली जमाअ़तों की कि अल्लाह तआ़ला उनके चेहरों की तरफ़ देखने में भी हम उम्मीद रखते हैं कि सवाब देगा। ये कितने मुबारक चहरे हैं अल्लाह के रास्ते में जाने वालों के, चाहे ये अपने घरों पर दर्ज़ी थे, सुनार थे, लुहार थे, टैक्सी वाले थे, खेती वाले थे, लेकिन इस वक़्त तो ये अल्लाह के रास्ते में जा रहे हैं। इसलिये अल्लाह के रास्ते में जाने वाले ये बड़े क़ाबिले क़द्र हैं।

मक़ामी ज़िम्मेदारों से गुज़ारिश

पूरे मजमे से और पूरे हिन्दुस्तान के लोगों से हम हाथ जोड़कर यह गुज़ारिश करेंगे कि ये पाकीज़ा और मुबारक लोग तुम्हारे इलाक़ों में जब आयें, जब तुम्हारे गाँव में आयें, तुम्हारे प्रदेश में और ज़िले में जब आयें तो बिल्कुल इनको लिपट जाओ। इनको इस्तेमाल करो, इनकी सलाहियतों से फ़ायदा उठाओ।

जमाअ़त में निकलने वाले फ़रिश्ते नहीं

मेरे मोहतरम दोस्तो! इन हमारी निकलने वाली जमाअ़तों से अगर कुछ भूल-चूक हो जाये इसलिये कि निकलने वाले ये लोग फ़रिश्ते नहीं हैं, न मालूम किन-किन को ये लोग छोड़कर निकले हैं। अगर इनसे कुछ चूक हो जाये तो बजाय इसके कि इनको लानत-मलामत की जाये, हर जगह

हमारे काम करने वाले दोस्त मौजूद हैं। वे इनके साथ लगकर इनके अन्दर की कमज़ोरियों को दूर करने की कोशिश करें।

एक तरफ़ से हिजरत, दूसरी तरफ़ से नुसरत

यह हमारा पुराना काम करने का तबक़ा मुल्क में फैला है। ये जमाअतें जो जा रही हैं, इनके साथ रहें। इनको गश्त करायें। इनसे तालीमें करायें और इनसे जमाअतें निकलवायें। इनमें जो सलाहियतों के लोग हैं, उस सलाहियत (क़ाबलियत और योग्यता) के एतिबार से इनको इस्तेमाल किया जाये, यही नुसरत (मदद) है। जो मदीने वालों ने मक्का वालों के साथ की थी। इसको इतनी अहमियत हासिल है, इतना ज़रूर करें। एक तरफ़ हिजरत एक तरफ़ नुसरत।

काम छह नम्बरों की पाबन्दी से करें

मैंने आप हज़रात के सामने छह नम्बर बताये। इन छह नम्बरों की पाबन्दी के साथ हमें काम करना है। एक बात और अ़र्ज़ कर दूँ। चन्द बातें ऐसी हैं जिनमें अपने वक़्त को मशग़ूल करना है। जो जाने वाले अहबाब (दोस्त) हैं, वे भी ध्यान से सुन लें कि चन्द बातें ऐसी हैं जिनमें अपने वक़्त को मशग़ूल करना है।

एक तो दावत के काम में। हमारे काम करने वाले जमाअ़तों में घूमने वाले एक तो अपना वक़्त दावत के काम में लगायें। दावत के काम के अन्दर एक तो उमूमी गश्त है, एक ख़ुसूसी गश्त है। एक इन्फ़िरादी (व्यक्तिगत) तौर पर जो भाई मिले तो उसके सामने भी अल्लाह की बात करना, अपने ज़िम्मेदार की इजाज़त के साथ।

अमीर के बजाए "ज़िम्मेदार" का लफ़्ज़ इस्तेमाल करें

अमीर के बजाए अब लफ़्ज़ "ज़िम्मेदार" का अ़र्ज़ किया जाता है। इसलिये कि अमीर के लफ़्ज़ में एक जगह हमें बड़ी परेशानी हुई। अमीर के मायने उनके यहाँ गवर्नर के हैं। वहाँ के लोग बहुत फ़िक्र में थे कि

बाहर का कौन गवर्नर आ गया।

अब हमारे मुल्क के अन्दर अमीर एक ओहदा बन गया तो इस पर परेशानियाँ आईं तो हमारे मौजूदा हज़रत जी दामत बरकातुहुम ने मस्लेहत को सामने रखकर यह कई बार फ़रमाया कि भाई ज़रा लफ़्ज़ ज़िम्मेदार कहो, ज़िम्मेदार का लफ़्ज़ कहो। अल्लाह तआ़ला हमें बड़ाई से बचाये। बड़ाई हम में न आये।

हमारा वक़्त बरबाद न हो

उमूमी गश्त और खुसूसी गश्त के साथ इज्तिमाई दावत का भी एहतिमाम हो। जैसे मजमे के अन्दर बयान हो रहा है, उसमें हमारा वक़्त लगे। या हमारा वक़्त लगे तालीम के अन्दर। तालीम के अन्दर किताबों का पढ़ना भी है। इन्फ़िरादी (व्यकितगत) तौर पर सीखना-सिखाना भी है, वक़्त ज़ाया (बरबाद) न हो जाये। तालीम में वक़्त लगे, ज़िक्र व तिलावत में, दुआओं में, नमाज़ों में। और एक साथी दूसरे साथी की ख़िदमत गुज़ारी में वक़्त लगाये।

चन्द ऐसी बातें जिनसे बचना ज़रूरी है

अब चन्द ऐसी बातें हैं जिनसे बचना बहुत ज़रूरी है। एक तो किसी से कुछ माँगा न जाये। दूसरे यह कि अपने दिल के अन्दर दूसरे से माल या खाने का ख़्याल न लाया जाये। तीसरी यह बात कि भाई हमको अगर अल्लाह ने बहुत कुछ दे रखा हो तो फ़ुज़ूलख़र्ची से बचें। ये चन्द बातें ऐसी हैं कि जिनसे हम बचें।

ऐसे काम जिनमें वक़्त कम से कम लगायें

अब चन्द ऐसे काम हैं कि उनमें वक़्त ज़रूरत के लिहाज़ से कम से कम लगे। लगाना तो पड़ेगा ही, जैसे खाना और पीना, पाख़ाना व पेशाब, सोना और ज़रूरत की बात करना। इसमें ज़्यादा वक़्त न लगे। इस बात का लिहाज़ हमें रखना है।
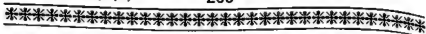
ज़िम्मेदार यानी अमीर की बात मान कर चलें

एक बात का ख़ूब ख़्याल रहे कि जो जमाअ़त बनेगी उसका एक ज़िम्मेदार होगा। उस ज़िम्मेदार की बात मानकर चलना। और जो साथी ज़िम्मेदार हो, वह अपने साथियों को तरग़ीब के साथ चलाये।

सफ़र के मामूलात क्या हों?

ऊपर ज़िक्र हुई बातों और छह नम्बरों के बयान में बहुत सी बातें आ गयी हैं आपके सामने, लेकिन चौबीस घण्टे का वक़्त कैसे गुज़ारना है यह मैं मुख़्तसर तौर पर अ़र्ज़ करूँगा। एक बात पहले अ़र्ज़ कर दूँ कि आप जहाँ जायेंगे, अल्लाह की ज़ात से उम्मीद है कि अक्सर जगहों पर हमारे पुराने काम करने वाले आपको मिल जायेंगे। आप उन पुराने काम करने वालों को बाख़बर करके, उन सब को साथ लेकर अ़मली ज़िन्दगी उनसे सीखें। आप सब हज़रात यहाँ से जब हज़रत जी (हज़रत मौलाना इनामुल् हसन साहिब अमीरे जमाअ़त) से मुसाफ़ा करके रवाना हों तो अपनी जगह तजवीज़ कर लें। आगे जो रेल या मोटर वग़ैरह जो इन्तिज़ाम करना हो, उनके साथी मुक़र्रर कर दें, और पूरे वक़्त का नज़्म (व्यवस्था) कर लें कि किस वक़्त तालीम करनी है, किस वक़्त आराम करना है, किस वक़्त जाना है।

आप हज़रात पैसे भी जमा कर लें थोड़े-थोड़े किसी ऐसे आदमी के पास कि जिस पर आपको इत्मीनान हो। बाज़ मर्तबा ऐसे अजनबी होते हैं कि लेकर चले जाते हैं। उसके बाद परेशानी होती है। मोटर स्टैंड पर आप जायें तो जो जानकार आदमी हो, वह अपना काम करे और आप बैठकर तालीम का हल्क़ा करें। चूँकि हर तरह के लोग होंगे, हमारे मुल्क में रहने वाले ग़ैर-मुस्लिम भाई भी, तो उस तालीम के हल्क़े में ईमान की बात हो, अख़्लाक़ की बात हो, आख़िरत की बात हो, अल्लाह की बात हो, जिससे उनके दिल मानूस हों वे भी आयें और बैठ जायें। रेल का वक़्त हमारा ज़ाया न हो। साथियों का तारुफ़ (परिचय) करें, पहचानें

उनकी सलाहियत कैसी है? अगर उनमें सलाहियत है तो काम के अन्दर उसका इस्तेमाल हो। उसी के अन्दर अन्दाज़ा लगायें कि हमारे कौनसे साथी को पूरी नमाज़ याद है कौनसे साथी को पूरी याद नहीं। किसको कलिमा याद है, किसको याद नहीं। तो यह ज़रा ध्यान दो, सीखना और सिखाना। क्योंकि चिल्ला भी आदमी गुज़ार कर आये, उसको नमाज़ भी याद न हो तो वक़्त अच्छा नहीं गुज़रा। यह सब काम रेल से ही शुरू कर दो। रेल के मुसाफ़िरों से अख़्लाक़ वाला मामला हो। नमाज़ का वक़्त आये तो नमाज़ को वक़्त के अन्दर रेलों में खड़े होकर अगर स्टेशन पर उतरने की गुंजाइश न हो, और अगर फ़राग़त हो तो उतर कर पढ़ें तो ज़्यादा अच्छा है। लेकिन ख़ूब इत्मीनान हो घबराकर नहीं। रेल से उतरने के बाद अपना सामान, अपने सामने रखकर, साथियों का ज़ेहन बनाकर दुआ माँगकर वहाँ से आप बस्ती के अन्दर रवाना हों।

शैतान का ज़हरीला तीर

रवानगी के वक़्त नज़रें नीची करके ज़बान से अल्लाह का ज़िक्र करते हुए रास्ते के एक तरफ़ हों। नज़रों की बड़ी हिफ़ाज़त की जाये। तस्वीरों की तरफ़ या औरतों की तरफ़ निगाहें नहीं जानी चाहिएँ। टेलीवीज़न यह शैतान का ज़हरीला तीर है। अल्लाह बचाये गुनाह की शुरुआत नज़र से होती है और इन्तिहा ज़िनाकारी पर होती है। तो आदमी शुरुआत ही में बचा रहे। इसलिए नज़रों की बड़ी हिफ़ाज़त करनी चाहिए।

बस्ती में पहुँचकर क्या करें?

अब उसके बाद जिस मस्जिद में आपको जाना है, वहाँ आप पहुँचें। अगर पैदल जमाअत है तो रास्ते के अन्दर सीखने-सिखाने की फ़िज़ा हो, और बस्ती में दाख़िल होने से पहले ज़रूरियात से फ़ारिग़ हो लें। फिर मस्जिद में दाख़िल हों। मस्जिद के अन्दर सुन्नत के तरीक़े से दाख़िल हों। अपना सामान किसी कमरे वग़ैरह में रखें, और मश्विरा के लिये इस्तिन्जा वग़ैरह से फ़ारिग़ होकर दो रक्अत 'तहिय्यतुल् मस्जिद' पढ़कर बैठें, और

मक़ाम के अन्दर जो फ़िक्रमन्द लोग हैं, उनको मश्विरे के अन्दर बुला लें। मस्जिद के इमाम साहिब हों, बैठकर मश्विरा करें। मश्विरे के अन्दर चौबीस घण्टे का प्रोग्राम बना लें।

मश्विरे का उसूल

मश्विरे के अन्दर मक़ामी लोगों से भी राय लें। ज़िम्मेदार मश्विरे के अन्दर जिससे राय माँगे वह दे और जिससे न माँगे वह न दे। फिर ज़िम्मेदार फ़ैसला करे कि क्या करना है। अपनी राय के ख़िलाफ़ अगर मश्विरा है तो भी खुशी के साथ उस काम को करे। और अगर फ़ैसला अपनी राय के मुवाफ़िक़ हो तो डरते रहना कि उसमें कहीं नुक़सान न हो। जो ज़िम्मेदार फ़ैसला करे वह सब की रायों का सम्मान करते हुए किसी की राय की तौहीन न करे। राय का एहतिराम व सम्मान करते हुए फ़ैसला करे। मश्विरे के अन्दर दो बातों का ख़्याल रखा जाये- एक तो यह कि मस्जिद से जमाअ़त नक़द कैसे निकले, दूसरी बात यह कि इस मस्जिद में जमाअ़त कैसे बने? इन दो बातों का मश्विरा करना है।

चौबीस घण्टे का निज़ाम बना लें

मश्विरे में ही चौबीस घण्टे का निज़ाम बना लें। खुसूसी गश्त के अन्दर कौन जायेगा और तालीम किस वक़्त में करनी है। रात के वक़्त में बयान मग़रिब के बाद होगा या इशा के बाद होगा, यह मक़ामी लोग बतायेंगे। बयान किसके ज़िम्मे हो। यह सारी बातों का मश्विरा चौबीस घण्टे का हो जाये।

खुसूसी गश्त

खुसूसी गश्त करने के लिये दुनियावी या दीनी लाईन के जो ज़िम्मेदार लोग हों। आ़लिम या शैख़ हों, उनके पास जाना, उनके वक़्त में उनसे मुलाक़ात करना, कारगुज़ारी सुनाना, और उनसे दुआ़ का लेना। और दुनियावी लाईन के जो ज़िम्मेदार हों उनके पास जाकर छह नम्बरों के

अन्दर रहकर बात करना। किसी क़िस्म के सियासी इख़्तिलाफ़ की बात न करना, न किसी की मुख़ालफ़त की बात करना। बहुत से लोग मुख़्तलिफ़ (अनेक और विभिन्न) काम करते हैं। तो हमें न किसी की हिमायत करना, न किसी की मुख़ालफ़त की बात करना। छह नम्बरों के अन्दर रहकर उस भाई को किसी सूरत से आमादा करने की कोशिश करना। चार महीना, चिल्ला, दस दिन, तीन दिन या कम से कम वह ज़िम्मेदार अपना कोई आदमी लगा दे जो गश्त ही करा दे।

उमूमी गश्त

उमूमी गश्त आपको करना है तो अगर मग़रिब के बाद बयान करना है तो आप अ़सर के बाद सारे मजमे को जमा रखें। मक़ामी लोगों को भी, इसी तरह उनसे अ़सर से इशा तक का वक़्त ले लें। जो दे दे बेहतर है, जो न दे उससे कह दें कि भाई तुम ज़रा आते हुए दूसरे को भी लेते आना। यहाँ तक कि उनकी जमाअ़तें बनायी जायें। जितनी भी जमाअ़तें बनें। जो बाक़ी बचे तो उनको तीन-तीन आदमियों की जमाअ़तें बनाकर अलग-अलग आदमियों की मुलाक़ातों के लिये जाना मुफ़ीद हो तो इसे भी करें। जो उमूमी जमाअ़त बनकर जाये वह दुआ़ माँगकर जाये, नज़रें नीची करके चलें, ज़बान से अल्लाह का ज़िक्र करें, और यह समझें कि ऐ अल्लाह! तेरा शुक्र है कि दर-दर दावत लेकर जाना यह काम तो नबियों का है। ऐ अल्लाह! हम कहाँ और कहाँ यह काम! सिर्फ़ तेरा फ़ज़्ल और तेरा करम है, तू हमारे इस लगने को क़बूल कर ले।

गश्त की अहमियत ख़त्म न होने पाये। नज़रें नीची हों, ज़बान से अल्लाह का ज़िक्र हो। एक आदमी बोलने वाला मुक़र्रर कर लें, और सारी जमाअ़त मिलीजुली चले। जो सामने आदमी मिले, उससे बात करे। एक दो मिनट, ज़्यादा लम्बी चौड़ी तक़रीर न हो। ज़ेहन बनाने की बात हो, नक़द उनको उठाकर मस्जिद की तरफ़ लाने की कोशिश की जाये। उन लोगों के साथ बहुत ही अहमियत के साथ बात करे।
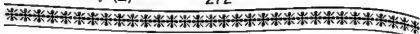
उमूमी गश्त में मुतकल्लिम क्या गुफ़्तगू करेगा?

बात क्या करनी है? इसके लिये कोई लफ़्ज़ मुतैयन नहीं। लेकिन अन्दाज़ा आप हज़रात को हम बता दें। इसके आगे पीछे आप बात करें। सलाम करो, मुसाफ़ा करो और उनसे कहो कि भाई आप और हम मुसलमान हैं, हमने कलिमा पढ़ा और कलिमे के अन्दर हमने इक़रार किया कि अल्लाह के हुक्मों पर हम चलेंगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़े पर हम चलेंगे। इससे अल्लाह हमारी दुनिया और आख़िरत को बनायेगा। लेकिन रसूले पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा बग़ैर मेहनत के ज़िन्दगियों में आता नहीं। इस सिलसिले में हमारी जमाअ़त फ़लाँ जगह से आयी है। हमारे कुछ भाई मस्जिद में बैठे हैं। आप भी तशरीफ़ ले चलिये और मग़रिब के बाद तफ़सीली बात होगी।

आप गश्त के लिये जायें तो मस्जिद में कुछ भाईयों को बिठा दें। एक दो साथियों को ज़िक्र में बिठा दें, और साथी हल्क़ा बना लें।

गुफ़्तगू बहुत अख़्लाक़ और नर्मी के साथ हो। अगर कोई आदमी धुतकार दे तो उसे बरदाश्त करें। नबियों ने भी बरदाश्त किया है। बिल्कुल कुछ नहीं कहना, यह बरदाश्त करना, अल्लाह से बहुत कुछ दिलवायेगा।

अब जो शख़्स तैयार हो गया हो। अपने गश्त के साथियों में से एक दो साथियों को उसके साथ लगा दें जो उन्हें लेकर आये। अगर नमाज़ नहीं पढ़ी है तो वुज़ू कराके नमाज़ पढ़ायें फिर हल्क़े में बिठा दें।

उमूमी बयान किस तरह हो?

गश्त की जमाअ़त मग़रिब की नमाज़ होने से पहले वहाँ पहुँच जाये। मग़रिब के बाद बयान है, जिसके ज़िम्मे हो, वह अपनी सुन्नतों को मुख़्तसर करे। ख़ुशू व ख़ुज़ू में फ़र्क़ न आने पाये। (यानी नमाज़ उसके आदाब के साथ मुकम्मल की जाये)। मुख़्तसर होने से कोई ख़ुशू व ख़ुज़ू में फ़र्क़ नहीं आता। और फिर फ़ौरन बयान करने खड़ा हो जाये, दूसरे

जो साथी हैं मजमे को जमा करें बहुत अख़्लाक़ के साथ।

छह नम्बरों के अन्दर रहकर बात करना, और वाक़िआत जो मोतबर किताबों में हैं, उनको बयान करना। हदीसों के अन्दर बयान करने में ख़तरा है कि कहीं मौज़ू (बे असल और गढ़ी हुई) हदीस बयान न हो जाये। इस बिना पर ज़रा ख़ास तौर पर एहतियात करना है। वे लोग जो पढ़े-लिखे नहीं हैं, अपनी सीधी-सादी बात छह नम्बरों में रहकर जज़्बात को उभारने वाले सहाबा के वाक़िआत जो किताबों में हैं, बयान करें। चार-चार महीने के लिए खुद को दावत व तब्लीग़ की मेहनत के लिये फ़ारिग़ करें। उसके बाद दूसरे लोगों को तैयार करें, इन्शा-अल्लाह जब खुद खड़े होकर बोलेंगे तो दूसरे भी बोलेंगे। फिर चिल्ले के लिये तैयार कर लें, फिर उसके बाद दस दिन। आख़िरी काम आपको यह करना होगा कि मस्जिदवार वहाँ की जमाअ़त बन जाये, जहाँ नहीं बनी है। और जब बन जाये तो सिर्फ़ काग़ज़ पर बनी न रहे, बल्कि अ़मलन वह जमाअ़त काम करे मस्जिदवार जमाअ़त का काम उन्हें बताना। और जिन लोगों ने नाम दिया है, सुबह गश्त करके उनकी वसूलयाबी करना। और यह कोशिश करें कि हर मस्जिद से जमाअ़त निकल जाये। चाहे इसमें एक दो दिन ठहरना ही पड़े।

खाने-पीने की व्यवस्था

अपना खाना पकाने का इन्तिज़ाम साथ में लेकर जाये। खुसूसी गश्त से पहले खाना पकाने का इन्तिज़ाम हो जाये। अगर कोई खाने की बात करे तो उसके लिये न तो क़बूल करना, हर हाल में यह भी नहीं, और न तो रद्द ही करना, हर हाल में यह भी नहीं। दीन का फ़ायदा जिस तरह भी हो, उस तरह मश्विरे से फ़ैसला करे।

पुराने काम करने वालों का फ़र्ज़

इस तरतीब पर हमारा उमूमी गश्त भी हो, बयान भी हो, जमाअ़त हर जगह से निकले। यह चौबीस घण्टे गुज़ारने का वक़्त आप हज़रात के

सामने मुख़्तसर अर्ज़ किया। लेकिन हमारे वे पुराने काम करने वाले जो पूरे मुल्क में फैले हुए हैं। हमारे हज़रत जी के भरोसे वाले हैं। वे हज़रात इस बात पर बहुत ही ध्यान दें कि आने वाली इन जमाअ़तों की ख़ूब ख़बर रखें, उनके ऐबों को न देखें, कमज़ोरियों को न देखें। अगर कमज़ोरियाँ हैं उनको इन्तिहाई शफ़क़त व मुहब्बत के साथ उसूल सिखायें।

चन्द बातें सिर्फ़ गिना देता हूँ। सारा मजमा तय करके जाये। एक तो मस्जिदवार जमाअ़तों का बनाना। इसे पूरा मजमा ठान ले। जमाअ़तों में जाने वाले भी और न जाने वाले भी, कोई मुश्किल काम नहीं। यह जमाअ़त जो बनी है, महीने के तीन दिन, हफ़्ता के दो गश्त, रोज़ाना की तालीम मस्जिद और घर की, और चौबीस घण्टे में चन्द मिनट मुज़ाकरा कर लें कि पूरी बस्ती में दीन कैसे आये? दूसरी बात ढाई घण्टे रोज़ाना के हर आदमी मस्जिद की आबादी के लिये दिया करे। और दूसरे से लिया करे ताकि मस्जिद हर वक़्त आदमियों से आबाद हो, और वे फ़िक्र से पूरी बस्ती में काम करें।

काम की अ़मली मश्क़ क्योंकर हो?

देखो एक बात और बतायें। दावत के काम को कैसे करें। हर जगह ये पुराने काम करने वाले अ़मली तौर पर करा देंगे। और फिर पुराने काम करने वालों से नये लिपट जायें और खुशामद करें, इतनी खुशामद करें कि उन पुराने काम करने वालों को शर्म आ जाये और तुम्हें खुद बतायें और फिर पुराने ज़्यादा खुशामद न करायें। इन्शा-अल्लाह हर मस्जिद के अन्दर हो सकता है कि मस्जिदे नबवी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की झलक पैदा हो जाये। और हर बस्ती में मदीना मुनव्वरा की झलक पैदा हो जाये।

औ़रतो और बच्चों का ज़ेहन बनाने की फ़िक्र करें

एक बात और ज़ेहन में रखें कि औ़रतें दुनिया में मर्दों से ज़्यादा हैं, और बच्चे औ़रतों से ज़्यादा, इसलिये अपनी औ़रतों और बच्चों का ज़ेहन बनाने की फ़िक्र करें। यह हर जगह कहीं भी और खुद भी करें।

जमाअ़तें ज़्यादा से ज़्यादा क्योंकर निकाली जायें?

एक बात और अ़र्ज़ करनी है कि घराने के अन्दर जितने कमाने वाले हैं, जमाअ़तों में आना-जाना ऐसे अन्दाज़ से करें कि आधे जमाअ़तों में फिरें और आधे घर पर कारोबार और मक़ामी ज़रूरतों और काम को संभालें। बरकत देने वाले अल्लाह हैं। एक बात आख़िरी और अ़र्ज़ करनी है कि ये हमारी जमाअ़तें ख़ाली फिरकर वापस न आयें, बल्कि दरमियान में हर बस्ती से जमाअ़त निकालें। अगर आप ऐसा न कर सकें तो भाई कम से कम दर्जा यह है कि पूरे चिल्ले में कम से कम दो तीन जमाअ़तों को ही निकाल लायें चिल्ले की। अगर आपने यह काम कर लिया तो अगर हज़ार जमाअ़तें जा रही हैं और इज्तिमे हों तो ये हज़ार जमाअ़तें चिल्ले वाली जब तक घर होंगी, दो हज़ार दूसरी फिर रही होंगी। अगर यह सिलसिला साल भर चला तो लाखों जमाअ़तें दुनिया में बग़ैर किसी इज्तिमे के फिर रही होंगी। और इज्तिमा से निकलने वाली इनके अ़लावा होंगी।

असल मसला अल्लाह की तरफ़ से है

ये सारी बातें जो बताईं, ये ज़ाहिरी असबाब के तौर पर हैं। लेकिन असल मसला अल्लाह की तरफ़ से है। क़बूलियत अल्लाह की तरफ़ से है। इस क़बूलियत के लिये रातों को उठ-उठकर अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाना कि ऐ अल्लाह! करने वाला तू ही है। यह तेरा एहसान है। ऐ अल्लाह! तू क़बूल कर और इसमें ऐसा असर डाल दे कि पूरी दुनिया हर उम्मती हुज़ूरे पाक के काम को अपना काम बना ले, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ग़म को अपना ग़म बना ले। हुज़ूरे पाक के दर्द को अपना दर्द बना ले, और बेचैन हो जाये हर उम्मती हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के काम के लिये। और ऐ अल्लाह! इसमें इतने असरात डाल दे कि पूरी दुनिया के इनसानों के लिये हिदायत के दरवाज़े खुल

जायें। ताकि क़ियामत के दिन जब हम जन्नत में जायें तो पूरे आ़लम के करोड़ों लोगों को लेकर हम जन्नत में जायें। ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ़ओं को माँगना। देखो चाहे तुम भाषा नहीं जानते हो, लेकिन अल्लाह तआ़ला दिलों के हाल को जानता है। गिड़गिड़ा कर दुआ़ओं को माँगोगे तो इन्शा-अल्लाह जहाँ तुम्हारी हमारी जमाअ़तें नहीं गुज़रेंगी, अल्लाह पाक ऐसा क़ादिरे मुतलक़ है कि वहाँ पर भी हिदायत के दरवाज़े खोल देगा और फिर कानों में आवाज़ें आयेंगी कि फ़लाँ मुल्क अल्लाह की तरफ़ ऐसा छा गया, और फ़लाँ क़ौम अल्लाह की तरफ़ ऐसी छा गयी। ये आवाज़ें आयेंगी और ये आवाज़ें कानों में पड़ेंगी तो तुम्हारी और हमारी ख़ुशी के मारे रातों की नींद उड़ा देंगी। कि या अल्लाह! तूने हमें यह दिन दिखाया।

और जब हुज़ूरे पाक का ग़म होगा तो जहाँ बेदीनी के फैलने की ख़बर आयेगी तो वह हमें बेचैन कर देगी, और रातों को सोने नहीं देगी कि या अल्लाह! तेरा दीन इस तरह कैसे मिट गया?

अल्लाह के करने का ज़ाबता

तो इसके लिये मेरे भाई करने वाली ज़ात अल्लाह की है। और अल्लाह के करने का ज़ाबता (उसूल और नियम) नबियों वाली मेहनत है। और इसके साथ अल्लाह के सामने गिड़गिड़ाने वाली दुआ़यें हैं। इस वक़्त हमें दुआ़ माँगनी है। इस काम के ऊपर न मालूम कितनी-कितनी आफ़तें पड़ती हैं और न मालूम कितनी परेशानियाँ हमारे इस दावत वाले काम पर आती रहती हैं। तो इसके लिये भी दुआ़यें माँगनी हैं कि ऐ अल्लाह! हम इस काम से निस्बत रखने वाले लोगों की ग़लतियों को तू माफ़ कर दे। और ऐ अल्लाह! इसके ऊपर जो आफ़तें आ रही हों, उनको तू दूर कर दे। और पूरे आ़लम में इस काम को फैला दे। आमीन।